गुलज़ारे क़दीर

तसनीफ व तालीफ

हज़रत ख्वाजा

सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी

चिश्ती यमनी क़दीर (रह.)

आस्तानए क़दीरी हलकट्टा शरीफ

वाडी जंकशन के करीब, ज़िला गुलबर्गा शरीफ (कर्नाटका)

1940 नतीजए अफकार : ''तुग़रए पंचरंगी'' मुरत्तिबुहु : हज़रत क़दीर (रह.) १९५६

मुरसलन अक़ताए आलम १७८ ममालिक

हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह
क़ादरी चिश्ती यमनी क़दीर (रह.)

जानशीन हज़रत क़दीर हज़रत ख्वाजा
सय्यद इब्राहीम शाह
क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी 'साहिब' क़दीरी बुज़ुर्ग सज्जादा नशीन हलकट्टा शरीफ

गुलज़ारे क़दीर

बज़बाने उर्दू : **सोलह एडीशन**

बज़बाने हिन्दी : **पहला एडीशन - १९८६** **दूसरा एडीशन - २००१**

तीसरा एडीशन - २००५ **चौथा एडीशन - २०१६**

बज़बाने तेलगू : **पहला एडीशन - २००९**

तसनीफ व तालीफ

हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी 'क़दीर' (रह.)

हलकट्टा शरीफ

ज़ेरे एहतेमाम

आस्ताना-ए-क़दीरी, हलकट्टा शरीफ, वाडी जंक्शन के करीब, ज़िला गुलबर्गा शरीफ

तबाअत : मतबअ अबुल वफा अलअफग़ानी प्रिंटींग प्रेस,
जामिआ निज़ामिया, हैद्राबाद

हिंदी डीटीपी : युसरा ग्राफिक्स, पुणे 9595031666

साले इशाअत व तादाद

13 रजबुल मुरज्जब 1437 हि. मु. 21 एप्रैल 2016

तादाद : 1000 हदिया : 300/- रुपये

किताब यहाँ से हासिल कर सकते हैं

ख्वाजा सय्यद अबू तुराब शाह क़ादरी चिश्ती यमनी, आस्ताना-ए-क़दीरी,
हलकट्टा शरीफ, वाडी जंक्शन के करीब, ज़िला गुलबर्गा शरीफ

खानक़ाहे क़दीरीया, जलपल्ली गेट, पहाडी शरीफ रोड, न्यू बाबानगर, हैद्राबाद

खानक़ाहे क़दीरीया, ख्वाजा क़दीर कॉलोनी, गुलबर्गा शरीफ, कर्नाटक

खानक़ाहे क़दीरीया, सय्यद नगर, हडपसर, पुणे, महाराष्ट्र

खानक़ाहे क़दीरीया, रामेश्वरम रोड, मेहबूबिया मस्जिद के पास, पर्दोटूर, कडप्पा

खानक़ाहे क़दीरीया, ताडपत्री, ज़िला अनंतपूर

खानक़ाहे क़दीरीया, येरगुंटला, ज़िला कडप्पा

खानक़ाहे क़दीरीया, केराला वेंगार्ड

Website: www.quadeeriya.com

Email : aastanaquadeeri@gmail.com

खुलास-ए-हक़ीक़त

अल्लाह के फज़्ल से और मोहसिने कायनात फख्रे मौजूदात हुज़ूरे अकरम नबी-ए-मुकर्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एहसाने अज़ीम और पीराने सलासिल की अता और बतुफैले निगाहे गायबाना वालिदी व मुरशिदी हज़रत ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी साहिब क़दीरी (रह.) की सोहबत व तरबिय्यत ने खादिम को हौसला बख्शा अपने असलाफ की तालीमात को आम करने के लिए....

अता किया मुझ को दरदे उलफत, कहाँ थी इस पुर खता की किस्मत
मैं इस करम के कहाँ था क़ाबिल हुज़ूर की बंदापरवरी है

गुलज़ारे क़दीर का यह हिंदी एडीशन छपाई के नकाइस (ऐबों) से पाक आप के हाथों में आ पहुंची है. मज़ीद कोई खामी रह जाए तो दरगुज़र फरमाऐं. 'गुलज़ारे क़दीर' के उर्दू ज़बान में पंद्रह एडीशन छप चुके हैं. हिंदी और अंग्रेज़ी की बढती मांग को सामने रखकर पहली मरतबा हिंदी और अंग्रेज़ी एडीशन छापे जा रहे हैं. 'गुलज़ारे क़दीर' में किसी क़िस्म का रद्दो बदल, किसी क़िस्म की तब्दीली (कमी) नहीं की गई है बल्कि जिन वाकेआत के दलाइल नहीं थे वह शामिल कर दिए गए हैं. 'गुलज़ारे क़दीर' तसनीफ कम, तालीफ ज़्यादा है ताकि क़ारईन को समझने में दुशवारी ना हो. चंद पुराने अहले सिलसिला ने लोगों के वहमो गुमान में ऐसी बातें डाली हैं कि पुरानी 'गुलज़ारे क़दीर' में कुछ और वाकेआत थे जो कि नई में नहीं हैं. दर अस्ल 'गुलज़ारे क़दीर' जानशीने हज़रते क़दीर साहिब क़दीरी (रह.) ने किताब को नए लब व लहजे के क़ालिब में ढाल कर शरीअत और तरीक़त और तसव्वुफ की तालीमात को बाआसानी समझने की सलाहियत पैदा फरमाई है. 'गुलज़ारे क़दीर' को चंद दुनिया परस्त किताब घर वाले अपने फायदे के लिए किताब की नक्ल करके बेच रहे हैं. ऐसी किताबों का आस्तानए-क़दीरी हलकट्टा शरीफ से कोई ताल्लुक नहीं है.

किताबों पर और मुसन्निफ पर हर दौर में उंगलियाँ उठती रही हैं. 'गुलज़ारे क़दीर' भी इन्हीं मरहलों से गुज़रती रही है. सिलसिलए-क़दीरीया

मरकज़े आस्तानए-क़दीरी को भी हासिदीन ने अपने हसद का शिकार बनाया. 'गुलज़ारे क़दीर' का गौर से मुतालेआ फरमाइए जहाँ तालीम व तफहीम, रुमूज़ व इरफान है वहीं नमाज़, रोज़ा, हज्ज व ज़कात के मज़ामीन भी मिलेंगे. सिलसिलए-क़दीरीया के चंद गुमराह कुन हलके मसाजिद और नमाज़ों से दूरी इख्तियार करके यह कहते हैं कि हम सिलसिलए-क़दीरीया से वाबस्ता हैं. वह हज़रात शायद आस्तानए-क़दिरी हलकट्टा शरीफ को तशरीफ नहीं लाए जबकि आस्तानए-क़दिरी हलकट्टा शरीफ में अज़ीम मस्जिद मौजूद है. पंजगाना नमाज़, जुमा व ईदैन और शरीअत की हर अंदाज़ में अमल आवरी की जाती है. ऐसे खिलाफे शरा (शरीअत) हज़रात का सिलसिलए-क़दीरीया और आस्तानए-क़दीरी से कोई ताल्लुक नहीं है.

बाप का इल्म ना बेटे को अगर अज़बर हो
तो पिसर क़ाबिले मीरासे पिदर क्यूँ कर हो

जारी करदा साहबज़ादा जानशीने हज़रत साहिब क़दीरी

ख्वाजा सय्यद अबू तुराब शाह क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी तुराब क़दीरी

हलकट्टा शरीफ

फेहरिस्त

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है

هُوَ الَّذِیٓ اَنۡزَلَ السَّکِیۡنَۃَ فِیۡ قُلُوۡبِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ لِیَزۡدَادُوۡۤا اِیۡمَانًا مَّعَ اِیۡمَانِهِمۡ، وَ لِلّٰهِ جُنُوۡدُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ، وَکَانَ اللّٰهُ عَلِیۡمًا حَکِیۡمًا

वही है जिसने मोमिनों के दिलों में तसकीन नाज़िल फरमाई ताकि उनके ईमान पर मज़ीद ईमान का इज़ाफा हो (यानी इल्मुल यक़ीन ऐनुल यक़ीन में बदल जाए) और आसमानों और ज़मीन के सारे लशकर अल्लाह ही के लिए हैं, और अल्लाह खूब जानने वाला बडी हिकमत वाला है. (पारा २६, सुरह फतह, आयत: ४)

खुदी में गुम है खुदाई तलाश कर गाफिल
यही है तेरे लिए अब सलाहे कार की राह
अपने मन में डूब कर पा जा सुरागे ज़िंदगी
तू अगर मेरा नहीं बनता ना बन, अपना तो बन
(इक़बाल)

इज़हारे हक़ीक़त

वालिदी व मुर्शिदी हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी क़दीर (रह.) की तसनीफ व तालीफ 'गुलज़ारे क़दीर' को छप कर पचास साल गुज़रे जिसे रहरवाने तरीक ने अपनी तलब के मुताबिक अपने दिल व दिमाग की गहराईयों में समाया. 'गुलज़ारे क़दीर' में तसनीफ कम, तालीफ ज़्यादा है.

इखलास की नज़र से मुकम्मल जायज़ा लिया जाए तो तसल्ली होगी. मौला तआला हुज़ूर नबी-ए-अकरम रहमतुल्लिल आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले, सदके और तुफैल में ईमान की मज़बूती अता फरमाए, आमीन.

पुराने और नए तकाज़ों को शरीअत के हुदूद में रखते हुए हमने पहले भी इस्लाह की है. छपाई की दुनिया से सभी वाक़िफ हैं. कहीं कहीं कातिब की छोटी सी गलती भी बडी बडी गलत फहमियों को पैदा कर देती है. हुज़ूर नबी-ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़मत ही हमारे लिए ज़िंदगी का सरमाया और निजात की ज़मानत है. शरीअत और तसव्वुफ की मंज़िलें अलग अलग नहीं मगर एहतियात हर हाल में ज़रूरी है.

मक़ासिदुल इस्लाम, मिस्बाहुल हयात, बुरहानुल हक़ाइक़, हुलयतुल औलिया, हिदायातुश शुयूख, तजल्लियाते रब्बानी, जवाहिरुल उश्शाक़, हाफिज़ुल अहिब्बा, सिर्रुल असरार, क़ससुल अंबिया, मुईनुल अरवाह, तालीमे गौसिया, ऐनुल फक्र और दूसरी किताबों से 'गुलज़ारे क़दीर' में इस्तेफादा किया गया है.

दलाइले कुरआनी, अहादीस, दरूदे ताज, सलाम ब-बारगाहे खैरुल अनाम, क़सीदए-गौसिया, शिजरए-तय्यबा क़ादरीया व चिश्तिया, मुनाजात 'गुलज़ारे क़दीर' की ज़ीनत हैं.

इंसानी तक़ाज़ों से कोई इंसान आज़ाद नहीं. नादानिस्ता कलाम और तहरीर में गलती हो गई हो तो अल्लाह पाक अपने रहम व करम से सरकारे ज़ीशान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले से और पीराने सलासिल की

निस्बतों से माफ फरमाए. दिलों का जानने वाला अल्लाह है, खताओं को माफ फरमाने वाला अल्लाह है.

उनके अंदाज़े करम खास हुआ करते हैं
दिल बढाना हो तो दिल तोड दिया करते हैं
किसी आईन की पाबंद नहीं देन उनकी
चाहते हैं तो खताओं पे अता करते हैं
जुनूँ की मंज़िलों में शौक खुद बेदार होता है
तेरा दीवाना बातिन में बडा होशियार होता है
ब-क़द्रे ज़र्फ मिलती है तेरे मैख्वार को साकी
वगरना होश का मसअला बडा दुशवार होता है

हस्बे ज़रूरत एक किताब बनाम 'फिक्रे क़दीर, गुलज़ारे क़दीर व आइना गुलज़ारे क़दीर' की भी इशाअत की गई है जो हज़रते क़दीर की तालीमात की आईनादार है.

पेश करदा

जानशीने हज़रते क़दीर **ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी 'साहिब' क़दीरी** (रह.), हलकट्टा शरीफ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व असहाबिही व बारका व सल्लमा
हुवल क़दीर

पेशे लफ्ज़

﴿وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّ عَدْلًا﴾

और तेरे रब का कलमा सच्चाई, इंसाफ और एतेदाल के एतेबार से पूरा है. (सुरह इनआम)

"اَلْاِيْمَانُ اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَ تَصْدِيْقٌ بِالْجَنَانِ وَ عَمَلٌ بِالْاَرْكَانِ."

कलमए-तय्यबा का ज़बान से इक़रार, दिल से तसदीक़ और जिस्म के आज़ा (हिस्सों) के साथ अमल ईमान है. (इमामे आज़म रह.)

तजल्लियात का मरकज़ सदाए कुन फयकून
सदा-ए-कुन फयकूँ का मदार है कलमा
(शाहीन)

इस पानी व मिट्टी की दुनिया में क़ज़ा व कदर के कारकुनान ने यह फैसला कर दिया कि आदमी को आदम की, मुरीद को पीर की, उम्मती को रसूल की और बंदे को अल्लाह की इत्तेबा और पैरवी ज़रूरी है. काइनात की किताब के मुसन्निफ (अल्लाह) ने सब से पहले अपनी रंगीन तजल्लियात से जो पेशे लफ्ज़ लिखा, वह आज भी 'ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' के नज़र नवाज़, ईमान परवर, हयात आफरीन अलफाज़ में अर्शे बरीं की पेशानी पर मौजूद है. यही कलमए-तय्यबा अल्लाह तआला का पेशे लफ्ज़ है जिसे आदम ने देखा और औलादे आदम के सामने पेश किया. और यही कलमए-तय्यबा हर मुरीद व उम्मती के लिए नुबुव्वत का पेशे लफ्ज़ है जो विलायत व इमामत का मरकज़ बना और जिसे अहले दिल ने आदमी, मुरीद और उम्मती होने के नाते अब्दिय्यत की मेराज समझकर अपनी ज़िंदगी व बंदगी का पेशे लफ्ज़ करार दिया और कलमा तय्यबा को अपना कर उसके

अलावा हर चीज़ से मुँह फेर लिया.

कलंदर जुज़ दो हर्फे 'ला इलाहा' कुछ नहीं रखता

फक़ीहे शहरे क़ारूँ है लुगत हाए हिजाज़ी का

(अल्लामा इकबाल)

कलमए-तय्यबा की ला महदूद आफाकिय्यत, हमा जिहती मानविय्यत और आलमगीर क़बूलिय्यत तो है कि जो उसको अपना कर एक पाकिज़ा रूह बोल उठती है :

तामीरे कायनात का देरीना ख्वाब हूँ

औराके ज़िंदगी की मुकम्मल किताब हूँ

उलझे हुए हैं आज भी अहले खिरद यहाँ

जलवा हूँ या कि परदा नशीं का नक़ाब हूँ मैं

(साहब क़दीरी)

हर दौर की तारीख गवाह है अल्लाह की मशिय्यत, हक की मारिफत के लाखों प्यासों को सरचश्मए-विलायत से सैराब करती रही. बारगाहे विलायत में जो भी खुलूसे दिल से आएगा अपना दामने मुराद 'मन अरफा' के गौहर से भर लेगा. और रुश्द व हिदायत का यह सिलसिला सीना-ब-सीना, दमबदम, सर-ब-सर मंशाए खुदावंदी को पूरा करता रहा. ऐसे ही एक रौशन दौर की यादगार सुबह का नाम है :

हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी क़दीर (रह.)

जो (अल्लाह) करीम की निगाह की नवाज़िशात से मुशर्रफ होकर सरकारे विलायत सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैह के ज़ेरे साया सरापा क़दीर बन कर सिलसिलए-आलिया क़ादरीया की रूहानी खिदमात अंजाम देते रहे. आप की तालीमात का अनमोल ज़खीरा और आप के फरीज़ए-खिलाफत की मुँह बोलती तस्वीर **गुलज़ारे क़दीर** है. आपने सादाते यमनी से खानदानी निसबत और सिलसिलए-हसनी से ताल्लुक़ के बावजूद तसदीक़ बिलक़ल्ब की तकमील के लिए हज़रत शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह की निसबत और गुलामी कुबूल

फरमाई.

बंदए-इश्क़ शुदी तर्के नसब कुन जामी
कि दर ई राह फलाँ इब्ने फलाँ चीज़े नीस्त

आप को अपने कामिल पीर से क़ादरी चिश्ती दोनों खिलाफतें हासिल हुई जिनका सिलसिला हज़रत सय्यद शाह चंदा हुसैनी क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह (साकिन किन्नी) और आरिफुल हक हज़रत सय्यद इफ्तेखार अली शाह 'वतन' क़िबला चिश्ती क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह से जा मिलता है. और खादिम को हज़रते क़दीर से क़ादरी खिलाफत २२ रबीउल आखिर १३७५ हि. बरोज़ बुध, बमकाम चिटगुप्पा शरीफ हासिल हुई और सरकारे आली वक़ार नूरदीदए-बंदानवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह हज़रत सय्यद शाह हुसैन मुहम्मद अकबर मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी 'खैर' बंदानवाज़ी रहमतुल्लाहि अलैह से चिश्ती खिलाफते खुलफाइया बतारीख २५ ज़िलहज १३७५ हि. बरोज़ जुमा बमकाम हैद्राबाद अता हुई. अलहम्दु लिल्लाह!

हज़रते क़दीर ने अपने ५१ सालों के दौरे खिलाफत में अपने पीरे कामिल रहमतुल्लाहि अलैह के मुबारक इरशादात और उनकी ला ज़वाल तालीमात की रौशनी में ३१ जनवरी १९५६ को दुनिया भर में कलमए-तय्यबा के अनवार व तजल्लियात को पंचरंगी तुगरे की सूरत में ढालकर अरबाबे फिक्र व नज़र को दावते फिक्र व नज़र दी और तरीक़त के तक़रीबन पाँच लाख वाबस्तगान को बिलक़ल्ब सहबाए मारिफत से सरशार फरमाकर १५० खुलफा-ए-किराम को कलमए-तय्यबा की हक़ीक़ी, ज़ाहिरी और मअनवी दावत व इशाअत (तबलीग) पर मामूर (तैनात) फरमाया जिनका सिलसिला दर सिलसिला अंदरून व बैरूने हिंद अलहम्दु लिल्लाह जारी व सारी है. इसके अलावा आम मुसलमानों की हिदायत के लिए आपने दुनिया-ए-तरीकत की बुलंद पाया किताब 'गुलज़ारे क़दीर' तालीफ फरमाई जो अब ज़ेवरे तबाअत से आरास्ता होकर क़ल्ब व नज़र की महफिल की ज़ीनत बनी हुई है. और यही 'गुलज़ारे क़दीर' अल्लाह के फज़्ल से नए मज़ामीन और कलाम के साथ छप कर हुस्न व जमाल के इस अंदाज़ के साथ आप के हाथों में पहुँच रही है कि

बिला तफरीके रंग व बू जहाँ सब एक हैं 'साबिर'
वह मैखाना है मेरे साकी अम्न व मुहब्बत का

'गुलज़ारे क़दीर' का एक एक वरक़ शाहिद व गवाह है कि आप की ज़िंदगी का मकसद और आप की तालीमात का निचोड 'ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' की अलमगीर दावत व इशाअत (तबलीग) के सिवा और कुछ नहीं. यही वह ताल्लुक व निसबत और इश्क व मुहब्बत की मेराज है जहाँ खुद अक़ीदत बोल उटती है :

हज़ारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पे रोती है
बडी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

अल्लाह तआला का हज़ार हज़ार शुक्र व एहसान है कि माबूदे हक़ीक़ी ने अपने बंदे से अपने इरादे के तहत काम लिया और यह सिलसिलए-खिलाफत आज भी जारी है.

यह खिदमत व दावत व इशाअत (तबलीग), यह नियाबत व खिलाफत की दौलत सय्यदना अली (कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम) की बख्शी हुई मखसूस अमानत है. अमानत के लिए दयानत ज़रूरी है. हर हैसिय्यत वाला इंसान जो दियानत की आदत को अपनाए वह दवामी बक़ा को पा सकता है. अमानत में किसी क़िस्म की गैर ज़रूरी तब्दीली या बेजा कमी ज़्यादती या दिमाग की कारस्तानी कुदरत के कानून से हटना और यकीनी तौर पर अमानत में खियानत मानी जाएगी. ''व मा अलैना इल्लल बलाग़ !''

'गुलज़ारे क़दीर' - ''مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ'' (मन अरफा नफसहू फक़द अरफा रब्बहू) की मानवी तालीमात का आईना है.

बुज़ुर्गों ने अपने फिक्र व तसदीक के ज़रीए अहले इल्म तक जिन नेमतों को पहुँचाया है 'गुलज़ारे क़दीर' उन्हीं अज़ीमुश शान रहबराने मिल्लत की तसदीक़ व तक़लीद करती है.

आक़ा-ए-दक्कन, सरचशमए इरफान, शहबाज़े तरीकत हज़रत सय्यद मुहम्मद हुसैनी गेसू दराज़ बंदानवाज़, बलंद परवाज़ (रहमतुल्लाहि अलैह) की शरहे तसनीफ 'तजल्लियाते रब्बानी' तर्जुमा 'जवाहिरुल उश्शाक़' (स. ६५, मतबूआ १३६२ हि.) पर तहरीर फरमाते हैं :

ज़ाहिदे आरिफ और वाक़िफ के लिए नफ्स, क़ल्ब और रूह में रास्ते :

قَالَ يَا غَوْثَ الْاَعْظَمِ جَعَلْتُ فِى النَّفْسِ طَرِيْقَ الزَّاهِدِيْنَ وَ جَعَلْتُ فِى الْقَلْبِ طَرِيْقَ الْعَارِفِيْنَ وَ جَعَلْتُ فِى الرُّوْحِ طَرِيْقَ الْوَاقِفِيْنَ وَ جَعَلْتُ نَفْسِىْ مَحَلَّ الْاَسْرَارِ.

(फरमाया कि ऐ गौसे आज़म! मैंने नफ्स के अंदर ज़ाहिदों के लिए रास्ता बनाया है और दिल के अंदर आरिफीन के लिए राह बनाई है. और रूह के अंदर वाक़िफीन के लिए रास्ता बनाया है और मैंने अपने आप को भेदों का मकाम बनाया है.) ज़ाहिदों को बताता है कि मैंने नफ्स में ज़ाहिदों के लिए रास्ता बना दिया है, इस आयते शरीफ के मुताबिक ''तुम्हारे नफ्सों में हूँ, क्या तुम नहीं देखते.'' ऐसा रास्ता कि जिससे खुदा तक पहुँचते हैं. और इसमें अपने आप को दिखाता है. ज़ाहिद को चाहिए कि इस नफ्स से गुज़र जाए, मुराद जिस्म है और जिस्म से अंदरूनी जिस्म मुराद है जो तेरी ही सूरत का है. यह भी इंसान ही की तरह एक मखलूक है. मगर इंसान तेरे नफ्स ही की एक हकीकत है. सुनो !

''اِنَّ فِى جَسَدِ ابْنِ آدَمَ خَلْقًا مِنْ خَلْقِ اللّٰهِ تَعَالٰى كَهَيْئَةِ النَّاسِ وَ لَيْسَ بِالنَّاسِ''

(इब्ने आदम के जिस्म में एक खल्क़ यानी मखलूक़ है जिसको अल्लाह तआला ने इंसान की हैअत (सूरत) में पैदा किया है. दर अस्ल वह इंसान नहीं है.) नफ्स यह ज़ाहिरी तन नहीं है जिसको जिस्म कहते हैं. जैसा कि पहले कहा गया कि ...

''جِسْمُ الْاِنْسَانِ لَيْسَ نَفْسُهُ''

(इंसान का जिस्म ही उसका नफ्स नहीं है.) इनको अलाहिदा अलाहिदा बयान किया गया है. मैं तो जिस्म और नफ्स में कोई फर्क़ नहीं पाता.

मैंने दिल में आरिफों के लिए राह बनाई है. यानी आरिफ का दिल मेरा आईना है.

''وَ جَعَلْتُ فِى الْقَلْبِ طَرِيْقَ الْعَارِفِيْنَ''

''मेरी दो उंग्लियों के दरमियान आरिफों के लिए उनके दिल में से मैंने

रास्ता बनाया है.'' यानी आरिफ को खुद उसके दिल में उस (खुदा) ने खुद को दिखाया है.

''اِذَا نَظَرَ فِیۡھَا تَجَلّٰی رَبُّہٗ''

(जब उसमें देखो तो उसका रब तजल्ली करता है.) इस दिल से मुशाहेदा करने वाला आशिक मुराद है. क्यूँकि जलाल और जमाल के कसवत (लिबास) और सूरत में वही है. कभी अपने जलाल को देखने वाले के ज़ात के आईने में दिखाता है और कभी जमाल की तजल्ली करता है. इसी लिए कहा गया है कि

''قَلۡبُ الۡمُؤۡمِنِ عَرۡشُ اللّٰہِ تَعَالٰی''

(मोमिन का क़ल्ब (दिल) अल्लाह तआला का अर्श है.) और इसी तरह अल्लाह तआला का घर और अल्लाह का आईना और अल्लाह का हरम है. आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम से किसी ने पूछा कि ऐ रसूलल्लाह ! खुदा कहाँ है? तो फरमाया कि मोमिनों के क़ल्ब में. तूने तो अपने नफ्स ही को नहीं पहचाना. उसके दिल को क्यूँकर पहचान सकता है.

अपने काफे कुफ्र की तुझ को खबर अब तक नहीं
तू हक़ाइक़ हाए ईमाँ को भला क्या जानता

''وَ جَعَلۡتُ فِی الرُّوۡحِ طَرِیۡقَ الۡوَاقِفِیۡنَ''

(मैंने रूह में से असरारे इलाही के वाक़िफों के लिए राह बनाई है.) यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूह वाक़िफ है इस लिए तमाम वाक़िफों की इंतेहा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं. जब तक सूरते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लिबास ना पहनो तो हज़रते समदिय्यत खुदावंद के दरबार में तुम्हें जगह ना मिल सकेगी. यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूह के आईने में देखो तो मुझे देख सको. क्यूँकि अहमद तो अहद ही की सूरत में है और अहमद का मतलब ही अहद हैं. आयत

﴿مَنۡ یُّطِعِ الرَّسُوۡلَ فَقَدۡ اَطَاعَ اللّٰہَ﴾

(जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की.)

“وَ مَنْ رَاٰنِیْ فَقَدْ رَأَی اللّٰہَ”

(और जिसने मुझे देखा तो उसने अल्लाह को देखा.) यह बात वाक़िफीन जानते हैं और आरिफीन पहचानते हैं.

ज़ाहिद मलकूती को कहते हैं. आरिफ जबरूती को कहते हैं और वाक़िफ लाहूती को कहते हैं मगर हमारा मक़सूद तो इस जगह है सुनो :

“وَ جَعَلْتُ نَفْسِیْ مَحَلَّ الْاَسْرَارِ”

(मैंने अपने नफ्स को भेदों का मकाम बनाया है.) यानी अपनी ज़ात के मकाम को या मेरी ज़ात के तख्त को भेदों और असरार का मकाम बनाया है. यानी मेरे भेदों का मकाम तेरी रूह है. तेरी रूह मेरी सूरत है और तेरी रूह का मतलब मैं ही हूँ. जो तेरी रूह के कसवत (लिबास) व सूरत में ज़ाहिर हुआ हूँ.

“اَلْاِنْسَانُ سِرِّیْ وَ اَنَا سِرُّہٗ”

(इंसान मेरा भेद है और मैं उसका भेद हूँ.)

इस सूरते ज़ेबा में है इक भेद छुपा सा
हो जाए वह ज़ाहिर तो खुदा कहने लगे तू

यही वह भेद है कि वह तुझ से ज़ाहिर है और तू उससे क़ायम है.

बिहम्दिल्लाह ! ‘गुलज़ारे क़दीर’ आपके हाथों में है. यक़ीनन यह करम है हुज़ूर आक़ाए दो आलम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का. हज़रत सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी कुत्बे रब्बानी रहमतुल्लाहि अलैह का वसीला है. निसबत है ख्वाजए-ख्वाजगान हज़रत ख्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दराज़ रहमतुल्लाहि अलैह की जो दामने खैर क़िब्ला गाही हज़रत सय्यद शाह हुसैन मुहम्मद अकबर मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी (रह.) से सरफराज़ी हुई. फय्याज़े दौराँ तक़द्दुस मआब हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी साहब क़िब्ला (रह.) सज्जादा नशीन रौज़ए-बुज़ुर्ग गुलबर्गा शरीफ का सायए- बरकात है कि हज़रत शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती (रह.) की करम नवाज़ीयाँ शामिले हाल रहीं. और इंशा अल्लाह आइंदा भी रहेंगी.

इल्म की हद से परे बंद-ए-मोमिन के लिए
लज़्ज़ते शौक़ भी है नेअमते दीदार भी है
आब व गिल में मुद्दतों आराइशें होती गईं
तब कहीं यह आदमी कौनैन के क़ाबिल बना

इरफान व ईकान की आगाही ने हज़रते क़दीर रहमतुल्लाहि अलैह को 'गुलज़ारे क़दीर' (लिखने) की तरफ माइल किया

क़दीर बीनी करीमा कारसाज़ी
करामत है मेरे घर पेशवा की

जद्दे तरीक़ पीरे क़दीर हज़रत शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह की दूर-रस निगाहों ने बादशाह क़ादरी को क़दीर बना दिया. यह तखल्लुस भी हज़रते शेख का अता करदा है. शेख की तालीम व तरबिय्यत ने इरशादात व मआनी के हज़रते क़दीर से वह काम लिया जो मंशाए करीमी था.

वही ज़माने की गर्दिश पे गालिब आता है
जो हर नफ्स से करे उम्रे जावदाँ पैदा
गुज़र कर दश्त व सहरा से यहाँ गुलज़ार आते हैं
कि शाखे गुल में फूल आने से पहले खार आते हैं
चलने वाले मंज़िलों की सिम्त यूँ चलते गए
मरहले जितने भी आए हौसले बढते गए

हज़ार हज़ार शुक्र व एहसान मालिके लम यज़ल का 'गुलज़ारे क़दीर' नए मज़ामीन और मोतबर किताबों के हवालों के ज़रीए हस्बे ज़रूरत सेहत के साथ पेशे नाज़िरीन है. जहाँ कहीं सहू (गलती) पाएं बसद इखलास माफ फरमाऐं.

तालिबे दुआ : जानशीने हज़रते क़दीर रहमतुल्लाहि अलैह
ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी चिश्ती यमनी 'साहिब' क़दीरी,
हलकट्टा शरीफ
जानशीन हज़रत साहिब क़दीरी
ख्वाजा सय्यद अबू तुराब शाह क़ादरी चिश्ती यमनी 'तुराब' क़दिरी,
हलकट्टा शरीफ

वही अस्ले मकान व ला मकाँ है
मकाँ क्या शै है अंदाज़े बयाँ है
खिज़र क्यूँकर बताए क्या बताए
अगर माही कहे दरिया कहाँ है

अता असलाफ का जज़्बे दरूँ कर
शरीके ज़ुमर-ए-ला यहज़नूँ कर
खिरद की गुत्थियाँ सुलझा चुका मैं
मेरे मौला ! मुझे साहिबे जुनूँ कर

अल्लामा इकबाल

ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह

“قُلْ رَّبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا وَّ ارْزُقْنِیْ فَهْمًا”

कह ! ऐ मेरे रब ! ज़्यादा कर मेरे इल्म को और अता कर मुझको फहम

अलहम्दु लिल्लाह हज़ार हज़ार शुक्र व एहसान पाक परवरदिगार का, मालिके वहदहू ला शरीक लहू का जिसने नेस्त को हस्त बनाया, बशरीयत का लिबास पहनाया, अक्ले कुल अता किया कि अपने को जाने और खालिक़ को पहचाने. सद हज़ार जान फिदा मेहबूबे रब्बुल आलमीन पर (जिसने) अल्लाह को अल्लाह, बंदे को बंदा बताया. खुद मेराज पाए और हमें मिलने का रास्ता बतलाया, शिर्क से बचाया, कुफ्र से हटाया, दोनों के दरमियान सीधी सादी राह दिखाया ताकि खुदा का कुर्ब नसीब हो. दोनों जहाँ में इंसान अशरफुल खल्क़ (बहतरीन मखलूक) कहलाए. दस्तूरे इस्लाम यही है, दलील वाज़ेह है:

“اَلْاِنْسَانُ سِرِّیْ وَ اَنَا سِرُّهٗ”

इसी शौक व ज़ौक की लज़्ज़त ने लब कुशाई का मौका इनायत फरमाया. अली रदियल्लाहु अन्हु का कौल

“مَنْ عَرَفَ نَفْسَهٗ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهٗ”

(जिसने अपने नफ्स को पहचाना ज़रूर उसने अपने रब को पहचाना.) यह वह इल्म है जिसको मयस्सर आया उसने छुपाया, अपने को भूला खालिक़ को पाया.

पहले यह अर्ज़ करना बेजा ना होगा कि खादिम आलिम व फाज़िल नहीं है. हां ! बुज़ुर्ग असातेज़ा की सोहबत से कुछ जानता है. यह सब उनकी दुआ है. मेरा वतन ज़िला राईचूर है जो सरज़मीने दकन में है जहाँ मेरे जद्दे आला (परदादा) हज़रत सय्यद मुहम्मद अबू तुराब यमनी (रह.) ने ज़िंदगी गुज़ारी.

आप सादात मशाइख, बेहतरीन आलिम, मुअल्लिमे वक्त थे जिनके हज़ारों शागिर्द हैं. चंद हज़रात से हमें मिलने का शरफ हासिल है. वह हमें इज़्ज़त व एहतेराम की नज़र से देखते हैं. हर कौम के लोगों ने आप से इल्म सीखा है. आप का वसीअ (बडा) मदरसा, बडा घर अब भी अंदरूने किला मौजूद है. आप मुल्के यमन से मुल्के हिंद तशरीफ लाए. इलाकए-अज़मत मदार में आप की आला खिदमात मौजूद हैं जिसका फायदा जद्दे आला के बडे साहबज़ादगान के आल औलाद को पूरा पूरा हासिल है. जद्दे आला की दो बिवीयाँ. मेरे वालिदे माजिद छोटी बीबी साहेबा से हैं. जद्दे आला को हमने नहीं देखा. बडी दादी साहेबा से तीन फरज़ंद हज़रत सय्यद हबीबुल्लाह साहब क़ादरी यमनी, हज़रत सय्यद शाह अमीनुद्दीन क़ादरी यमनी उर्फ पीराँ साहब, हज़रत सय्यद आरिफ साहब क़ादरी यमनी. छोटी दादी साहेबा से हज़रत वालिदे माजिद सय्यद अब्दुर रहमान साहब क़ादरी यमनी. यह सब के सब कसीर आल औलाद वाले जीता जागता सिलसिला है. हज़रत दादी साहेबा फरमाती थीं कि दादा साहब के इंतेक़ाले पुरमलाल के बाद बडी बडी मुसीबतें बर्दाश्त करनी पडीं. अकसर दादाजान दादी साहेबा के पास रहते. शिजरए-हसब व नसब जद्दे आलिया दीगर कुतुबे खानदानी हज़रत ताया सय्यद अमीनुद्दीन क़ादरी यमनी साहब के पास मौजूद है. हां ! इतना इल्म है. इसे पढने से पता चलेगा कि हम किस खानदान से हैं, हमारी असलिय्यत क्या है. अब ज़रूरत इस बात की है कि अल्लाह तआला सालेह अमल अता करे वरना खानदान ही खानदान है. जद्दे आला रहमतुल्लाहि अलैह मेरी वालिदा साहेबा की निसबत ठहराकर चल बसे. मेरे बडे नाना हज़रत मुहम्मद अब्दुल क़ादिर साहब जमादार सवारान लावलद थे. छोटे नाना हज़रत मुहम्मद शाह अली साहब जमादार जिनकी साहबज़ादी वालिदा साहिबा हैं, मोहल्ला घटालवाडी अंदरूने शहर राईचूर ननिहाल का भी बडा खानदान मौजूद है. दादा साहब को दिया हुआ कौल व करार नाना साहब ने पूरा किया. इसके बाद हज़रत दादी साहेबा फरमाती थीं कि मेरे पैदा होने से दो घंटे पहले दादी साहेबा को ख्वाब हुआ कि घर जाओ, सुबह हज्जे अकबर है, फातेहा का इंतेज़ाम करो. बरखुरदार पैदा होगा. उसका नाम मेरा नाम रखना. दादी साहेबा

ने अपना ख्वाब बयान फरमाया. ख्वाब में उनके दादा ने आगाह किया है, लेहाज़ा मैं घर जाती हूँ.

कहते हैं सुबह सादिक़ रोज़े जुमा बकरी ईद में पैदा हुआ. दादा साहब के बकौल मेरे नाना साहब ने मेरा नाम सय्यद मुहम्मद यमनी रखा और कहा कि यह बच्चा हज्जे अकबर के दिन पैदा हुआ, ज़रूर जिहादे अकबर पाएगा. हम जुमला पांच भाई और दो बहनें जिनके नाम यह हैं : सय्यद अब्दुल अज़ीज़ यमनी, सय्यद मेहबूब यमनी, सय्यद अहमद यमनी, सय्यद अब्दुर रशीद यमनी, दो बहनें में से एक हमशीरह (बहन) सय्यद शाह क़ादिर मुहियुद्दीन साहब क़ादरी क़ाज़ीए कोतवाल की बीवी हैं. दूसरी हमशीरा (बहन) मुहम्मद यूसुफ अली साहब क़ादरी मुलाज़िमे सररिश्तए-ज़राअत सरकारे आली की बीवी हैं. मौसूफ हैद्राबादी हैं. हम पांच भाई एक ही मकान में रहते हैं. हमारे दादा साहब का घर जो अंदरून किला वाकेअ था, उसको हज़रत वालिद साहब ने फरोख्त कर दिया और ननिहाल के मोहल्ले में दूसरा घर खरीदा जो इस वक्त मौजूद है.

हज़रत दादी साहेबा अकसर मुझे दुआऐं देतीं और फरमातीं तू वली होगा. और हज़रत नानी साहेबा भी यही कहतीं कि तू वली होगा. यह अल्लाह की महरबानी है, इन बुज़ुर्ग हस्तियों ने दुआऐं बख्शीं जो शामिले हाल हैं. मेरी उम्र तक़रीबन चौदह पंदरह साल की थी, घर में मशाइखी (तरीकत) हमारे तायरे ताया हज़रत सय्यद शाह नबी मुहिय्युद्दीन क़ादरी चिश्ती क़िबला (रह.) की सोहबत में जाया करता. क्या देखता हूँ सिलसिलए-मुरीदीन में, रातों में ज़िक्र व शुग्ल की मेहफिल गर्म है. अल्लाह अल्लाह हर शख्स कहता है. मुझे भी शौक़ हुआ. मैंने अर्ज़ किया हज़रत क़िब्ला मुझे भी अपना मुरीद कर लिजीए, आप जो फरमाऐंगे तामील करूंगा. बडी प्यार की नज़र से खादिम को देखते. कहने लगे, तुम्हारे वालिद इस वक्त मौजूद नहीं हैं, तुम्हारी वालेदा से इजाज़त लाओ, मुरीद कर लूँगा. मैंने वालेदा साहेबा से कहा कि क़िब्ला आप से इजाज़त ले आओ कहते हैं. वालेदा ने कहा कि मदरसा जाओ, इल्म सीखो, बाद मुरीद होना. दिल हज़रत क़िब्ला की मुहब्बत में मजबूर है. हज़रत क़िब्ला ने फरमाया : ‘‘जिस वक्त वालेदा तुम्हारी सोती हैं तुम पैर दबाओ और जब

तक इजाज़त मुरीद होने की ना दें पैर दबाते रहो.'' एक रोज़ मैंने यही अमल किया. वालेदा साहेबा ने कहा चलो मैं खुद क़िब्ला से कहती हूँ. वालेदा साहेबा आईं, क़िब्ला से कहा, यह तुम्हारी औलाद तुम्हारा बच्चा है, इसको मुरीद कर लो, यह तुम्हारा दीवाना हो गया है. हज़रत क़िब्ला मुस्कराए और कहा अल्लाह तआला की यही मर्ज़ी है. फिर मुरीद कर लिया और फरमाया कि मदरसा बराबर जाना और शब में हमारी खिदमत में हाज़िर रहना, नमाज़ बाजमाअत अदा करना. जिस को मैंने कबूल किया और यहाँ से मेरी दुनिया आबाद होने लगी. अपने कौल व करार पर बराबर कायम रहा. चंद रोज़ बाद अपने अलताफ व करम से हुज़ूर पीर व मुर्शिद क़िब्ला ने दरूने दिल (दिल ही दिल में) इस्मे अल्लाह कहना सिखाया और खादिम पर बहुत महरबान रहते थे. फिर चंद दिनों बाद सह ज़र्बी ज़िक्र की तलकीन अता हुई. अकसर मुरीदीन नमाज़े तहज्जुद के बाद मुराकेबा किया करते थे. खादिम भी उनके साथ मुराकबे में शरीक होने लगा. चंद दिनों बाद अजीब अजीब समाँ दरूने दिल नज़र आने लगा. ज़िक्र की कसरत से दिल का नाक़िस पानी बह गया. दिल मुतह्हर (पाक) होने लगा. फिर तो जूँ जूँ मेरी उम्र बढ रही थी शौक की कसरत और ज़्यादा होती जा रही थी. हज़रत वालिद साहब और वालेदा साहेबा ने हज़रत बडे ताया सय्यद शाह अमीनुद्दीन साहब क़ादरी यमनी से मशवरा फरमाया और कहने लगे कि बादशाह की शादी कर दिजीए. चूँकि मुझे बचपन में सब बादशाह कह कर पुकारते थे. हज़रत ताया साहब ने कहा इंशा अल्लाह. चंद दिनों बाद कहने लगे कि तय्यार हो जाइए. मैंने हज़रत सय्यद इब्राहीम हसन सेग़ेदार की दुख्तर को पसंद किया है. वह आला खानदान, साहबे तक़वा और नेक सीरत बुज़ुर्ग थे जिन का हाल ही में इंतेक़ाल हुआ है. उनकी दुख्तर हमारे खानदान की ज़ेब व ज़ीनत है. मैं उनके बडे फर्ज़द सय्यद सिद्दीक़ हुसैन साहब सेग़ेदार तहसील की रज़ामंदी के बाद यह शादी तय करूँगा. चुनांचे हज़रत ताया साहब की दरख्वास्त मकबूल हुई और तारीखे रस्म (मंगनी) मुकर्रर की गई. रस्म के बाद हज़रत सय्यद सिद्दीक़ हुसैन साहब ने भी इंतेक़ाल फरमाया. उनके चचाज़ाद भाई हज़रत सय्यद शमसुद्दीन साहब सेग़ेदार तहसील राईचूर ने तारीखे अक़्द बरोज़ जुमा

मुकर्रर फरमाया. अल्लाह तआला की इनायत और वालिदैन की मुहब्बत से पीर व मुर्शिद क़िब्ला के रूबरू मेरा अक़्द हुआ. सब खुश हुए और तमाम अज़ीज़ व अक़ारिब में मसर्रत ही मसर्रत रही. मैंने वालेदा साहेबा से कहा कि हज़रत क़िब्ला के हाथ पर दुल्हन को अभी मुरीद करवाइए. आखिर यह अरमान भी पूरा हुआ. हम दोनों अल्लाह तआला के ज़िक्र व शुग्ल में गुज़ारते और अजीब कैफ व सुरूर पाते. दीन व दुनिया दोनों आबाद थे.

हज़रत दादी साहेबा के इंतेक़ाल से तीन रोज़ पहले यह खादिम उनकी खिदमत में हाज़िर हुआ, देखा कि आप बिलकुल कमज़ोर हो चुकी हैं. फिर मैंने पैर दबाने शुरू किए. फरमाया कौन? खादिम ने कहा, मैं आप का बादशाह हूँ. फौरी मुझे गले लगा लिया और दुआऐं दीं. उस वक्त मेरी वालेदा साहेबा मौजूद नहीं थीं. फरमाया, बादशाह! तुम्हारी वालेदा ने मेरी वह खिदमात अंजाम दी हैं जो बयान से बाहर हैं. मैं तुम्हारी वालेदा को बहुत दुआऐं दी हूँ कि खुदावंदा उसके चमन को कियामत तक फूला फला रख. मुझे मेरी आखरी मंज़िल की फिक्र थी क्यूँकि तुम्हारी वालेदा बच्चे वाली, मेरी खिदमत कैसे होगी. वह फिक्र भी मेरी दूर हुई. अब मैं दुनिया से शाद व खुर्रम अराम व राहत से जा रही हूँ. खुदावंदे करीम दुनिया में बहू बेटीयों को ऐसी ही तौफीक अता करे. तुम्हारी वालेदा मेरी बेटी से हज़ार दर्जे बढ कर है. अगर आज बेटी भी होती तो ऐसी खिदमत ना करती. जब मैंने यह अलफाज़ दादी साहेबा से सुने वल्लाह वालेदा की अज़मत व बुज़ुर्गी मेरे सीने में पिनहाँ हो गई. फिर दर्दे दिल के साथ मैं दादी साहेबा से इजाज़त व दुआ लेकर रुखसत हुआ.

तीसरे दिन आप दुनियाए फानी से मुल्के बक़ा को सिधारीं. इंसान रंज व गम का बंदा है. खूशी कम, रंज ज़्यादा. आखिरत में खूशी ज़्यादा रंज कम होगा. जो अल्लाह तआला का मंशा हो वह सब कुछ मंज़ूर है.

कुदरत ने हमें एक लडका इनायत किया जिसका कमसिनी में इंतेक़ाल हो चुका. उसके बाद फिर बरखुरदारी पैदा हुई. हज़रत पीर व मुर्शिद क़िब्ला ने बरखुरदारी का नाम सय्यदा हाफिज़ा बी रखा. यह कुछ ज़्यादा उम्र पाई. फिर इनायाते परवरदिगार से और बच्चे भी पैदा हुए.

अब शौक व ज़ौक का हाल अर्ज़ करूंगा. शेख की तालीमात, कुछ सोहबत से नसीब हुई. हर रोज़ अवकाते पंजगाना के पाबंद, शब में मुराक़िब ... यानी ज़िंदगी बंदगी में गुज़र रही है. हज़रत क़िब्ला की इनायात मुझ अदना खादिम पर सब से ज़्यादा थी. अकसर अवकात मुझे शफक्कत से अपने करीब बुलाते. फिर फरमाते तू मेरा खलीफा है और खुदावंदे करीम बुज़ुर्गी अता करेगा. वह मुहब्बते मौलाई याद है जो माँ बाप से ज़्यादा शेखे कामिल में पाई. हम भी उनकी मुहब्बत में ग़र्क़. आप अकसर पान ज़्यादा खाते.

आप चाए ज़्यादा पीते, हम बगैर आप के लब लगाए के नहीं पिते. और यह हाल सिर्फ मेरा ही नहीं सब मुरीदों का रहता था. हज़रत क़िब्ला को कभी सोते हुऐ नहीं देखा. हम सो जाते तो आप सीने पर हाथ फेर कर बडे प्यार व मुहब्बत से जगाते, नसीहत की बातें और बुज़ुर्गों की हिकायात सुनाते. हमारी नींद चली जाती, वज़ू करवाते, दो रकअत अदाईगी के बाद मुराक़बे में बिठलाते, जो जो तजल्लियात नज़र आतीं उनकी खासियत और अहवाल बयान करते. दिल मुनव्वर है. उसमें जो नज़र आता हम बयान करते. कभी हम दहशत से कांप जाते, आप पुश्त पर रहते और फरमाते घबराना नहीं. अल्लाह से दुआ मांगते कि परवरदिगार मेरे मुरीद की मंज़िल आसान कर, दहशत को दूर कर और तेरा कुर्ब नसीब कर, इसको हिम्मत अता कर ताकि तेरी कुदरत देख सके. जब हम मुराकबे से बेदार होते, पूछते कि तुम ने क्या क्या देखा, क्यूँ दहशत खाए? यह वह तफसीर है जो क़ाबिले बयान नहीं. अल्लाह अल्लाह की लज़्ज़त दिल ही जाने. ज़बान आजिज़ है उसके बयान से. आँख शाहिद हैं दीदार से और हमारी सैर के हालात के लेहाज़ से फरमाते कि आइंदा ऐसा मकाम आऐगा गोया हम को ऐसा मालूम होता जैसे खुद देखे हुए हैं और हमें दिखा रहे हैं. बडी बडी रूहानी मजालिस में गुज़र होता, तरह तरह के अजाइबात नज़र आते. जो हज़रत फरमाते वही हम देखा करते. कभी कभी आस्मानों की सैर होती. फरमाते वहाँ फरिश्ते कैसे थे, उनका लिबास, उनकी इबादत कैसी है. वह आस्मान का रंग क्या था. हम ने जो देखा वही सुनाया करते. कुरबान जाऐं हुज़ूर की इनायात पर. हमारी खातिर आप ने क्या क्या तकलीफें बर्दाश्त कीं.

हुज़ूर का हुलिया शरीफ यह है : बडी बडी आंखें, ऊंची नाक, बलंद पेशानी, मयाना क़द, चहरए-मुबारक निहायत खूबसूरत. कोई एक बार देख ले तो कभी वह सूरत को ना भूले. खाना आप का बिलकुल सादा था. खादिम ने कई बार देखा है कि सूखी रोटी मिर्च की चटनी से खाते. कभी आप को किसी से किसी चीज़ की फरमाइश करते भी नहीं देखा. आप को सफेद लिबास निहायत पसंद था और खुशबू भी बेहद पसंदे खातिर थी. अकसर मजालिसे समाअ् निहायत महविय्यत और इस्तेग़राक़ में सुना करते. कभी कभी ऐसे बेखुद होते कि हम सबको परेशान कर देते. हज़रत क़िब्ला अकसर फरमाते कि मैंने पचास साल अपने मुर्शिद क़िब्ला की खिदमत की है. यह उनकी इनायत है जो बंदे को इस दर्जे पर फाइज़ किया. अल्लाहु अकबर ! खिदमत में अल्लाह तआला ने क्या क्या अज़मतें पोशीदा रखी हैं, जिसने की उसने पाया. उनकी खिदमतों के लिए निहायत पुरखुलूस क़ल्ब चाहिए. अपने को मुरीद ऐसे मुर्शिद के हवाले करदे गोया मैं नहीं हूँ, तू ही तू है. तब बात बनती है. यह मंज़िल अजीब है, इसका हुसूल निराला है. इसी लिए अब तक कोहना (पुरानी) क़ब्रों में उजाला है.

मुलाज़िमत के सिलसिले में मेरा तबादला गुलबर्गा शरीफ हुआ. यहाँ पहुँचने के बाद हमारा वही शुग्ल रहा. अकसर औकात नमाज़े इशा हज़रत ख्वाजा बंदानवाज़ क़िबला रहमतुल्लाहि अलैह की दरगाहे मुअल्ला में अदा होती. वहीं मुराकिब रहते. बाज़ औकात फज्र की नमाज़ दरगाह शाह रुक्नुद्दीन तोला रहमतुल्लाहि अलैह में अदा करते. इसी शुग्ल में शाद शाद रहते.

हज़रत शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती क़िब्ला (रह.) से मुलाकात

अब मैं वह हालात बतलाऊँगा जिसकी ज़रूरत है. गुलबर्गा शरीफ मोहल्ला हफ्त गुंबद अखवैम शेख इमाम साहब मनियार के मकान में हम रहते थे. मौसूफ एक बुज़ुर्ग के मुरीद थे. अकसर वह बुज़ुर्ग आते, इत्तेफाक से घर तशरीफ लाए. खादिम मिला. बहुत खुश हुए. नाम पूछा. खादिम ने कहा सय्यद मुहम्मद यमनी. फौरन अपने बाज़ू बिठलाया और कहने लगे सादात के

तुफैल में हम सब इंसान हैं. अगर आले बनी हाशिम ना होते तो हम सब कहाँ होते. तुम्हारे जद्द का तुफैल है, आज हम इस दर्जे पर हैं. जब उनको देखा अजीब बुज़ुर्ग हैं. जिस्म पर सिर्फ तहमद (लुँगी) है और सारा जिस्म बरहना, बिलकुल कमज़ोर बदन. और फरमाने लगे, मेरे बहुत से मुरीद हैं देहातों और शहरों में. मेरा यही काम है नेक बंदों की खिदमत करना. अकसर मुरीदों में गांव गांव फिरा करते. दूसरे साल जब तशरीफ लाए तो खुसूसन मुझे तलब फरमाया. अपनी जगह से हटे, मुझे बिठलाया. उनका अदब देख कर मेरा दिल उनकी उल्फत में मुबतिला हुआ. फिर वह चले गए. तीसरे साल फिर तशरीफ लाए. मुहब्बत व शफकत से पेश आए. हुस्ने इत्तेफाक से मेरी जानिब तवज्जोहे खास फरमाया. मियाँ ! कुछ अर्ज़ करूँ. खादिम ने कहा, फरमाइए. फरमाया

"اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَ تَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ"

(इक़रारुम बिल्लिसानि व तसदीकुम बिलक़ल्ब.)

इसके बारे में आप का क्या खयाल है? खादिम ने कहा इकरार करना ज़बान से और तसदीक करना दिल से. फरमाया : अव्वल कलमए-तय्यब पढो. खादिम ने कहा, मैं ज़ाकिर हूँ हज़ारों बार पढता हूँ और रोज़ाना यही मशगला है. हज़रत ने कहा मैंने जो कहा है वह कहो. तो मैंने बलंद आवाज़ में ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' कहा. हज़रत ने कहा : माशा अल्लाह ! जिस तरह आप ज़बान से अदा फरमाए हैं इसी तरह दिल से अदा फरमाइए. मैंने कहा दिल ही से यह सदा निकली है. कहा दिल और है ज़बान और है. और फरमाया ''मन क़ाला ला इलाहा इल्लल्लाहु अल्फा मर्रातिन ला बितहक़ीकिन फहुवा काफिरुन.'' यानी अगर हज़ार बार भी बगैर तहकीक कलमा पढे तो काफिर है. आखिर इस की तहकीक हम सब पर फर्ज़ है. मैंने जब यह सुना तो दिल में शरमाया, कोई जवाब बन ना आया. हज़रत ने कहा : जाओ, अपने शेख से पूछो और कहो कि करीमुल्लाह शाह क़ादरी व चिश्ती यूँ कहते हैं. सही है या झूठ? और फरमाया सय्यद मुहम्मद यमनी मैं इसकी तलब में कई मुर्शिदों का मुरीद हुआ हूँ. यह बहुत बडा महल है. उसको पाना अव्वल फर्ज़ है. खादिम ने कहा मुझे कुछ मुद्दत दिजीए ताकि राईचूर में मेरे

शेख मौजूद हैं, पूछ कर आऊँ और आप का जवाब अदा करूँ. फरमाया शौक से जाइए और पाइए. फिर मैं गुलबर्गा शरीफ से राईचूर आया और हज़रत सय्यद शाह नबी मुहियुद्दीन क़ादरी क़िब्ला से पूरा हाल कह सुनाया. तो फरमाया तुम इन बातों में ना जाओ. तुम्हारा ज़िक्र व शुग्ल ही काफी है जो तुम को दिया गया है. अभी तुम्हारी उम्र छोटी है, वह बडी बातें हैं. जब तुम्हारा हौसला बलंद होगा देखा जाएगा. तुम को जो बताया गया है वह काफी है. किसी की सोहबत में मत जाओ, अपना काम जारी रखो जिस से तुम्हारी ज़िंदगी, दीन व दुनिया में बहतर होगी. खादिम ने कहा, मुझे शक है मैं मुसलमान नहीं हूँ, इसका इलाज किजीए. आया वह जो कुछ कहे हैं उसका जवाब दे सकूँ. फरमाया तुम्हारा मौजूदा मुशाहिदा अच्छा है, उसको कायम रखो. मेरे पास यही जवाब है. अल्लाह अल्लाह कहते रहो, इन बातों में ना जाओ. मजबूरन गुलबर्गा शरीफ आया. उनको यहाँ के हाल से वाकिफ कराया. उस बुज़ुर्ग ने फरमाया, मियाँ ! आप खानदानी सादात हो, तुम्हारे ही घर से निकली हुई अमानत है. मैंने जो कहा है अल्लाह तआला का हुक्म और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है. पहला फर्ज़ हर मुसलमान पर फर्ज़ है जिसको जानना ज़रूरी है. देखो, ढूंढो, पाओ. इस्लाम की पांच बुनियादों में पहला फर्ज़ कलमा पढना है, दूसरा नमाज़ अदा करना, तीसरा रोज़ा रखना, चौथा ज़कात देना और पाँचवां हज को जाना है.

मुँह तो कलमा पढता है, खुदा नख्वास्ता मरते वक्त ज़बान पर फालिज हो जाए या मुँह बंद हो तो क्या हम दुनिया से बे-कलमा मुरदार जाऐं. फिर हुक्म यह है कि पढ. क्या टाइम बतलाया गया है या तादाद बतलाई गई है कि कब तक अदा करे. यह अहम फर्ज़ है जिसको हम मुसलमान मामूली फर्ज़ समझते हैं. यह इस्लाम का बडा फर्ज़ है, इस से बडा कोई फर्ज़ ना समझो वरना दुनिया से यूँ ही जाओगे, आखिरत में पछताओगे. इसी लिए हम ने अपने आप को बर्बाद करके हक को आबाद किया है. जितने अक्लमंद दुनिया में ऐसे हैं वह ज़रूर इल्म की तलब में अपनी हस्ती मिटाई, मआरिफ के आरिफ हुए, अपने को जाने और खालिक़ को पहचाने.

इसके बाद पीर व मुर्शिद क़िब्ला ने मिस्बाहुल हयात, बाब ज़ादुल

ईमान (स: १७२) पेश किया, उस में तहरीर है : ''बाद हम्दे खुदा के और नाते मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़ाहिर हुए, जो कलमा में दो बात हैं, एक 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' है, दूसरा 'मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'. जो कोई 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' तो हज़ार बार पढे और 'मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' सिद्क़ दिल से ना पढे वह काफिर है. इस वास्ते हर एक पर फर्ज़ है कि इन बातों को दिल में साबित करना और बरहक जानना, जो हकीकत में सिद्क़ दिल से ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' पढता है वह मोमिन बरहक होता है. जो कोई इन बातों को बरहक नहीं जानता वह काफिर है. अगरचे कलमा ज़बान से पढता है. जब यह मज़मून दिल नशीन हुआ दिल से रहबरे कामिल का आशिक़ हुआ.

वाकेआते बैअत

अर्ज़ किया, हुज़ूर ! खादिम आप के दस्ते मुक़द्दस पर बैअत करता है. मुझे वह असरार समझाइए और हक़ीक़ी मानों में मुसलमान बनाइए. हज़रत क़िब्ला ने कहा, तुम्हारे शेख की चिठ्ठी या इजाज़त ले आओ, देखा जाएगा. अगर आगाह ना करूँ तो मेरी बैअत वापिस. बल्कि यह राज़ जहाँ कहीं होगा आप और मैं मिल कर तलाश करेंगे. मैं फिर राईचूर हज़रत शेख की खिदमत में आया, दिल का हाल कह सुनाया. वालेदा साहेबा, मेरी बीवी, दूसरे अज़ीज़ व अक़ारिब सब सिफारिश फरमाए और खादिम ने कहा अगर आप वह राज़ व नियाज़ नहीं समझाऐंगे तो मैं खुदकुशी पर मजबूर हूँ क्यूँकर मुसलमान ज़मीन व आस्मान के बीच रह सकता है. मैं मुसलमान नहीं हूँ. वरना इजाज़त दो. आखिर मेरी फरयाद पूरी ना हूई. तमाम मुरीदों में फसाद बरपा हुआ, सब मुझसे नाराज़ होने लगे. हज़रत क़िब्ला खामोश. मैंने जानने के लिए दरख्वास्त पेश की, मुर्शिद भी खूब बेकरार हुए. हमारा हाल बेहाल. अल्लाह! आखिर क्या करूँ? मजबूरन गुलबर्गा वापिस आया. उन से सब हाल कह सुनाया. हज़रत ने कहा, खैर मैं भी अपने रहनुमाओं से इजाज़त तलब करता हूँ. इसके बाद मेरी हालत अजीब हो गई. अकसर नमाज़ अदा करता, खुशूअ व खुज़ूअ नसीब नहीं. दिल ही दिल में रोता, आखिर दिल ने मशवरा दिया, इस ज़िंदगी से मौत बेहतर है. सुना करता था कि फलाँ चीज़ खाने से मौत वाकेअ्

होती है, वह चीज़ खरीद कर अपने संदूक़ में महफूज़ रखा कि आज रात को इस्तेमाल करना चाहिए. फिर दिल में आया पीर व मुर्शिद क़िब्ला के पास जाकर आऐं. यहाँ पहुँचा तो हुज़ूर ने फरमाया आप के लिए हुक्म हो चुका है. आप बैअत यानी तालिब हो सकते हैं. फिर दिल का वह अरमान पूरा हो गया, दिल की दुनिया आबाद हो गई.

पीरे कामिल की आज़माइश

अर्ज़ किया, क्या हाज़िर करूँ? क़िब्ला ने फरमाया, फातेहा के लिए बताशे, खजूर, मिस्री और फूल लाइए. फौरी ले कर पहुँचा. फरमाया शाम में आइए. शाम में गया. फरमाए : अभी हुक्म नहीं हुआ, सुबह आइए. सुबह पहुँचा तो फरमाया शाम में आइए. इसी तरह छे दिन गुज़रे. सातवें दिन बिलकुल इरादा कर लिया कि आज रात मर जाना चाहिए. हद हो गई ! मेरा इज्राईल यही बुज़ुर्ग है जो तरसा रहा है. मेरी बीवी घर में मौजूद, मेरी हालत परेशान मगर वह मजबूर, कुछ कह नहीं सकतीं. बमुशकिल वह कहने लगीं कि अल्लाह तआला का इल्म वसीअ है, अगर यह ज़ाहिर ना करे तो क्या दुनिया में उसके जानने वाले नहीं हैं, ज़रूर हैं, हम को परेशान नहीं होना चाहिए. दिल भर आया, रोता हुआ घर से बाहर चला गया. परवरदिगार ! मुझे क्यूँ पैदा किया? पैदा किया तो मुसलमन क्यूँ ना किया? मैं मुसलमान उस वक्त हूँ समझूंगा जबकि मेरा दिल कलमए-तय्यबा अदा करेगा.

हैरत का आलम दिल पर छा गया. कभी बीवी का खयाल करता हूँ, वालिदैन राईचूर में हैं, ऐसा मालूम हो रहा है कि सब मेरे रूबरू मौजूद हैं. फिक्रे मौत और तरह तरह के तसव्वुरात में मुब्तेला है. अस्र की नमाज़ अदा की. फिर दिल ने मशवरा दिया, एक बार फिर हज़रत को देख लूँ. शब में सो जाऊंगा, फिर कहाँ हम और कहाँ हज़रत क़िब्ला. हुज़ूर अपने खलीफा मौलवी मुहम्मद हुसैन शाह क़ादरी साहब रोज़ेकारी के घर में मौजूद हैं, पहुँचा. मुझे देखते ही इर्शाद फरमाया, आप तालिब हो सकते हैं, इजाज़त हो चुकी है. फिर तो दिल ने कहा, हज़रत क़िब्ला ! हक़ीक़त में तालिब हो सकता हूँ. चूँकि सात दिन गुज़र गए हैं. मेरी हालत परवरदिगार पर रौशन है. हुज़ूर ने

दोबारा कहा, हाँ, फौरी दो रकअत शुक्राना अदा करो. वज़ू था, फौरी दो रकअत नमाज़ अदा की. अर्ज़ किया, बताशे, खजूर लाऊँ? फूल सात दिन के हैं, कुम्हला गए हैं. हुज़ूर ने कहा, तालिबे सादिक़ के सूखे फूल मेरे लिए काफी हैं, ज़रूरत नहीं. बताशे कुछ कुछ मकोडे नोश फरमाए हैं. रूबरू बैठ गया, बाअदब दो ज़ानू. हाथ में हाथ लेकर चंद आयतें पढवाए. इक़रार कर रहा हूँ और मुस्कुरा रहा हूँ. हज़रत ने पढाते हुए फरमाया, हंस रहे हो ! खूब रोओगे. दिल में शरमा गया. तालिब होने के बाद सब से सलाम अलैक, मुसाफह हुआ, रूबरू बैठ गया. मकान खाली हुआ. हज़रत हैं और खादिम ! वह असरारे आली बाहोश बाहवास समाअत किया कि अल्लाहु अकबर ! इल्मे लदुन्नी सीने में पोशीदा है. कामिलों की दलील शाहिद है. बारी तआला की आयत ﴿وَ فِیۡۤ اَنۡفُسِکُمۡ ؕ اَفَلَا تُبۡصِرُوۡنَ﴾ जिस वक्त यह नुकता समझ में आया दिल से कहा मरहबा सद मरहबा तालीमाते शेख पर. हक़ीक़त में ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' दिल के तईं (करीब) है. ज़बान आजिज़ है, दिल गोया है. इसी लिए पहला फर्ज़ कहना फर्ज़ है.

फिर क्या देखता हूँ, मुर्दा दिल ज़िंदा हुआ, बेकार बाकार हुआ, हवासे खमसा (पाँचों हवास) मरगूबे इल्मे लदुन्नी (इल्मे लदुन्नी को चाहने वाले) हुए. इसी महविय्यत में उठा, मुर्शिद क़िब्ला का तवाफ किया, कदम चूमा, हुज़ूरे वाला ने कहा, खबरदार ! होश बर दम, नज़र बर क़दम. (सांस पर होश रखो, कदम पर नज़र रखो.) मेरे क़दम ना चूमो. यह तुम्हारे ही घर की दौलत है. हादिए बरहक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह इल्म मेराज में पाया. खिलाफत का ज़रीआ हक के तालिबान को मिला. मेरे रहनुमा का इर्शाद था, पूरा हुआ. अब तुम्हारा काम है. और फरमाया, मैंने इस इल्म की तलाश में चौदह मुर्शिदों से बैअत की है. यह इल्म हज़रत मौलाना मुर्शिदना हज़रत सय्यद शाह सद्रुद्दीन क़ादरी चिश्ती सोहरवर्दी नक्शबंदी रहमतुल्लाहि अलैह करनौली से हासिल किया है. उनका इर्शाद हुआ यह इल्म सय्यद मुहम्मद यमनी को अता करो. यह मेरा बरखुरदार है. मैंने अता किया. कुरबान जाऊँ हुक्म देने वालों के. यह कौन बुज़ुर्ग हैं, हम को इसका इल्म नहीं. अल्लाह तआला उन पर अपनी रहमत नाज़िल फरमाए.

हज़रत क़िब्ला ने फरमाया, मैंने अपनी सारी उम्र तलाशे इल्म में गुज़ारी है. जब इल्म हाथ आया अपने मुर्शिद के तुफैल से आज इस दर्जे पर हूँ. यहाँ मेरे इल्म में ज़र्रा बराबर नुक्स बतला दो, अगर कोई साहबे समझ बतला दे तो मैं फिर उनका मुरीद होकर हासिल करूँगा. अब मुर्शिद व क़िब्ला की बुज़ुर्गी व अज़मत मेरे दिल से सुनिए. जिस वक्त कलमए-तय्यबा की तलक़ीन अता फरमाई दिल से कलमा, आंख से आंसू जारी हुए. मुरीद होते वक्त मुस्कुरा रहा था यह समझ कर कि यह शेख हैं और हम सय्यद, यह मुझे क्या बतलाऐंगे. सच कहा है हज़रत ख्वाजा बंदा नवाज़ क़िब्ला रहमतुल्लाहि अलैह ने जिस वक्त आप हज़रत ख्वाजा नसीरुद्दीन चिराग दहलवी रहमतुल्लाहि अलैह के पास पहुँचे, दिल में कहा मैं सय्यद हूँ और यह शेख. हालते दिल जान कर शेख ने फौरन ख्वाजा साहब से फरमाया आप सादात हैं और हम शेख. हज़रत बंदानवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह दिल में शरमाए. मुरीद होने के बाद याद आई तो खुशूअ व खुज़ूअे क़ल्ब से फरमाया, मेरी सय्यदी तुम्हारी शेखी पर से वारी. मरहबा. अज़ीज़ो ! यह वह ला क़ीमत इल्म है जिसको नसीब हुआ उसने तन मन जान हुक्मे मौला पर निसार करदी. मुर्शिद ने फरमाया, मियाँ ! जो शै आप ने संदूक में रखी है वह लाओ, मैं उसको खाऊंगा. उस वक्त मैं क्या बताऊँ, दिल कांपा, तन थर्राया. यह हुज़ूर को कैसे इल्म हुआ, किसी को इल्म नहीं, जो मेरा इरादा था. घबराया, रोने लगा. अर्ज़ किया, आप पर सब रौशन है. तो हुज़ूर ने कहा अगर आज आप को बैअत ना लेता तो आप अपना काम कर जाते. खादिम ने कहा, हाज़िर करता हूँ. इसके बाद शश जहत (छे सिम्तों) की तालीम अता फरमाई, सिफाते आला से आगाही बखशी. जो जो निकाते इल्मे सीना हैं उस से सरफराज़ फरमाया. इस इल्म के जानने वालों के अक़वाल क़ाबिले दीद और दर्से इबरत हैं. फरमाया "قَالَ عَلِيٌّ وَ مَا رَأَيْتُ شَيْئًا اِلَّا رَأَيْتُ فِيْهِ اللّٰهَ" (तर्जुमा) हज़रत अली ने फरमाया नहीं देखा कोई शै मगर उसमें अल्लाह को देखा.

"قَالَ صِدِّيْقٌ وَ مَا رَأَيْتُ شَيْئًا اِلَّا رَأَيْتُ اللّٰهَ قَبْلَهُ" (तर्जुमा) हज़रत सिद्दीक़ ने फरमाया देखा नहीं कोई शै मगर उस से पहले अल्लाह को देखा.

"قَالَ عُمَرُ ابْنُ الْخَطَّابِ وَ مَا رَأَيْتُ الْخَلْقَ اِلَّا رَأَيْتُ الْحَقَّ" (तर्जुमा) हज़रत

उमर बिन खत्ताब ने फरमाया नहीं देखा कोई शै मगर बीच शै अल्लाह को देखा.

"قَالَ عُثْمَانُ ابْنُ عَفَّان وَ مَا رَأَيْتُ شَيْئًا اِلَّا رَأَيْتُ اللّٰهَ بَعْدَهُ" (तर्जुमा) हज़रत उसमान बिन अफ्फान ने फरमाया नहीं देखा मैं कोई शै मगर देखा हर शै के पीछे अल्लाह को.

अहले तरीक़ पर वाज़ेह है. जिस वक्त सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन ने सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस्ते मुक़द्दस पर अपना दस्त रखा इल्मे अव्वलीन व आखिरीन, इल्मे ज़ाहिरीन व बातिनीन से मुस्तफीद (फैज़याब) हुए . यह अक़वाल बयान फरमाए ताकि कियामत तक उसकी लज़्ज़त बाकी रहे और रहेगी. दलील शाहिद है :

"لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ عِبَادَةَ الْعَبْدِ اِلَّا بَعْدَ مَعْرِفَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى"

(तर्जुमा) नहीं कबूल करता अल्लाह इबादत उस बंदे की जब तक ना पहचाने अल्लाह तआला को.

हज़रत ख्वाजा बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं जो तज़्किरतुल औलिया में लिखा है, ''मैंने तीन सौ तेरह मुर्शिदों के दस्त पर बैअत की. आखिर इमाम जाफर सादिक़ रदियल्लाहु अन्हू ना मिलते तो मैं काफिर का काफिर ही रहता. निहायत गौर व फिक्र का मकाम है. हम तो सिर्फ कलमए-तय्यबा को पढने ही में अपनी नजात समझे हुए हैं बल्कि पढना पढकर जानना जान कर पाना, पाकर जानना, यह बडा फर्ज़ है. अगर सिर्फ अदा करना ही काफी है तो सारी दुनिया अदा करती है. फिर सारी दुनिया मुसलमान क्यूँ नहीं कहलाती. ऐसी ऐसी बुज़ुर्ग व बरतर हस्तियाँ दुनिया में आई, इल्मे इलाही के लिए क्या क्या सख्तियाँ उठाई. अल्लाह तआला तौफीक़ दे. हज़रत मनसूर हल्लाज रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं, मेरी पचास साल उम्र हुई, मैं अब तक मुसलमान नहीं हुआ. गौर व फिक्र का मकाम है. जिस वक्त वह निकाते मुसलमानी से वाकिफ हुए आलमे इश्क में वह आलम पैदा किया जिस का सानी मुमकिन नहीं. हज़रत राबेआ बसरी रहमतुल्लाहि अलैहा फरमाती हैं मुझे सब कुछ इल्म है लेकिन तीन बातें नहीं मालूम, वह यह हैं : एक मरते वक्त कलमए-तय्यबा मुझ से अदा होगा या नहीं, दूसरी अब मैं

क्या खाऊँगी नहीं मालूम, तीसरी रोज़े कियामत नामए-आमाल सीधे हाथ में दिया जाएगा या बाऐं हाथ में. मोमिनीने आला का यह हाल है. हमारे लिए यह हिदायात मशअले राह हैं.

तज़किरए-औलिया में है, हज़रत शिबली रहमतुल्लाहि अलैह के विसाल का वक्त करीब आया तो अकाबिर मशाइखीने इज़ाम को तलब फरमाया. सब हाज़िर हुए, सब के रूबरू कहा मेरी तसदीक करो, मैं कलमा कहता हूँ 'ला इलाहा इल्लल्लाहु'. हज़रत ख्वाजा जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया, मैं आप को मुसलमान ही नहीं समझता. फिर कहा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु''. हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया, जनाज़े की नमाज़ अदा नहीं करूँगा. फिर कहा ''ला इलाहा इल्लल्लाह'. कहा मुसलमानों के कब्रस्तान में दफ्न नहीं करूँगा. फिर कहा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''. कहा शिबली रहमतुल्लाहि अलैह ने दिललगी की है. वहीं जाँबहक्क़ हुए (इंतेकाल कर गए) और इसके अलावा दूसरा जुमला ज़बान से निकलने ना पाया. कलमए-तय्यबा की अज़मत व बुज़ुर्गी जितनी अज़ीज़ हो उतनी ही बुज़ुर्गी अल्लाह तआला अता करेगा.

हज़रत जद्दे आला सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं : मैंने तलबे इल्मे "مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ" की खातिर चौदह या उस से ज़्यादा मुर्शिदों के हाथ पर बैअत किया. आखिर हज़रत शेख अबू सईद मुबारक मखज़ूमी रहमतुल्लाहि अलैह से वह असरार पाया. फिर तो मैं अपने तेरह मुर्शिदों को अपने हाथ पर मुरीद कर लिया तो मेरे मुर्शिदों ने मुझे पीराने पीर के खिताब से सरफराज़ फरमाया. उस दिन से मुझे सब पीराने पीर कहने लगे. हैरत का मकाम है कि मुरीद के पीर भी मुरीद होते हैं. वह इल्म के सदके कुरबान. जिस वक्त हज़रत ख्वाजा सय्यद मुईनुद्दीन चिश्ती संजरी रहमतुल्लाहि अलैह बग़दाद शरीफ पहुँचे दोनों बुज़ुर्गान यकजा हुए. खूब इल्मी मुज़ाहरे हुए. हुज़ूर ख्वाजा पाक ने फरमाया मुझे भी वह असरारे आली से सरफराज़ फरमाइए तो हुज़ूर ग़ौसे पाक रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया, पर्दे की ज़रूरत है. कुछ सोच कर हज़रत सय्यदना ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया, मेरे हक में

दुआ फरमाइए. हुज़ूर ने कहा भाईजान! जो कुछ आप के पीर व मुर्शिद क़िब्ला ने अता किया है वह काफी है. मेरी दुआ शामिले हाल है. तबर्रुकन हुज़ूर का जुब्बा मुबारक बग़दाद शरीफ से अजमेर शरीफ लाया गया. हर साल ज़ियारत शरीफ करते. एक मर्तबा हज़रत सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया मेरे कंधे पर कदम सरकारे नामदार मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है. मेरा कदम तमाम औलिया अल्लाह के कंधों पर है. वहाँ ज़बाने मुबारक से यह अलफाज़ अदा हुए यहाँ ख्वाजा पाक ने फौरन अपना कंधा झुका दिया. सब से पहले मेरे कंधे पर आप का कदमे मुबारक है, बाद सब के कंधों पर. हाज़िरीन ने इस हाल को दरयाफ्त फरमाया तो हुज़ूर ने कहा, तारीख याद रखो, मालूम हो जाएगा. अल्लाहु अकबर ! इन बुज़ुर्गों की बुज़ुर्गी अल्लाह तआला जाने या उसके रसूल जाने. हमा शुमा दर कुजा (यानी हमारी तुम्हारी क्या औकात है). हज़रत बहलूल दाना रहमतुल्लाहि अलैह अपने मुर्शिदे कामिल के हाथ पर बैअत फरमाए तो शेख से पूछा हुज़ूर की उम्र शरीफ क्या होगी? हुज़ूर शेख ने फरमाया तो बहलूल ने कहा हुक्म हो तो एक शेर अर्ज़ करूँ. फरमाया कहो :

चे खुश गुफ्त बहलूल फरखंदा फाल
कि मन अज़ खुदा पेश बूदम दो साल

क़ाबिले गौर अम्र (बात) है इस पर बहुत कुछ कहा गया है. अजब इशारा है, जो जाना शेख को तो वह पहचाना हज़रत ख्वाजा बंदानवाज़ गेसू दराज़ रहमतुल्लाहि अलैह गुलबर्गा शरीफ ने एक बैत (रुबाई) कही है. मुलाहेज़ा हो :

तहकीक कलमा करना सो है उसका इस्मे ज़ात
बेदार तुम यूँ रहना सो है दाइमुल सलवात
परहेज़ गैर रोज़ा है और हज और ज़कात
तुम याद रखियो कहना कबूल अल्लाह सच है बात

हज़रत कबूलुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैह की शान में यह बैत कही है. मरहबा सद मरहबा! हिदायाते आली पर हज़रत क़िब्ला बंदानवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं : मुरीद कैसा भी हो कियामत में अपने शेख

के पीछे ठहरना होगा. और फरमाते हैं : मुर्शिद अपने मुरीद को सातों आस्मान की सैर अपने कंधों पर लेकर ना कराए मुरीद मुरीद नहीं कहलाता. कामिल मुर्शिद पर फर्ज़ है मुरीद की देख भाल करे, मुरीद को चाहिए कामिल मुर्शिद की हुज़ूरी हासिल करे, तब ही यह बातें तय होती हैं. अल्लाह तौफीक अता करे.

अताए खिलाफत

इसके बाद हज़रत शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती क़िब्ला रहमतुल्लाहि अलैह ने इर्शाद फरमाया, मुझे हुक्म हुआ है कि आप को खिलाफत अता करूँ. आप तय्यार हो जाओ. खादिम ने अर्ज़ किया, हुज़ूर ! मुझे आप के मुरीदों में रहने का शर्फ काफी है. ना मैं पढा लिखा ना आलिम ना फाज़िल. एक उम्मी (गैर तालीम याफ्ता) आदमी हूँ. यह बारे अमानत कैसे बर्दाश्त करूँगा. हुज़ूर ने कहा, मेरे हुक्म की तामील करो. तीन माह तक आप गुलबर्गा शरीफ ही में कियाम पज़ीर रहे. एक दिन दो बजे दिन के फरमाया, अभी पांच बजे शाम आप की खिलाफत होगी. खादिम ने मजबूरी ज़ाहिर की. फरमाया कोई उज़्र कबूल ना होगा, फौरी जाओ इंतेज़ाम करो. मैं आप के घर आ रहा हूँ. मेरे होश जगह पर ना रहे. अल्लाह तू मदद कर. मजबूरन दोस्त अहबाब से कहा, वह सब खुश हुए. अल्लाह तआला उनकी उम्रें दराज़ करे. तीन घंटों में मुकम्मल इंतेज़ाम फरमाया. बवक्त पांच बजे शाम मशाइखीन और फुक़रा को लेकर घर तशरीफ लाए. बतारीख २४ जमादियुल आखिर १३४८ हि. मुताबिक २३ दे १३३९ फसली सब के रूबरू लिबासे साया शमला अपने जिस्मे मुबारक पर पहन कर मुझे पहनाया, खिलाफत नामा अपने दस्ते करम से लिखा, सब की दस्तखतें ली गईं, सब ने दुआऐं दीं. खिलाफत नामा दिया गया जो अब भी मौजूद है. खादिम ने अर्ज़ किया, बंदानवाज़! ना मैं दौलतमंद ना आलिम, आप ने मुझ अदना से यह मुहब्बत फरमाई है. तो फरमाया, तुम्हारा अदब पसंद आया, यही दौलत आप में काफी पाया. मेरे रहनुमा का इर्शाद हुआ, मैंने तामील की. अब आप का काम है.

हज़रत शेख की रौशन ज़मीरी

मैंने अपने बचपन में एक मर्तबा हरा शमला रंगवाकर पहना. पहनने के बाद आईना देखा. फौरी दिल में खयाल आया, हरा शमला वह पहने जो साहबे खिलाफत हो. मुझ जैसे नादान बच्चे को यह ज़ेब नहीं. फौरी बाउली पर गया, खूब धोया, फिर उसको नहीं पहना. जिस वक्त मुर्शिद क़िब्ला ने सर पर शमला रखा, फरमाया : आप ने बचपन में शमले का रंग धो डाला था. अब हम ने पुख्ता रंग चढा दिया है, अब हरगिज़ हरग़िज यह रंग ना जाएगा. मेरी दुआ शामिले हाल है. अल्लाहु अकबर ! जिस वक्त यह जुमला हुज़ूर की ज़बाने मुबारक से सुना, कहा मेरा सब कुछ हाल आप पर रौशन है. मरहबा ! ऐसे पीर के सदके ....

सादात की चादर रंग दिया , नहीं रंग में कोई फर्क ज़रा
रंगरेज़ करीमुल्लाह पीर मेरा रंग देना सिखा कर छोड दिया

फरमाया : मुलाज़िमत छोड दो. खादिम ने कहा, मेरी बीवी और बरखुरदारी मौजूद हैं, यह किस तरह परवरिश होंगे? तो क़िब्ला ने कहा, अल्लाह तआला रोज़ी पहुँचाने वाला है, मुलाज़िमत तर्क करदो. देखो कुदरत खुदा की. हिम्मत नहीं हुई. बहाने पेश करने लगा. एक मर्तबा यूनीफॉर्म पहन कर आप की खिदमत में पहुँचा तो आप मुँह फेर लिए और कहा आप फौरी नौकरी छोड दो. खादिम ने कहा, आप दुआ करो. इसके बाद आप अपने वतन चले गए. क्या देखता हूँ, एक साहब नालवार से तशरीफ लाए. मेरी सोहबत में दो तीन दिन गुज़ारने के बाद बोले आप नालवार आइए. मैं कुछ पीरभाईयाँ मिल कर नालवार आए. वह नालवार में मौजूद थे. बहुत खुश हुए. अब्दुल क़ादिर साहब नालवार और उनकी बीवी साहेबा दोनों मजबूर करके मेरे हाथ पर बैअत हुए. मैंने कहा, अभी मुरीद नहीं करता. वह हो गए. इसके बाद और भी हज़रात मुरीद हुए. सिलसिला जारी हुआ. मुरीदों ने भी मजबूर किया कि मुलाज़िमत छोड दो. हम सब आप के मुलाज़िम हैं. नालवार के मशहूर हज़रात अमीर खान साहब पायगाह, हसन खान साहब, अब्दुल करीम खान साहब वगैरा. इसके बाद हलकट्टा में मोहतरम सय्यद मखदूम हुसैनी साहब मुक़द्दम माली, यहाँ के मुल्ला लाडले साहब और अब्दुल करीम साहब

मुल्ला और हज़रत बलवाडगी में मियाँ इबादुल्लाह खान साहब वगैरा. ग़र्ज़ कि यह सब मजबूर किए चंद रोज़ के लिए हलकट्टा में रहो, फिर जाना. अल्लाह तआला की मेहरबानी, पीर व मुर्शिद क़िब्ला ने इन मुरीदों को देखा तो बहुत खुश हुए और कहा हलकट्टा जाओ, खुदा पर तवक्कुल करके गुज़ारो. मैं पहले से यही कहता था, अब यकीन आया. मौज़ा हलकट्टा मुत्तसिल वाडी जंक्शन अहलिया के साथ आ गया. चंद रोज़ के बाद तर्के मुलाज़िमत करके यहीं रिहाइश इख्तियार कर ली. मक़द्दम माली हलकट्टा का मुझ पर एहसाने अज़ीम है और उनके भाईयों ने भी मेरी हर तरह दिलजोई की और करते हैं. इसके बाद राईचूर पहुँचा. वालिदैन की कदमबोसी हासिल की, वह खुश हुए. मुर्शिदे अव्वल हज़रत क़िब्ला सय्यद शाह नबी मुहियुद्दीन क़ादरी चिश्ती मद्द ज़िल्ल- हुल आली से कदमबोसी हासिल की. सब हाल कह सुनाया. कहा अल्लाह तआला को जो मंज़ूर था वही हुआ. खादिम ने कहा, हुज़ूर आप ने मुझे इंसान बनाया. यह आप की दुआ है. खादिम से बेहद खुश रहते. वह अलताफे करीमाना याद हैं.

हुज़ूर का विसाले मुबारक ज़िला राईचूर ही में हुआ. खादिम मौजूद ना था. यह वह मुबारक हस्ती थी जिस के घर ज़िक्र व शुग्ल रहता था. तालीम व तलकीन होती थी. ११ जमादियुस सानी को संदले मुबारक हर साल एहतेमाम के साथ मनाया जाता है. साहब क़िब्ला आल व औलाद वाले हैं, बेहद मुरीदीन व खुलफा हैं. मज़ारे मुबारक अंदरून किला जामा मस्जिद ज़ियारत गाहे खास व आम है. इसी मस्जिद में मेरे जद्दे आला हज़रत दादा सय्यद मुहम्मद अबू तुराब शाह क़ादरी चिश्ती यमनी रहमतुल्लाहि अलैह और हज़रत ताया सय्यद अमीनुद्दीन शाह क़ादरी चिश्ती यमनी रहमतुल्लाहि अलैह वगेरा के मज़ारात मौजूद हैं. यह हाल सब अहले राईचूर पर रौशन है. हम बआफियत तवक्कुल बखुदा हलकट्टा में हैं. पीर व मुर्शिद शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह भी कभी कभी तशरीफ लाते और फरमाते : मैंने अपनी ज़िंदगी मुरीदों के लिए वक्फ करदी. उनकी तालीम व तलकीन के लिए फिरता हूँ. मेरे बाद उनको तालीम कौन देगा? मेरे मुरीद मोहताज भी नहीं हैं. खादिम ने अर्ज़ किया आप हमारे सरों पर सलामत रहो.

अल्लाह तआला आप की उम्र शरीफ दराज़ करे. दिल में एक किस्म की कैफिय्यत पैदा हुई. आप अपने शेख को याद करते. कसम बखुदा आंख मुबारक से इतने बडे आंसू बहते देखा. मेरी आंख मोहताज है ऐसे आंसू बहाने की. जब कभी मुँह मुबारक से बात निकलती पुरमाअना होती. आप का हुलिया-ए-मुबारक यह है.

हज़रत शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी का हुलया-ए-मुबारक

बडी बडी आंखें, ऊंची पेशानी, घनी दाढी मुबारक, मियाना क़द, हमेशा मुस्तग़रक़, जिस्मे मुबारक इतना कमज़ोर और नर्म गोया रेशा गल चुका है. जिस्म पर सिर्फ एक तहमद मआ लंगोट, सर में बाल, सारा जिस्म जुओं से पुर, कभी पानी नहाते हुए नहीं देखा. एक मर्तबा खादिम और खादिमा हुज़ूर को बेहद मजबूर किए कि आप पानी हमारे हाथ से नहाइए. बमुशकिल तय्यार हुए. पानी हस्बे मंशा तय्यार किया गया. नहाने बैठ गए. हम दोनों नहलाए. नहाने के बाद मुझे इर्शाद हुआ मेरी लंगोट धो लाओ. मैंने लंगोट धोने के लिए बगोने में डाला. क्या देखता हूँ बगोना जुओं से पुर है. अल्लाहु अकबर ! दिल ने कहा, आखिर जिस्म का क्या हाल होगा? एक मर्तबा आप ने दाढी मुबारक सफेद कागज़ पर हिलाई, हज़ारों जुओं से गोया कागज़ भरा हुआ है और अगर जूँ निकल जाती और देख लेते तो फौरन जिस्म में डाल लेते. फरमाते, यह मेरे रफीक हैं. जो कुछ हाज़िर होता नोश फरमाते, किसी दिन फरमाइश ग़िज़ा की ना करते.

आप को अकसर दर्दे शिकम रहता था. अच्छी ग़िज़ा से परहेज़ करते. अगर कोई चीज़ तय्यार करने जाते तो फौरन घर से बाहर चले जाते. खादिम को अकसर हमराह रहने का शर्फ हासिल है. फरमाते जो कुछ हाज़िर है नोश करें वरना फकीर को फक्र काफी है. किसी को तकलीफ देना हराम समझते.

हज़रत शेख की शब बेदारी और तज़किर-ए-विसाल

एक रोज़ मसरूर थे. फरमाया मियाँ ! तुम्हारी उम्र उतनी नहीं है, बातें उम्र से बडी हैं. खादिम ने सुना, दिल में कहा, अल्लाह बडी उम्र करता तो क्या अच्छा होता, वह बातें भी पाता. पशेमान देख कर कहा, देखो, कहता हूँ

सनो. मेरी इस वक्त सत्तर साल उम्र है. मैंने शादी की, अल्लाह ने एक बरखुरदार दिया जो मौजूद है. उसके बाद मेरी अहलिया का इंतेकाल हो गया. मैं उस वक्त से अब तक किसी किस्म का गुस्ल नही जानता, ना मुझे गुस्ल की हाजत हुई. यह बारीक नुकता मेरी समझ में आया. खादिम ने कहा अगर आप सोते उस वक्त आप को ख्वाब होता और ख्वाब में ज़रूर जो कुछ होता होता. फरमाया मैंने अपनी उम्र में दो सर देखे. ऐसा दिमाग कम पाया. यह अदना अमल तक़वा तहारत में पोशीदा है. बारिश, गर्मी, सर्दी में बरहना रहते. मजज़ूबिय्यत व सालिकिय्यत दोनों शान आप में मौजूद थे. मैं हलकट्टा में मौजूद हूँ. एक कार्ड दलीखंडी से आप ने लिखा. आप खत देखते ही फौरन आ जाओ. अगर आप के आने से पहले मैं मर जाऊँ तो मुझ पर फातेहा वरना ज़रूर मिलूँगा. खत पढा, मेरे हवास बेकरार हुए. उसी शाम गुलबर्गा पहुँचा. यहाँ के मुरीदों से हालात पूछे. कोई कुछ कोई कुछ कहे. फौरी चिटगुप्पा मोटर से पहुँचा. हुमनाबाद पर मोटर ठहरी. कुछ लोग होटल में मौजूद हैं. एक पीरभाई आए, फरमाए, हज़रत क़िब्ला का इंतेकाल चिटगुप्पा में हुआ है, मैं अभी सुना हूँ. खादिम सुनते ही बेहोश हो गया. जो हज़रात मौजूद थे वो समझाए. होश आया तो एक कल्यानी शरीफ के काज़ी साहब हैं, वह मुझे ऐसी हिदायतें फरमाए और कहा मुर्शिद भी कहीं मरता है. दिल मज़बूत हुआ. वह साहब ने कहा मैं भी सुना हूँ, ऐसा नहीं हुआ होगा. खैर इसी तफक्कुर (फिक्र) में चिटगुप्पा पहुँचा. आशूरखाना हुसैनी अलम में पहुँचा. क्या देखता हूँ, कोई नहीं है, सिर्फ एक पर्दा पडा हुआ है. वही आशूरखाने में अपने सर को पटक कर बेहोश हो गया. मेरे गिरने की आवाज़ से पूरा मोहल्ला आया. मैं होश में नहीं हूँ. मुझे ले जाकर हज़रत क़िब्ला के पलंग पर डाल दिए. इसके बाद होश आया तो हुज़ूर की हुज़ूरी (बारगाह) में हूँ. और वह भी बेहोश हैं. गोया सात दिन से यह हाल है. फिर हुज़ूर को भी होश आया, खादिम मिला. इसी शब तमाम चिटगुप्पा में यह अफवाह आम हुई पाशा क़ादरी आया है. हज़रत करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती होश में आए हैं. शब में बडी मजलिस हुई, ज़रूरी हिदायतें हम सब को फरमाए. खादिम ने पूछा सात दिन आप बेहोश रहे. फरमाया मुझे जहाँ जाना है वहाँ

पहुंचाया गया था. आप सब की इनायात से किसी कदर आराम है.

इसके बाद ग्यार्हवीं शरीफ का आला इंतेज़ाम फरमाया. बेहद मुरीद जमा हुए. अपने बरखुरदार अमानुल्लाह खान साहब को और हकीम मुहम्मद मस्तान साहब व दीगर हज़रात शेख चीता साहब सौदागर चीतापूर, सय्यद बहादुर मियाँ साहब सीग़ादार चीतापूर, हकीम मुहम्मद हनीफ साहब वगैरा क़िब्ला के दस्ते मुबारक पर मुरीद हुए. चंद दिन चिटगुप्पा में रहने के बाद गुलबर्गा शरीफ इरादा फरमाया. बीमारी में किसी क़द्र सिहत हुई थी. खैर! खादिम, क़िब्ला और बरखुरदार गुलबर्गा शरीफ पहुँचे. चिटगुप्पा वालों ने मुझ से वादा लिया. आप ले जा रहे हैं, फिर क़िब्ला को यहाँ लाना. चूँकि कब्र तय्यार हो चुकी थी, खुद अपनी क़ब्र में उतरे, खूब देखे, खुश हुए. एक साहब मौलवी आलिम हैद्राबादी ने कहा क़िब्ला आप को बेहतरीन जगह मिली. फरमाया, अगर मैं अपनी खुदी से क़ब्र अपनी मर्ज़ी पर बनाऊँ तो मुझे हराम है. हुक्म यह है जहाँ जगह मिले क़ब्र हो. नमाज़ में जो सूरत याद आई तिलावत करे. यह मसला वह मौलवी साहब ने सुना. कहा आप आलिमे बाअमल हैं, बेहद मुरीद हिंदू मुसलमान ने हम को खुदा हाफिज़ कहा, वह मंज़र ऐसा था गोया बाप बच्चों से जुदा हो रहा है. सब आह व ज़ार, किसी को किसी का इम्तियाज़ नहीं. गुलबर्गा शरीफ मोटर पर पहुँचे. बाझार में क़िब्ला के दोस्त अहबाब और मशाइख मिले. सब ने कहा, ऐसी हालत में आप तशरीफ लाए. फरमाया ख्वाजा बंदानवाज़ क़िब्ला रहमतुल्लाहि अलैह ने कपडे देने का वादा फरमाया था, पहनने आया हूँ. मुझे एक किस्म का दिल में शुबह पैदा हुआ, बात क्या है. खैर, मुहम्मद हुसैन शाह क़ादरी रोज़ेकारी खलीफा के घर पहुँचे. यहाँ भी ग्यार्हवीं शरीफ के फातेहा का इंतेज़ाम फरमाया.

१९ रबीउस् सानी की शब में सब मुरीदाने सादिक़ीन जमा हुए. दो बजे रात क़िब्ला और खादिम मेरे दूसरे पीरभाईयाँ शेख हुसैन साहब बारूदगर, अखवैम शेख इमाम साहब मनियार, अखवैम मुहम्मद इसमाईल साहब बादी, अखवैम गुलाम रसूल साहब खयाती बेहद अज़ीज़ रफीक पीरभाईयाँ हैं, मौजूद हैं. बाकी सब कोई तो सो गए कोई चले गए. अब वह राज़ व नियाज़

की मुकम्मल तालीम अता फरमाई. बहुत आबदीदह हुए. खास अहकामे खुदावंदी बजा लाने का अहद लिया. मुझे अपने सीन-ए-मुबारक से लिपटा लिया. खूब बेकरार हुए. फरमाया : ''मैंने आप को बहुत आज़माया, दूसरा होता तो उसका कदम डगमगा जाता. मुझे माफ करो पाशा क़ादरी. जब तक आप खुश ना हो जन्नत मुझे हराम है. तुम्हारी खुशी मेरी रूही मसर्रत है. याद रखो, जहाँ तुम रहोगे चालीस कदम पर मेरी रूह आप की निगराँ रहेगी. मैंने अल्लाह तआला से दुआ की है. मेरे बाद आप का क्या हाल होगा. सब्र इख्तियार करो, दुनिया चंद दिनों की है, दीन वसीअ (बडा) है. यहाँ की ज़िंदगी थोडी वहाँ की ज़िंदगी बहुत.'' खादिम और मौजूद पीरभाईयाँ हैरत से पूछे, आज क्या सबब है अलताफ व करम हुज़ूर का हम सभों के हाल पर ज़्यादा है. खूब अपने पीर को याद करके रोए और फरमाए : ''अगर कल मैं आप से जुदा हो जाऊँ तो मुझे चिटगुप्पा कैसे पहुंचाओगे?'' खादिम ने कहा हुज़ूर हम गरीब हैं, आप को इल्म है, कुछ ना सही हम पांचों पीरभाईयाँ अपने कंधों पर ले जाऐंगे. फरमाया मुझे उम्मीद है शरीअते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हर हालत में एहतेराम करो. जो अल्लाह के बंदे इल्मे तरीकत के तालिब हों उनकी तलब के मुताबिक इल्म अता करो.

नमाज़े फज्र अदा की. हम सब ग्यार्हवीं शरीफ के इंतेज़ाम में मसरूफ हुए. दो बजे दिन आप ने अपने हाथ पर चंद हज़रात को बैअत ली. तनफ्फुस ज़्यादा हो रहा था (सांस तेज़ तेज़ चल रही थी.) मिज़ाज का कुछ और ही आलम था. खादिम ने कहा हुज़ूर तलकीन अता करने में तकलीफ होगी. फरमाया मुझ पर फर्ज़ है, चाहे मेरी सांस निकल जाए. तलकीन में हम सब शरीक हुए और एक ग़ज़ल लिखी. हाज़िरीन को सब्र व शुक्र दम ब दम याद से ग़फलत ना करने की हिदायत फरमाई. बार बार फरमाते : अगर मेरा कोई कसूर हो माफ करो. खादिम ने कहा, ''आखिर मुआमला क्या है? सच बताओ, हम सब को छोड कर आप जाओगे.'' पूरा घर मातम कदह बन गया. वह हिदायतें और शफक़तें याद कर करके हम सब बेकरार हुए. मगरिब के वक्त फरमाया आप नमाज़े मगरिब अदा करके जल्द आओ. खादिम फर्ज़ नमाज़ अदा कर चुका, सुन्नत अदा कर रहा था. किसी साहब ने पुकारा, पाशा

क़ादरी जल्द आओ. खादिम दौडा. क्या देखता हूँ कि आप लेटे हुए हैं. तमाम मुरीदीन अतराफ घेरे हुए हैं. खादिम ने चीख मारी, हुज़ूर खादिम का क्या हाल होगा? फौरी मुँह मुबारक क़िब्ला की तरफ था, सीधा किया, तबस्सुम भरे नज़रों से देखा. २० रबीउस्सानी बाद नमाज़े मगरिब जसदे खाकी से जसदे रूही को लेकर जहाँ से आए थे वहाँ पहुँच गए. इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन.

एक अजीब हालत हम सब की थी. क्यूँ ना हो. हादी-ए-ज़माँ मकाँ से लामकाँ "مُوْتُوْا قَبْلَ اَنْ تَمُوْتُوْا" (मर जाओ मरने से पहले वाली कैफिय्यत) पहले से थे. अब ज़ाइक़तुल मौत. हाँ वहाँ मौला सब का, हाल सब पर रौशन. मैंने कदमों पर सर रख दिया. दिल ने मशवरा दिया, दो दरिया हम झेला हम जीवन बह रहे थे, रोक दिया, बडी हिम्मत व इस्तेक़लाल सब्रे अज़ीम से निकल गया. सब चाहने वालों को खबर दिया. पीर व मुर्शिद क़िब्ला जहाँ से आए थे वहाँ चल बसे. इसके बाद वह जुमला याद आया. ख्वाजा-ए-पाक मुझ बरहनह को कपडे देने का वादा फरमाऐ थे पहनने आया हूँ.

मेरे चारों पीरभाईयों ने कफन अता किया. क़ाबिले ज़िक्र अखवैम अता मुहम्मद, क़ासिम अली साहब गुलबर्ग्वी ने अपनी दुकान बारह बजे तक बंद ना की. मेरे मौला के लिए जो जो उम्दा से उम्दा चीज़ें थीं अता कीं. अल्लाह तआला अज्रे अज़ीम दे. उनका यह कारनामा दिल पर कंदह (नक्श) है. आशिके सादिक, मुखलिस मोमिन ऐसे होते हैं. दो बजे रात हज़रत क़िब्ला पेश इमाम मस्जिद मार्केट मुहम्मद अब्दुल करीम शाह क़ादरी साहब ने गुस्ल दिया. जनाज़ए-मुबारक कंधों पर मस्जिद अंदरूने शहर मार्केट लाया गया. नमाज़े जनाज़ा खुद हज़रत क़िब्ला पेश इमाम साहब ने अदा की. इस क़दर हज़रात जनाज़े में शरीक हुए कि मस्जिद के बाहर सफें थीं. बाद फातेहा मेरी रूह चीख उठी. यह सब मखलूके खुदा हैं या खालिक के भेजे हुए फरिश्ते. हज़रत पेश इमाम साहब ने मेरी ज़बान बंद कर दी. कहा, खबरदार, खामोश! अल्लाह तआला बेहतर जानता है. फिर सब हाज़िरीन से इजाज़त लेकर आह आह करते हुए तीस चालीस मुरीदीन हम सब चिटगुप्पा के लिए बज़रीए मोटर रवाना हुए. चिटगुप्पा ग्यारह बजे दिन पहुँचे. वहा मुत्तलअ कर दिया था.

वादा क़िब्ला को लाने का था, पूरा कर रहा हूँ. इंतेज़ार में हिंदू मुसलमानान मुरीदीन, मुहिब्बीन तमाम मौजूद थे. मोहल्ला हुसैनी अलम आशूरखाना में जनाज़ा मुबारक रखा गया. दोबारा दीदार यहाँ के हज़रात को कराया, कुरआन ख्वानी हुई. नमाज़े अस्र के बाद २१ रबीउल आखिर १३५२ हि. मैदान ग़ाज़ी शहीद मखदूम सालार हुसैनी रहमतुल्लाहि अलैह के क़ब्र शरीफ तय्यार ही थी, सुपुर्दे खाक करके हमेशा के लिए रोता हुआ मौजूद हूँ. हुज़ूर पीर व मुर्शिद क़िब्ला का साले पैदाइश १२७२ हि. है. अस्सी साल की उम्र में आप ने विसाल फरमाया. २३ रबीउल आखिर १३५२ को ज़ियारत शरीफ बाद ज़ियारत हसबुल हुक्म हुज़ूर के साहबज़ादे को खिलाफते क़ादरीया आलिया अता किया. उनका नाम अमानुल्लाह शाह क़ादरी रखा. दूसरे हकीम मुहम्मद मस्तान शाह क़ादरी को खिलाफते क़ादरीया आलिया अता किया. मौसूफ की जितनी भी तारीफ लिखूँ कम है. अल्लाह तआला उनको, उनकी आल औलाद को हमेशा हमेशा खुश व खुर्रम रखे.

यहाँ बेहद मुरीदीन हैं, बेहद सामान क़िब्ला का था, उनके फर्ज़ंद के हवाले किया गया. तमाम हाज़िरीन खुलफा ने हज़रत क़िब्ला की बेहतरीन कमली मेरे सर पर रखी. खादिम ने कहा, आप सब दुआ करो, मेरे इश्क में, फहम में, मेरे मुरीदों में इस कमली की बुज़ुर्गी व अज़मत रहे. हर साल उर्स बाअज़मत मनाया जाता है. जाली लोहे की तकरीबन ढाई हज़ार रूपये में तय्यार हुई. एक बुज़ुर्ग लोटन शाह साहब दूसरे क़िब्ला की मज़ार दोनों एक ही जाली में आराम करते हैं. एक शेर .....

जानिबे मगरिब लोटन शाह लेटे मशरिक़ करीमा सजाई
दासी क़दीर इल्म सीना बा सीना मुर्शद नबी जी की जाई
करीमा जाली सब्ज़ रंगवाई

साहबज़ादी हाफिज़ा बीबी का ज़िक्रे खैर

बरखुरदारी हाफिज़ा बीबी भी हज़रत क़िब्ला की मुरीद थीं. उनका ज़िक्र व शुग्ल अच्छा, निहायत लतीफ क़ल्ब. तकरीबन तेरह साल की उम्र थी, बुखार से अलील हुई. मैं उस वक्त मौजूद नहीं था. जब आ गया तो खुद कहने लगीं, बावा जान मैं जहाँ से आई हुँ वहाँ जाऊँगी. आप मेरी क़ब्र खोल कर देख लेना कहीं आप का नमक गल सड ना गया हो. यह अलफाज़ सुनते ही दिल पर वहशत तारी हुई. क्या देखता हूँ कि बुखार रोज़ाना तरक्की पर है. इलाज से कुछ फायदा नहीं हो रहा है. आखिर तेरह्वीं रात बारह बजे शब १८ ज़ीक़अदा को इंतेकाल कर गई. खुदावंदे करीम व कारसाज़ की कुदरत में किस को दखल है. और हम सब के दिल पर जो कुछ गुज़री वह अल्लाह तआला पर रौशन है. हिंदू मुसलमान सब मुरीदों ने मिल कर मौज़ा हलकट्टा अपने ही खेत में १९ ज़ीक़अदा बवक्त पांच बजे शाम दफ्न किए. फिर इसकी इत्तेला वालिदैन और पीर व मुर्शिद क़िब्ला को की गई. वालिदैन हलकट्टा शरीफ आए. वालिदा साहेबा ने फरमाया हम को इस वाकेए की बिलकुल खबर नहीं. यह तुम्हारा माल नहीं था, तुम ने कैसे दफ्न किया. सब अज़ीज़ों का मातम. फिर वालिदा साहेबा से खादिम ने कहा कि बरखुरदारी फिर क़ब्र खोल कर देख लो कह गई है. इंतेज़ार करो, चालीस दन तक. फिर खुदा की कुदरत देखेंगे.

हज़रत ख्वाजा बंदानवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं : एक बार अल्लाह तआला ने अपने करम से जिस्म अता फरमाया है. अगर उसकी हिफाज़त ना की जाए तो दोबारा फिर उठना है. उस वक्त फिर जिस्म बनाया जाएगा. उसकी उजरत देनी होगी. इसी लिए उस की हिफाज़त ज़रूरी है. एक मुरीद ने अर्ज़ किया कि उसकी हिफाज़त कैसे की जाए? तो हुज़ूर ने फरमाया सिर्फ अक्ले हलाल (हलाल खाना), सिद्के मक़ाल (सच कहना), दरूने दिल अल्लाह अल्लाह कहने से महफूज़ रहता है जिसका तजुर्बा सिद्क़ व सफा को हासिल है. उंतालीसवें दिन बरखुरदारी की क़ब्र बनवाने मिट्टी हटाई गई तो बेहतरीन संगे सीलू से घर महफूज़ पाया गया. फिर ऊपर की सिल उठाई गई तो क्या देखते हैं, कुदरत खुदा की, खुश्बू फैल गई और सारा जिस्म इस

खुश्बू से तर है. सूरत मरहबा पहले से बेहतर पाई गई. बेहिसाब हज़रात हिंदू व मुसलमानों ने देखा. खुदा की कुदरत के सदके जाऐं. वालिदा साहेबा व बरखुरदारी की वालिदा और बहुत सी औरतों ने भी देखा. सब बजाए रोने के दरूद पढने लगे. ग्यारह बजे दिन के फिर क़ब्र बंद कर दी गई और नमाज़े जनाज़ा दोबारा अदा की गई. शेर ....

चलो मदीना चलो मदीना मज़ारे अतहर को देख लेंगे
लेहद में ज़िंदा हैं शाहे वाला चलो पैम्बर को देख लेंगे

ज़र्रे ऐसे हों तो आफ्ताब का क्या कहना. फिर तो सब मुरीदीन व मोतक़िदीन ने दूसरे साल संदल व उर्स का सिलसिला कायम किया. बहुत से हज़रात इस कारे खैर में हर साल हिस्सा लेते हैं. मेरी तवक्कुल ज़िंदगी. उन सब के करम का दिल मशकूर है.

अल्लाह तआला ने अब तक बारह बच्चे दिए जिस में से ९ बच्चे ले लिए. अब तीन मौजूद हैं :

बडी साहबज़ादीः सय्यद साबिर वली शाहक़ादरी हैद्राबादी से मनसूब है.

छोटी साहबज़ादी : मुहम्मद अब्दुल करीम शाह क़ादरी (आधूनी) से मनसूब है.

तीसरे एक बरखुरदार जिनका नाम हज़रत वालिद साहब क़िब्ला ने उनके नाना साहब के नाम पर सय्यद इब्राहीम हसन यमनी रखा, यह होनहार सब की दुआओं का नतीजा है. शेर :

मेरा मुझ में कुछ नहीं है जो कुछ है सो तेरा
तेरा तुझ को सौंप देने में क्या जाता है मेरा

बरखुरदारी के मज़ार के करीब एक बाउली हम चौक दस गज़ की तामीर कर दी गई है. इसी बाउली (कुँवा) पर एक बेहतरीन सराए भी बनवाई गई है ताकि ज़ाइरीन को तकलीफ ना हो. इस कारे खैर में बहुत से हज़रात ने हिस्सा लिया जिसका अज्रे अज़ीम इन्हें कियामत तक मिलता रहेगा. यही खिदमते खल्क़ है. यह मकाम अतराफ व अकनाफ में मशहूर है. क्यूँ ना हो, तवक्कुले तामीर जिस का खुदा खुद मुहाफिज़ है. मौज़ा हलकट्टा में हाफिज़ा बाउली के नाम से यह बाउली मशहूर है.

रोज़ा-ए-करीमी (चिटगुप्पा शरीफ)

सदीयों से सरज़मीने दकन हैद्राबाद खुदा परस्तों और साहिबाने बातिन की आमाजगाह रही है. यहाँ कितने ही बे नाम व नमूद आफताब व माहताब ने अपने जलवे बिखेरे और मेहबूबे हकीकी से जा मिले जिन पर ज़माने के इंकेलाब ने ना कोई असर किया ना सल्तनतों के जाह व जलाल से इन बरगज़ीदह हस्तीयों की इज़्ज़त व अज़मत में कोई फर्क आया.

हरगिज़ नमीरद आँ कि दिलश ज़िंदा शुद बइश्क
सब्त अस्त बर जरीदा-ए-आलम दवामे मा

जिनकी शोहरत हुई उनपर तो सब की निगाहें पडती हैं लेकिन गोशा-ए-गुमनामी में खुदा जाने ऐसे कितने बुज़ुर्गों ने खुद को अवाम के निगाह से पोशीदा रखा है.

मेअमारे ज़माना वह भी तो हैं
तारीख में जिनके नाम नहीं

ऐसी ही एक बरगज़ीदह हस्ती मेरे पीर व मुर्शिद हज़रत शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी अलचिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह की भी है जिनकी याद आज ४६ साल से अहले सिलसिला बाहुस्ने अकीदत मनाते चले आ रहे हैं. चुनांचे खादिम ने हक्के गुलामी अदा करते हुए अहले सिलसिला की मदद से माहे मुहर्रम १३९३ हि. मुताबिक १९७३ में दरगाहे वाला पर चौखंडी व छत की तामीर की जो आज सरज़मीने चिटगुप्पा ही नहीं बल्कि तमाम अहले निसबत व अकीदत के लिए मरकज़े निगाह है. दौराने तामीर में जिन मरहलों से खादिम दो चार हुआ वह क़ाबिले बयान नहीं. यह इश्क ही था जो सूरते तकमील इख्तियार कर गया. तवक्कुल ज़िंदगी जिस हद तक असबाब बने काम होता रहा. हर शब आह व ज़ारी दस्ते दुआ दराज़ किया, मेरा मौला मुझ ज़ईफ (कमज़ोर) के लिए राहे यकीन हमवार करता चला गया. मौसम ऐसा कि दुनिया तंगी-ए-आब के सबब कतरा कतरा पानी के लिए तरस रही थी. ऐसे दुशवार कुन हालात में रोज़ा-ए-करीमी शाने करीमी बन कर उभरा.

Astana-e-Quadeeriya
Halkatta Sharif, Wadi

बलंद परवाज़ मुर्शिद

(अज़ मौलवी दहली रसूल नंबर, सफर व रबीउल अव्वल १३५४ हि.)

असरारे इरफान और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते इंसानी का हर दायरा मुकम्मल है. जहाँ आपने आम्माए-अहले आलम (दुनिया के आम लोगों) को शरीअते इस्लामीया की कामिल तालीम देकर उस्तादे जहाँ और बेहतरीन खलाइक़ बना दिया वहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख्वास को तरीकत की तालीम भी दी और रूहानिय्यत व इरफान के मुशाहेदात (दीदार) भी कराए. ﴿وَ فِىٓ اَنۡفُسِكُمۡ اَفَلَا تُبۡصِرُوۡنَ﴾ की अमली तफसीरें भी समझाए और औलिया बना दिया ताकि यह सिलसिला ता कयामे कयामत कायम रह कर इसलाहे उम्मत का काम करता रहे और नाइबे रसूल की हैसिय्यत से सूफिया हर ज़रूरत के वक्त मैदान में आऐं और वही करके दिखाऐं जो अंबिया-ए-बनी इस्राईल करते रहे. आप ने खिलाफत हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू, हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हू और दीगर सहाबा को भी अता फरमाई. हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया : "اَنَا مَدِيۡنَةُ الۡعِلۡمِ وَ عَلِىٌّ بَابُهَا". (यानी मैं इल्म का शहर हूँ और अली उस शहर का दरवाज़ा है.)

मारिफत के राज़ और इरफान के असरार की तालीम खास अहलिय्यत और सलाहिय्यत देख कर ख्वास को निहायत पोशीदा तौर पर दी जाती थी. उसकी मजालिस जुदागाना और राज़दाराना होती थीं.

मजलिसे इरफान और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

एक रोज़ इसी किस्म की मजलिस जारी थी जिसमें हज़रात शाह मुरतज़ा अली, अबूबकर, उस्मान, अबू हुरैरह, अब्दुल्लाह बिन मसऊद, खालिद, बिलाल रदियल्लाहु अन्हुम और दीगर सुखन शनास (बातों की गहराई समझने वाले) सहाबा तशरीफ फरमा थे. रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पीरे तरीकत और मुर्शिदे हक़ीक़त की हैसिय्यत से सज्जादे (मुसल्ले)

पर बैठे हुए हक़ाइक़े मारिफत, असरारे इरफान और पोशीदा रुमुज़ खास मेहविय्यत और जोश के साथ बयान फरमा रहे थे, पूरी मेहफिल अनवार का मतला बनी हुई थी. तजल्लियात परतवफिगन थे, अजीब कैफ था और अजब रंग. इतने में हज़रत उमर फारूक़ रदियल्लाहु अन्हू तशरीफ लाए. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खामोश हो गए. लोग हैरत ज़दा हुए कि शायद यह हक़ाइक़ असरारे रब्बानी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हू को बताना नहीं चाहते. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम समझ गए और फरमाया यह बात नहीं कि मैं उमर से कुछ छिपाना चाहता हूँ मगर दूध पीते बच्चे के लिए गोश्त और हलवा नुकसान करता है. जब बच्चा बालिग हो जाता है तो सब कुछ खा सकता है. (मुईनुल अरवाह, सः १७६)

वाज़ेह रहे कि उस वक्त उमर फारूक रदियल्लाहु अन्हू की रूहानी तालीम की इब्तेदा थी. आप की तालीम बाद को मुकम्मल हुई. नीज़ वह पीर कितनी गलती करते हैं जो मुब्तदीयों (नौसिखीयों) को नहीं बल्कि नाअहलों के सामने असरार बयान करना शुरू कर देते हैं. इस से शरीअते ग़र्रा (शरीफा) को नुकसान पहुँता है और जब राज़ की बात बाहर जाएगी नुकसान पहुँचेगा.

हज़रत उमर फारूक़ रदियल्लाहु अन्हू की तालीम और रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

इसके बाद इसी मजलिस में हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहु अन्हू को आगे तालीम देना शुरू की. हम जानते हैं कि क़ारईन मौलवी में पौने सौ फीसदी भी ऐसे ना निकलेंगे जो इसे भी समझ लें. लेकिन उनवान के तेहत उनवान की बातें बयान करना ज़रूरी है. अगर इन का एक भी समझने वाला निकल आया तो सई रायगाँ (कोशिश बेकार) ना गई. सरशार हो जाईएगा. यह बाब अवाम के लिए है, यही नहीं अहले नज़र और अहले हल्ल के लिए है. बेहरकैफ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "مَنْ عَرَفَ اللّٰهَ لَا يَقُوْلُ 'اَللّٰهُ' وَ مَنْ يَقُوْلُ 'اَللّٰهُ' لَا عَرَفَ اللّٰهَ" यानी हर कि शनाख्त अल्लाह नगोयद अल्लाह और हर कि बगुफ्त अल्लाह ना शनाख्त अल्लाह रा. (यानी

जिसने अल्लाह को पहचान लिया वह 'अल्लाह' नहीं कहता और जिसने 'अल्लाह' कहा उसने अल्लाह को पहचाना ही नहीं.) बच्चा जब तक बाप के रत्बे से वाकिफ नहीं होता उसी वक्त तक उसका नाम लेता है. उसके बाद अदब नाम लेने से बाज़ रखता है. कौनसा ऐसा बेटा है जो बाप के सामने बार बार उसका नाम लेकर बात करे. हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हू ने सवाल किया कि यह क्या शनाख्त हुई कि बंदा आका का नाम ना ले और उसे याद ना करे. फरमाया : अल्लाह तआला ने फरमाया : ﴿وَ هُوَ مَعَكُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ﴾ उमर ! जो शख्स अपने आका के साथ हो और उसे देख रहा हो उसका याद करना क्या मायने रखता है. पूछा : या रसूलल्लाह! खुदा हमराह कहाँ है? फरमाया :

"اِنَّ اللّٰهَ فِىْ قُلُوْبِ الْعِبَادِ"

यानी अल्लाह बंदों के दिलों में मौजूद है.

पूछाः बंदा कहाँ है? फरमायाः

"وَ هُوَ الْاِنْسَانُ"

लेकिन उमर ज़हन नशीन (याद) कर ले कि दिल की दो नौअ् (किस्में) हैं : एक क़ल्बे मजाज़ी, दूसरा क़ल्बे हकीकी. क़ल्बे हकीकी वह दिल है जो ना बजानिबे चप (बाऐं सिम्त) है ना बजानिबे रास्त (दाऐं), ना तहत (नीचे) है ना फौक़ (ऊपर), ना दूर है ना नज़दीक.

ज़िक्रे खफी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

लेकिन मुर्शिदे कामिल के इर्शाद के बगैर इसे कोई समझ ही नहीं सकता. हकीकत में कुर्बे रब्बानी पर यह चीज़ हासिल होती है.

'قُلُوْبُ الْمُؤْمِنِيْنَ عَرْشُ اللّٰهِ تَعَالٰى قَلْبُ الْمُؤْمِنِ حَاضِرَةٌ مِنْ ذِكْرٍ كَثِيْرٍ فَهُوَ حَىٌّ'

यानी मोमिनों का क़ल्ब खुदाए बरतर का अर्श है और मोमिन का क़ल्ब ज़्यादा ज़िक्र व शुग्ल में मसरूफ रहने से ज़िंदा हो जाता है. यह मकाम मकामे ज़िक्रे खफी है. हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हू ने फिर सवाल किया : मोमिन और मुसलमान में क्या फर्क है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने फरमाया :

'لَيْسَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَجْتَمِعُوْنَ فِى الْمَسَاجِدِ وَ يَقُوْلُوْنَ لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ عَلَى الرَّسْمِ'

जो लोग मस्जिदों में जमा होकर सिर्फ रस्मी तौर पर कलमा पढते हैं वह मोमिन नहीं हैं. ऐ उमर ! रस्मी तौर पर कलमा पढने वाले हकीकत में ईमान से बेखबर हैं. वह बज़ाहिर मोमिन बल्कि मुनाफिक़ हैं. इस लिए कि ज़बाने ज़ाहिरी से तो ''ला इलाहा इल्लल्लाहु'' कहते हैं लेकिन हकीकत से नावाकिफ हैं. नहीं जानते कि कलमा क्या है, उसका मकसूद क्या है, मतलब क्या है. इन माअनों में 'ला इलाहा' कहता है कि हैं और नहीं है कहते हैं और अखीर में हस्त (यानी है). इस तरह वहम व शक में पड जाते हैं जो ऐन (सरासर) कुफ्र है. रस्मी कलमा पढने वाला अगरचे ज़बान के सिवा और सिवाए ज़बानी जमा खर्च कुछ नहीं जानते कि किस की नफी कर रहे हैं और किस का इसबात. (तालीमे गौसीया, सः १२९)

तालीमे कलमा और रसुले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

हज़रत उमर फारूक़ रदियल्लाहु अन्हू ने पूछा : या रसूलल्लाह सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ! फिर कलमा क्या है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हक सुबहानहू व तआला के सिवा कोई मौजूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़हूरे खुदा हैं. इस लिए चाहिए कि बंदा मासिवा अल्लाह के नफी करे और ज़ाते अहदिय्यत को हर चीज़ और हर जगह में साबित करार दे. अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ﴾

यानी हर जा कि ऊ आरीद पस हमाँजा रूए खुदा अस्त. (मफहूमः जहाँ कहीं तुम अपना चहरा करोगे पस वहाँ अल्लाह है.) ऐ उमर ! जब बंदा अपनी सीफात की नफी और ज़ाते अल्लाह का इसबात करे तो वह दर्जा-ए-निहायत पर पहुंचेगा. और ''مَنْ عَـرَفَ رَبَّـهٗ كَلَا لِسَـانَـهٗ'' की मंज़िल में आ जाएगा जो अपने रब को पहचान लेता है उसकी ज़बान बंद हो जाती है और यादे अल्लाह की वादी से आगे बढ जाएगा. ऐ उमर ! यकीन रख और खूब समझ ले कि

जब तक सालिक अपनी नफी ना करे यादे अल्लाह से ना गुज़रे वह उस वक्त तक वहदत की मंज़िल में नहीं आता, दुई में पडा रहता है और दुई ऐन (सरासर) शिर्क व कुफ्र है. हकीकी कल्मे का यही मतलब है. इसी मजलिस में आप ने नमाज़, रोज़ा और हज व ज़कात की हकीकत पर आरिफाना नज़र डाली और उसके हकाइक भी बयान फरमाए. बशर्ते ज़रूरत फिर रौशनी डाली जाएगी.

तालीमे शहूद और रसुले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

यह तालीम मदरसा जैसी तालीम ना थी. जो कहा जाता था वह दिखाया भी जाता था. अक्ली चीज़ ना थी, ऐनी थी. यह कल्मे की तालीम थी. यही जो तसव्वुफ की आला सानवी का ऐनी दर्स है. इसके बाद जबरूत और लाहूत की ऐनी मंज़िल आती है. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम की इब्तेदा गारे हिरा में हुई और तकमील मेराज में हुई. यह इरफान ही के कमाल के समरात (फल) और करिश्मा कारीयाँ थीं कि बादशाही में भी फक़ीरी की. दुनिया को खिलाया और भूके सोए, मखलूक को बांटा और बेटी मुअख्खर रही. रात रात भर मेहविय्यत व इस्तेगराक में खडे रहते. यह इरफान व विलायत इतनी बडी चीज़ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिवा तमाम अंबिया को इंतेहा में यह दौलत अता हुई है, आप को इब्तेदा ही में मिल गई है. ज़ाहिरबीं (ज़ाहिर देखने वाले) यह समझे हैं और ना समझ सकते हैं. वरना वह देख कर फिर और कुछ देखने की आरज़ू ही बाकी नहीं रहती. जिस ने उसे देख लिया फिर वह किसे देख सकता है. अल्लाह तआला मुराद मंदों को बामुराद करे.

(अज़ मौलवी दहली, रसूल नंबर, सफर व रबीऊल अव्वल १३५४ हि.)

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

रिसाल-ए-‘मन अरफा’

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ اَلْفَقْرُ فَخْرِیُ وَ الْفَقْرُ مِنِّیُ.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیُ نَوَّرَ قُلُوْبَ الْعَارِفِیْنَ بِنُوْرِ مَعْرِفَتِهٖ وَ الْفُرْقَانِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ

عَلٰی سَیِّدِ الْاِنْسِ وَ الْجَانِّ مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ ذِی الْفَضْلِ وَ الْاِحْسَانِ

صَلٰوةً وَّ سَلَامًا دَائِمًا اَبَدًا.

अम्मा बाद! मुहिब्बाने सादिकीन, मुरीदाने वासिकीन व अहले नज़र नाज़िरीन पर वाज़ेह हो कि खादिम अपने शेख हज़रत मौलाना व मुर्शिदुना शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह से जो असरार राज़ व नियाज़ पाया उसको मिन व अन पेश करूँगा. जद्दे आला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कमाई मेराज शरीफ से लाई हुई बरकतें इरफानी शौक व ज़ौक रखने वालों में लुटाऊँगा. दाना (समझदार) खुश होंगे नादान तंज़ करेंगे. मेरे लिए दोनों भी मरगूब (पसंदीदा) हैं. यह वह इल्म है, अव्वल व आखिर, ज़ाहिर बातिन मौजूद ही मौजूद है. पहले अपने बूद (हस्ती) का यकीन होना फिर तो माबूद ही माबूद है. हज़रत मीर हयात क़िब्ला का शेर मुलाहेज़ा हो :

आप होते पुर मुनज़्ज़ह गैब से
है निकाला सर के तई हर जेब से

‘अलइल्मु नुक़ततुन’ नुकता शनास ज़रूर जानते हैं कि जानना इल्मन फर्ज़ है. ‘‘अलिफ, लाम, मीम, ज़ालिकल किताब’’. मुक़त्तआत के मायने

अल्लाह तआला जानते हैं. किताब को जानना हम पर फर्ज़ है.

कुरआने करीम से सब वाक़िफ हैं. उम्मुल कुरआन तिलावतुल वुजूद जो रब्बे मेहरबान के पास से आई हुई किताब है, उसको पहचानना इल्मन फर्ज़ है. जब तक अपनी किताब की लज़्ज़त हासिल ना होगी उन्हें कुछ मयस्सर ना आएगा. हज़रते अली कर्रमल्लाहु वजहहु का क़ौल ''मन अरफा रब्बहू फक़द अरफा रब्बहू'' की यही तफसीर है. मीर हयात रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं :

लफ्ज़ मायना मिल के एक इंसान है
यानी दोनों मिल के एक कुरआन है

ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी क़दीर,
हलकट्टा शरीफ, निज़्द वाडी जंक्शन

तामीरे हज़रत आदम अलैहिस् सलाम बफैज़े तसबीह

ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह

रावियाने मोअतबर से रिवायत है कि जब हज़रत आदम अलैहिस् सलाम की खिलाफत के वास्ते इरादए-इलाही हुआ आयते करीमा :

﴿اِنِّیۡ جَاعِلٌ فِی الۡاَرۡضِ خَلِیۡفَۃً﴾

के मुताबिक और ज़हूरे रियासत बनी आदम (इंसान की सरदारी के ज़हूर) के बारे में (इरादए-इलाही) हुआ तब हज़रत इज़्राईल अलैहिस् सलाम को हुक्म हुआ कि एक मुठ्ठी खाक हर किस्म की सुर्ख और सफेद और सियाह ज़मीन से लाऐं. हज़रत इज़्राईल अलैहिस् सलाम खुदा के हुक्म से एक मुठ्ठी खाक रंगारंग की तमाम रूए ज़मीन से जमा करके लाए और अल्लाह के हुक्म के मुताबिक मक्का और ताइफ के दरमियान रखी और अल्लाह तआला ने बाराने रहमत (बारिश) उस मिट्टी पर बरसाया. और अपनी कुदरते कामिला से हज़रत आदम का पुतला उस मिट्टी के खमीर से बनाया. और चालीस (४०) बरस तक वह क़ालिबे बेजान (बेजान जिस्म) पडा रहा जब इनायते इलाही ने चाहा कि सितार-ए-इकबाल हज़रते आदम अलैहिस् सलाम का रौशन और मर्तब-ए-शराफत बनी आदम तमाम मखलूक पर ज़ाहिर हो.

(क़ससुल अंबिया, जनवरी १९८८, सः १५)

अर्श व कुर्सी, ज़मीन व आसमान वगैरा चार उनसुर मुकाबला में वहदत के चार एतेबार के हैं चार एतेबार रूह के यह हैं : अक्ले कुल, नफ्से कुल, तबीअते कुल, शक्ले कुल. नफ्से मुतमइन्नह तअल्लुक़ रखता है आतिश से, नफ्से मुलहिमह तअल्लुक़ रखता है पानी से, नफ्से लव्वामह तअल्लुक़ रखता है हवा से, नफ्से अम्मारह तअल्लुक़ रखता है खाक से. इसीतरह खतरए-रहमानी, खतरए-शैतानी, खतरए-मलकी, खतरए-नफ्सानी तअल्लुक़ रखते हैं इन चार चीज़ों से और तअल्लुक़ नफ्स का खाक से और तअल्लुक पानी का अक्ल से और हवा का रूह से और आतिश का इश्क से. रंग खाक का ज़र्द, मज़ा उसका शोर (नमकीन), रंग पानी का सुर्ख, मज़ा

उसका शीरीन, रंग हवा का सब्ज़, मज़ा उसका तुर्श (कडवा), रंग आतिश का सियाह, मज़ा उसका तेज़. चंद ने रंग उसका सफेद लिखे हैं.
(बुरहानुल हकाइक, मरतब-ए-शशुम मरतब-ए-आलमे अजसाम, सः ८०)

ऐ आरिफ जान! अल्लाह तआला ने पांच अनासिर बनाए हैं : मिट्टी, पानी, आग, हवा, खाक. यह पांचों अनासिर के पांच रंग हैं. मिट्टी का रंग पीला, पानी का रंग लाल, आतिश का रंग काला, हवा का रंग हरा, खाक का रंग सफेद. (मजमूअए-सीज़दह रिसालए-फुक़रा, १३८७ हि. रिसाला वुजूदिया, सः ३५)

जान ऐ आरिफ ! तन का अव्वल बादशाह रूहे अलवी वज़ीर इसका सिफली, दुव्वम बादशाह दिल वज़ीर इसका ज़बान, सुव्वम बादशाह नफ्स वज़ीर उसका खतरए-शैतान. मंगता सो नफ्स, बूझता सो दिल, देखती सो रूह, करता सो सर, सोता सो नूर, जागती सो ज़ात. जान ऐ आरिफ ! ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' से रौशन हुआ दरख्ते ज़ैतून. जान ऐ आरिफ! सिदरतुल मुन्तहा गंजे मखफी बैतुल मअमूर व बैतुल मुक़द्दस नज़र रूह अलवी रोज़े मीसाक़ आवाज़ रूहे सिफली दम क़िब्ला चढता उतरता है दम मुँह से बोलता है पियाला-ए-मुहब्बत शराबे इश्क़ में मस्त और अलस्त होकर दमबदम कहा कर ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''.
(मजमुअ-ए-सीज़दह रिसाला फुक़रा १३८७ हि., रमज़े महल, सः २९)

फिक्रे क़दीर व तालीमाते क़दीर (रह.) वज़ाहते पचरंग

ला काला, इलाहा सफेद, इल्लल्लाहु हरा
लाल मुहम्मद, पीले रसूलु, ल्लाह खरा

चश्मे हक़ीक़त आशना मसरूफे दीद है मेरी
हर शै में है वह जलवा गर पर्दे उठा कर क्या करूँ

खुलास-ए-शश जिहत

अव्वल कलम -ए-तय्यब	ला	इलाहा	इल्ल ल्लाहु	मुहम्मदुर	रसूलु	ल्लाह
माअना	नफ्स	दिल	रूह	सर	नूर	ज़ात
महल्लात	नासूत	मलकूत	जबरूत	लाहूत	हाहूत	सयाहूत
तजल्लियात	काला	उजला	हरा	लाल	पीला	बेरंग
ख्वाहिशात	मंगना	बूझना	देखना	करना	सोना	जागना
वुजूदात	वाजिबुल वुजूद	मुमकिनुल वुजूद	मुमतनिउल वुजूद	आरिफुल वुजूद	वाहिदुल वुजूद	शाहिदुल वुजूद
तामीरात	आग	नूर	हवा	पानी	मिट्टी	मालिक
आलमान	आलमे हैवान	आलमे जिन्न	आलमे मलक	आलमे लतीफ	आलमे उलूहिय्यत	आलमे हस्त
छे सूरताँ	बे सूरत	ज़ात की सूरत	सिफात की सूरत	खयाल की सूरत	ख्वाब की सूरत	ज़ाहिर की सूरत
छे समझ	बदन	तन	तसव्वुर	ज़हूर	सोच	बूझ
फरिश्तगान	अज़ाज़ील	जिब्रईल	मीकाईल	इस्राफील	इज़्राईल	ज़ाते पाक
लिबासाँ	शरीअत	तरीकत	हकीकत	मारिफत	वहदत	वसलत
अय्याम	शंबह (सनीचर)	यकशंबह (इतवार)	दोशंबह (पीर)	सेहशंबह (मंगल)	चहारशंबह (बुध)	पंजशंबह (जुमेरात)

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

ज़हूरे काइनात और नूरे मुहम्मदी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हदीसे कुद्सी : "كُنْتُ كَنْزًا مَخْفِيًّا فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفَ فَخَلَقْتُ الْخَلْقَ"

तर्जुमा : डूबा हुआ था खज़ाना पोशीदगी में जब जाना अल्लाह अपने को ज़ाहिर किया यानी खल्क को. (किताब खुलासतुल अंबिया, तर्जुमा उर्दू क़ससुल अंबिया १३७६ हि.)

रिवायत करते हैं मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बिन आज़र बुखारी हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रदियल्लाहु अन्हू से और वह अपने वालिद हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र रदियल्लाहु अन्हू से और वह अपने वालिद इमाम ज़ैनुल आबिदीन रदियल्लाहु अन्हू से और उन्होंने रिवायत की अपने वालिद हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हू से और उन्होंने सुना अपने वालिद अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यदना अली कर्रमल्लाहु वजहहु से, आप ने फरमाया कि एक रोज़ मैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा था कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रदियल्लाहु अन्हू ने आकर रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! फिदाका उम्मी व अबी (मेरे मां बाप आप पर कुरबान)! मुझे खबर दो कि अव्वल अल्लाह तआला ने किस चीज़ को पैदा फरमाया. हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सब के आगे अल्लाह तआला ने नूर मेरा पैदा किया था.

उस नूरे मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बारह हज़ार बरस तक आलमे तजर्रुद (तन्हाई) में खुदा की इबादत की, फिर हक तआला ने उस नूर को चार किस्म करके एक किस्म से अर्श को पैदा किया, दूसरी किस्म से कलम, तीसर किस्म से बहिश्त को, चौथी किस्म से आलमे अरवाह और सारी मखलूक को पैदा किया.

"لَوْ لَاکَ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْـلَاکَ"

(लौ लाका लमा खलक़तुल अफलाक)

तर्जुमा : अगर ना पैदा करता तुझ को ऐ मुहम्मद हर आईना ना पैदा करता मैं आस्मान व ज़मीन और सारी मखलूक को

और इस हदीस के मुताबिक कि

"اَنَا مِنْ نُوْرِ اللّٰهِ وَ الْخَلْقُ كُلُّهُمْ مِنْ نُوْرِیْ"

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मैं पैदा हुआ हूँ अल्लाह के नूर से, मेरे नूर से सारी मखलूक है.

इसके बाद रब्बुल आलमीन का हुक्म हुआ कलम को, साक़े अर्श (अर्श के पाया) पर अव्वल इस कलमा को लिख ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''. तर्जुमा: नही है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के और मुहम्मद अल्लाह के भेजे हुए रसूल हैं. कलम ने चार सौ बरस ''ला इलाहा इल्लल्लाहु'' तक लिखा और एक रिवायत यूँ है कि कलम ने जो ''ला इलाहा इल्लल्लाहु'' तक लिखा तो अर्ज़ किया: या रब्बल आलमीन! तू बे मिस्ल व बे मिसाल है, तेरे नाम के साथ यह नाम किस का है? पस जनाबे बारी से आवाज़ आई कि यह नाम मेरे हबीबे बरगज़ीदह (मोहतरम) का है. तू लिख: ''मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''. जब यह हुक्म हुआ तो अल्लाह तआला के खिताब की हैबत से कलम के मुँह पर शिगाफ हुआ, तब कलम ने लिखा ''मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' तब ही से कलम का शिगाफे मसनून जारी हुआ.

अर्श के नीचे मरवारीद का दाना पैदा हुआ. उस से अल्लाह तआला ने लौहे मेहफूज़ बनाया. बलंदी उसकी सात सौ बरस की राह और चौडाई उसकी तीन सौ बरस की राह है और चारों तरफ उसके याकूत सुर्ख जडा हुआ और हुक्म हुआ कलम को

"اُكْتُبْ عِلْمِیْ فِیْ خَلْقِی وَ مَا هُوَ كَائِنٌ اِلٰی يَوْمِ الْقِيَامَةِ"

(तर्जुमा : लिख इल्म खुदा का मौजूदात में खुदा की और जितनी चीज़ें कि ज़र्रा ज़र्रा बीच मौजूदात के होने वाली हैं कयामत तक), पहले लौहे मेहफूज़ पर लिखा गया.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ – اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰـهَ اِلَّا اَنَا مَنِ اسْتَسْلَمَ بِقَضَآئِیْ وَ يَصْبِرُ عَلٰى بَـلَآئِیْ وَ يَشْكُرُ عَلٰى نَعْمَآئِیْ كَتَبْتُهٗ وَ بَعَثْتُهٗ مَعَ الصِّدِّيْقِيْنَ يَقِيْنًا وَ مَنْ لَّمْ يَرْضَ بِقَضَآئِیْ وَ لَمْ يَصْبِرْ عَلٰى بَـلَآئِیْ وَ لَمْ يَشْكُرْ عَلٰى نَعْمَآئِیْ فَلْيَطْلُبْ رَبًّا سِوَائِیْ وَ يَخْرُجْ مِنْ تَحْتِ سَمَآئِیْ.

तर्जुमा : अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ मैं जो बहुत मेहरबान है निहायत रहम वाला. मैं हूँ परवरदिगार सब का, नहीं है कोई माबूद मगर मैं हूँ. जो राज़ी है मेरी क़ज़ा पर और साबिर है मेरी बलाओं पर और शाकिर है मेरी नेअमतों पर जो मैंने मुक़द्दर की हैं पस शामिल करूँगा मैं उनको सिद्दीक़ों में और वह जो राज़ी ना हो मेरी क़ज़ा पर और साबिर ना हो मेरी बलाओं पर और शाकिर ना हो नेअमतों पर तो लाज़िम है उसे कि तलब करे दूसरे रब को सिवा मेरे, और निकल जाए (इस) तहत समा (आसमान के नीचे) से.

मेरे इस लिखने के बाद लौहे मेहफ़ूज़ खुद बखुद जुंबिश में आया और कहा कि मिस्ल मेरे हस्ती में कोई भी नहीं इस वास्ते कि इल्म खुदाई का मुझ पर लिखा गया. पस जनाबे बारी की तरफ से यह आवाज़ आई : अल्लाह तआला फरमाता है :

﴿يَمْحُو اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَ يُثْبِتُ وَ عِنْدَهٗ اُمُّ الْكِتَابِ﴾

तर्जुमा : मिटाता है अल्लाह और रखता है जिस बात को वह चाहता है, उसके पास है अस्ल किताब. खुलासा यह है अगर चाहूँ मिटा दूँ या रखूँ, और उसी के पास उम्मुल किताब है.

﴿وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضِ﴾

तर्जुमा : जैसा अल्लाह तआला ने फरमाया कुशादह हुई कुर्सी उसके बराबर सातों आस्मान और ज़मीनों के.

और नाम उसका कुर्सी हुआ.

फिर अल्लाह तआला ने कुदरते कामिला से अपनी इस कफे आब से पुश्तए-खाके सुर्ख पैदा किया उसी जगह पर जहाँ अब खानए-काबा है. और जिब्रईल अलैहिस् सलाम, मीकाईल अलैहिस् सलाम, इस्राफील अलैहिस्

सलाम को हुक्म हुआ कि चार गोशा (चारों तरफ) इस पुश्ते खाक को फैला दो. उन्होंने वैसा ही किया और ज़मीन उसी पुश्तए-खाक से पैदा हुई.

अल्लाह तआला का कौल :

"خَلَقَ الْاَرْضَ فِیْ یَوْمَیْنِ"

तर्जुमा : बनाया अल्लाह तआला ने ज़मीन को दो दिन में. और रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हू एक दिन ज़मीन के अहवाल मालूम करने के वास्ते हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और पूछाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह तआला ने इस ज़मीन को किस चीज़ से बनाया? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कफे आब से. फिर पूछा कि वह कफ किस से पैदा हुआ? फरमाया पानी की मौज से. फिर सवाल किया : मौज किस से निकली? फरमाया पानी से. फिर पूछा : वह पानी किस से निकला है? फरमाया मरवारीद के एक दाने से. कहा कि मरवारीद किस से है? फरमाया : तारीकी से. कहाः आपने सच फरमाया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम. फिर सवाल कियाः या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! ज़मीन का क़रार किस से है? फरमाया कोहे क़ाफ से.

और इसके बाद खल्लाक़ (अल्लाह तआला) ने यह सात दिन पैदा करके यकशंबह (इतवार) के दिन हामिलाने अर्श (अर्श उठाने वाले फरिश्तों) को बनाया और दोशंबह (पीर) को सात तबक़ आस्मान और सेहशंबह (मंगल) को सात तबक़ ज़मीन और चहारशंबह (बुध) को तारीकी और पंजशंबह (जुमेरात) को मनफिअते ज़मीन (ज़मीन से हासिल होने वाले फायदे) और जो उसमें है और जुमा के दिन आफताब और माहताब और सब सितारों को और सातों आस्मानों को हरकत में लाया और सातवें दिन तमाम जहाँ (को पैदा करने से) से फरागत की. अल्लाह तआला का कौल :

﴿خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَیْنَهُمَا فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ﴾

तर्जुमा : जैसा कि हक तआला ने फरमाया बनाया अल्लाह तआला ने आस्मानों और ज़मीनों को और जो बीच उसके है छे दिन में.

इसके बाद दरगाहे इलाही से खिताब आया कि ऐ मलाइक (फरिश्तो)! मैं ज़मीन पर एक खलीफा बनाऊँगा. चुनांचे अल्लाह तआला ने फरमाया है:

﴿وَ اِذْ قَالَ رَبُّکَ لِلْمَلٰئِکَةِ اِنِّی جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً، قَالُوْا اَ تَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَ یَسْفِکُ الدِّمَاءَ وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِکَ وَ نُقَدِّسُ لَکَ ، قَالَ اِنِّیْ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ﴾

तर्जुमा : और जब कहा तेरे रब ने फरिश्तों को मुझ को बनाना है ज़मीन में एक नाइब, बोले क्या तू रखेगा उसमें से उस शख्स को जो फसाद और खूनरेज़ी करे और हम ज़िक्र करते हैं तेरी खूबीयाँ और याद करते हैं तेरी पाक ज़ात को. अल्लाह ने कहा मुझ को मालूम है जो तुम नहीं जानते. जिब्राईल अलैहिस् सलाम पर रब्बुल आलमीन का हुक्म हुआ मुश्ते खाक ज़मीन पर से लाओ. इसके बाद हुक्मे इलाही से फरिश्तों ने वह मुश्ते खाक ताइफ व मक्का मुअज़्ज़मा के दरमियान रख दी. पस बारान रहमत का बरसा, तब दो बरस में वह खाक गिल (कीचड) हुई और चौथे बरस में 'सिलसाल' (सख्त) हुई और छटे बरस में 'फख्खार' हुई, आठवें साल में आदम अलैहिस् सलाम की सूरत बनी.

रब्बुल आलमीन का हुक्म हुआ कि तमाम मलाइक आदम अलैहिस् सलाम को सज्दा करें और वह सज्दा ताज़ीम का था, ना इबादत का. जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰئِکَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْا اِلَّا اِبْلِیْسُ اَبٰی وَ اسْتَکْبَرَ وَ کَانَ مِنَ الْکَافِرِیْنَ﴾

तर्जुमा : जब हम ने कहा फरिश्तों को सज्दा करो आदम को तो सज्दा किए सब मगर इबलीस ने सज्दा ना किया और तकब्बुर किया. और वह था मुनकिरों में से.

तब रब्बुल आलमीन ने इबलीस को फरमाया :

﴿قَالَ یَا اِبْلِیْسُ مَا مَنَعَکَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِیَدَیَّ اَسْتَکْبَرْتَ اَمْ کُنْتَ مِنَ الْعَالِمِیْنَ﴾

तर्जुमा : ऐ इबलीस ! तुझ को क्यूँकर इंकार हुआ सज्दा करने से उस चीज़ के जिसको मैंने बनाया अपने दोनों हाथों से, यह तूने गुरूर किया या तू बडा था दर्जे में.

तो इबलीस ने कहा : अल्लाह तआला का कौल

﴿قَالَ اَنَا خَيۡرٌ مِّنۡهُ خَلَقۡتَنِىۡ مِنۡ نَّارٍ وَّ خَلَقۡتَهٗ مِنۡ طِيۡنٍ﴾

तर्जुमा : वह बोला में बेहतर हूँ उस से कि मुझ को बनाया तूने आग से और उसको मिट्टी से.

इसके बाद, जनाबे बारी के हुक्म से तख्त आदम का फरिश्तों ने जन्नतुल फिरदौस में ला रखा और सब नेअमतें अल्लाह तआला ने उनको इनायत की थीं. इसके साथ भी उनको करार व तसल्ली ना थी. क्यूँकि अराम व तसल्ली हर किसी को अपने हम जिन्स से होती है. और इस आलमे तन्हाई में कोई हम जिन्स उनका ना था. और खालिक की मर्ज़ी ही थी कि उनका जोड और हमसर पैदा करे क्यूँकि बेजोड व बे मिस्ल व बे मानिंद व बे हाजत सिवाए खुदा के कोई नहीं. जब वह बेकरार हुए तब हक तआला ने उनको ख्वाब में डाला. वह ऐसे सोए कि ना नींद आई और ना बेदार हुए. इस सूरत में खालिक ने जब्राईल अलैहिस् सलाम से एक हड्डी बाऐं पहलू से उनके निकलवाई और उस से उनको दर्द व अलम ना पहुँचा था. अगर पहुँचता तो हरगिज़ मुहब्बत औरतों की दिल में मर्दों के ना होती. उस हड्डी से हव्वा अलैहस् सलाम को बनाया. उसके बाद आदम को नींद से बेदार करके हव्वा अलैहस् सलाम के साथ जलवा दिया. आदम अलैहिस् सलाम ने हव्वा अलैहस् सलाम को इस तरह देख कर बेइख्तियार चाहा कि उन पर दस्त अंदाज़ हों तब बारगाहे इलाही से आवाज़ आई : ऐ आदम ! खबरदार उसे मत छू.

बेनिकाह उसकी सोहबत हराम है. तब आदम अलैहिस् सलाम ने उस से निकाह करने की दरख्वास्त की. इसके बाद अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस् सलाम का निकाह हव्वा अलैहस् सलाम के साथ कर दिया.

जब आदम अलैहिस् सलाम ने मुबाशरत का इरादा किया हव्वा अलैहस् सलाम के साथ, वहीं आवाज़ आई : ऐ आदम! खबरदार, जब तक कि हव्वा अलैहस् सलाम के मेहर का क़र्ज़ा अदा ना करोगे तब तक वह तुम

पर हलाल ना होगी. आदम अलैहिस् सलाम ने कहा : इलाही ! मैं कहाँ से अदा करूँ? फरमाया कि दस (१०) मर्तबा दरूद मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पढ. तब आदम अलैहिस् सलाम ने शौक से हज़रत पर दस (१०) बार दरूद पढा.

इसके बाद अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَ قُلْنَا يٰاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَ كُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَ لَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ﴾

तर्जुमा : ऐ आदम ! तू जन्नत में जा और तेरी बीवी भी और खाओ इस में लज़्ज़त उठाते हुए जहाँ चाहो और नज़दीक मत जाओ इस दरख्त के फिर तुम बेइंसाफ होगे.

चुनांचे अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿قَاسَمَهُمَا اِنِّیْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ فَدَلّٰهُمَا بِغُرُوْرٍ﴾

तर्जुमा : और शैतान ने उनके पास कसम खाई कि मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, फिर खींच लिया उनको फरेब से.

पहले जिसने झूठी कसम खाई वह इबलीसे लईन था. पस हव्वा अलैहस् सलाम ने उसके कसम खाने से यकीन किया कि यह सच कहता है. तब उससे फरेब खाकर उस दरख्त पर हाथ बढाकर तीन दाने गेहूँ के लिए. एक तो आप ने खाया और दो दाने आदम अलैहिस् सलाम के लिए लाई. हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हू ने अपनी तफसीर में कहा है कि जब हव्वा अलैहस् सलाम ने गेहूँ खोशे से तोड लिए, खोशे की जगह सुर्ख हुई और एक कतरा खून उस से टपका. तब अल्लाह तआला ने अपनी कसम खाकर फरमाया कि तुम्हारी बेटीयों को कयामत तक हर महीने में एक मर्तबा खून से आलूदह करूँगा और अपने दरख्त की दाद (इंसाफ) तुझ से और तेरी बेटीयों से लूँगा.

हव्वा अलैहस् सलाम आदम अलैहिस् सलाम के लिए वह दो दाने गेहूँ के ले गई. वह बोले यह क्या चीज़ है? हव्वा अलैहस् सलाम ने कहा यह फल उस दरख्त का है कि जिसके खाने से हमें खुदा ने मना फरमाया था. उस से

मैंने एक दाना खाया और दो दाने तुम्हारे लिए लाई हूँ. आदम अलैहिस् सलाम ने कहा कि इस में क्या लज़्ज़त है? वह बोलीं कि हलावत व शिरीं (मीठा) है. हज़रत आदम अलैहिस् सलाम ने फरमाया मैं नहीं खाऊँगा कि अल्लाह तआला से मुझ को अहद है कि इस दरख्त से मेवे ना खाना और हक तआला ने फरमाया है :

﴿وَ لَقَدْ عَهِدْنَا اِلٰى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِیَ وَ لَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا﴾

तर्जुमा : और हम ने अहद कर दिया था आदम से इससे पहले फिर भूल गया और ना पाई हम ने उस में कुछ हिम्मत.

हव्वा अलैहस् सलाम जब मायूस हुई आदम को दाने के खाने से पहले एक पियाला शराब बहिश्त से लाकर पिला दिया तो बेहोश होकर उनसे दो दाने गेहूँ के लेकर खा गए, और अहद शिकनी की. अभी वह दो दाने हलक के नीचे भी नहीं उतरे थे कि ताज उनके सर से उड गया और तख्त से गिर पडे, दोनों नंगे हुए जैसा कि बारी तआला ने फरमाया :

﴿فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَ طَفِقَا یَخْصِفٰنِ عَلَیْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ﴾

तर्जुमा : फिर जब चखे दरख्त से दोनों ने मेवे खुल गए ऐब और लगे जोडने अपने ऊपर पत्ते बहिश्त के.

इसके बाद बहिश्त के लोग आवाज़ देने लगे कि आदम अलैहिस् सलाम और हव्वा अलैहस् सलाम दोनों खुदा की दरगाह में नाफरमान हुए और दीवानों की तरह बहिश्त में भटकते फिरते हैं. अल्लाह की दरगाह से तीन बार उनकी पुकार हुई, जवाब उसका कुछ ना दिया तब जिब्राईल उनके पास आए और बोले ऐ आदम अलैहिस् सलाम! तुझे तेरा रब बुलाता है. तब आदम अलैहिस् सलाम ने कहा लब्बैक या रब, हम तुझ से शर्मिंदा हैं. अल्लाह तआला का कौल :

﴿وَ نَادٰىهُمَا رَبُّهُمَا اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَ اَقُلْ لَّكُمَا اِنَّ الشَّیْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ﴾

तर्जुमा : और पुकारा उनको उनके रब ने मैंने मना किया था तुम को उस दरख्त से और कहा था तुम को कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है.

तब आदम अलैहिस् सलाम व हव्वा अलैहस् सलाम दोनों रोते हुए कहने लगे, जैसा कि हक तआला फरमाता है :

﴿قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ﴾

तर्जुमा : आदम व हव्वा अलैहिमस् सलाम ने कहा ऐ रब हमारे, हम ने खराब किया अपनी जान को और अगर ना बख्शे तू हम को और हम पर रहम ना करे तो हम हो जाऐं नामुराद.

और अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَّ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ﴾

तर्जुमा : कहा तुम उतरो एक दूसरे के दुश्मन हुए और तुम को ज़मीन में ठहरना है और काम चलाना एक वक्त तक. और कहा इसी में जीओगे और इसी में मरोगे और इसी से निकाले जाओगे.

आदम अलैहिस् सलाम मैदाने अरफात में जबले रहमत पर अराम के वास्ते जब बैठे हव्वा अलैहस् सलाम को देखा कि जद्दा की तरफ से आती हैं. उन्होंने उठ कर उनको गोदी में उठा लिया और दोनों ज़ार ज़ार रोने लगे. चुनांचे रोने से उनके आस्मान के फरिश्ते भी रोए. पस दोनों ने आस्मान की तरफ निगाह की और खुदाए तआला ने हिजाब को उनकी आंखों से उठा लिया तब उन्होंने अर्श की तरफ नज़र की जैसा कि हक तआला ने फरमाया :

﴿فَتَلَقّٰى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ﴾

तर्जुमा: फिर सीख लीं आदम ने अपने रब से कई बातें फिर मुतवज्जह हुआ उस पर और हक वही है माफ करने वाला मेहरबान. और साक़े अर्श पर यह कलमा लिखा था: ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''. तब आदम अलैहिस् सलाम ने कहा : या रब ! बरकत से उस नाम की जो तेरे नाम के साथ है, गुनाह हमारे बख्श दे और तौबा हमारी कबूल कर.

(अज़ किताब खुलासतुल अंबिया, तर्जुमा उर्दू क़ससुल अंबिया, १३७६ हि.)

हैं कितने राज़ पिनहाँ हज़रते इंसान में देखो
मशिय्यत कार फरमा हो गई तखलीके आदम में

दीन का तुख्म (बीज) तौबा है

हज़रत मखदूम ने फरमाया कि दीन का तुख्म (बीज) तौबा है. अल्लाह तआला ने एक कानून बना दिया है कि अगर एक शख्स दस हज़ार साल तक कुफ्र व गुनाह में आलूदह रहा हो लेकिन जैसे ही वह तौबा कर लेता है और ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' सच्चे दिल से पढ लेता है दस हज़ार साल के उसके तमाम कुफ्र एक लम्हे में मिट जाते और ख्तम हो जाते हैं गोया वह अभी पैदा हुआ हो. इसी तरह अगर कोई फासिक़ (गुनाहगार) अपनी सारी ज़िंदगी गुनाह व बदकारी में मुब्तेला रहा हो लेकिन अगर उसने किसी नेक घडी में अपने गुनाहों और फिस्क़ व फुजूर (गुनाहों और बदकारीयों) से तौबा कर लिया तो उसके तमाम गुनाह माफ हो जाऐंगे. और इस तरह धुल जाऐंगे जैसे कपडा साबून से धुल कर साफ हो जाता है.

तमाम अंबिया और औलिया का सरमाया यही तौबा है इस लिए कि इंसान लग्ज़िश और भूल से मुरक्कब (बना हुआ) है. तौबा ही इन लोगों की पनाह है. जैसे ही तौबा करके खुदा की तरफ लौट जाते हैं फिर वह बिलकुल साफ सुथरे और रौशन हो जाते हैं.

अगर तौबा ना होती तो कोई अल्लाह की बारगाह का मुक़र्रब ना होता. औलिया और अंबिया सब अपने मकाम पर इसी तौबा ही की वजह से पहुँचे. (जवामिउल कलिम, मलफूज़ात हज़रत ख्वाजा बंदानवाज़ गेसूदराज़ (रह.) सः १५७)

यह सायबाने शफाअत है दौडते आओ
पनाहे आखरी रोज़े शुमार है कलमा

कौले साबित कलमा तय्यबा

किताब 'मक़ालाते ताहिर' इल्मी व एहसानी मज़ामीन व मक़ालात हालाते रईसुल उलमा तक़द्दुस मआब हज़रत अल्लामा सय्यद शाह ताहिर रज़वी क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह सद्रुश् शुयूख जामिआ निज़ामिया, से नक्लः

﴿يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ﴾

(सुरह इब्राहीम, १४, आयत : २७)

तर्जुमा : हक तआला ईमान वालों के कौल को कौले साबित यानी कलमा तय्यबा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' के ज़रीए साबित क़दम रखेगा.

कलमा या कलाम : अर्बी क़वाइद (ग्रामर) के मुताबिक एक लफ्ज़ को कलमा कहते हैं. ''ला इलाहा इल्लल्लाहु''में चार लफ्ज़ हैं, ''मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' में तीन लफ्ज़ हैं, कुल सात अलफाज़ हुए. चूँकि दो या दो से ज़्यादा लफ्ज़ हों तो उसको कलमा नहीं कलाम कहते हैं और यहाँ सात लफ्ज़ हैं कलाम कहना चाहिए, कलमा क्यूँ कहते हैं? इसका जवाब यह है कि हदीस शरीफ में आया है हर चीज़ का एक ज़ाहिर और एक बातिन होता है और कुरआन की हर आयत का एक मायना ज़ाहिरी और एक मायना बातिनी है. और हर चीज़ का दिल है और कुरआन का दिल सुरह यासीन है. तो ''ला इलाहा इल्लल्लाहु'' ज़ाहिर में एक कलाम है क्यूँकि एक से ज़्यादा अलफाज़ हैं और बातिन में यह कलमा है क्यूँकि इस कलमे का मिस्दाक़ (मुराद) एक ही ज़ात हकीकते वाहिदह है. इस बातिन का लेहाज़ करते हुए यह कलमा है.

नफी व इस्बात : दूसरा सवाल यह कि कलमा में नफी व इस्बात क्यूँ लाया गया? सादा सीधा 'अल्लाहु इलाहुन'क्यूँ नहीं है? तो इसका जवाब यह है कि सादा लाते तो बातिल माबूदों की नफी नहीं होती. जिस तरह कहा जाता है फलाँ शख्स इस शहर में आलिम है तो किसी और के आलिम होने की नफी नही हो रही है और नफी इस्बात के साथ कलाम किया जाए तो यूँ कहा जाएगा

'नहीं है कोई आलिम इस शहर में सिवाए फलाँ शख्स के. इसी तरह 'अल्लाहु इलाहुन' कहते तो किसी और के इलाह (खुदा) होने का एहतेमाल (गुंजाइश) था लेहाज़ा नफी इस्बात लाया गया. नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के. तो किसी और के इलाह (खुदा) होने का एहतेमाल खत्म हो गया. चूँकि कलमा अर्बी ज़बान में है और 'ला' से नफी, 'इल्ला' से इस्बात की ताकीद मकसूद है और 'ला इलाहा' में बहुत बडी ताकीद है. इस से कम दर्जे की ताकीद 'मा' और 'इल्ला' से होती है. जैसे ''व मा मुहम्मदुन इल्ला रसूलुन''. खुदा अपने लिए 'ला इलाहा' से शुरू किया, फिर 'ला इलाहा' में 'ला' नफी-ए-जिन्स है, इस लिए ज़बर देता है जैसे 'ला हौला व ला क़ुव्वता' में ज़बर आया, सब की नफी कर दिया यानी माबूदाने बातिला हो या माबूदे बरहक हो मगर यहाँ माबूदे बरहक की नफी नहीं होती इस लिए कि उसका वुजूद हकीकी है और वुजूदे हकीकी नफी को कबूल ही नहीं करता. अब यहाँ गौर तलब बात यह है कि नफी से अदमे महज़ की नफी मुराद नहीं क्यूँकि अदमे महज़ वह है जिस कह वुजूद हो ना सुबूत. नफी जब ही होगी जब कि वुजूद या शहूद हो और नफी खुदा की नहीं हो रही है क्यूँकि खुदा का वुजूद हकीकी है. जो नफी को कबूल नहीं करता. लेहाज़ा कोई 'ला इलाहा' पढा और 'इल्लल्लाह' नहीं पढा और रूह निकल गई और यह मलहूज़ जो बताया गया तो वो ईमान के साथ गया.

अदमे इज़ाफी और वजूदे इज़ाफी : तीसरा सवाल यह कि नफी इस्बात का दार व मदार किस पर है. इस का जवाब यूँ है कि नफि इस्बात का दार व मदार अदमे इज़ाफी और वजूदे इज़ाफी पर है. अदमे इज़ाफी वह है जिसका सबूत हो वजूद ना हो और वजूदे इज़ाफी वह है जो अदम से वजूद में आया हो. यानी उसका वजूद हकीकी ना हो. तो यह खुलासा निकला मर्तबा सबूत से यानी अदमे इज़ाफी से निकाले तो वजूदे इज़ाफी का इस्बात हुआ. और वजूदे इज़ाफी की नफी करे तो अदमे इज़ाफी का सबूत हुआ.

दो कुफ्र और चार शिर्क का मतलब : अगरचे कलमा में ना शिर्क है ना कुफ्र, यो कलमए-तौहीद है मगर दीगर एतेबारात का लेहाज़ करते हुए दो कुफ्र और चार शिर्क का एतेबार आता है. कुफ्र इस तरह कि 'ला इलाहा' में

खालिक़ की नफी की जाए तो एक कुफ्र आ गया. मखलूक़ की नफी की जाए तो दूसरा कुफ्र आ गया क्यूँकि मखलूक की नफी मुस्तलज़िम (लाज़िम) है खालिक़ की नफी को. जिस तरह मसनूअ (पैदावार) की नफी मुस्तलज़िम है सानेअ (पैदा करने वाले) की नफी को यानी मखलूक़ की नफी से खालिक़ की नफी हुई. और खालिक़ की नफी से उसके इलाह होने की नफी हुई (इलाह यानी माबूद) जो इलाह नहीं वह खालिक़ नहीं, इस तरह दूसरा कुफ्र आया. और चार शिर्क का एतेबार इस तरह है :

१) अल्लाह के सिवा किसी और को माबूदे हकीकी जाना

२) अल्लाह के सिवा किसी और को मकसूदे हकीकी जाना

३) अल्लाह के सिवा किसी और को मशहूदे हकीकी जाना

४) अल्लाह के सिवा किसी और को मौजूदे हकीकी जाना

क्यूँकि

खुदा ही हकीकी माबूद है

वही हकीकी मकसूद है

वही हकीकी मशहूद है

वही हकीकी मौजूद है

कलमए-शरीअत

''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

कलमए-तरीक़त

''ला मक़सूदा इल्लल्लाहु मुहम्मदुन इंदल्लाह'' (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

कलमए-मारिफत

''ला मशहूदा इल्लल्लाहु मुहम्मदुन नूरुल्लाह'' (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

कलमए-हक़ीक़त

''ला मौजूदा इल्लल्लाहु मुहम्मदुन मअ्लूमुल्लाह'' (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

हकीक़ते तौर लताइफे खमसा को किसी बुजुर्ग ने इस तरह बयान किया है.

व हुवा हाज़ा (और वह यह है)
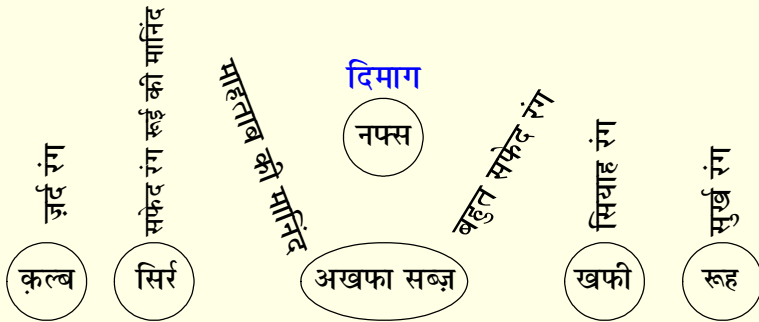
ज़ेरे पिस्तान रास्त - दरमियान रूह व अखफा - दरमियान सीना - दरमियान क़ल्ब व अखफा - ज़ेरे पिस्तान चप

बतरीके जदीद अज़ मुजद्दिदे अल्फ सानी रहमतुल्लाहि अलैह

दिमाग

अखफा

सब्ज़ रंग

ज़र्द रंग   सियाह रंग   खफी   मकाम पेशानी   सुर्ख रंग

मानिंदे रूई   सफेद रंग

क़ल्ब   सिर्र   रूह

दरमियान   सीना
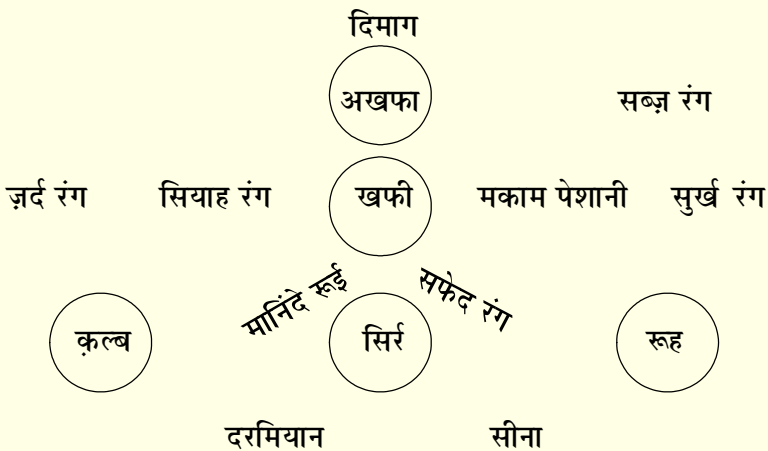
ज़ेरे पिस्तान चप   नफ्स   ज़ेरे पिस्तान रास्त

मकाम ज़ेरे नाफ   सफेद रंग माहताबी

हकीकते तौर लताइफे खमसा को किसी बुजुर्ग ने इस तरह बयान किया है. वह इस तरह है.

राहे तसव्वुफ

तसव्वुफ नाम है एहसान का इखलास व हिकमत का
तसव्वुफ देखिए पाकीज़ा विरसा है क़दामत का

ज़माने में हसन बसरी के सूफी नाम राइज था
अबू हाशिम हैं सूफी-ए-बासफा इस्लामी अज़मत का

हो सूफी बाअमल तो खानक़ाहें अब भी रौशन हैं
तक़ाज़ा है शरीअत का तरीक़त का हक़ीक़त का

फिक़्ह को छोड कर राहे तसव्वुफ बे मआनी है
मुहक़्क़क़ दोनों राहों का अमीं खलवत का जलवत का

हुज़ूरे पाक से ता अंबिया ता हज़रते आदम
यक़ीं असहाब से अब तक है जारी फैज़ सोहबत का

मज़ाहिब, मिल्लतें, अदवार माज़ी और मुस्तक़बिल
सभी सैराब होते हैं यह है दरिया सखावत का

अदब तहज़ीब सूफी की अलामत पेश करता है
इसी में एकता कौमों की, है यह दर्स वेहदत का

बिला तफरीक सब को मिल रहा है बादह-ए-उलफत
चले आओ खुला है खानकाह शाहे विलायत का

ज़हे तकदीर कि हर हाल में बंदानवाज़ी है
गुलामे 'खैर' है 'साहिब' शरफ पाया खिलाफत का

अरबअ् अनासिर   कश्फुल कुलूब

सीज़दह रिसाला हाफिज़ुल अहिब्बा, सः४०   हाफिज़ुल अहिब्बा, सः२२

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

वाज़ेह हो कि यह रिसाला 'अरबअ् अनासिरुल वुजूद' हज़रत आदम सफीयुल्लाह अलैहिस् सलाम व बरज़खे मुहम्मदी रूहे इंसान राज़ व नियाज़ की बुनियाद है. जान ऐ आरिफ! वुजूदे हज़रते आदम अलैहिस् सलाम अव्वल शरीअत खाक, वाजिबुल वुजूद मंज़िले नासूत, इबादते ज़िक्रे जली पीरे मेहतर जब्राईल घर दिल मकाम हज़रते मौला अली रदियल्लाहु अन्हू दरवाज़ा मुँह है. दुव्वम मकामे तरीक़त बाद मुमकिनुल वुजूद मंज़िल मलकूत इबादत ज़िक्रे क़ल्बी पीरे मेहतर इस्राफील, घर पस्लियाँ मकाम हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हू दरवाज़ा ज़ेरे नाफ है. सुव्वम मकाम अनासिर तन हकीकत आतिश मुमतनिउल वुजूद मंज़िल जबरूत इबादत ज़िक्रे खफी पीरे मेहतर इज़राईल, घर पित्ता मकाम इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हू दरवाज़ा कान है. चहारुम मकाम अनसिर तन मारिफत आब आरिफुल वुजूद मंज़िल लाहूत इबादत ज़िक्रे सिर्री पीरे मेहतर मीकाईल घर कलेजा मकाम हज़रत खातूने जन्नत दरवाज़ा आंखें. पंजुम अनासिर ज़ईफ खाली वाहिदुल वुजूद मंज़िल हाहूत इबादत ज़िक्रे रूही पीरे मेहतर इज़राईल घर शाह रग मकाम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दरवाज़ा नाफ.

सवाल : अगर तेरे तई (तुझे) कोई पूछे कि तेरे तन में 'मन अरफा' का मकाम कौनसा है?

जवाब : बोल अव्वल मग्ज़, दुव्वम सीना, सुव्वम नाफ, चहारुम कमर.

सवाल : तन में तेरे यह चार मकाम किस अज़्म (इरादे) से रहते हैं?

जवाब : बोल मग्ज़ में खुदा होकर रहता है. दुव्वम सीने में मुहम्मद होकर रहते हैं. सुव्वम नाफ में बंदा होकर रहता है. चहारुम कमर में जौहर होकर रहता है.

सवाल : अगर कोई पूछे यह चारों का मकाम क्या है?

जवाब : बोल एक अल्लाह हज़ार नाम पीर व पैगंबर औलिया अंबिया गौस क़ुतुब. 'मन अरफा नफ्सहु फक़द अरफ रब्बहू'.

सवाल : ज़बान क्या बोलती है? ऊपर का लब क्या बोलता है और नीचे का लब क्या बोलता है?

जवाब : बोल ऊपर का लब 'ला इलाहा' बोलता है. नीचे का लब 'इल्लल्लाह' बोलता है और ज़बान 'मुहम्मद' बोलती है. तमाम दांत 'रसूलुल्लाह' बोलते हैं.

समझ ऐ आरिफ! अव्वल वजूद वाहिदुल वजूद है. दूसरा मुमकिनुल वजूद है. तीसरा मुमतनिउल वजूद है. चौथा आरिफुल वजूद है. पांचवाँ वाजिबुल वजूद है. वाजिबुल वजूद कहना, मुमकिनुल वजूद फिरना, मुमतनिउल वजूद देखना, आरिफुल वजूद बूझना, वाहिदुल वजूद बेखुद रहना. नासूत का मकाम वजूद, मलकूत का मकाम दिल, जबरूत का मकाम रूह, लाहूत का मकाम सर, हाहूत का मकाम नूर, सयाहूत का मकाम ज़ात है.

जानना चाहिए कि हक सुबहानहू व तआला ने सात तबक़ आस्मान, सात तबक़ ज़मीन पैदा किया है. इस सबब खाक से नबातात को पैदा किया और इस नबातात से हैवानात को ज़ाहिर किया और हैवानात से इंसान को कामिल पैदा करके उसको चार किस्म की रूह अता फरमाया. अव्वल रूह जमादी है, दुव्वम रूह नबाती, सुव्वम रूह हैवानी, चहारुम रूह इंसानी. इसी तरह रूहों को पैदा करके पानी से इसको ताज़गी बख्शी. और रूहे कुदसी बीच उसके दाखिल है और बीच उसके सूरते हैवानी है और नबाती नफ्स है और रूहे इंसानी अक्ल है और क़ालिब मानिंद शीशे के है और रूहे इंसानी मानिंद रोगन के है. सफाई से सफाई और लताफत से लताफत पाती है देखती और जानती है जैसा कि नूर अनवारे इलाही से पेवस्त है. इसी वजह से बीच मकाम जबरूत के नशिस्ता है.

सवाल : अगर कोई पूछे कि नूर की शिनाख्त क्या है?

जवाब : बोल अव्वल पहचानत वुजूद की चाहिए. दूसरी पहचानत मौजूद की. तीसरी पहचानत पहचानना दम का जो अंदर आता है और बाहर जाता है.

सवाल : जो दम अंदर जाता है क्या ज़िक्र करता है और जो दम बाहर आता है क्या ज़िक्र करता है?

जवाब : बोल जो दम अंदर जाता है 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' कहता है और जो दम बाहर आता है 'मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह' कहता है. और जो दम है आदम सफीयुल्लाह है. इसी तरह दमे बाला से रूह सवार है. सालिक इस दम को जानते हैं और उसके फेल के माहिर हैं. जो कोई इस दम की कैफिय्यत नहीं जानता है मिसाल उसकी चारपाए (जानवर) की है और जिस ने अपने को फरामोश किया गोया खुदा को फरामोश किया. खुदा तआला तौफीक नेक अमल की दे. यह रिसाला हज़रत उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैह से है. उसमें बहुत कुछ कहा गया है.

यादे खुदा भी 'शाद' रहे हर नफ्स के साथ
जो सांस ले रहे हो कहीं आखरी ना हो
(शाद)

दरवाज़ा-ए-हयात पे हर दम हो बाखबर
दस्तक लगा रही है कहीं मौत ही ना हो
(साहब क़दीरी)

हर सांस ज़िंदगी की मताए अज़ीम है
ऐ दिल अताए खास है फज़्ले करीम है
(साहब क़दीरी)

कलमे में कुल जहान है यह राज़ पाइए
ज़िक्रे हबीबे पाक से दम को सजाइए

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

रिसाला कशफुल कुलूब

खुदा की हम्द और मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम की नात के बाद, समझ ऐ आरिफ ! अस्ल पहचान खुदा की है सो क्या है? फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ" जिसने पहचाना अपनी रूह यानी अपने नफ्स को पस तहकीक उसने पहचाना खुदा को. इस नूर को नूरे मुहम्मदी कहते हैं.

सवाल : इल्मुल यकीन किस को कहते हैं?

जवाब : इल्मुल यकीन इल्मे यकीनी है जो मुर्शिदे कामिल से हासिल होता है जो सब शुकूक को दूर करके दर्जा-ए-यकीनी को पहुंचाता है.

قَالَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ "اَلْعِلْمُ الْيَقِيْنُ" وَ هُوَ عِلْمٌ يَعْرِفُ بِهِ اَحْوَالَ الْبَدَنِ كُلَّهَا بِالْيَقِيْنِ بِحُضُوْرِ الْمُرْشِدِ الْكَامِلِ وَ هٰذَا مَرْتَبَةُ الْمُرِيْدِ الْمُبْتَدِىْ.

सवाल : ऐनुल यकीन क्या है?

जवाब : इल्मे शहूद को कहते हैं.

सवाल : हक्कुल यकीन किस को कहते हैं?

जवाब : इल्मे ज़ाती जो तहरीर व तकरीर से बाहर है. अगर पीर ज़िंदा दिल मिले तो काम चले. ऐ फकीर जान और खूब बूझ कि जो तेरे खाकी तन में दूसरा एक तन है रूहानी उसकी सूरत तेरी ज़ाहिर की सी सूरत है लेकिन इस तन को मरना और फना होना नहीं और वह तन गलाए तो गलता नहीं और तोडो तो टुटता नहीं और काटो तो कटता नहीं और जलाए तो जलता नहीं और डुबाए तो डूबता नहीं. अस्ल में उसकी पैदाइश नूर से है. वह नूरे पाक खास मुनज़्ज़ह (साफ) है जिस तरह फानूस में चिराग की रौशनी नज़र आती है इसी तरह वह तन में रौशन है. इस से तन की आबाद बसती है और वह ख्वाब के वक्त सैर को निकलता है. इसे रूहे सिफली और जारी मुमकिन कहते हैं. यह रूह मीसाक़ के दिन पैदा हुई. हक तआल ने इस रूह

को बुलाकर पूछा कि ''अलस्तु बिरब्बिकुम' क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? रूहानीयों ने जवाब दिया ''क़ालू बला'' यानी बेशक तू हमारा परवरदिगार है और रूह इसी तमाम आज़ा (हिस्सों) के साथ सूरत व शक्ल पकड कर तेरे जिस्म के बीच फिरती है और हिलना, चलना, देखना, सुनना, जागना, सोना, चमकना सब इसी से है. और हर एक चीज़ की लज़्ज़त और ज़ौक़ लेने हारा और तकलीफ और दर्द देने हारा वही है और जिस्म से बाहर भी वही सैर करता है. ज़मीन व आस्मान, अर्श, कुर्सी और तहतस् सरा तक एक साअत (सेकंड) में सैर कर आता है और जबकि रूहे उल्वी निकल जाए सो मुर्दा है. रूहे उल्वी के निकलने को मौत कहते हैं और रूहे सिफली हमेशा सैर में फिरती है. एक लम्हा एक जगह एक चीज़ पर उसका मकाम नहीं रहता. वह लम्हा तमाम जहान की शक्ल होती है. ना ज़ाहिर ना बातिन सब जाए (जगह) देखती है.

और रूहे अलवी व सिफली खास तेरे तन के दरमियान बरज़ख है और सूरत व शक्ल, लतीफ व कसीफ (आलूदह, गंदा) उसकी या दूसरे की जो तेरे बातिन में देखती है, सो वह सब वही है और बातिन की जो जिस मैदान में यह सूरतें बनी हैं और सैर करती हैं सो उस मैदान को दिल बोलते हैं. जो कि आईना सफाई में सूरतें बनी हैं और इस नूरानी तन की आंखें सब चीज़ देखती हैं और ज़बान नाक व कान और बाक़ी सब आज़ा (हिस्से) भी उसके लतीफ हैं. मुँह बंद मगर दिल उसका बात करता है, सो मुँह उसका है, यह पाऊं उसके हैं और ज़ाहिर आंखें बंद बातिन में कुशादह जो तन की आंखों से देखेगा उसे दीदार होगा. इसी तन से क़ब्र में सवाल व जवाब होगा, हिसाब व किताब और हश्र भी होगा और इसी के वास्ते बहिश्त और दोज़ख है. ऐ तालिब दीदारे खुदा का ! तुझे लाज़िम है तू इसी खाकी तन सो (से) बंदगी और यादे खुदा किया करेगा. इसी को तरीक़ बोलते हैं.

ऐ तालिब ! यह तन का बयान खूब जान और यकीन कर और आंखों से देख, जो आप ही बहरे तन होकर इसी तन से बरात करना और खाली वक्त खाली जाए (जगह) में वज़ू करके दो गाना (रकअत) नफिल नमाज़ गुज़ार, मुँह तरफ क़िब्ला के कर ज़िक्रे जली ज़बान पर रख और तमाम आज़ा

(हिस्से) से और दम से थोडे वक्त हाथ पाऊं हरकत से बाज़ रख. ज़बान खामोश और आंखें बंद और कान गैर समाअत से बाज़ करके बंदगी कर. कोई खतरा (खयाल) दिल में ना ला, या अपने पीर की सूरत मुरीद होते वक्त जिस तरह देखा था इसी तरह देख. अपने रूहानी तन को जिस तरह सैर में पाता है इसी तरह नज़र में लाकर देख. कोई खतरा (खयाल) दिल में आने ना दे. इसी तरह फरामोश हो कि अगर कोई सूई चुभो दे तो मालूम ना पडे. इस तरह बंदगी में वस्ल हो. इसी खाकी तन का जामा (कपडा) है और ज़बान और मुँह है सो इसी से हमेशा अल्लाह अल्लाह बलंद आवाज़ से कहा कर और इसी तरह दिल को रुजूअ करके अल्लाह तआला मेरे सामने हाज़िर व नाज़िर है देखता है और सुनता है, यह एतेक़ाद दिल में मज़बूत करके बलंद आवाज़ से अल्लाह अल्लाह कर. उसकी आवाज़ कानों से सुन, आंखों से देख कि इसमें क्या नज़र आता है. अल्लाह मुर्शिद है, अल्लाह मुरीद है, अल्लाह करीम है अल्लाह कलीम है. तहकीक कि यह नन्यान्वे (९९) अल्लाह के हैं. इन नामों के मायनों को तसव्वुर करना इसको ज़िक्रे क़ल्बी कहते हैं. यह ज़िक्र बगैर मुर्शिद हासिल नहीं होता. इसी तरह यादे खुदा कर तब तेरे दिल का खतरा टूटे और आखिरत का अहवाल और मकामे मलकूत का तुझे कश्फ होगा तो बहुत लज़्ज़तें उठाएगा. तुझे तमाम चीज़ें इस आलम की नज़र आऐंगी. अपने दिल को हमेशा ऐसे शौक में रख और नमाज़ आबे ज़मज़म से या हौज़े कौसर से वज़ू करके अर्श पर अपने पीर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ या तमाम अंबिया व औलिया मोमिनीन के साथ जमाअत से पढ. तिलावते कुरआन व रुकूअ व सुजूद व क़ायदा व क़ियाम बाइत्मेनान अदा कर. वक्ते नमाज़ भी यही तसव्वुर रखना, गैर चीज़ का खतरा दिल में आने ना देना, अपनी मौत को याद रखना. इसी को हुज़ूरे दिल बोलते हैं. ऐ तालिब ! यह बातें बगैर मुर्शिदे कामल हासिल ना होंगी.

وَ مَا تَوۡفِيۡقِىۡ اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَ اِلَيۡهِ اُنِيۡبُ

व मा तौफीक़ी इल्ला बिल्लाह, अलैहि तवक्कलतु व इलैहि उनीबु.

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

खुदा की हम्द और मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम की नात के बाद, ज़ाहिर हुए जो हर एक को फर्ज़ है. यह तीन हाल पर ईमान लाना जो हकीकत में कलमए-तौहीद पढता है वह मोमिन बरहक होता है. जो कोई यह तीन हाल पर ईमान नहीं लाता और ज़बान से कलमा पढता है वह मोमिन नहीं होता है. जो कोई यह तीन हाल से वाकिफ होता हौ वो वली खुदा का होता है.

हाले अव्वल : यह है जो मालूम करना है जो नहीं सो खुद नहीं है और है सो अल्लाह है. अल्लाह तआला वास्ते ज़हूर असमा और सिफात के इसी नेस्ती ज़ाती को जो सूरते लतीफह की दिया और इस नुतफा को रेहम में लाकर अलक़ह किया, बाद मुज़ग़ह किया बाद इस्तेख्वाँ (हड्डी) पर उसके गोश्त का लिबास पहनाकर देखा तो ना नजिस है और मुर्दा है और जाहिल है, आजिज़ है, मुज़तर्र है, बूढा है और अंधा है और मुक्का है और बेहिस व हरकत है. जब हक तआला उस पर रेहम की नज़र फरमाकर रूहे हैवानी जो परतव रूहे इंसानी का है उसमें दाखिल किया और इस आलम में इसको लाय, क़ुवा हिस्सी और नफ्सानी व हैवानी परतव से रूहे इंसानी के बदन में ज़हूर पाए वह मुर्दा ज़िंदा हुआ और जाहिल आलिम हुआ और आजिज़ कुदरत पाया और मुज़तर मुख्तार हुआ और बेहरा समाअत पाया और अंधा बीनाई पाया और मुक्का कलाम में आया. हक तआला हाजतें इसकी रवा किया और इसको बुज़ुर्गी दिया. जो अपने को जाने खालिक़ को पहचाने.

ऐ अज़ीज़ ! इस बदन में रूहे हैवानी का बदन है तब यह बदन ज़िंदा है. इस आंख में वह आंख है तब वह देखता है. इस कान में वह कान है तब सुनता है. इस मुँह में वह मुँह है तब बात करता है, इस हाथ में वह हाथ है तब लेता है, इस पाऊँ में वह पाऊँ है जो चलता फिरता है. इस बदन से वह बदन किया वह मुर्दा है. यानी अदमे अव्वल सुरत जमाद की पाया, बाद नबातात में आया फिर हैवान में आकर तजल्ली से अनवार सिफात के इंसान हुआ है. इस वास्ते मज़हर ज़ात और सिफाते हक का इंसान है. और मज़हर सिफाते हक का रूह है और मज़हर रूह का दिल है और मज़हर दिल का

जिस्म है और मज़हर जिस्म का साया है. यानी साया को हरकत जिस्म से है और जिस्म को हरकत दिल से है और दिल को हरकत रूह से है और रूह को हरकत हक से है यानी इंसान मज़हर अल्लाह का है. मज़हर हय्युन का है, दिल मज़हर अलीम का है, नफ्स मज़हर मुरीद का, जिस्म मज़हर क़दीर का, चश्म मज़हर बसीर का, गोश (कान) मज़हर समीअ का, ज़बान मज़हर कलीम का है. इसी तरह हर आज़ा (हिस्से) और हरकत मखलूके खुदा का है और मज़हर एक एक इस्म का है. बूझना और शुक्र एहसान अल्लाह का बजा लाना और ज़िल्लत व ख्वारी अपनी नज़र में रखना और तमाम चीज़ों को अपने में आरिय्यत (उधार) हैं. जानना इस वास्ते हक तआला इम्तेहान करने के लिए पैगंबर को रवाना किया है और कुरआन शरीफ दिया है और मौत उसपर भेजा है और उसको अव्वल के सैरी बनाता है ताकि बंदगान जानें जो खालिक अपना वहदहु ला शरीक है और लतीफ है और क़ादिर है और हिस्सी है और क़य्यूम है. सब कमाल उसको हैं और तमाम नुकसान हम को है. फिर हक तआला इस मुर्दे को ज़िंदा करता है और हश्र में लाता है और शाहिदी से इस दो गवाह के हिसाब उससे लेता है. यह जैसा किया वैसा पाता है.

हाल दूसरा : यह है जो अल्लाह को तो वुजूदे ज़ाती है और सिफात उसके ना ऐन ज़ात हैं ना गैरे ज़ात हैं. आलम को वुजूद आरज़ी और ज़ाइद बर ज़ात है और सिफाते आलम भी ज़ाइद बर ज़ात है. यानी वुजूद तमाम परतव वुजूदे हक का है और हयात तमाम आलम की परतव हयाते हक की है और इल्म तमाम आलम का परतव इल्मे हक का है और तमाम आलम का इरादा इरादए-हक का परतव (आईना) है और कुदरत तमाम आलम की परतव कुदरते हक की है और समाअत तमाम आलम की परतव समाअते हक की है और बसारत तमाम आलम की परतव बसारते हक की है और कलाम तमाम आलम का परतव कलामे हक का है. बाकी हाल इस नहज (तरीके) पर बूझना है.

हाल तीसरा : यह है जो तमाम आलम मज़हर असमा व सिफाते खुदा के हैं. ज़हूर हर इस्म का इस तौर पर बूझना है. मां बाप बच्चों के साथ जो मुहब्बत रखते हैं और दोस्त दोस्त के साथ दोस्ती रखता है 'वदूद' (ودود)

का ज़हूर है जानना. और आलम आपस में जो कुछ दुश्मनी रखते हैं 'क़ाहिर' (قاهر) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ इज़्ज़त व बुज़ुर्गी पाते हैं और रखते हैं 'अज़ीज़' (عـــزيـــز) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि ज़िल्लत पाते हैं और ख्वारी में रहते हैं 'मुज़िल्ल' (مـــذل) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि नमाज़ करते हैं और रोज़ा रखते हैं 'माबूद' (معبـود) का ज़हूर है जानना. और जो लोग मुसलमान हुए हैं होते हैं 'हादी' (هـادی) का ज़हूर है जानना. और जो लोग कि काफिर हुए हैं होते हैं 'मुदिल्ल' (مـضل) का ज़हूर है जानना. और जो कुछ कि नफा पाते हैं 'नाफेअ' (نـــافـع) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि नुक्सान पाते हैं 'दार्र' (ضــــارّ) का ज़हूर है जानना. और आलम से जो कुछ कि बोल व बराज़ दफा हुआ या होता है 'दाफेअ' (دافـــع) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि धोते हैं और वज़ू और गुस्ल करते हैं 'ताहिर' (طـاهر) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि मरते हैं 'मुमीत' (مـــميـت) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि जीते हैं 'मुही' (مـــحـــی) कह ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि हासिल करते हैं 'अलीम' (عليم) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि चाहते हैं 'मुरीद' (مريد) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि करते हैं और चलते हैं 'क़दीर' (قـديـر) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि सुनते हैं 'समीअ' (سميع) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि कहते हैं 'कलीम' (كـــليـــم) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि देखते हैं 'बसीर' (بــصيـر) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ लिबास पहनते हैं 'सत्तार' (ستـــار) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि खाते हैं और खिलाते हैं 'रज़्ज़ाक़' (رزّاق) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि हुए हैं होते हैं 'खालिक़' (خالق) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि देते हैं 'मुअती' (مــعــطـــی) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि लेते हैं 'क़ाबिज़' (قـابض) का ज़हूर है जानना. और आलम जो कुछ कि राहत पाते हैं 'बासित' (بـــاسـط) का ज़हूर है जानना. और आलम में जो कुछ कि सनाएअ (मखलूकात) हैं 'सानेअ' (صـــانـع) का ज़हूर है जानना. और आस्मान को 'बदीअ' (بـديع) का ज़हूर जानना और ज़मीन को 'अद्ल' (عدل) का ज़हूर है

जानना.

ऐ अज़ीज़ ! इस नहज (तरीके) पर हर चीज़ एक एक नाम का ज़हूर रखती है और ज़हूर एक नाम का ताबेअ दूसरे नाम के होता है वाकिफ होना. जो कोइ यह तीन हाल से वाकिफ हुआ वह वली खुदा का हुआ, उसको जन्नत है और दीदार खुदा-ए-तआला का है. शेर :

इस अकाइद को लिख्खा सय्यद हयात
याद इसको जिन रख्खा पाया नजात
जान बाबुल मग़फिरत है इसका नाम
मुस्तफा पर हों दरूद और सलाम

अज़ीज़ाने मिल्लत से इल्तेमास है कि पाकबाज़ सालिकाने बलंद फहम वासिलों के इर्शादात का मअनवी मायना समझने के बाद और कोई इरफान की तलब बाकी रहती है. अल्लाह तआला अक्ले सलीम और फहमे अज़ीम अता करे. हदीस "تَفَكَّرُ فِیْ صِفَاتِ اللّٰهِ وَ لَا تَفَكَّرُ فِیْ ذَاتِ اللّٰهِ" 'तफक्कर फी सिफातिल्लाह व ला तफक्कर फी ज़ातिल्लाह'. शेर :

नहीं ज़ात सिफत से जुदा सही
यह समझ नहीं सो गदा सही

इस लिए इल्म का जानना फर्ज़ है. :

बे इल्म नतवाँ खुदा रा शनास

तज़किरतुल औलिया में एक बुज़ुर्ग ने फरमाया : घी ज़्यादा खाया करो. दूसरे बुज़ुर्ग ने कहा घी ज़्यादा खाने से नफ्स जवान होगा. वही बुज़ुर्ग ने कहा इस लिए नहीं बल्कि घी ज़्यादा खाने से अक्ल व फहम में ताज़गी आएगी और खुदावंदे करीम भी खूब समझ में आएगा.

हादियाने बरहक ने हमारे लिए कैसी कैसी हिदायतें बख्शी और हमें किस किस अदा से समझाया. कुरबान जाऐं.

इल्म की हद से परे बंदा-ए-मोमिन के लिए
लज़्ज़ते शौक भी है नेअमते दीदार भी है
(इकबाल)

ज़हूरे शशुम

मर्तबा-ए-इंसान अस्त

अज़ मीर हयात क़िब्ला रहमतुल्लाहि अलैह

मर्तबा है आखरी इंसान का
आह जामेअ है सो वह हर शान का

लफ्ज़ मायना मिल के एक इंसान है
यानी दोनों मिल के एक कुरआन है

आईना है वह जमाले पाक का
गरचे है बुरका उसे इस खाक का

भाई जान इंसान है सो खास नूर
दो जहाँ का इस में है पूरा ज़हूर

है निहाँ खुरशीद इस शबनम के बीच
हफ्त दरिया है अयाँ इस नम के बीच

तू बसीरत को समझ इंसान कर
है वह रब्बानी लतीफा खास कर

वह खुलासा आलमे मलकूत का
वह खुलासा आलमे जबरूत का

वह मुरक्कब तन से है और जान से
जब खिलाफत उस को हुई सुबहान से

दो जहाँ असबाब है मकसूद वह
जब फरिश्तों से हुआ मसजूद वह

जब उठाया वह अमानत को सदा
मुस्तहिक का है सो हक करना अदा

सब वसत के बीच वह करता है काम
खल्क होना नेक उस को वस्सलाम

इस में हैं यह छे मरातिब का ज़हूर
जब अरूजी सैर वह लाता है सूर

जूँ लियाक़त ज़ात में रखता है वह
यूँ बसाइत मरतबों की उस को हो

मुस्तफा को है बिसाते बाकमाल
जब किया खत्मे रिसालत ज़ुलजलाल

रिसाला

बरज़खे तिलावतुल वुजूद हज़रत आदम सफीयुल्लाह

और

बरज़खे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पंजतन पाक अजमईन

ला	इलाहा	इल्लल्लाहु	मुहम्मदुर	रसूलु	ल्लाह
ज़ात	अली	फातिमा	हसन	हुसैन	तू
गैब	इश्क	मैं	देखता पन	नज़र आता पन	तू
आदम	मोमिन	मुसलमान	बंदा	इंसान कौल जान	फकीर
नासूत	मलकूत	जबरूत	लाहूत	हाहूत	सयाहूत
मुजाहेदा	मुराकेबा	मुशाहेदा	मुआएना	मुकाशेफा	मुगाएबा
फूल यानी मेवा	गुल	शाख	पेड	जड	तुख्म
अलिफ अल्लाह	लाम जिब्राईल	मीम मुहम्मद	अलिफ अल्लाह	मीम अहमद	मीम मुर्शिद
अलिफ अल्लाह	लाम मुहम्मद	मीम मुर्शिद	अलिफ इश्क	लाम आशिक	मीम माशूक
दर्शन १	दर्शन २	दर्शन ३	दर्शन ४	दर्शन ५	दर्शन ६

हज़रत इमाम हुसैन	हज़रत इमाम हसन	हज़रत बीबी फातिमा	हज़रत अली	हज़रत मुहम्मद (स)
५ तन	४ तन	३ तन	२ तन	१ तन
जली व सिर्री	क़ल्बी व नूर	रूही व रूह	सिर्री व मुहब्बत	खफी व दिल
अनासिरे जिब्राईल	अनासिरे इस्राफील	अनासिरे मीकाईल	अनासिरे इज़राईल	अनासिरे अज़ाज़ील
बोलता पन यानी आवाज़	होकता पन	नज़र आता पन यानी रौशनी	सुनता पन यानी कियास	खाली पन व जान
खाक मुँह	बाद नाक	आब आंख	आतिश कान	नूर व ज़ात
खाक का जान पानी	बादी का जान खाली	पानी का जान आग	आग का जान बारां	जान का जान ज़ात
वाजिब का नफ्से अम्मारह	मुमकिन का नफ्से लव्वामह	मुमतनिअ का नफ्से मुतमइन्नह	आरिफ का नफ्से मुलहिमह	वाहिद का नफ्से रेहमानी
रूहे जारी	रूहे सिफली	रूहे मलकी	रूहे कुदसी	रूहे अलवी
नुकता	जज़्म	नून	पेश	काफ

खुलासए-'कुन' के मायना यह है 'कुन' से मुराद काफ नून जज़्म पेश नुकता कुन फरमाया. सो यह है 'कुन' के मायना कर यानी पैदा कर ज़ात पंजतन यानी 'कुन' के पांच हुरूफ हुए. यानी काफ से हज़रत मुहम्मद सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम, पेश से हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहु, नून से हज़रत बीबी फातिमा ज़हरा रदियल्लाहु अन्हा और जज़्म से हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हू, नुकते से हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हू.

अफज़लुज़् ज़िक्र

''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''
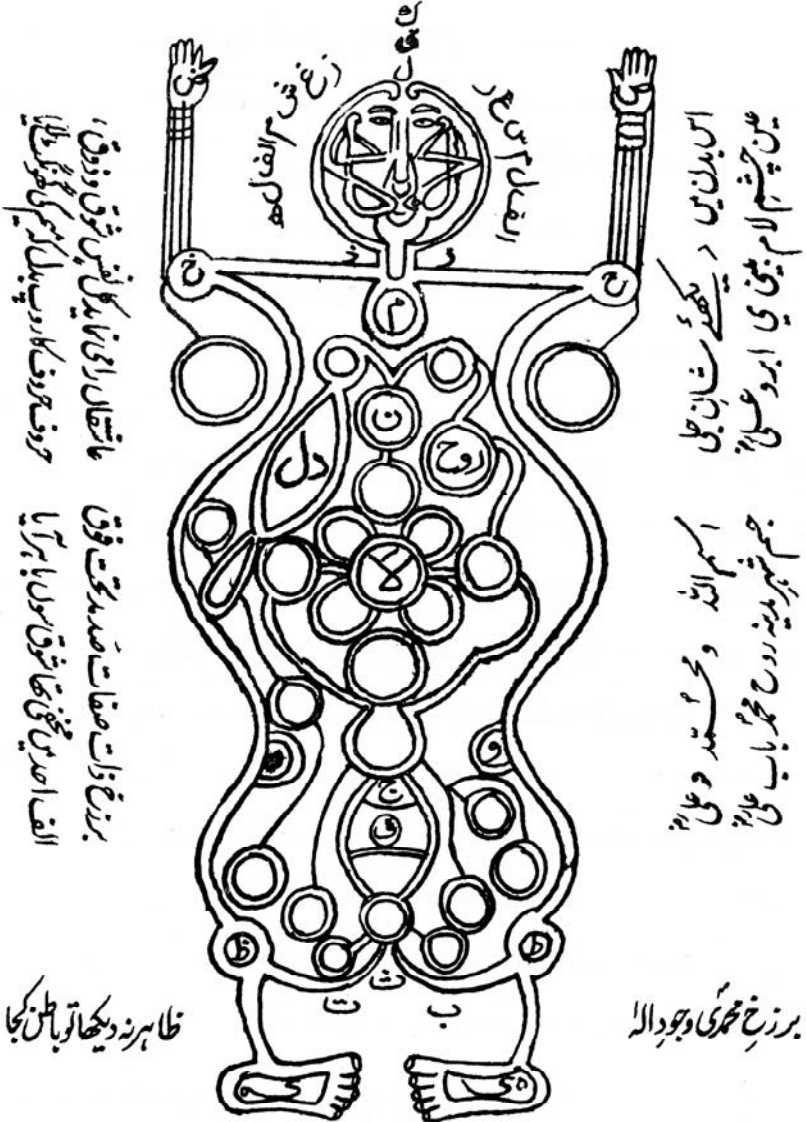
हुरूफे तहज्जी का है यह खुलासा

है कतरे में दरिया नज़र हो तो पाता

तशरीह : तिलावतुल वुजूद बस्त व हश्त हुरूफ खत्म खत्मे कुरआन ईस्त. सात शुग्ल इस वुजूद में हैं. चुनांचे तफसीले ज़ेल यह है :

अव्वल शुग्ल : हर्फे 'या' को कदम में रखे हैं, दावत इसकी यह है : सब्बित अक़ादमना या अल्लाह. यानी ऐ बारी मेरे कदम तेरी इबादत की तरफ साबित रख. मैं तेरी इबादत के सिवाए दूसरी जानिब ना जाऊँ.

दुव्वम शुग्ल : 'हे' को ज़ानू में रखे हैं. दावत इसकी यह है : 'हरबुन हलनन या अल्लाह' यानी बारी मेरे ज़ानूओं को तेरी इबादत के बगैर मत उठा.

सुव्वम शुग्ल : हर्फे 'वाव' को नाफ में रखे हैं. दावत इसकी यह है : 'वहफज़ नफसा या अल्लाह' यानी ऐ बारी मेरे दम को तेरे ज़िक्र से निगाह रख ताकि तेरी याद के सिवाए दम खाली ना जाए.

चहारुम शुग्ल : 'नून' को सीने में रखे हैं. दावत इसकी यह है : 'नव्विरना बिलहक्कि या अल्लाह' यानी ऐ बारी यह नेअमताँ हैं जो नूर मेरे सीने में रखा है इलाही इस नूर से मुझे नसीब कर.

पंजुम शुग्ल : 'मीम' को हलक़ूम में रखे हैं. दावत इसकी यह है : 'मिम्मारिजू या अल्लाह' यानी ऐ बारी ! यह मेरे हलकूम को ज़िक्र से इलहाक़ बख्श ताकि शौक मेरा तेरे ज़िक्र से बाकी रहे और मौकूफ ना रहे (रुके नहीं).

शशुम शुग्ल : हर्फे 'लाम' को पेशानी में रखे हैं; दावत इसकी यह है : 'लफसक़ना नूरका या अल्लाह' यानी ऐ बारी ! तेरे ज़िक्र का नूर ज़ाहिर कर, इस से आलमे बातिन का मुझे नज़र पडे और तू जहाँ है वहाँ मेरा सर निझाया जाए.

हफतुम शुग्ल : 'काफ' को दिमाग में रखे हैं. दावत इसकी यह है : 'कमा मनामना या अल्लाह' यानी ऐ बारी तआला ! मेरे दिमाग में बू भेज तेरी मुहब्बत की, और बाकी ना रहे अव्वल जिस्मानी से खुलासी हुए कि आरिफ

और मुरीद और तालिब और इस सात शुग्लों को वाजिबुल वुजूद के हवाले करे ताकि शैतान इस में दाखिल ना हो.

बयान अट्ठाईस हुरूफ मशरूती हकीकत खत्मे कुरआन तिलावतुल वुजूद इस तौर से मुंदरिज है. चुनांचे :

१) अव्वल हर्फ 'अलिफ' की शक्ल ज़बान में इसका अहदिय्यत इलाही पर दलील सामेअ है.

२) हर्फ 'बा' की जाए सीधे बैज़े में करार है और इस का बरिय्यत व गैरिय्यत पर बुरहाने क़ातेअ है.

३) हर्फ 'ता' का मकाम बाऐं बैज़े में मकाम है. इसका तसव्वुर तसदीके मारिफत की तकरार है.

४) हर्फ 'सा' का मकाम वहदिय्यत की जाए में मुक़र्रर है. इसका सबूत मा-सिवा अल्लाह का दम भरना है.

५) हर्फ 'जीम' कमर में करार पाया है और इसका जलाल व जमाल की सिफातों पर सरदार है.

६) हर्फ 'हा' सीधे बाज़ूओं में नमूद है. इसकी हिकमत हकीम मुतलक़ पर सरशार है.

७) हर्फ 'खा' बाऐं बाज़ूओं में मुक़र्रर है. इसके खयालात शिर्क दुई दूर करने वाला है.

८) हर्फ 'दाल' ऊपर के लब को करार दिए हैं. इसकी दलील सुकूत से मंज़िले मकसूद पर पहुँचने वाला है.

९) हर्फ 'ज़ाल' को नीचे के लब को मुक़र्रर किए हैं और इसका ज़िक्रे खैर से ज़ाकिर मज़कूर है.

१०) हर्फ 'रा' सीधे अबरू यानी भौं में शक्ल बना. इसका राफ्त उलफत से मामूर (भरा हुआ) है.

११) हर्फ 'ज़ा' बाऐं अबरू में शक्ल मुक़र्रर है. इस का रुकावट क़ल्ब से तज़किया-ए-नफ्स करता है.

१२) हर्फ 'सीन' सीथे कान की शक्ल बनाके कायम है. इसकी सलामती सिर्री व सिर्रहू के है.

१३) हर्फ 'शीन' बाऐं कान से शक्ल बनाके करार पाई है. इस का शम्स फलके इब्तेदा है.

१४) हर्फ 'साद' (ص) सीधे हाथ के पंजे में शक्ल बनी हुई है. इसकी सुलहे कुल की इब्तेदा है.

१५) हर्फ 'ज़ाद' (ض) बाऐं हाथ के पंजे में मौजूद है. इसकी ज़िया नाफेअ के औसाफ से खबरदार है.

१६) हर्फ 'तोए' सीधे पाऊं के घुटने में शक्ल बनाके मौजूद है. यह इस की ज़ाहिर व मज़हर में नमूदार है.

१७) हर्फ 'ज़ोए' बाऐं घुटने में करार पाया है. इसकी ज़ाहिर व बातिन में आशकार है.

१८) हर्फ 'ऐन' सीथी आंख की शक्ल रखता है. इसकी इबादत आंख से ऐन और गैर पर होशियार है.

१९) हर्फ 'ग़ैन' बाऐं आंख की शक्ल है. इसकी गैज़ व गज़ब से गाफिलों को डराता है कि वह ऐन व ग़ैन यह दोनों हुरूफ बरज़ख पंजतन से निसबत चहरे की रखते हैं.

२०) हर्फ 'फा' को गरदन के गिर्द में जाए करार दिए हैं. इसका फुआद क़ल्ब के फवाइद 'फफिर्रू इलल्लाह' की राह फकीरों और अमीरों को बताती है.

२१) हर्फ 'क़ाफ' तालू में करार पाया है. इसका उक़बा की रहमत से और हिर्से दुनिया (दुनिया की लालच) की ज़ेहमत (तकलीफ) बयान करता है.

२२) हर्फ 'काफ' सर का लपेटा है. इस का करम मौला फैज़ान और करामते औलिया का एहसान एलान करता है.

२३) हर्फ 'लाम' पेशानी में मौजूद है. इसके लिबास ज़हूर कसरत का वुजूद वेहदत पर हर रोज़ ताज़ा ब ताज़ा नौ ब नौ बताता है.

२४) हर्फ 'मीम' हलकूम में करार पाया है. इसके मकामात सालिकों के मंज़िले मलकूत व जबरूत में 'बिहुक्मिल्लाह मुहकमुन व ऐनमा कुनतुम' बनाते हैं और इसमें बरज़खे मुहम्मदी का ज़हूर ज़ाहिर देखता है.

२५) हर्फ 'नून' सीने में दाखिल है. इसकी नूरानी 'अल्लाहु नूरुस् समावाति वल अर्दि' का ज़िक्रे खफी व जली हर दम जारी रखता है और इस नून से शान नुबुव्वत की ज़ाहिर है.

२६) हर्फ 'हा' नाक में 'हा' की शक्ल रखता है. इस की 'हुवल्लाहु' के मुशाहदह व मुराकेबा से मंज़िलत दिल में याद दिलाती है.

२७) हर्फ 'वाव' गुर्दे की शक्ल रखता है. मकाम वेहदत जो दम साज़े ज़िक्र है.

२८) हर्फ 'या' हर दो कदम में यानी एडीयों में अपनी शक्ल रखते हैं. इसकी याद अल्लाह के और मौत के हर एक पढने और सुनने वालों को याद दिलाती है कि ऐ तालिब हर हर्फ हर जानदार पर हर हर अशया (चीज़) पर हर किस्म का ज़हूर होता है. क्या ज़मीन व आस्मान वगैरा कोई जगह हुरूफ के ज़हूर से खाली नहीं.

अ्ला हाज़ल क़यास (इसी तरह) आठ सैरों के नाम यह हैं :

अव्वल सैर सफरुल हक्क	दुव्वम सैर सफरुल बईद
सुव्वम सैर सैर इलल्लाह	चहारुम सैर सैर फि अल्लाह
पंजुम सैर सैर इजमाल	शशुम सैर सैर ऐनुल्लाह
हफ्तुम सैर सैर तैर	हश्तुम सैर सैर तफसीली

यह कसब व कमाल दानायाने मारिफत (जानने वाले) सालिकाने पुर हकीकत पर वाज़ेह हैं. वाबस्तगाने मुहब्बत से पोशीदा नहीं. फक़त

दर बयाने रंगहाए रंगारंग :

नूरे खुदा, रंग और बे जहत बे मानिंद नूर रंग रसूले खुदा मिसाले आफताब व क़मर, नूरुन अला नूर. ऊदा रंग व नूर बीबी फातिमा रदियल्लाहु अन्हा. ज़र्द रंग और इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हू का नूर रंग सब्ज़ और नूर इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हू रंग सुर्ख और नूर मुर्शिद रंग सब्ज़ व सुर्ख और नूर नफ्से अम्मारह रंग सियाह व पीला, नूरे इबलीस ज़र्द रंग, नूरे दिल रंग सफेद, नूरे रूह बेरंग सफेद व सियाह माइल, नूरे लतीफा सिर्रे खफी बेरंग सियाह, नूरे सिर्री रंग सब्ज़, नूरे खन्नास सियाह रंग, नूरे नफी ज़र्द रंग, नूरे इसबात ऊदा रंग. तमाम शुद

निसबते ‘क़दीर’ (रह.)

अहले नज़र ने देखी हकीकत ‘क़दीर’ की
अल्लाह से मिलाती है निसबत ‘क़दीर’ की

पाकीज़ा फिक्र दर्सगहे इश्क ने दिया
कर्रो बयाँ भी करते हैं हुरमत ‘क़दीर’ की

बादह कशाने होश का सागर है जिस की ज़ात
हर हर नफस ने दी है सदाकत ‘क़दीर’ की

रंगीनीए हयात के मोती लुटा गए
कितनी अज़ीम तर है सखावत ‘क़दीर’ की

है गंज बख्श, बंदानवाज़ व ‘वतन’ का फैज़
लुत्फे करीम से हुई शोहरत ‘क़दीर’ की

गोया ‘क़दीर’ कलमए-तय्यब का दर्स हैं
इसके सिवा नहीं है वज़ाहत ‘क़दीर’ की

है खाके पा ‘क़दीर’ का ‘साहिब’ है जिस का नाम
मुझ से फकीर पे है इनायत ‘क़दीर’ की

मुनतज़िरे दीद

फैज़ जारी है बदस्तूर यह मैखाने का
हाँ पता ढूंढ लिया है तेरे काशाने का

यह जबीं वक्फ है नक्शे कफे साकी के लिए
कितना बाहोश अमल है तेरे दीवाने का

आप की दीद है तसकीन का बाइस आका
मुनतज़िर एक ज़माना है तेरे आने का

वक्त के साथ बदल जाते हैं मौसम कितने
बिजलीयों का भी इरादा है सितम ढाने का

आप के हाथ में सागर है अता का 'साहब'
फख्र रह जाए सखी मेरे भी पैमाने का

'साहिब' क़दीरी

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

पेशीन गोइयाँ

मदीना शरीफ की एक किताब 'मकसूमे बुखारी' से यह पेशीन गोई नक्ल की गई है. चौधवीं सदी की दूसरी सुलुस (तिहाई) में हज़रत इमाम महदी अलैहिस् सलाम का ज़हूर होगा. उनके ज़हूर से ईसाइयों की वह हुकूमत जो सब से ज़्यादा मुसलमानों पर हाकिम होगी इस्लाम इख्तियार कर लेगी और सब से पहला शख्स इमाम के दस्ते मुक़द्दस को मक्का के पहाड के नीचे बोसा देगा वह उस नौ मुस्लिम बादशाह का एलची होगा.

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हू ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

اِنَّ مِنْ اَشْرَاطِ السَّاعَةِ اَنْ يُرْفَعَ الْعِلْمُ وَ يَكْثُرَ الْجَهْلُ وَ يَكْثُرَ الزِّنَا وَ يَكْثُرَ شُرْبُ الْخَمْرِ وَ يَقِلَّ الرِّجَالُ وَ يَكْثُرَ النِّسَاءُ حَتّٰى يَكُوْنَ لِخَمْسِيْنَ اِمْرَأَةٍ اَلْقَيِّمُ الْوَاحِدُ.

यानी कयामत आने की निशानीयाँ यह हैं कि इल्म उठ जाएगा, जहालत बढ जाएगी, ज़िनाकारी की कसरत होगी, शराब नोशी तरक्की पाएगी, मर्द कम हो जाऐंगे और औरतें ज़्यादा हो जाऐंगी यहाँ तक कि पचास औरतों में एक मर्द होगा.

दूसरी हदीस इमाम बुखारी ने हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत की है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

اَوَّلُ اَشْرَاطِ السَّاعَةِ نَارٌ تَحْشُرُ النَّاسَ مِنَ الْمَشْرِقِ اِلَى الْمَغْرِبِ

यानी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कयामत की पहली निशानी वह आग है जो आदमीयों को मशरिक़ से मगरिब की तरफ खींच कर ले जाएगी.

तीसरी हदीस हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हू ने हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत की है कि हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

لَا تَذْهَبُ الدُّنْيَا حَتّٰى يُمَلِّكَ الْعَرَبَ رَجُلٌ مِنْ اَهْلِ بَيْتِيْ يُوَاطِيءُ اِسْمُهُ اِسْمِيْ وَ فِيْ رِوَايَةٍ لَهُ قَالَ لَوْ لَمْ يَبْقِ مِنَ الدُّنْيَا اِلَّا يَوْمٌ لَطَوَّلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ الْيَوْمَ حَتّٰى يَبْعَثَ اللّٰهُ فِيْهِ رَجُلًا مِنِّيْ اَوْ مِنْ اَهْلِ بَيْتِيْ يُوَاطِيءُ اِسْمُهُ اِسْمِيْ وَ اِسْمُ اَبِيْهِ اِسْمَ اَبِيْ يَمْلَأُ الْاَرْضَ قِسْطًا وَ عَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وَ جُوْرًا.

यानी दुनिया फना नहीं होगी जब तक मुल्के अरब पर मेरे अहले बैत में से एक शख्स का तसल्लुत ना हो जिस का नाम मेरे नाम पर होगा और इन्ही असनाद व रिवायात से दूसरा इर्शाद है, फरमाया : अगर दुनिया का एक ही दिन बाकी रह जाए तो भी अल्लाह तआला उसको इतना दराज़ कर देगा कि खुदा की तरफ से एक शख्स ज़ाहिर हो जो मेरे अहले बैत में से होगा और जिसका नाम मेरे नाम पर होगा उसके बाप का नाम मेरे बाप का सा होगा, ज़मीन को अद्ल व इंसाफ से भर देगा जैसा कि वह ज़ुल्म व जोर से लबरेज़ होगी.

चौथी हदीस शरीफ यह है :

اَلْمَهْدِيُّ مِنِّيْ اَجْلَى الْجَبْهَةِ اَقْنَى الْاَنْفِ، يَمْلَأُ الْاَرْضَ قِسْطًا وَ عَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وَ جُوْرًا يَمْلِكُ سَبْعَ سِنِيْنَ.

यानी महदी मुझ से यानी मेरे खानदान से होगा रौशन पेशानी, नाज़ुक व बलंद नाक वाला रूए ज़मीन को अद्ल व इंसाफ से भर देगा जैसे कि वह ज़ुल्म व जोर से भरी होगी, उसकी हुकूमत सात बरस रहेगी.

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है, उन्होंने कहा हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया दुनिया खत्म नहीं होगी यहाँ तक कि मेरे अहले बैत में से एक साहब अरब के बादशाह होंगे, उनका नाम मेरे नाम के जैसा होगा. (तिर्मीज़ी, अबू दाऊद)

और आप की एक रिवायत में है आप ने फरमाया अगर दुनिया का सिर्फ एक दिन बाकी रहा हो तो भी अल्लाह तआला उस दिन को दराज़ फरमा देगा इस क़दर कि उस में एक ऐसे साहब को भेज देगा जो मेरे या मेरे घर

वालों में से हैं. उनका नाम मेरे नाम के और उनके वालिद का नाम मेरे वालिद के नाम के जैसा होगा जो ज़मीन को अद्ल व इंसाफ से भर देंगे जैसे वह ज़ुल्म व ज़्यादतीयों से भर गई थी.

हज़रत अबू इसहाक़ रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है उन्होंने कहा सय्यदना अली रदियल्लाहु अन्हू ने इर्शाद फरमाया वह अपने साहबज़ादे हसन को देख कर इर्शाद फरमाया मेरा यह बेटा सय्यद है जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका (सय्यद) नाम फरमाया और उनकी पुश्त से एक साहब निकलेंगे जो तुम्हारे नबी के नाम से मौसूम होंगे. अखलाक़ में उन के मुशाबेह (जैसे) होंगे और शक्ल में मुशाबेह ना होंगे. फिर आप ने पूरा क़िस्सा बयान किया कि वह ज़मीन को अद्ल व इंसाफ से भर देंगे. (अबू दाऊद)

हज़रत बीबी उम्मे सलमह रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है, वह फरमाती हैं मैंने हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना कि मेहदी मेरे खानदान से और हज़रत फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की औलाद से होंगे. (अबू दाऊद)

(नूरुल मसाबीह, तर्जुमा ज़ुजाजतुल मसाबीह, जिल्द : ४)

इमाम मेहदी अलैहिस् सलाम का दौरे खिलाफत आए बगैर कयामत बपा नहीं होगी

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को (इमाम) मेहदी का ज़िक्र करते हुए सुना, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : मेहदी हक है (यानी उनका ज़हूर बरहक और साबित है). और वो सय्यदह फातिमतुज़् ज़हरा रदियल्लाहु अन्हा की औलाद से होंगे. (अलक़ौलुल मोअतबर फी इमामिल मुन्तज़र, स: १७)

१) इमाम हाफिज़ अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा बिन सूरत तिर्मीज़ी रहमतुल्लाहि अलैह अपनी किताब 'जामेअ तिर्मीज़ी' में फरमाते हैं : हज़रत

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दुनिया उस वक्त तक खत्म ना होगी यहाँ तक कि मेरे अहले बैत में से एक शख्स अरब का बादशाह हो जाए जिसका नाम मेरे नाम के मुताबिक (यानी मुहम्मद) होगा. (अलक़ौलुल मोअतबर फी इमामिल मुन्तज़र, सः २०)

२) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेरे अहले बैत से एक शख्स खलीफा होगा जिसका नाम मेरे नाम के मुवाफिक (जैसा) होगा. हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से मरवी एक रिवायत में है कि अगर दुनिया का एक ही दिन बाकी रह जाएगा तो भी अल्लाह तआला उस एक दिन को इतना दराज़ फरमा देगा यहाँ तक कि वह शख्स (यानी मेहदी अलैहिस् सलाम) खलीफा हो जाए.

३) उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना कि मेहदी मेरी नस्ल और फातिमा (रदियल्लाहु अन्हा) की औलाद से होगा. (अलक़ौलुल मोअतबर फी इमामिल मुन्तज़र, सः २१)

नोट

अलामाते कयामत और ज़हूरे हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस् सलाम के बारे में जो पेशीन गोईयाँ 'गुलज़ारे क़दीर' में पेश की गई हैं ऐसी ही कई पेशीन गोईयाँ मुहद्दिसे दकन अबुल हसनात हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह शाह साहब क़िब्ला नक़्शबंदी रहमतुल्लाहि अलैह (हैद्राबाद) की किताब 'नूरुल मसाबीह' (तर्जुमा ज़ुजाजतुल मसाबीह, जिल्द :४) और शेखुल इस्लाम प्रोफेसर डॉक्टर अल्लामा मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी साहब क़िब्ला की किताब 'अलक़ौलुल मोअतबर फी इमामिल मुन्तज़र' (इमाम मेहदी अलैहिस् सलाम से मुतअल्लिक़ मुदल्लल व मुफस्सल नादिर किताब) में भी पेश की गई हैं. उन किताबों के भी चंद इक्तेबासात (पेराग्राफ) पेशे खिदमत हैं. मुलाहेज़ा फरमाऐं.

हिंदू किताब की पेशीन गोई

हिंदुओं की मशहूर किताब 'कलकी पुराण' में जिस को सब सनातन धर्म हिंदू सच्चा और पक्का मानते हैं, यह लिखा है : (कलकी पुराण, तबअ सादिकुल मताबिअ, मीरठ, सफह : अव्वल)

कलयुग में जो राजा ज़ुल्म करेंगे वह उनके (यानी कलकी अवतार के) हाथों से जो कि मिस्ल ज़हरीले और तुंद सांपों के हैं, लुक़मा होंगे. और उन हाथों से जो कि मिस्ल उन सांपों के हैं जिनकी फुंकार से शोले निकलते हैं उनके (यानी ज़ालिम राजाओं के) जिस्म पर तलवार की ज़र्ब (मार) से टुकडे टुकडे हो जाऐंगे. जो (कलकी अवतार) ब्राहमन के घर में पैदा होकर और मुल्क सिंध के घोडे पर सवार होकर मुल्क भर में सतयुग की शुरूआत करेंगे. वह क़दीमी धर्म को तरक़्क़ी देने वाला परमात्मा कलकी रूप में भगवान श्री हरी सब की हिफाज़त करेंगे.

फिर सफह ५-६ में लिखा है : उसके (यानी कलकी अवतार के) ज़हूर से पहले खलक़त (मखलूक) की यह हालत होगी कि सब लोग पाखंडी और बुरे काम करने वाले और मां बाप को तकलीफ देने वाले होंगे. वह वैद पढे हुए ना होंगे. हमेशा शुद्रों (कमीनों) की खिदमत को तय्यार रहेंगे. अकसर खराब दलाइल करेंगे (रस, घी, तेल, वगैरा) की फरोख्त का पेशा इख्तियार करेंगे. दौलत मंद ब्राहमन ही कलय्यन (आला खानदान) माने जाऐंगे और जो ब्राहमन रूपये के सूद पर बसर औकात करेंगे उन्हीं की पूजा (इज़्ज़त) की जाएगी. सन्यासी लोग घरों में रहना पसंद करेंगे. और गृहस्ती ज्ञान से अलग हो जाऐंगे. सब लोग गुरू की निंदा (बुराई) किया करेंगे. और धर्म के झंडे लगाकर मखलूक को लूटेंगे. दुल्हा दुल्हन का आपस में एक दूसरे को पसंद करना ही शादी कहलाएगा. बेवक़ूफ आदमी दोस्ती और खैरात वगैरा देने को खुद मशहूर करना पसंद करेंगे. जिस आदमी को किसी के साथ बुराई करने की ताकत ना होगी वह माफी देगा. मुफलिसी के सबब बैराग इख्तियार किया जाएगा. लोग अपनी इल्मी लियाकत ज़ाहिर करने के लिए बहुत बोलेंगे. और

धर्म के काम करेंगे. दौलत मंद लोग साधू समझे जाऐंगे और दूर का पानी तीर्थ माना जाएगा. गले में सिर्फ डोरा होना ही ब्राहमन की अलामत होगी और सिर्फ डंडा हाथ में रखने ही से सन्यासी कहलाएगा. पैदावार अजनास (अनाज) की होगी, अकसर नदी के किनारे काश्त (खेती) होगी. अच्छे अच्छे खानदानों की औरतें नाज़ेबा गुफ्तगू करना पसंद करेंगी और अपने खाविंद से मुहब्बत नहीं करेंगी. बेवा धर्म मार्ग में नहीं रहेंगी. बल्कि खुद मुख्तार हो जाऐंगी. बादल ज़रूरत के वक्त नहीं बरसा करेंगे. रिआया महसूल वगैरा से बहुत तकलीफ पाऐगी.

फिर सफह (८) पर है : कलकी अवतार का मकामे पैदाइश शंबल, उनके बाप का नाम विश्नूदास और मां का नाम सोमती है.

(अज़ इल्मी दीनी डायजेस्ट 'इस्तेक़ामत' के सय्यदना मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नंबर, मतबूआ १४०५, मुताबिक १९८५, कानपूर, सफह : ७९)

हिंदूओं के अकाइद के मुताबिक इस दुनिया में दुनिया और दुनिया वालों की मदद और हिदायत के लिए चौबीस (२४) अवतारों का तशरीफ लाना यकीनी और ज़रूरी है. जो नमूना-ए-खुदावंदी या औसाफे खुदावंदी में से चंद के हामिल होंगे. जिनका ज़िक्र श्रीमद भागवत में मौजूद है. उन में से तेईस (२३) अवतार तो इस किताब कलकी पुराण के लिखने के ज़माने तक तशरीफ ला चुके, अब सिर्फ एक चौबीसवें और आखरी अवतार का इंतेज़ार है जिन का ज़िक्र कई किताबों में है. और उनका नाम 'कलकी अवतार' यानी सियाही दूर करने वाला अवतार बताया गया है.

इन्हीं अवतार के तज़किरे में एक वेद को चार वेद और अठारह पुराण बनाने वाले एक्कीसवें अवतार वैदव्यास जी ने एक किताब लिखी जिसका नाम कलकी पुराण रखा. इस किताब के सफह ९ पर है कि कलकी अवतार के पिता का नाम 'विश्नवीस' और माता का नाम 'सोमवती' होगा.

तशरीह: नबी-ए-आखिरुज़् ज़माँ के वालिदे माजिद का नाम अब्दुल्लाह और वालिदा माजिदा का नाम आमिना होगा, इस लिए कि 'विशनू' अल्लाह के नामों में से एक नाम बमायना हाज़िर व नाज़िर है यानी अल्लाह और 'ईस'

बमायना अब्द यानी अब्दुल्लाह और 'सोमवती' बमायना अम्न व अमान वाली यानी आमिना.

''कल्क अवतार और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम''

कलकी अवतार के बारे में पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय, रीसर्च स्कॉलर, शौबा-ए-संसकृत, प्रयाग यूनीवर्सीटी की किताब जिसका उर्दू तर्जुमा मौलाना गुलाम नबी शाह साहब नक़्शबंदी हैद्राबाद ने किया है ''कल्क अवतार और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम'' में लिखा है.

पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय यूनिवर्सीटी के सिनीयर प्रोफेसर हैं, अपना पी एच डी का मकाला 'कल्की अवतार' में खुले तौर पर ज़ाहिर कर दिया है कि हिंदूओं की तमाम वैदों वगैरा में मौजूद पेशीन गोइयों में हिंदूओं को जिस 'कल्की अवतार' (आखरी कामिल नबी) का इंतेज़ार है वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं. (मुतरजिमे किताब)

कली की तरदीद करने वाला :

जिन मायनों में 'कली' लफ्ज़ इस्तेमाल हुआ है उन्हीं मायनों में लफ्ज़ शैतान भी इस्तेमाल होता है. आखरी अवतार के ज़रीए 'कली' यानी 'शैतान' की हार होगी.

शंभल का आला पुरोहित के घर मीलाद :

शंभल के मकाम के आला पुरोहित के नूर वाले के यहाँ विलादत होगी और वालिदा का नाम सोमवती होगा. यह तमाम खुसूसियतें आखरी अवतार में होंगी.

ईसाइयों की पेशीन गोई

मुकाशिफाते योहन्ना फस्ल (२०) आयत (४) ''फिर मैंने तख्त देखे और वे जो उन पर बैठे थे अदालत उनको दी गई और उनकी रूहों को भी देखा जिन्होंने मसीह की गवाही और खुदा के कलाम के लिए अपना सर दिया और जिन्होंने ना इस दरिन्दे जानवर ना उस मौत को पूजा. और मसीह के साथ साठ हज़ार साल तक बादशाही करते रहे.

और बाकी मुर्दे जब तक हज़ार साल ना हुए ना जिए. यह पहली कयामत है.

मुबारक व मुक़द्दस वह जो पहली कयामत में शरीक रहे. ऐसों पर दूसरी मौत का कुछ असर ना होगा बल्कि वे खुदा और मसीह की खबर देने वाले होंगे और खुदावंद के साथ हज़ार साल बादशाही करेंगे.

और जब हज़ार साल हो चुकेंगे शैतान अपनी क़ैद से आज़ाद होगा.

और निकलेगा कि इन क़ौमों को जो ज़मीन के चारों कोनों में हैं यानी याजूज माजूज को फरेब दे और उन्हें लडाई के लिए जमा करे. वे शुमार में समंदर की रेत के मानिंद हैं. और वे ज़मीन की वुसअत पर चढ गए और उन्होंने मुक़द्दस की छावनी और अज़ीज़ शहर को घेर लिया तब आस्मान पर से खुदा के पास से आग उतरी और उनको खा गई और शैतान जिस ने उन्हें फरेब दिया था आग और गंदक की झील में डाला गया.''

मुकाशिफाते योहन्ना की फस्ल (२०) आयत (४) में बयान किया गया है कि मुसलमान मसीह की सदाकत में गवाही और खुदा की राह में सर दिए हैं. योहन्ना को आलमे मुकाशिफात में तख्त पर बैठे नज़र आए. मुसलमानों की यह खुसूसिय्यत भी बयान की गई है कि मुसलमान इसाईयों की बुत परस्ती और औहाम के शरीक नहीं होंगे.

और आखिर में कहा है कि मुसलमानों की हज़ार बरस तक हुकूमत होगी और वह उन दिनों में गोया मुर्दा से ज़िंदा होंगे.

पांचवीं आयत में बडी बारीक बात है कि जब तक मुसलमानों की हुकूमत को हज़ार साल ना गुज़र जाऐंगे बाकी मांदा मुर्दे ज़िंदा ना होंगे और इसको पहली कयामत लिखा है.

मतलब शायद यह है कि जिस तरह मुसलमान इस्लाम लाने से पहले तने बेजान बने हुए थे इस्लाम ने उनको ज़िंदा किया. इसी तरह हज़ार साल की हुकूमत के बाद कुछ और लोग मुर्दगी से ज़िंदा होंगे.

इसके बाद सातवीं आयत को देखिए जिस में लिखा है कि मुसलमानों की हज़ार सालों की हुकूमत के बाद शैतान अपनी कैद से खुलास होगा और याजूज माजूज कौमों को फरेब देकर मक्दसद की छावनी यानी इमाम आखिरुज़् ज़माँ तशरीफ लाऐंगे और इन कौमों को फना कर देंगे और शैतान यानी रूपया पैसा आग व गंदक की झील में डाला जाएगा. यानी इस जंग में वह रुपया जो हरमैन की चढाई का बाइस हुआ गोया बहकाने वाला शैतान था गोली बारूद की झील में डूब जाएगा. यह एक इस्तेआरह है. बहरहाल इंजील से भी साबित है कि जब यह कौमें हरमैन का रुख करेंगी उस वक्त हज़रत इमाम मेहदी का ज़हूर होगा. (مَـا لَا بُـدَّ قَبْـلَ الْقِيَـامَةِ) (तर्जुमा) जिस का होना कयामत से पहले ज़रूरी है. यह एक रिसाला का नाम है जो हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाहि अलैह से मनसूब है और मिस्र में छपा है. इस रसाले में हज़रत शेखुल अकबर ने अपने मुकाशिफात की बिना (बुनियाद) पर कयामत के करीब के अहम वाकेआत लिखे हैं जिनका ज़ाहिर होना नविश्ता-ए-कुदरत के मुताबिक लाज़मी है. कयामत के दामन में वो दिन फितनों और फसाद के दिन हैं जिन की खबरें हदीसे नबवी में दी गई हैं और ज़बाने शरीअत में हस्बे फहम अवाम को बताया गया है. इन्ही दामनों के तूल व अर्ज़ (लंबाई व चौडाई) शर्क व गर्ब (मशरिक व मगरिब) की तशरीह किसी और ज़बान में बयान की जाती है. अगर तुम मगरिबी हो तो मशरिकी सिम्त की तारीफ है तुम फातेह हो तो ज़िम्मीयों और मफतूहों से हालत बदतर है और महकूम हो तो हाकिम रश्क व हसद के काबिल बना हुआ है. तुम इसका मतलब नहीं समझे. कयामत के करीब ऐसे दिन आऐंगे कि मशरिक वाले मगरिब वाले की तारीफ करेंगे और उसकी खूबीयों पर फिदा

होंगे. और मगरिबी कौमें मशरिक के अवारा चाल चलन पर आशिक होंगे. दौलतमंद मुफलिसों को हकीर जानेंगे और मुफलिस दौलत वालों को हसरत की नज़र से देखेंगे. ग़र्ज़, वह दिन दूसरों को देखने और जलने के होंगे. अपने अंदर की खुशीयों और खूबीयों को भूल जाऐंगे. उन दिनों खुशी शराब के एवज़ खरीदी जाएगी. इत्मीनान नींद की बेहोशी के सिवा कहीं दस्तयाब नहीं होगा.

अदमी कुदरत के बैरूनी असरार की वाकफिय्यत अहले यूनान को भी मात कर देंगे मगर अंदरूनी इंकेशाफात से उनको बिलकुल महरूमी होगी. उस ज़माने में औरतें मर्दों के अक्ल व हुनर के मरातिब से बढ जाऐंगी और मर्दें की मर्दांगी सिर्फ रस्मी रह जाएगी. सोना बेक़द्र होगा. लोहे की क़द्रदानी बढेगी. चांदी को कोई ना पूछेगा. उसकी हम शक्ल धातें निकल आऐंगी और घर घर रिवाज पाऐंगी.

दमिश्क़ के बाज़ारों में भी तुम देखोगे कि रात के वक्त सूरज सवा नेज़े पर नज़र आता है. यह सूरज जगह जगह होंगे और तुमको सुहानी रौशनी देंगे मगर उस वक्त तुम्हारी बसारत और बसीरत दोनों में खलल पड जाएगा. आखिरत के रास्तों से बेपरवाई होगी और शहरों के रास्ते बहुत साफ बनाए जाऐंगे. बाज़ारों में बैठ कर खाना खाना फख्र समझा जाएगा. तुम खाना खाने के लिए लोहे के हाथ बनाओगे. तुम्हारे दस्तरख्वान सीने के पास चुने जाऐंगे. खाना सफेद मिट्टी के बरतनों में खाया जाएगा. सोने के लिए लोहे के पलंग बनाए जाऐंगे जिन के ऊपर गुंबद होंगे. तुम्हारी नींद बढ जाएगी, सुबह की नमाज़ पढने वाले कम हो जाऐंगे. लिबास दामन बरीदह (दामन कटा हुआ) पहना जाएगा और उसमें इतनी ज़्यादा क़िस्में होंगी कि आज उनका खयाल आना भी दुशवार है. तुम्हारी जूतीयाँ ज़मीन की पुश्त (पीठ) ठुकराने वाली और चलने में मगरूर बनाने वाली होंगी. तुम जूतीयों के आगे सर झुकाओगे और अमामों को पामाल करोगे. वह वक्त उस्तादों की हुरमत छीन लेगा. खुदा के नाम के बगैर किताबें लिखी जाऐंगी. तुम्हारा लिखना भी लोहे का मोहताज होगा और तुम्हारी किताबें भी लोगे की दस्तकारी से तय्यार होंगी.

उस ज़माने में आदमी अपने खयालात दूसरे मुल्कों और शहरों के

बाशिंदों को लोहे के ज़रीए आन की आन में भेज देगा. लोहा तुम्हारी सवारी और आग कोडा और हवा लगाम होगी. तुम्हारी सवारीयाँ बेजान होंगी और ज़मीन को कैंची की तरह कतरेंगी. तुम हवा की तरह बादलों में तैरते फिरोगे. दरियाओं में तुम्हारी कश्तीयाँ शहरों की तरह आबाद और रफ्तार में हवा से बातें करेंगी.

खैरात देने और लेने के नए नए ढंग निकल आऐंगे. नफ्सा नफ्सी की पुकार होगी. कोई किसी के नेक और बद से सरोकार ना रखेगा. मां बाप की इज़्ज़त एक दोस्त के जैसे होगी. बीवीयों को सज्दा किया जाएगा. मज़हब का नाम लेकर हुकूमत की जाएगी. मगर मज़हब की पाबंदी ना होगी. गरीब और मुफलिस अमीरों की बराबरी चाहेंगे. तुम से दस क़िस्म की ज़कात ली जाएगी. जब यह बातें नमूदार हों तो जानो कयामत करीब आ गई. उस वक्त तुम अपने घर में ज़्यादा रहा करो. मेल जोल के तअल्लुकात कम करो वरना तुम को अम्न और इत्मीनान मयस्सर ना आएगा. खुदा से लौ लगाओ, नेक कमाई को किफायत शआरी से खाओ. यही वक्त है जबकि तलवारें मियानों से तडप तडप कर निकलेंगी और आग की बारिशें होंगी. इस बारिश में आग के भारी भारी ओले होंगे जो आदमीयों का सत्यानास कर देंगे. (शायद तोपों के गोले मुराद हैं.)

सुनो ! एक वक्त ऐसा आने वाला है कि तुम शाम के मुल्क में अपने बच्चों को अपने हाथों से ज़ुबह करोगे. तुम्हारी औरतें हत्यार बांध कर मैदाने जंग में जाऐंगी. उस दिन दुनिया के हर बाशिंदे को जंग का बुलावा आएगा. यह जंग दीन और मुल्क के लिए ना होगी बल्कि खुदा का क़हर होगा जो बंदों पर नाज़िल होगा. उस दिन किसी के क़तरे में अद्ल व इंसाफ की बू ना होगी. उस रोज़ ज़मीन भी तुम्हारी लाशों को अपने अंदर आने ना देगी. वह बडा हौलनाक ज़माना है, तुम उसको पाओ तो तौबा के लिए खुदा के सामने झुक जाओ, वही तुम को इस तबाही से बचाएगा. उसी के घर से तुम को अम्न व राहत मिलेगी. खौफ में घबरा ना जाना, अपने खालिक़ का दामन थामना.

हड्डी और खून की लडाई :

कयामत से पहले एक वक्त ऐसा आएगा कि अरब के कबाइल की सी

जहालत सारी दुनिया में फैल जाएगी. नस्ल, हड्डी व खून की बुनियाद पर लडाईयाँ होंगी. अक्लमंद चाहेंगे कि यह बेवकूफी की ज़िद दुनिया से उठ जाए, वह उनके सामने मसावात (बराबरी) और इंसानियत के खुत्बे पढेंगे मगर उनकी कोई ना सुनेगा क्यूँकि खुदा ने लिख दिया है कि मैं इन कौमों को इस नस्ली तअस्सुब की आग से हलाक करना चाहता हूँ. तुम देखोगे कि हम-क़बीला (एक क़बीला की) कौमें ग़ैज़ व ग़ज़ब में घरों से निकलेंगी और एक दूसरे का खून पिऐंगे. यह आग दुनिया के मशरिक व मगरिब, शुमाल व जुनूब चारों तरफ फैल जाएगी. बादशाहों के महल खाक में मिल जाऐंगे. दौलतमंदों के यहाँ फाक़ाकशी होने लगेगी. औरतों और बच्चों की लाशें जंगलों में पडी सडती होंगी. इस जंग से पहले भी बादशाहों की बात कम सुनी जाएगी मगर इस जंग के बाद तो कोई शख्स बादशाहों की बात को ना मानेगा और घर घर की अलाहिदा हुकूमत हो जाएगी. उस दिन जबकि दुनिया अपने मरने वालों का मातम कर रही हो तुम एक आवाज़ पहाड से उतरने वाले लोगों की सुनोगे. यह तुम को तसल्ली देने आऐंगे, उनकी ज़बानों पर तअज़ियत के अलफाज़ होंगे. तुम उनकी गुफ्तगू में सच्चाई और सलाहियत पाओगे. इस गिरोह का सरदार चौडे सीने वाला है जिस की ज़बान लुकनत करती है, वह खुदा तआला का मेहबूब बंदा है, तुम उस से मुहब्बत करो, खुदा की रज़ामंदी इसी में है. इसके बाद तुम एक सियाह दीवार के पास जाओगे जो ज़ुल्म और अद्ल, अम्न और फसाद, दीन और बेदीनी के दरमियान खुदा की जानिब से खडी होगी. तुम उस दीवार का अदब करना कि फरिश्ते उसके पास खडे होंगे. मैं अफ्रीका और चीन के आबिदों से तुम्हारी मुलाकात कराऊँ जो इस दीवार के नीचे खडे हैं. इन्हीं की खातिर खुदा ने दुनिया को तबाही से बचाया. अब दुनिया इन्ही के हवाले की जाएगी. वह तुम पर मेहरबानी करेंगे, वह तुम्हारे ज़ख्मों पर मरहम लगाऐंगे. वह रात को तुम्हारे घरों पर पेहरा देंगे. वह तुम्हारे बच्चों को सीने से लगाऐंगे, वह तुम्हारी औरतों की इस्मत को खुदा के कानून की हिफाज़त में लाऐंगे. तुम सोओगे जागना अब उनका फर्ज़ है. तुम बेफिक्र हो कि फिक्र अब उन के सुपुर्द किया गया है. शाम के अबदाल उनके बाज़ू की कुव्वत होंगे. मर्दाने गैब उनके

पुश्तपनाह (मुहाफिज़) हैं. उनकी मुनादी दुनिया के हर घर में होगी. यही वह जमाअत है जो मेहदी मौऊद अलैहिस् सलाम के खैर मक़दम को आई है. मेहदी इन्ही के ज़रीए मंशाए रब्बानी को पूरा करेंगे. एक वक्ते मुक़र्रर तक उनकी और मेहदी की सफ आराइयाँ दुश्मनों के मुकाबले में होंगी. उसके बाद ज़मीन पर अम्न व सुकून हो जाएगा और उसका एक मुक़र्ररा वक्त और हद है. फिर इन्केलाब शुरू होगा, और इसी इंकेलाब के दौरान में कयामत आ जाएगी.

बैअते रिज़वान

यह सब नक्ल करने के बाद मैं हर मुसलमान औरत मर्द को इत्तेला देता हूँ कि बैअते रिज़वान का वक्त आ गया है.

वह सब अपने अपने पीरों और आलिमों के हाथ पर अल्लाह की इताअत और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत और कुरआने करीम की इताअत की बैअत करें ताकि ज़हूरे मेहदी अलैहिस् सलाम से पहले जो इन्केलाबी तकलीफें हिंदुस्तान और सारी दुनिया में पेश आऐंगी उनसे मेहफूज़ रहें. जिन लोगों ने मेरे हाथ पर बैअत की है उनको भी यह नई बैअत करनी चाहिए. इस बैअत का मंशा यह है कि अपने सब दीनी और दुनियावी काम पीर के हुक्म से हों.

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू. हसन निज़ामी दहलवी ६ जमादियुल अव्वल १३५९ हि. शम्सुल उलमा मौलाना हज़रत ख्वाजा हसन निज़ामी मद्द-ज़िल्लहुल आली का इल्म व फज़्ल दुनिया पर रौशन है. मौसूफ का नुस्खा खादिम को मिला जिस में चंद बातें किताब 'गुलज़ारे क़दीर' में पेश किया हूँ.

किताब मिस्बाहुल हयात, सफहः ९७, रिसाला मिफताहुल ईमान

दर बयान आँ-के अलामते कयामत हक अस्त

(इस बयान में कि कयामत की निशानी हक है)

है बरहक जग में आना कयामत
सुनो, अव्वल तुम्हें उस की अलामत

रहेंगे कई जगत के बीच जाहिल
ना दुनिया में रहेगा कोई आदिल

करेंगे लोग दुनिया बीच बदकाम
रहेंगे बे नमाज़ी खास और आम

करेंगे खौफ को सब दिल से बाहर
कि मेहदी होऐंगे उस वक्त ज़ाहिर

करेंगे वह सात बरसाँ बादशाही
मिटे यकबार जग की धो सियाही

बाद अज़ उनके आकर जग में दज्जाल
करेगा खल्क को यकबार बदहाल

जग फिर होएगा यकबार मअमूर
करेगा लोग को ईमान से दूर

फलक से आगे ईसा इब्ने मरयम
बता देंगे उसे राहे जहन्नम

मुहम्मद की शरीअत पर रहे वह
जभी उनके दीन पर दावत करें वह

भी उनके बाद अज़ आँ ऐ भाईजान बूझ
जहाँ में आऐंगे याजूज माजूज

निकल मग्रिब तरफ से आएगा सूर
दिलाँ हो जाऐंगे यकबार बेनूर

बधें तौबा के दरवाज़े मलाइक
भी हुए सख्त तर नाज़िल बला एक

निकल आवे जहाँ में दाब्बतुल अर्ज़
करूँ क्यूँकर बयाँ इस रंज का अर्ज़

खुसूफ उस वक्त हुए जगमने तईं
यमन से आगे निकले साहिबे दीं

(पहला एडीशन : २७ मुहर्रमुल हराम १३७१ हि. मुताबिक २९ अक्तूबर १९५१)
(अज़ मीर हयात क़िब्ला रह.)

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

दावते फिक्र

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

अलहम्दु लिल्लाह! **'गुलज़ारे क़दीर'** के पिछले मज़मून को बाकी रखते हुए मज़ीद मज़मून इज़ाफा किया जा रहा है जिसमें तुगरा पंचरंगी जो दुनिया की कौमों को बउनवान 'दावते फिक्र' भेजा गया है, दूसरी मर्तबा दुनिया की कौमों को एक याददाश्त जिसमें तवज्जोह दिलाई गई है और हज़रत खलीफतुर् रहमान क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह फेरोज़ाबादी के हालात, गुंबद व तामीराते फेरोज़ शाह बादशाह के ज़माने में तय्यारी-ए-गुंबद वगैरा का मज़मून छप चुका है और मज़ामीने इरफान आला से आला दूसरी किताबों से लेकर शजरए-तय्यबा के साथ वगैरा पेश करूँगा. इंशा अल्लाह तआला नाज़िरीन मुस्तफीद होंगे. दिली आरज़ू यही है कि खालिक़ मेरी तेहरीर को बारआवर करे. अल्लाह पर तवक्कुल करके किताब छापने का इरादा कर चुका हूँ. अल्लाह पाक अपने फज़्ल व करम से पूरा फरमाए जिसमें कलमए तय्यबा, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वगैरा पर भी मज़मून पेश किया जाएगा. जो जो हज़रात मुझ पर एहसान फरमाए हैं छापने में, अल्लाह उनको अज्रे अज़ीम अता करे. किसी सूरत ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की अज़मत व बुज़ुर्गी बलंद रहे जिसमें हमारी नजात है. आमीन सुम्मा आमीन!

इशाअते मज़मून अखबार 'रहनुमा-ए-दकन' हफ्तावार एडीशन बतारीख २० जनवरी १९६४ मुताबिक ४ रमज़ानुल मुबारक १३८३ हि. से लिया गया है.

''हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हू ने एक वक्त दरख्वास्त की कि आप अपने मसलक की वज़ाहत करें. आप ने जवाब में बडी हकीमाना तकरीर फरमाई जिससे हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अंदाज़े फिक्र का सही सही अंदाज़ा हो जाता

है और आप की रूहानिय्यत पूरी तरह उजागर हो जाती है. यह तकरीर खिताब व कलाम की तारीख में बजाए खुद एक एजाज़ (मोजेज़ा) है. अरबी अदब में उसका जो मकाम है उसका सरसरी अंदाज़ा दर्ज ज़ेल तर्जुमानी से भी किया जाता है. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हू को जवाब दिया कि :

''इरफान मेरा सरमाया है, अक्ल मेरे दीन की अस्ल है, मुहब्बत मेरी बुनियाद है, शौक मेरी सवारी है, ज़िक्रे इलाही मेरा मोनिस है, एतेमाद मेरा खज़ाना है, हुज़्न (रंज) मेरा रफीक़ है, इल्म मेरा हत्यार है, सब्र मेरा लिबास है, खुदा की रज़ा मेरी गनीमत है, आजिज़ी मेरे लिए वजहे अग़राज़ है, ज़ोहद मेरा पेशा है, यकीन मेरी ताकत है, सिद्क़ मेरी सिफारिशी है, ताकत मेरा बचाऊ है, जिहाद मेरा रवादार और मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में है.''

मरहबा मरहबा सद मरहबा, बार बार गौर करें.

(दूसरा एडीशन 'गुल़जारे क़दीर', यकुम जमादियुल अव्वल १३८५ हि. मुताबिक २९ अगस्त १९६५)

हज़रत अशरफ जहाँ माँ साहिबा रहमतुल्लाह अलैहा के फुयूज़ात

दरगाहे मुअल्ला अशरफ जहाँ माँ साहिबा कुडची शरीफ पर ४ रजब १३७४ ग्यारह बजे दिन मुरीदीने सादिक़ीन के साथ पहुँचा. गुंबद के अंदर दाखिल ना हुआ. ज़ोहर बाद फातेहा दूँ. क्या देखता हूँ कि आलमे रूया में (ख्वाब के आलम में) हज़रत मखदूमा बुर्का पोश फरमाती हैं :

> अंबिया अलैहिमुस् सलाम पर ज़बूर, तोरैत, इंजील, कुरआने पाक नाज़िल हुई.
>
> हम औरत हैं, हम पर कोई किताब नहीं उतरी. फिर तो चारों किताबों में हमारा नाम कौनसी आयत में है बताओ. यह सुनते ही खादिम ने कहा, यह सवाल मुझ पर ही हो रहा है या इस से पहले किसी पर हुआ है. फरमाते हैं आप कलमे की तहकीक करवा रहे हैं ना. यह सुन कर मैं अपने पीरे कामिल को

याद किया मेरी मदद फरमाओ. मेरे दिल में हिम्मत पैदा हुई. यह बगौर अक्ल कहा, अम्माँजान! दुनिया में फिरऔन आया वह अपने इरफान से आप वाकिफ हुआ तो कहा ''अना रब्बुकुमुल आला''. यह किस का बेटा था? फरमाया मेरा जिस वक्त मेरा सुना मैंने समझा यह ज़बाने हक है. फिर तो बखुशी कहा, अम्माँजान! नमरूद दुनिया में आया अपने इरफान से आप वाकिफ हुआ, कहा इब्राहीम अलैहिस् सलाम के मुकाबले 'अना नारुन'. यह किस का बेटा था? तो कहा मेरा. अम्माँजान! शद्दाद दुनिया में आया अपने इरफान से आप वाकिफ हुआ तो कहा दुनिया के रूबरू 'अनल जन्नतु'. यह किस का बेटा था? कहा मेरा. फिर मैंने कहा ख्वाजा बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैह आप के सिलसिले में मुरीद हुए, अपने इरफान से आप वाकिफ हुए, कहा 'सुबहानी मा आअज़मु शा-नी'. यह किस का बेटा था? कहा मेरा. अम्माँजान! आप के मुरीदों में मनसूर हल्लाज रहमतुल्लाहि अलैह अपने इरफान से आप वाकिफ हुए, कहा 'अनल हक्क.' यह किस का बेटा था? कहा मेरा. मैंने कहा अम्माँजान! जब आप के फैज़ से पैदा होने वाले यह दावा 'अना' का करते हैं तो हमारी क्या मजाल आप का मकाम आयाते इलाही में साबित करें. फरमाया अगर साबित ना करोगे तो हमारी फकीरी रख दो. खादिम के होश उड गए. खुशूअ व खुज़ूअ के साथ अल्लाह की तरफ रुजूअ हुआ तो क्या देखता हूँ कि हैद्राबाद मदीना बिल्डींग के रूबरू हूँ. बिल्डींग पर जली हर्फों में 'अलाउद्दीन' लिखा हुआ है. मेरे ज़हन में यह हुरूफ आ गए तो क्या देखता हूँ कि मखदूमा के रूबरू वहीं मौजूद हूँ. खादिम ने बाअदब अर्ज़ किया, अम्माँजान! आप अलाउद्दीन हैं. यह सुनते ही मरहबा सद मरहबा सद मरहबा तीन मर्तबा ज़बाने खास से फरमाया : मखदूम जहाँ माँ साहिबा के मुर्शिदे कामिल का नाम भी 'अलाउद्दीन जुनैदी' हैं.

मैं तस्लीम बजा लाया, कदम चूमा, फिर तो मेरे दिल में ऐसी रौशनी पैदा हुई. बेदार हुआ. अपने मुरीदों से कहा, आज मेरी फकीरी कामिल हुई. २४ जमादिुल आखिर १३४८ हि. मुझे खिलाफत हुई, ४ रजबुल मुरज्जब १३७४ हज़रत मखदूमा अशरफ जहाँ माँ साहिबा से रूही अज़मत नसीब हुई. यहाँ बडे बडे औलिया अल्लाह हज़रत ख्वाजा बंदानवाज़ गेसूदराज़ रहमतुल्लाहि अलैह भी तशरीफ लाए, फैज़ पाए. मेरी क्या मजाल मेरे मौला ने मेरी इज़्ज़त रख ली. अब दोबारा १० रजबुल मुरज्जब १३७५ हि. मुताबिक २३ फरवरी १९५६ पंजशंबह एक गज़ल पसंद आई. मुहम्मद ज़करीया साहब क़व्वाल इरफानी की उनके हमराह दरबारे मुअल्ला में गज़ल सुनूं. घी के चिराग जलाने चिराग दान ले कर आया हूँ. मखदूमा मेरी दुआ बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में कबूल करवाए हैं.

पंचरंगी तुगरा मैंने सारी दुनिय में भेज दिया है ताकि दुनिया कलमए तय्यब में तजल्लियाते रब्बानी को गौर करें. दिली अरमान यह है :

क़दीर बीनी करीमा कार साज़ी
करामत है मेरे घर पेशवा की
और
यही मांगे क़दीर शाने करीमी में खुदावंदा
पढा कलमा नबी का हो जहाँ क़ाइल मुहम्मद के
तौहीद व रिसालत की अजब शान है कलमा
मोमिन के लिए मरकज़े ईमान है कलमा
तामीरे बशर का है खुलासा तो यही है
हो दीद तो आप अपना ही इरफान है कलमा

हज़रत मखदूमा अशरफ जहाँ माँ साहिबा रहमतुल्लाह अलैहा

ठुमरी ज़ाकिर इरफानी सिकंदराबादी

तुमरे द्वारे मैं आई हूँ - पत राखो माता जी
अली मुहम्मद की आंखों के तारे
हसन हुसैन के राज दुलारे
बिगडी बनाने मैं आई हूँ - पत राखो माता जी
तोरे कलसवा के बल बल जाऊँ
मन की मुरादें भर भर पाऊँ
घी के चिराग मैं लाई हूँ - पत राखो माता जी
बिऱ्हा की आग से दिल को जलाकर
देस बिदेस की खाक उडाकर
धूनी रमाने मैं आई हूँ - पत राखो माता जी
प्रेम के मंदिर में प्रीतम प्यारे
तन मन धन के वारे न्यारे
नज़र को तुमरे मैं लाई हूँ - पत राखो माता जी
पचरंगी चुंदरी के रंग हैं न्यारे
खूने जिगर से चमके हैं तारे
मेहंदी मैं तुमरी रचाई हूँ - पत राखो माता जी
क़दीर की आस को तोडो ना माता
अपनों से मुँह अपना मोडो ना माता
'ज़ाकिर' की बात मैं लाई हूँ - पत राखो माता जी

मंबए फैज़ान का है आप (रह.) का दर

हो करम अशरफ जहाँ माँ साहिबा (रह.)

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

एजाज़े नुबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

(अज़ किताब 'पैगंबरे रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम' तर्जुमा शेखुल हदीस हाफिज़ मुहम्मद अमीन साहब हफिज़हुल्लाह)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्रे मुबारक पैंतीस साल हुई तो कुरैश ने काबे की तामीरे नौ शुरू की. जब हज्रे असवद रखने का मौका आया तो इख्तेलाफ हो गया कि यह सआदत कौन हासिल करे? हर क़बीला चाहता था कि यह इज़्ज़त वही हासिल करे. (करीब था कि उनमें खौफनाक लडाई हो जाती) लेकिन तै पाया कि जो शख्स हमारे पास सब से पहले आएगा वह यह सआदत हासिल करेगा. अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही सब से पहले तशरीफ लाए. वह सब बहुत खुश हुए और नारे लगाने लगे ''अमीन आ गया, हम सब उसके फैसले पर राज़ी हैं.'' आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झगडा खत्म करने के लिए हुक्म दिया कि एक कपडा बिछाया जाए और हज्रे असवद उस पर रख दिया. चुनांचे आप ने हर क़बीले के सरदार से कहा कि सब मिलकर कपडा उठाऐं. जब अस्ल जगह पर पहुंचे तो आप ने अपने दस्ते मुबारक से उसे अस्ल मकाम पर नसब फरमा दिया (लगा दिया).

(जूँ जूँ दौरे नुबुव्वत करीब आया) अल्लाह तआला ने आप में तन्हाई और खलवत का शौक ज़्यादा कर दिया. आप गारे हिरा में चले जाते और कई कई दिन मुसलसल दीने इब्राहीमी के मुताबिक अल्लाह तआला की इबादत करते रहते. जब उम्र मुबारक पूरे चालीस साल हो गई तो अल्लाह तआला ने आप को खलअते नुबुव्वत से सरफराज़ फरमाया. इस बात में कोई इख्तेलाफ नहीं कि यह पीर का दिन था और जमहूर के कौल के मुताबिक इकतालीसवें साल रबीउल अव्वल की आठ तारीख थी और आमुल फील के लेहाज़ से पहला साल था.

(इस हदीस के बारे में इमाम तैमीया रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं :

''इस हदीस के मायना सही हैं अगरचे इसकी सनद साबित नहीं.'' इमाम सखावी और स्यूती रहिमहुमल्लाह ने भी इसकी ताईद की है. देखिए कश्फुल खफा व मुज़ीलुल अलबास : ७०/१, और देखिए अस-सिलसिलतुज़् ज़ईफा : १७३/१, हदीस : ७२, मुलाहेज़ा किजीए मुसनदे अहमद : ४२५/३, अलफुसूल फी सीरतिर् रसूल, सफहः ९५)

(ज़ादुल मआद : ७८/१, इब्नुल क़य्यिम रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं : ''एक कौल के मुताबिक आप की बेअसत रमज़ान में हुई और एक कौल के मुताबिक रजब में हुई.'')

जब्राईल अलैहिस् सलाम गारे हिरा में आए और कहने लगे :

''اِقْرَأْ، فَقَالَ : مَا اَنَا بِقَارِئٍ ، قَالَ : فَاَخَذَنِیْ فغَطَّنِیْ حَتّٰی بَلَغَ مِنَ الْجَهْدِ، ثُمَّ اَرْسَلَنِیْ ، فَقَالَ : اِقْرَأْ ، قُلْتُ : مَا اَنَا بِقَارِئٍ ، فَاَخَذَنِیْ فغَطَّنِیْ الثَّانِیَةَ حَتّٰی بَلَغَ مِنَ الْجَهْدِ ، ثُمَّ اَرْسَلَنِیْ فَقَالَ : اِقْرَأْ ، فَقُلْتُ : مَا اَنَا بِقَارِئٍ ، فَاَخَذَنِیْ فَغَطَّنِی الثَّالِثَةَ ثُمَّ اَرْسَلَنِیْ ، فَقَالَ :

''पढिए!'' आप ने फरमाया : ''मैं तो पढा हुआ नहीं हूँ.'' आप फरमाते हैं : ''जब्राईल अलैहिस् सलाम ने मुझे पकड कर भींचा यहाँ तक कि मुझे थका दिया, फिर उन्होंने मुझे छोडा और कहा : ''पढें.'' मैंने कहा : ''मैं पढा हुआ नहीं हूँ.'' उन्होंने फिर मुझे पकड कर ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे थका दिया, फिर उन्होंने मुझे छोडा और कहा : ''पढिए.'' मैंने फिर कहा : ''मैं पढा हुआ नहीं हूँ.'' उन्होंने तीसरी बार फिर मुझे पकड कर भींचा, फिर मुझे छोड दिया और कहा :

''اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّکَ الَّذِیْ خَلَقَ o خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ o اِقْرَأْ وَ رَبُّکَ الْاَکْرَمُ o الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ o عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ o

''पढिए अपने रब्बे करीम के नाम से जिस ने सब को पैदा किया. उसने इंसान को खून के एक लोथडे से पैदा किया. पढिए! आप का रब बडी इज़्ज़त वाला है जिस ने कलम के ज़रीए से इल्म सिखाया और इंसान को वह इल्म सिखाया जो वह नहीं जानता था.'' (सुरह अलक़ : ९६ : १-५)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अंबिया किराम के सहीफे

शुरू से अब तक जुमला एक लाख चौबीस हज़ार (१,२४,०००) अंबिया आए हैं. उनमें तीन सौ तेरह (३१३) रसूल हुए हैं जिन को अरबी में रसूल और फारसी और उर्दू में पैगंबर कहते हैं. पैगंबरों पर सहीफए-आस्मानी जिनको आस्मानी किताब भी कहते हैं अल्लाह तआला की तरफ से नाज़िल किए जाते रहे जिस में शरीअत के मसाइल और कानून व कवाइद जिस क़द्र उस ज़माने के लिए ज़रूरी समझे गए दर्ज हुआ करते थे. इसी के मुताबिक वह मज़हबे इस्लाम की तबलीग में ज़िंदगी बसर करते रहे. उनके बाद अंबिया जो उनके बाद पैदा होते रहे अपने से पहले के पैगंबर की किताब के मुताबिक अपने से पहले के पैगंबर की पैरवी में इस्लाम की तबलीग करते रहे. हर पैगंबर के मरातिब अंबिया से बढे हुए हैं और हर पैगंबर नबी होते हैं और यह कोई ज़रूरी नहीं कि हर नबी पैगंबर हो.

पैगंबरों पर आस्मानी सहीफे अल्लाह तआला ने जो नाज़िल फरमाए हस्बे ज़ेल हैं :

सुहुफे इब्राहीमी	यकुम रमज़ान को नाज़िल हुए
तौरात हज़रत मूसा अलैहिस् सलाम पर	६ रमज़ान को नाज़िल हुई
ज़बूर हज़रत दाऊद अलैहिस् सलाम पर	१२ रमज़ान को नाज़िल हुई
इंजील हज़रत ईसा अलैहिस् सलाम पर	२१ रमज़ान को नाज़िल हुई

कुरआन करीम हज़रत रसूले मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर
२७ रमज़ान को नाज़िल हुआ.

हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक जितने साहिबे सहीफा पैगंबर हुए हैं उनकी बेअसत की मुद्दतों में फस्ल (फासला) हस्बे ज़ेल है :

हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से हज़रते नूह अलैहिस् सलाम का

ज़माना १२०० साल

हज़रत नूह अलैहिस् सलाम से हज़रते इब्राहीम अलैहिस् सलाम का ज़माना ११४३ साल

हज़रत इब्राहीम अलैहिस् सलाम से हज़रते मूसा अलैहिस् सलाम का ज़माना ५७५ साल

हज़रत मूसा अलैहिस् सलाम से हज़रते दाऊद अलैहिस् सलाम का ज़माना ५७८ साल

हज़रत दाऊद अलैहिस् सलाम से हज़रते ईसा अलैहिस् सलाम का ज़माना १०५३ साल

हज़रत ईसा अलैहिस् सलाम से हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़माना ६०० साल

हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़माना ५१४९ साल

यह कुरआने करीम अल्लाह तआला की तरफ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल किया हुआ आखरी और मुकम्मल कानूने इंसानिय्यत है, और पूरे जहाँ के हर मुल्क के हर तबके के लोगों के लिए मशअले राह और काबिले अमल है. कुरआन करीम के मुखतलिफ ५५ नाम हैं जो कुरआन करीम ही में इस्तेमाल हुए हैं.

किस पैगंबर पर कितनी मर्तबा वही नाज़िल हुई?

हज़रत आदम अलैहिस् सलाम पर वही नाज़िल हुई	१२ मर्तबा
हज़रत शिस अलैहिस् सलाम पर	४ मर्तबा
हज़रत इद्रीस अलैहिस् सलाम पर	४ मर्तबा
हज़रत नूह अलैहिस् सलाम पर	५० मर्तबा
हज़रत इब्राहीम अलैहिस् सलाम पर	४२ मर्तबा
हज़रत मूस अलैहिस् सलाम पर	१०४ मर्तबा
हज़रत ईसा अलैहिस् सलाम पर	१० मर्तबा

हज़रते रसूल मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर

चौबीस हज़ार मर्तबा

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पहली वही ६१० ई. में नाज़िल हुई और आखरी वही ६३२ ई. में, जुमला २३ साल.

ग़ज़वाते नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हुज़ूरे नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुनयवी हयाते अक़दस के ज़माने में जितनी इस्लामी जंगें लडी गईं उनमें से जिन जंगों में हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बज़ाते खुद शरीक रहे उसको 'ग़ज़वह' कहते हैं, और जिन जंगों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद शरीक ना हुए बल्कि किसी सहाबी की सरकर्दगी में फौज भेजी गई उसको 'सरिय्यह' कहते हैं किस ग़ज़वे में कितनी फौज सहाबा किराम की थी वह यहाँ दर्ज कर दी गई है :

जंगे बदर	३१३
हुदैबिया	१५००
फतहे मक्का	१०,०००
जंगे हुनैन	१२,०००
हज्जतुल वदाअ	४०,०००
ग़ज़वए-तबूक	७०,०००

बवक्ते वफाते मुबारक सहाबा किराम की तादाद १,२४,०००

(किताब ''ज़रूरी दीनी मसाइल'' से लिया गया)

हर एक मकसद हुआ पूरा जो खत्मुल मुरसलीन आए

हज़ारों अंबिया आए मगर ऐसे नहीं आए
बशर होने पे जिन के खुद बशर को कम यकीं आए

सरे अर्शे बरीं पहुंचे कि बर रूए ज़मीं आए
अज़ल का नूर, अज़ल का नूर है चाहे कहीं आए

लिबासों की तरह नामे शहे लौलाक हैं क्या क्या
जहाँ जैसी ज़रूरत थी वह वैसे ही वहीं आए

फरिश्ता शक्ले इंसाँ में भी आए तो फरिश्ता है
अगर गंजे खफी इंसाँ बने तो क्या यकीं आए

अबद तक जगमगाएगा हिरा तहज़ीब व दानिश का
दिलों को रौशनी देने उजालों के अमीं आए

कहाँ है ज़िक्रे 'अकमलतु लकुम' का आप से पहले
हर इक मकसद हुआ पूरा जो खत्मुल मुरसलीं आए

ना दें सरकार तो फिर देने वाला ही नहीं कोई
दरे मेहबूब हक है जिस को आना हो यहीं आए

उन्ही की जलवा आराई है सब अव्वल से आखिर तक
गए कब थे जो नूरे अव्वलीं व आखरीं आए

लगी है मोहर पुश्ते पाक पर खत्मे नुबुव्वत की
हुआ दर बंद जब पैगंबरी मसनद नशीं आए

खुदा ने रहमतों की इंतेहा करदी गरीबों पर
गरीबों बेकसों में रहमतुल् लिलआलमीं आए

दरे शाहे हुदा पर 'शौक' अपनी हैसिय्यत क्या है
नज़र वाले लुटाते सजदा हाए बे जबीं आए

नमाज़े शरीअत व तरीकत

(किताब 'सिर्रुल असरार' तसनीफ व तालीफ हज़रत सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैह से नक्ल)

तर्जुमा : मौलाना मुहम्मद मंशा ताबिश कसूरी मुदर्रिस व सदर शोबए-फारसी जामिआ निज़ामिया रज़विया लाहौर

बहरहाल, जो शरई नमाज़ है उसे तुम जानते हो कि अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَ الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى﴾

तमाम नमाज़ों की हिफाज़त करो खुसूसन नमाज़े वुस्ता की. इसका इल्म बखूबी हो चुका है. (अलबक़रह : २३८)

शरई नमाज़ ज़ाहिरी आज़ा (हाथ, पाऊं वगैरा) की हरकात व सकनात से अरकाने नमाज़ को बजा लाना है. मिसाल कियाम, रुकूअ, सुजूद, क़ुऊद, आवाज़ और किराअते कुरआन व तसबीहात वगैरा की अदाईगी है. इसी सबब से (मज़कूरा बाला आयत में) ﴿حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوَاتِ﴾ जमा का कलमा इर्शाद हुआ है.

बहरहाल, जो नमाज़े तरीकत है वह दाइमी और क़ल्बी नमाज़ है. इस आयत में कलमा 'वुस्ता' से मुराद क़ल्ब (दिल) है इस लिए कि क़ल्ब जिस्म के वस्त (दरमियान) में है. यानी दाऐं और बाऐं पहलूओं के बीच में जिस्म के बालाई हिस्से और निचले हिस्से के दरमियान. यानी सआदत व शक़ावत के बीच में. चुनांचे इर्शादे मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है:

"اِنَّ قُلُوْبَ بَنِىْ آدَمَ بَيْنَ اِصْبَعَيْنِ مِنْ اَصَابِعِ الرَّحْمٰنِ يُقَلِّبُهَا كَيْفَ يَشَآءُ"

यानी बेशक औलादे आदम के दिल अल्लाह तआला की दो उंग्लियों के दरमियान हैं. (जैसे उसकी शान है) वह जिस तरफ चाहता है दिलों को फेर देता है.

दो उंग्लियों से मुराद अल्लाह तआला के क़हर और लुत्फ की सिफतें हैं. आयते करीमा और हदीस शरीफ से वाज़ेह हुआ कि हकीकी नमाज़ क़ल्बी

है. जब इंसान इस नमाज़ से गाफिल हुआ तो उसकी नमाज़ फासिद हो गई. जब क़ल्बी नमाज़ ही ना रही तो उसकी ज़ाहिरी नमाज़ भी बातिल ठहरेगी. नमाज़ होती ही नहीं. नमाज़ी तो अल्लाह तआला की बारगाह में मनाजात करता है, पुकारता है, आजिज़ी व इंकेसारी का इज़हार करता है. जबकि मनाजात का असली मकाम तो क़ल्ब (दिल) ही है. और जब क़ल्ब ही गफलत का शिकार हो गया तो उसकी बातनी नमाज़ बातिल ही ठहरेगी. यूँ उसकी ज़ाहिरी नमाज़ भी फासिद हो जाएगी. क्यूँकि बात तो दिल से ही बनती है जो मरकज़ और बुनियाद है, बाक़ी आज़ा (जिस्मानी हिस्से) तो इसी के ताबेअ हैं. चुनांचे सय्यदे आलम नबी-ए-मुकर्रम रसूले मुअज़्ज़म फरमाते हैं :

”اِنَّ فِیْ جَسَدِ ابْنِ اٰدَمَ مُضْغَةٌ فَاِذَا صَلُحَتْ صَلُحَ الْجَسَدُ کُلُّهٗ وَ اِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ کُلُّهٗ اَلَا وَ هِیَ الْقَلْبُ.“

यानी इंसान के जिस्म में एक गोश्त का लोथडा है, वह दुरुस्त हो तो सारा जिस्म दुरुस्त, अगर वह खराब हो जाए तो सारा जिस्म खराब हो जाएगा. आगाह हो जाइए, वह दिल है.

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं ताकते परवाज़ मगर रखती है

बहरहाल, नमाज़े शरीअत के शब व रोज़ में पांच वक्त मुक़र्रर हैं और सुन्नत यह है कि इसे बगैर रियाकारी, दिखावे, तसन्नुअ या बनावट मस्जिद में जाकर क़िब्ला रुख, इमाम के पीछे बाजमाअत अदा की जाए. मगर नमाज़े तरीकत के लिए कोई खास वक्त मुक़र्रर नहीं, इसे दाइमी तौर पर अदा करते रहना चाहिए. इसके लिए तमाम उम्र दरकार है. इस नमाज़ की अदाइगी की मस्जिद दिल है. और इसकी जमाअत आज़ा व क़ुवाए जिस्मानिया बातनिया हैं. जो लिसाने बातिन (बातनी ज़बान) से असमाए हसना के असरार व ज़िक्र में मसरूफे अमल रहें.

इन कुवाए बातनिया का इमाम क़ल्ब के अंदर जज़बए-इश्क है और इसका क़िब्ला खुद ज़ाते खुदावंदी जमाले समद है. जिसे क़िब्लए-हकीकत से मौसूम करते हैं. क़ल्ब व रूह दोनों हमेशा हमेशा इस नमाज़ में मशगूल रहते हैं.

दिल ना सोता और ना इसे मौत से वास्ता है बल्कि ख्वाब और बेदारी हर दो हालतों में नमाज़े बातनी में मसरूफ रहता है. और बातनी या क़ल्बी नमाज़ दिल की ज़िंदगी से है. चुनांचे नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : ''ला सलाता इल्ला बिहुज़ूरिल क़ल्ब.'' हुज़ूरे क़ल्ब के सिवा कोई नमाज़ कामिल नहीं होती. इस नमाज़ में ना आवाज़ है ना कियाम व कऊद. इसमें सिर्फ और सिर्फ इत्तेबाए नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सिर्फ अल्लाह की मुक़द्दस ज़ात ही मुखातब है. जैसे ''इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईनु.'' इलाही! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद के तालिब हैं.

इस आयते करीमा की तफसीर में इस तरह बयान है कि इस में आरिफ के अहवाल की तरफ इशारा है. यानी उसकी हिजाबी कैफिय्यत खत्म हो जाती है और उसे बारगाहे अहदिय्यत में हुज़ूरी का शरफ नसीब हो जाता है. फिर वह उन मुकर्रबाने खास में जगह पा लेता है जिन के बारे में सय्यदे आलम मुखबिरे सादिक नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं:

''اَلْاَنْبِیَاءُ وَ الْاَوْلِیَاءُ یُصَلُّوْنَ فِیْ قُبُوْرِھِمْ کَمَا یُصَلُّوْنَ فِیْ بُیُوْتِھِمْ''

यानी अंबिया व मुरसलीन अलैहिमुस् सलाम और औलिया-ए-किराम अपनी क़ब्रों में ऐसे ही नमाज़ पढते रहते हैं जैसे वह अपने घरों में पढते रहते हैं. यानी वह अपने ज़िंदा दिलों के साथ ज़िक्र व अज़कार में मशगूल रहते हैं. फिर जब ज़ाहिरी और बातनी हर दो नमाज़ें जमा हो जाऐं तो फिर नमाज़ पाए तकमील को पहुंच जाती है. और इसका अज्रे अज़ीम बारगाहे अहदिय्यत व समदिय्यत का रूहानी कुर्ब और जन्नत में दरजाते जिस्मानिया अता होते हैं. ऐसी नमाज़ का अदा करने वाला ज़ाहिरी तौर पर आबिद होता है और बातनी तौर पर आरिफ. अगर हयाते क़ल्बी हासिल ना हो तो नमाज़े शरीअत और नमाज़े तरीकत में यकसानिय्यत ही नसीब नहीं होती. और उसकी नमाज़ नाकिस है. इसका अज्र सिर्फ दरजात व मरातिब की सूरत में तो अता हो जाता है मगर कुर्बे इलाही की दौलत से महरूम रहता है.

(इस मज़मून को 'सिर्रुल असरार' के सलीस बा-मुहावरा उर्दू तर्जुमा हाशियों के साथ 'नूरुल अनवार' तरतीब, तर्जुमा हज़रत क़ाज़ी सय्यद शाह आज़म अली सूफी साहब क़ादरी, मतबूआ जनवरी १९९० के सफह ११९ पर भी मुलाहेज़ा किया जा सकता है.)

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

ना जाने कब से रहबर जागते हैं

जहाँ में जब कलंदर जागते हैं

ज़माने के मुकद्दर जागते हैं

फक़त रस्मे तगाफुल है यह वरना

जगाऐं वह तो पत्थर जागते हैं

मैं अपना हाल कह कर सो रहा हूँ

वह मेरा हाल सुन कर जागते हैं

मेरी आंखों में उनसे रौशनी है

वह मेरे दिल के अंदर जागते हैं

अभी तक काफिला सोया है 'अज़हर'

ना जाने कब से रहबर जागते हैं

बुर्हानुद्दीन अहमद 'अज़हर' क़ादरी यादगिरी

हज़रत खलीफतुर् रहमान क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह

सरज़मीने फेरोज़ाबाद, इलाका कर्नाटक, गुलबर्गा शरीफ

हुज़ूर पुरनूर मुअल्लिमे मअनवी खलीफए-क़ादरीया आलिया मुलक़्क़ब खलीफतुर् रहमान क़ादरी ज़मीने हैद्राबाद इलाका गुलबर्गा शरीफ के जुनूब में फेरोज़ाबाद सतरह मील पर आबाद है जहाँ गुंबद शरीफ मौजूद है. आप बगदाद शरीफ से सरज़मीने दकन फेरोज़ाबाद फेरोज़ शाह बादशाह के दौर में तशरीफ लाए. हज़रत की आमद का हाल फेरोज़ शाह की साहबज़ादी के ख्वाब में कुदरत ने दिखलाया. अपना ख्वाब बादशाह से शेहज़ादी ने कहा, लेकिन फेरोज़ शाह ने उसको खातिर में नहीं लाया. जिस वक्त हज़रत की आमद इसी ख्वाब के मुवाफिक हुई तो साहबज़ादी ने अर्ज़ किया. यह वही हज़रत हैं जिनको मैंने ख्वाब में देखा था. आप सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के अज़ीज़ रफीके तरीकत व खलीफा हैं. अजीब व गरीब रूहे लतीफ के हामिल (मालिक) हैं. आप के रियाज़ात बलंद हैं. मालूम होता है जिस वक्त आप को दकन जाने का हुक्म मिला आप से हज़रत क़िब्ला मेहबूबे सुबहानी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया रास्ते में खिज़र अलैहिस् सलाम से मुलाकात होगी.

आप के बेहद करामात हैं. जिसकी इब्तेदा सुनिए. आप फेरोज़पूर में दाखिल हुए. बादशाह को खबर हुई. अपनी फौज को उसने हुक्म दिया कि हज़रत को हमारी ज़मीन से निकाल दो. आप के हमराह सय्यद शाह अहमद क़ादरी यमनी रफीके आला मौजूद थे. हज़रत ने कहा फौज आई. आप चेहरे पर नकाब रखते थे. उठाया, एक नज़र डालते ही फौज ज़मीन में घुटनों तक गड गई. यह खबर बादशाह को हुई, वह बज़ाते खुद हाथी पर सवार होकर आया. चाहता था कि पैरों से हज़रत को कुचल दे. जब सय्यद साहब ने कहा बाबा हाथी करीब आया तो नकाब उल्टा, हाथी की नज़र में नज़र मिलाई, हाथी ने बादशाह को अपनी सूंड से खींच पैरों में डाल दिया. बादशाह इस करामत को देख कर आजिज़ हुआ. दिल में बेखौफ था. खैर, मिज़ाज पुर्सी के

बाद कहा, कैसे आना हुआ? हज़रत ने कहा, अल्लाह पीर का हुक्म लेकर तुम्हारी ज़मीन पर आया हूँ, यहीं रहूँगा. आप मुझे ज़मीन इनायत करें. फेरोज़ शाह ने कहा, अगर आप को मेरी ज़मीन पर रहना हो तो हर कदम के बदले एक अशरफी दो तो ज़मीन दूँगा. आप ने कहा, तू नाप मैं दूँगा. बादशाह राज़ी हुआ. जिस मकाम पर ठहरे हुए थे वहीं से जगह नापते हुए और बादशाह हर कदम पर एक एक अशरफी लेता हुआ चला. कहावत है कि सात चादर ज़मीन आप ने ले ली. वज़ीरे मालिया ने कहा, आप ज़मीन कहाँ तक लेंगे? आप ने कहा, जहाँ तक सूरज गुरूब होता है. बादशाह ने कहा, मैं वहाँ तक का बादशाह नहीं हूँ. आप ने कहा मैं बडा बादशाह समझ कर खरीदने आया. बादशाह ने हुज़ूर की झोली में हाथ डाला, कुछ नहीं है. आप बराबर अशरफी झोली से दे रहे हैं. बादशाह ने कहा, आप जादू की अशरफी तो नहीं दे रहे हैं? आप ने कहा, हमारे जद्द को भी जादूगर कहते थे. यह नहीं, मेरे साथ फरिश्ते मुक़र्रर हैं, मैं हाथ डालता हूँ, वह मेरे हाथ अशरफी देते हैं और मैं आप को देता हूँ. सनद बादशाह ने लिख दी. जो वहाँ के वारिसों में मौजूद है. बादशाह लिखता है कि जब तक चांद सूरज गर्दिश करते हैं उस वक्त तक कोई बादशाह इनसे खिराज ना ले. हम ने हर कदम पर एक एक अशरफी लेकर यह ज़मीन हवाले की है.

सब से पहले आप ने मस्जिद की बुनियाद डाली. मस्जिद के शुमाली हिस्से में ज़िक्र घर कायम किया. हुज्रा दर हुज्रा जिसमें ज़िक्र घर मौजूद है. उसकी बलंदी तकरीबन चार फुट ऊँची है. अगर अंदर रुकू करना चाहो तो रुकू नहीं हो सकता. सिर्फ दो ज़ानू आप बैठ कर इबादते इलाही में रहते थे. इबादत में नींद ना आने के लिए आप ने पेशानी पर और सर के चारों तरफ बरछियाँ लगा रखी थीं. अगर नींद आए तो सर को चुभें. अल्लाह अल्लाह ! सदके जाऊँ, ऐसी इबादत करने वालों के. अब भी ज़िक्र घर मौजूद है. देखने के बाद रूहे इंसानी घबराती है आशिकाने इलाही की रियाज़त पर. आप उसके अंदर जुमा के दिन बाद नमाज़े असर दाखिल होते. एक हफ्ते बाद बारह बजे दिन जुमा को बाहर आते. कहा जाता है पहली आप की नज़र चालीस पुरआब (पानी भरे) मटकों पर पडती वह मटके तडक जाते, दूसरी

नज़र चालीस घास के गठ्ठों पर पडती वह जल जाते. तीसरी नज़र बीमार मजरूह (ज़ख्मी) तमाम अकसाम के दर्दभरे लोगों पर पडती वह शिफा पाते. एक आलम अपनी अपनी ज़ाहिरी व बातिनी बीमारी की शिफा पाता. वह ज़मानए-क़दीम बडी बडी आज़माइश कर चुका है. आप नमाज़े जुमा खुद अदा कराते. आप के पीछे कैसे कैसे उलमा व मशाइखीन फुक़रा नमाज़े जुमा अदा करते. और असर तक सिलसिलए-क़ादरीया आलिया में मुरीद होने वाले हो जाते. बाद नमाज़े असर ज़िक्र घर में दाखिल होते. बादशाह फेरोज़ शाह बलंद तकवा रखता था, पानी व आग पर मुसल्ला बिछा कर नमाज़ अदा करता था. वह भी आप की इमामत में नमाज़ अदा किए हैं. गुंबद का नक्शा हज़रत ने मेमारों के हवाले फरमाया. तामीर शुरू हो गई. ऐसी गुंबद रूए ज़मीन पर नहीं है. मैंने बेहतरीन सय्याह जो दुनिया का चक्कर तय किए हैं, उनको लाया, वो फिलिस्तीन कदीम व जदीद, हज़रत मूसा अलैहिस् सलाम की गुंबद व बीबी मरयम का रोज़ा, दूसरे मुक़द्दस मकामात को और चीन व अरब ममालिक और हिंदुस्तान व बैरूने हिंद जहाँ जहाँ आला तामीरात पाए जाते हैं बहुत गौर से देख चुके हैं, मौजूदा गुंबद की तामीर दिखलाई, वह यही कहते हैं कि इस मखरज में ऐसी गुंबद कहीं नहीं है. आइए देखिए, समझिए :

”مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ“

के तहत नफ्स की क़ब्र अंदरूने गुंबद बनवाई. यह क़ब्र गुंबद के बीच में नहीं बल्कि मशरिक़ी जानिब है. अब क़ब्र के बालाई हिस्से पर नज़र डालिए तो बनी आदम की जितनी पसलियाँ हैं उतनी ही पसलियाँ सेहन में नज़र आऐंगी. इस को मअनवी इस्तेलाह में ला नफ्स, मकाम नासूत, रंग काला, इसका मेअमार अज़ाज़ील है. (यह गुंबद की साख्त (बनावट) का पहला मकाम है.) दूसरा मकाम इलाह, दिल मकामे मलकूत, रंग उजला, इसका मेअमार जब्राईल है. (यह क़ब्र की बाऐं जानिब गुंबद की साख्त का दूसरा मकाम है.) तीसरा मकाम इल्लल्लाह रूह, मकामे जबरूत, रंग हरा, इसका मेअमार मीकाईल है. (यह क़ब्र की दाऐं जानिब गुंबद की साख्त का तीसरा मकाम है.) चौथा मकाम मुहम्मद सिर्र, मकाम लाहूत, रंग सुर्ख, इसका मेअमार इस्राफील है. (यानी जहाँ नफ्स की क़ब्र है, गुंबद की साख्त में इसको ही

चौथा मकाम करार दिजिए.) पांचवाँ मकाम रसूल नूर, मकाम हाहूत, रंग पीला, इसका मेअमार इज़्राईल है. (यह गुंबद की पांचवीं साख्त है.) छटा मकाम इलाह ज़ात, मकाम सयाहूत, रंग बेरंग, इसका मेअमार बज़ाते खुद मालिक (अल्लाह) है. (यह हिस्सा गुंबद की छटी साख्त है.)

गुंबद में शश जिहात जो कलमा तय्यबा का जुज़ व कुल अलाहिदा अलाहिदा मौजूद है, जिसको बूझना, जानना, पहचानना हर वुजूद पर फर्ज़ है. मगरिबी जानिब गुंबद का दरवाज़ा है. जितनी तामीरें मशरिक़ी जानिब हैं उतनी ही तामीरें मगरिबी जानिब हैं. बिलकुल हूबहू गुंबद के बीच शुमाली हिस्से में सेहन वही पसलियाँ नुमा (जैसे) बाज़ू में एक छोटी गुंबद बाज़ू में और एक छोटी गुंबद. यह तीनों मकाम भी क़ाबिले फहमे मअनवी हैं. जुनूबी हिस्से में भी हूबहू तीन मकाम हैं. तीन तीन छे, यहाँ भी शश जहत पाई जाती है.

गुंबद में चौदह जालियाँ मौजूद हैं. पहली जाली जो जानिबे मशरिक कद्दे आदम है सूरज जब आस्मान पर निकलता है उसकी पहले शुआअ (किरन) मज़ारे पुरनूर पर जालियों में से पडती है. यह वह सीन है जो ज़मीन व आस्मान का कायम किया हुआ है. इसी किस्म से तमाम जालियों में गुरूबे आफताब तक मज़ार पर किरनें रहती हैं. गोया मज़ार सूरज और चांद की रौशनी में मुनव्वर है. एक मर्तबा फेरोज़ शाह ने फरमाया हज़रत मेरे पास लाल (हीरा) है. हज़रत ने कहा उसमें बाल है. बादशाह ने कहा नहीं. हज़रत ने कहा अब जाओ देखो. फेरोज़ शाह ने देखा, हकीकत में बाल आ गया है.

गुस्से में आकर हज़रत से कहा, मेरे लाल (हीरे) में बाल है आप के पास क्या है. हज़रत ने कहा : मेरे पास चार लाल चार रंग के हैं, दिखलाऊँ? बादशाह ने कहा दिखलाओ. आप को आलमे जलाल तारी हुआ. भीम्रा नदी से कहा, ऐ भीम्रा! चार लाल ला दो. भीम्रा गई और चार लाल लाई. उसके लाने में नदी का रुख फेरोज़ शाह के किले की जानिब हुआ. यह देखने देखने तक फेरोज़ शाह के किले की मीनार तक जो किला का पहला हिस्सा कहलाता है, पानी चढ गया. कहावत है कि 'कव्वा मीनार पर बैठ कर पानी पी रहा था.' नौ करोड की तामीर तमाम सामान के साथ पानी में डूब गई. फेरोज़ शाह के पाऊँ तले पानी आ गया. फेरोज़ शाह सिर्फ तन्हा मौजूद हमराहियों के

फरार हो गया. हज़रत ने फरमाया तू ऊद व गुल का ना हो. फेरोज़ शाह की क़ब्र का पता नहीं है. मालूम होता है फेरोज़ शाह दरूने दिल खुदा तआला की खुदाई में दावा रखता था. उसके गुरूर व तकब्बुर को फना करने के लिए हज़रत तशरीफ लाए. वह जैसा किया वैसा पाया. वही चार रंगीन पत्थर लाल नुमा गुंबद में नसब फरमाया (लगाया). जो शब चिराग का काम देते थे. चंद दिनों बाद उस पर मुलम्मा किया गया और कहा जब इसमें रौशनी नमूदार होगी मेरी गुंबद सारी दुनिया देखेगी.

मुरीदों ने अर्ज़ किया, हज़रत गुंबद मुकम्मल हो चुकी है, देखिए. आप ने कहा मुझे नहीं देखना चाहिए. सब के इस्रार पर आप ने देखा, जैसे ही गुंबद पर नज़र पडी दरवाज़े के पत्थर से लेकर पूरी गुंबद तक हलकी सी तडक पड गई. आप ने कहा, कुदरत ने गुंबद बनवा दी, लेकिन मेरी नज़र से तडक गई. यह फूटी गुंबद करीब कयामत तक रहेगी जो आज तक इसी हाल में मुद्दतों की इमारत मौजूद है. हज़रत ख्वाजा बंदानवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने मअनवी (बातिनी) तामीर को मुलाहेज़ा फरमाया और अंदरूने गुंबद सात दिन मुराकिब रहे (मुराकेबा किया). सातवें दिन आप को रूहानी फैज़ अता होने के बाद आप ने फरमाया, आप हमारे खलीफा नहीं बल्कि खलीफतुर् रहमान हो. यह लक़ब बंदानवाज़ ही का अता कर्दा है. जब से खास व आम की ज़बानों पर खलीफतुर् रहमान आया. आप का नाम तारीख में मौजूद है. हज़रत शेख सिराजुद्दीन जुनैदी रहमतुल्लाहि अलैह और हज़रत बंदानवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की क़दीम तारीखों में पूरा पूरा अहवाल मौजूद है. मेरे पीर शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती (रह.) ने फरमाया, बादशाह क़ादरी! जिस वक्त आप खलीफतुर् रहमान क़ादरी की गुंबद में दाखिल होंगे गुंबद मुबारक की जैसी मअनवी तालीम है वैसा पाओगे. बल्कि तुम गुम हो जाओगे. अल्लाह तआला को मंज़ूर था मैं नेक साअत (लम्हा) में गुंबद में दाखिल हुआ. क्या देखता हूँ तालीमाते मअनवी गुंबद के ज़र्रे ज़र्रे में मौजूद हैं. दिल ने यह शेर कहा :

मन अरफा नफ्सहू पहचान गुंबद
अयाँ है खलीफतुर् रहमान गुंबद

ला काला, इलाह सफेद, इल्लल्लाह हरा
लाल मुहम्मद, पीले रसूल, अल्लाह खरा

हज़रत सय्यद शाह खलीफतुर् रहमान क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह का इर्शाद है : मेरी गुंबद दुनिया देखेगी.

हिदायाते करीमी के मुताबिक हज़रते क़दीर रहमतुल्लाहि अलैह ने हस्बे अकीदत व इशारात गुंबद शरीफ का ना सिर्फ मुशाहेदा किया बल्कि हज़रत खलीफतुर् रहमान के फुयूज़ से मुशर्रफ होने और ‘मन अरफा’ के निकात की पहचान के लिए दुनिया को दावते फिक्र दी.

ज़ाहिर की आंख से ना तमाशा करे कोई
हो देखना तो दीदए-दिल वा करे कोई
(इकबाल)

खलीफतुर् रहमान (रह.) की शान में

(फेरोज़ाबाद, गुलबर्गा शरीफ)

बकाए उन्सुरी की बोलती तस्वीर है गुंबद
यकीनन अहले बातिन के लिए दिलगीर है गुंबद

सलामत है यहाँ पोशीदा दौलत अहले ईमाँ की
फक़त आखिर ज़माँ के वास्ते तामीर है गुंबद

मकामे अब्द व रब्ब का वस्ल है सिर्रे मुहम्मद में
दिले हक्क आशना की सर ब सर ज़ंजीर है गुंबद

तेरी जलवा नुमाई होगी इस दरबार से आका
क़दीर अल्लाह के ईमान की तस्वीर है गुंबद

यही तो है मसीहा-ए-ज़माना देख ऐ ज़ाहिद
इलाजे दर्दमंदाँ के लिए तासीर है गुंबद

तसद्दुक़ क्यूँ ना जाऐं आप की मतवाली आंखों के
बजा 'साहिब' नज़र के वास्ते तकदीर है गुंबद

'साहब' क़दीरी (रह.)

तअस्सुराते क़ल्बी (दिल के तअस्सुरात)

मुरीदे सादिक अब्दुल हादी तखल्लुस 'हारिस' हैद्राबादी साहब

है सदका तुम पर दिल व जान बाबा खलीफतुर् रहमान

तुम ही हो दीन मेरा ईमान बाबा खलीफतुर् रहमान

सलातीन क्यूँ ना झुकाऐं सर गुलामों से भी हैं वह कमतर

फरिश्ते दर के हैं दरबान बाबा खलीफतुर् रहमान

खिरदमंदाने जहाँ आकर हुए गुम आप यह धुन गाकर

तुम्हारा दर है दरे इरफान बाबा खलीफतुर् रहमान

सफर दुनिया का जो कर देखा ना ऐसे रूप का घर देखा

है शाने गुंबदे आली शान बाबा खलीफतुर् रहमान

कुछ ऐसी शाने इमारत है कि दंग मेअमारे सियासत है

है शशदर खल्के जहाँ हैरान बाबा खलीफतुर् रहमान

ज़ियाए शम्-ए विलायत है बुझाए किस की यह ताकत है

गर आए आंधी और तूफान बाबा खलीफतुर् रहमान

दिया इस घर का चमकाओ जहाँ की नज़रें पलटाओ

करो अब रौशन रौशनदान बाबा खलीफतुर् रहमान

ज़माना आखरी आ पहुंचा ज़हूरे मेहदी कब होगा?
बनेगा आदमी कब इंसान बाबा खलीफतुर् रहमान

है नफ्स और रब की पहचानत इसी में अक्ल की है दौलत
निहाँ है गुंबद में इरफान बाबा खलीफतुर् रहमान

खिलाओ आप ने जो खाया पिला दो दरिया से कतरा
हैं हम सब आप के घर मेहमान बाबा खलीफतुर् रहमान

मैं क्या बतलाऊँ क्या हो तुम मुझी में अक्ल मेरी है गुम
बताओ मुझ को मेरी पहचान बाबा खलीफतुर् रहमान

बताओ कौन यह आया है कि जिसका हम पर साया है
हो उसको जान के क्यूँ अनजान बाबा खलीफतुर् रहमान

ना जाने उसका पता क्या है 'क़दीर' नाम बताता है
इसी में गुम है मेरा ईमान बाबा खलीफतुर् रहमान

मुहम्मद नाम बताते हैं समझ में फिर भी ना आते हैं
खता हैं मेरे यहाँ अवसान बाबा खलीफतुर् रहमान

कहीं रुसवा ना हों आलम में भरो दम कल्मे का दम में
यह 'हारिस' दम का है मेहमान बाबा खलीफतुर् रहमान

सलाम

करता हूँ बाएहतेराम साहिबे गुंबद सलाम
तुम हो वली ला कलाम साहिबे गुंबद सलाम

हक यह है हक का पता आप के बाइस मिला
क्यूँ ना करूं सुबह व शाम साहिबे गुंबद सलाम

जारी रहे दमबदम कलमए-तय्यब से दम
लब पे हो मेरे मदाम साहिबे गुंबद सलाम

क्यूँ ना जवाब आप दें गर वह मुखातब करें
बार्हवाँ आकर इमाम साहिबे गुंबद सलाम

करके ज़ियारत यह सब होके खडे बा अदब
पढते हैं सब खास व आम साहिबे गुंबद सलाम

मेहदी-ए-दीने मतीन आऐंगे इक दिन बिलयकीं
कह देंगे हम ले के नाम साहिबे गुंबद सलाम

बन के यह सूरज गुलाम घर में है दिन भर तमाम
कहता चला वक्ते शाम साहिबे गुंबद सलाम

रात को रौशन कमर करता है रौशन यह घर
है यह सितारों का काम साहिबे गुंबद सलाम

इस लिए रखे हुज़ूर जालियां चौदह ज़रूर
दो यहाँ बारह इमाम साहिबे गुंबद सलाम

चश्मे करम किजिए मुड के इधर देखिए
दर पे हैं हाज़िर गुलाम साहिबे गुंबद सलाम

आप तसव्वुर में हैं आप मेरे घर में हैं
लिजिए ऐ नेक नाम साहिबे गुंबद सलाम

कौन मुहम्मद सिवा कलमा दिया है पढा
है यह मुहम्मद का काम साहिबे गुंबद सलाम

रोक ले 'हारिस' कलम अब ना हो आगे रकम
सुन चुके तेरा तमाम साहिबे गुंबद सलाम

"ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह"

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

जामिए मिदहत (तमाम तारीफों के सज़ावार)

लाख लाख दरूद उस मज़हरे अतम् पर जो बाइसे ईजादे आलम है, रहमतुल लिलआलमीन है, हक सुबहानहू व तआला और कुल मलाइका, कुल मोमिन मुसलमानाने आलम से अनगिनत दरूद हासिल करने की वजह वह मुहम्मद है. अल्लाह की तारीफ करने में कुल अंबिया पर सबकत ले जाने की वजह से वह अहमद हैं. बातिल को मिटाने का तसर्रूफ अपने अंदर रखने वाला होने की वजह से वह 'माही' (ماحی) है. हश्र के दिन तमाम अंबिया को अपने झंडे के नीचे पनाह देने वाला होने की वजह से वह 'हाशिर' (حاشر) है. अंबिया के दीन व ईमान की तकमील करने वाला होने की वजह से वह 'आक़िब' (عاقب) है. आप ही आलमे नासूत की शरीअत कायम करके आदम बने. आप ही आलमे मलकूत की तरीकत कायम करके 'खातमुन नबीय्यीन' (خاتم النّبيين) बने. आप ही ने आलमे लाहूत की मारिफत कायम करके "اَلْاِنْسَانُ سِرِّیْ وَاَنَا سِرُّہٗ" (यानी इंसान मेरा सिर्र (राज़) है और मैं इंसान का सिर्र हूँ) और ﴿قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتَابٌ مُّبِيْنٌ﴾ (यानी बेशक अल्लाह की तरफ से तुम्हारे पास नूर औत खुली किताब आए.) की तकमील फरमाई. आप ही ने आलमे हाहुत की वेहदत कायम करके "اَنَا مِنْ نُوْرِ اللّٰهِ وَ كُلُّ شَيْءٍ مِّنْ نُوْرِیْ" (यानी मैं अल्लाह के नूर से हूँ और हर चीज़ मेरे नूर से है. हदीस) का मज़हर सादिर (जारी) फरमाए. ﴿اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا﴾ अल्लाह से और उसके तमाम फरिश्तों से दरूद हासिल किया. आप ही ने आलमे सयाहूत की वसलत कायम करके जो मशिय्यत तजल्लियाते ज़ाती वास्ते ईजाद व मुक़द्दम थी, तकमील फरमाई और और फरिश्तों से सज्दा करवाया ﴿قُلْنَا لِلْمَلٰئِكَةِ اسْجُدُوْا﴾

﴿لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْا﴾ (कलमए-तय्यबा) "لَا اِلٰــهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" हज़रत आदम ने पढा और बीच दायरए-इस्लाम के आए.

इसकी दलील है अल्लाह तआला का क़ौल (पारा १५, सुरह कहफ, रुकूअ:८) (अज़ किताब 'मिफ्ताहुल हक़ाइक़)

﴿فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا اٰتَيْنٰـهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ عَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا﴾

(तर्जुमा) फिर पाया एक बंदा हमारे बंदों में का जिस को दी थी हमने मोहर अपने पास से एक इल्मे खास. तफसीरे क़ादरी में फरमाते हैं, तो पाया एक बंदा हमारे बंदों में से कि सिर्फ अपनी इनायत से दी हमने उसे अपनी रेहमत अपने पास से कि जो वही और नुबुव्वत है. यह उन लोगों के क़ौल के मुवाफिक है जो उन्हें पैगंबर जानते हैं या दी हमने उस बंदे को ''दराज़ीए उम्र'. यह उन लोगों के मज़हब के मुवाफिक है जो उनकी नुबुव्वत के क़ाइल नहीं हैं. और सिखाया हम ने उसे अपने पास से ऐसा इल्म जो हमारे साथ खास है. और बगैर हमारे सिखाए हुए कोई वह इल्म नहीं जानता. (बुरहानुल हक़ाइक़, सफहः १८२, १८३, दर बाब इल्मुल् लदुन्नी)

हदीसे कुदसी : "اِنَّ فِیْ جَسَدِ ابْنِ اٰدَمَ لَمُضْغَةٌ وَ فِی الْمُضْغَةِ قَلْبٌ وَ فِی الْقَلْبِ رُوْحٌ وَ فِی الرُّوْحِ سِرٌّ وَ فِی السِّرِّ نُوْرٌ وَ فِی النُّوْرِ اَنَا"

यह नुकता इन्तेहाए उलूमे मुकाशेफात में का है. इन उलूम के असरार का किसी किताब में लिखना जायज़ नहीं क्यूँकि भेद का इफशा करना बुरा है और तुम ने कभी ना देखा होगा कि जो शख्स बादशाह के राज़ का अमीन हो और बादशाह उस से अपने खुफिया उमूर कहे तो वह सब के सामने बयान करदे और अगर भेद का इफशा करना दुरुस्त होता तो नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह ना फरमाते :

"لَوْ تَعْلَمُوْنَ مَا اَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيْلًا وَ لَبَكَيْتُمْ كَثِيْرًا"

अगर तुम जानते जो मैं जानता हूँ तो थोडा हंसते और बहुत रोते.

यानी वह नूरे बातिन राज़े मखफी हकीकते मुहम्मदी सिर्रे खुदा है यानी अव्वलाहु हकाइके तौहीदे इलाही को कहते हैं जौ सीना बा सीना मुनकशिफ (मालूम) होता है.

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

﴿سَنُرِيهِمْ اٰيَاتِنَا فِى الْاٰفَاقِ وَ فِىْ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ اَوَ لَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ، اَلَا اِنَّهُمْ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَاءِ رَبِّهِمْ اَلَا اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطٌ﴾

तर्जुमा : करीब में दिखाते हैं हम उनको हमारी निशानीयाँ आफाक़ में और उनके नफ्सों में यहाँ तक कि उनके लिए खुला हो जाएगा कि वह हक है. क्या तेरा रब काफी नहीं है. वह तहकीक हर चीज़ पर शाहिद है. होशियार हो जाओ ज़रूर वह शक में हैं अपने रब की लिका (मुलाकात) से वह हर चीज़ को घेरा हुआ है. (पारा २५, सुरह हामीम सजदा, आयतः ५२ से ५४)

हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं : ऐ इंसान! क्या तू खुद को एक जर्मे सगीर (छोटी दुनिया) समझा हुआ है हालांकि तेरे अंदर आलमे कबीर छुपा हुआ है (बडी दुनिया छुपी हुई है). ﴿سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمَاوَاتِ وَ مَا فِى الْاَرْضِ﴾ यह आलमे कबीर जो परागंदा व मुनतशिर टुकडे टुकडे फैला पडा है वह इबारत है आलमे सगीर की उस तफसील से उस वेहदत की जिस मरकज़ पर ज़मीन व आस्मान की हर चीज़ आने के लिए है. अल्लाह तआला जब तमाम को जमा किया इस इरादे से कि इसमें खुद जलवागर हो वह ज़रूर काइनात में जलवागर है. ज़ात तक़सीम थी सिफात में. जब ज़ात अपने तमाम सिफात को वेहदत में लाकर ज़हूर करना चाही तो वह इंसान का वजूद ज़ाहिर हुआ.

सच तो यह है कि हज़रत पीर व मुर्शिद ख्वाजा शेख करीमुल्लाह क़ादरी चिश्ती क़िब्ला (रह.) खिलाफते क़ादरीया अता करने के दूसरे दिन घर तशरीफ लाए. फरमाए : 'मिसबाहुल हयात' सफह ९७ निकालो. उसमें यह शेर लिखा गया है :

खुसूफ उस वक्त होए जगमने तईं
यमन से आगे निकले साहिबे दीं

इसी मौज़ूअ को सामने रखते हुए शाह करीम के इर्शादात को हज़रते क़दीर (रह.) ने तहकीके अनवारे तजल्लियात को तुगरए-पचरंग के कालिब

में ढाल कर दावते फिक्र दी. जो एक मोमिन का हिस्सा है. जैसा कि इर्शादे बारी है:

﴿كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ﴾

तर्जुमा : तुम बेहतरीन उम्मत हो जो सब लोगों (की रहनुमाई) के लिए ज़ाहिर की गई है तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो. और अल्लाह पर ईमान रखते हो. (पारा ४, सुरह आले इम्रान, आयत:११०)

खुलासए-शश जेहत मकसूदे काइनात ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' के पैगाम को दावते फिक्र के उनवान से दुनिया को रूशनास करवाने की दर्दमंदाना व मुखलिसाना कोशिश की. इर्शादे बारी है :

﴿لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَ هُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَ هُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝ قَدْ جَاءَ كُمْ بَصَائِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ، فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ، وَ مَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ، وَ مَا اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ﴾

(पारा ७, सुरह अनआम, आयत : १०३, १०४)

तर्जुमा : निगाहें उस का इहाता नहीं कर सकतीं और वह सब निगाहों का इहाता किए हुए है और वह बडा बारीक बीन बडा बाखबर है. बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से (हिदायत की) निशानियाँ आ चुकी हैं पस जिसने (उन्हें निगाहे बसीरत से) देख लिया तो (यह) उस की अपनी ज़ात के लिए (फायदामंद) है. और जो अंधा रहा तो उसका वबाल (भी) उसी पर है और में तुम पर निगेहबान नहीं हूँ.

अल्लाह तआला का क़ौल : ﴿وَ سَارِعُوْا اِلٰى مَغْفِرَةٍ﴾ यानी जल्दी करो तरफ उस चीज़ के जो तुम्हारी बखशिश का सबब हो.

तफसीरे क़ादरी में लिखते हैं : यह जल्दी कदमे गिल से नहीं बल्कि कदमे दिल से है.

बहरुल हक़ाइक़ में लिखा है कि जल्दी करो उस राह में कदम तकवा से कि वह नफ्स को अखलाके हैवानी से पाक करता है. इस वास्ते कि सिवाए

इस कदम के कुर्ब और जन्नत के मकाम को पहुँचना मुहाल है.

किताब 'मकासिदुल इस्लाम' जिल्द:६, सफह: ८६ में लिखा है :

''ग़र्ज़ कि असरारे तरीकत छुपाने की निहायत ताकीद है और इसका नाम 'तक़य्यह' है क्यूँकि अगर वह ना छुपाए जाऐं तो वही असरार जो कुर्बे इलाही का नतीजा थे इलहाद व ज़िंदिक़ा (कुफ्र) का सबब हो जाते हैं. इसी वजह से शेख मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाहि अलैह वगैरा अकाबिर मुहक्किकीन ने तसरीह (साफ) कर दिया है कि ''हर कोई हमारी किताबें देखने की अहलिय्यत नहीं रखता, इस लिए ऐसे लोगों पर इन किताबों का देखना हराम है.''

बुखारी शरीफ में रिवायत है :

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ حَفِظْتُ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ سَلَّمَ وِعَائَیْنِ فَاَمَّا اَحَدُهُمَا فَبَثَّتُهُ وَ اَمَّا الْآخَرُ فَلَوْ بَثَّتُهُ قُطِعَ هٰذَا الْحُلْقُوْمُ.

तर्जुमा : हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हू कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुझे दो किस्म के इल्म पहुंचे हैं. एक वह कि मैं उसे शाय (आम) करता हूँ, दूसरा वह है कि अगर उसको शाय (आम) करूँ तो मेरा गला काटा जाएगा.

'हुलयतुल औलिया' में अबू नईम से अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हू का कौल नक्ल किया है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे पांच जराबे इल्म पहुंचाए यानी पांच कश्तीयाँ. उस में से दो जराब मैंने ज़ाहिर कर दिए. अगर तीसरा जराब ज़ाहिर करूँ तो तुम लोग मुझे रजम (संगसार) करोगे.

'हुलयतुल औलिया' में रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदिय-ल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि अगर मेरे तमाम इल्म पर तुम मुत्तलअ हो जाओगे (तुम को मालूम हो जाए) तो मेरे सर पर खाक डालोगे.

'हुलयतुल औलिया' में अबू हुज़ैफा रदियल्लाहु अन्हू का कौल नक्ल है कि :

''अगर में चाहूँ तो हज़ार बातें ऐसी बयान करदूँ कि तुम उन को

तसदीक करोगे बल्कि मेरे हाथ पर बैअत करके मेरी मदद करोगे. और हज़ार बातें ऐसी बयान कर सकता हूँ कि तुम उनको झुटलाकर मुझ से बेगानगी इख्तियार कर सकोगे और गालियाँ दोगे हालांकि वह भी सिद्क़ और खुदा और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के अकवाल हैं.''

'हुलयतुल औलिया' में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि ''कुरआन सात हुरूफ पर नाज़िल हुआ है. हर हर्फ के लिए ज़ाहिर व बातिन है और सय्यदना अली कर्रमल्लाहु वजहहु को उसके ज़ाहिर व बातिन का इल्म है.''

'जामिउस् सगीर' में सय्यदना अली कर्रमल्लाहु वजहहु से रिवायत है कि इल्मे बातिन असरारे इलाहीय्या से एक सिर्र (राज़) है. खुदाए तआला जिस बंदे को चाहता है उसके दिल में डाल देता है.''

'फुतूहाते मक्किया' के तीसवें बाब में है कि सय्यदना अली कर्रमल्लाहु वजहहु ने अपने सीने पर हाथ रख कर फरमाया कि इसमें कसरत से उलूम भरे हैं. काश में ऐसे लोगों को पाता जो उनका बोझ उठा सकें.

और जुनैदे बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैह का कौल नक्ल है कि कोई शख्स दरजए-हकीकत तक नहीं पहुंच सकता जब तक हज़ार सिद्दीक़ उसके ज़िन्दीक़ (काफिर) होने पर गवाही ना दें.

और सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हू का कौल नक्ल है कि आप फरमाते हैं कि आयते शरीफा : ﴿اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ﴾ की तफसीर अगर मैं बयान करूँ तो तुम लोग मुझे रजम (संगसार) करोगे और एक रिवायत में है कि काफिर कहोगे.

और इमाम अली अलहुसैन ज़ैनुल आबिदीन रदियल्लाहु अन्हू यह अशआर पढते थे :

يا رب جوهر علم لو ابوح به	لقيل لى انت ممن يعبد الوثنا
و لاستحل رجال مسلمون دمى	يرون اقبح ما يأتونه لونه حسنا

यानी अगर मैं जौहरे इल्म बयान करूँ तो मुसलमान लोग मुझे

बुतपरस्त कहेंगे और मुझे क़त्ल करके कहेंगे कि हमने यह अच्छा काम किया.

'तबक़ात' में इमाम शेरानी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा है कि जुनैद बगदादी रहमतुल्लाहि अलैह शिबली रहमतुल्लाहि अलैह से कहा करते थे कि सिर्रे इलाही (राज़े इलाही) का इफशा (ज़ाहिर) महजूबीन (अवाम) में ना करना.

'तबक़ात' में अबू अम्र उस्मान बिन मज़रूक़ रहमतुल्लाहि अलैहिमा के हाल में लिखा है कि उनके मुरीदों ने एक दिन बिलइत्तेफाक कहा, आप हकाइक में गुफ्तगू नहीं करते. फरमाया आज मेरे असहाब कितने हैं? कहा छे सौ. फरमाया : इन में से सौ का इंतेखाब करो. इसके बाद फरमाया : इनमें से भी बीस का इंतेखाब करो. फिर फरमाया कि इन में से भी चार शख्सों को मुंतखब करो जो तमाम मुरीदों में आला दर्जे के बाखुदा और पुख्ता हों. चुनांचे इब्ने अस्क़लानी रहमतुल्लाहि अलैह वगैरा मुंतखब किए गए. फरमाया : अगर हकाइक की एक बात इनसे कहूँ तो यही चार हज़रात सब से पहले मेरे क़त्ल का फतवा देंगे. यही बात है जो किताब 'कुलैनी' (सफहः२२१) में अबुल हसन मूसा रहमतुल्लाहि अलैह से मरवी है : "فان لذاعوا فهو الذبح و اشار بيده الى حلقه" यानी अगर लोगों ने हमारे असरार को ज़ाहिर कर दिया तो हमारा गला काटा जाएगा, जो अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हू ने भी यही फरमाया था कि राज़ की बातें बयान करूँ तो मेरा गला काटा जाएगा.

हासिल कलाम यह कि उलूमे असरार का वजूद सुन्नीयों की बुखारी और हुलयतुल औलिया वगैरा से और हज़राते शीआ की कुलैनी वगैरा से साबित है. किसी फिरके को इससे इंकार नहीं हो सकता. अलबत्ता उलमाए ज़ाहिर और हज़राते शीआ को मुराद के तअय्युन में इख्तेलाफ है और इसकी खास वजह यही है कि जिन रियाज़ात व मुजाहदात से यह इल्म हासिल हो सकता है वह उन हज़रात से तो हो नहीं सकता. आखिर 'اَلْاِنْسَانُ عَدُوٌّ مَا جَهِلَ' (यानी इंसान जो चीज़ के बारे में नहीं जानता वह उसका दुश्मन हो जाता है) के मुताबिक इस फन के दुश्मन ही हो गए. और अंगूर खट्टे हैं की मसल सादिक आ गई. और जिन उलमा ने मिसाले इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैह वगैरा ने मुजाहदात किए वह कामयाब हो गए जैसा कि उनकी किताबों से

ज़ाहिर है. जो लोग अपने आप को शीआ अइम्मए-किराम में शरीक करते थे हालांकि दरअस्ल वह शीआ नहीं थे, जिसका हाल अइम्मए-किराम की तसरीह (वज़ाहत) से अभी मालूम हुआ उन्होंने असरार को छुपाने का मतलब 'तक़य्यह' करार दिया. (मकासिदुल इस्लाम, जि.:६, सफहः९२)

'कुलैनी' सफह ४८८ में यह रिवायत है कि ''अमीरुल मोमिनीन अलैहिस् सलाम एक रोज़ खुत्बा पढ रहे थे. ऐन खुत्बे में हुमाम ने पूछा कि मोमिन की ऐसी सिफात बयान फरमाइए कि वह मुमताज़ हो जाए. फरमाया : ऐ हुमाम! वह एक समझदार शख्स होता है जिसका चेहरा तर व ताज़ा होता है मगर दिल में रंज भरा हुआ. सब से ज़्यादा वह अपने नफ्स को ज़लील समझता है. जो चीज़ फना होने वाली हो उस से नफ्स को तंबीह और हर अच्छी चीज़ की तरफ उनको रागिब करता है. अपनी रिफअत (बलंद शान) को मकरूह (बुरा) समझता है. अकसर खामोश और खुदाए तआला के ज़िक्र में मशगूल रहता है. साबिर, शाकिर, अपनी फिक्र में मगमूम और अपने फक्र के साथ खुश. उससे अज़िय्यत (तकलीफ) बहुत कम पहुंचती है. गुस्से की हालत में वह निहायत नर्म, मुहब्बत उसकी खालिस और वादा उसका मज़बूत. अपनी ख्वाहिशों के मुखालिफ, अपने मातेहत पर रहम दिल, ला यानी बातों में गौर व फिक्र नहीं करता, खर्च बहुत कम करता है मगर बगैर इसराफ (फुज़ूल खर्ची के), अल्लाह की मखलूक पर नर्मी करने वाला, ज़ईफों का मददगार, किसी की पर्दादरी (राज़ फाश करना) नहीं करता, भेद को छुपाए रखता है. अगर खैर किसी में देखता है तो उसका ज़िक्र करता है और शर देखता है तो उसको छुपाता है. किसी से लग्ज़िश और कुसूर हो तो माफ कर देता है, उज़्र कबूल करता है. लोगों के साथ नेक गुमान, बद गुमानी से दूर, दोस्ती रखता है तो अल्लाह तआला के वास्ते, बुराई का बदला नहीं लेता, उसका अफु (माफ करना) दुशमनी पर गालिब. खुदाए तआला का फरमाँबरदार और हर हाल में उससे राज़ी. पोशीदा और खुले आम में लोगों का खैर ख्वाह, उम्मीद उसकी बहुत थोडी, जो कुछ मिल गया उस पर क़नाअत करने वाला. लोग उस से राहत में, अगर कोई उस पर ज़ुल्म करे तो वह सब्र करता है और नेकों का पैरव और आने वाले नेकों का वह इमाम

होता है.

अब कहिए कि अमीरुल मोमिनीन अलैहिस् सलाम ने मोमिन को जो मुमताज़ करके बताया तो क्या हर शख्स यह दावा कर सकता है कि वह मोमिन है और उन तमाम सिफाते कमालिया का जामेअ् (हामिल) है. इस ज़माने को जाने दिजीए, यह तो आखरी ज़माना है, इसमें इन सिफात के साथ मुत्तसिफ (सिफात वाला) होना तो बहुत दूर, अगर मालूम हो जाए कि कोई शख्स इन सिफात की तौसीफ (तारीफ) करता है तो वह बेवक़ूफ बल्कि पागल खाने में भेजे जाने के काबिल समझा जाता है. पुराने ज़माने पर नज़र डाली जाए तो वहाँ के भी बहुत थोडे ही नज़र आऐंगे. चुनांचे अबू अब्दुल्लाह अलैहिस् सलाम ने तमाम शीओं पर नज़र डाल कर फरमाया : ''اَلْمُؤْمِنُ اَعَزُّ مِنَ الْكِبْرِيْتِ الْاَحْمَرِ'' यानी मोमिन किब्रीयते अहमर से भी कम दस्तयाब हैं. हाँ, अगर इन सिफात वाले कोई हैं तो औलिया अल्लाह हैं. फिल हकीकत उनका पाना किब्रीते अहमर का पाना है. ग़र्ज़ कि अमीरुल मोमिनीन कर्रमल्लाहु वजहहु चूंकि इमामुल औलिया हैं, औलिया-ए-कामिलुल ईमान के औसाफ बता दिए ताकि लोग इन सिफात को हासिल करके दर्जए-विलायत तक तरक्की करें.''

हम ने बडी बडी किताबों से यह हवाले लिए हैं ताकि इल्मे लदुन्नी की अहमिय्यत बढे. तालिबे मौला को राहे मारिफत हासिल हो. मकसद यही है पेश करने का.

अज़ मकासिदुल इस्लाम, जिल्द : ६, सफहः ४६ में है :

''(किताब) 'सवाइक़े मोहरिक़ा' में इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा है कि एक रोज़ खलीफ रशीद ने देखा कि इमाम मूसा काज़िम रहमतुल्लाहि अलैह काबा शरीफ के पास बैठे हैं. कहा : क्या आप ही हो कि पोशीदा तौर पर लोगों से बैअत लिया करते हैं? फरमाया : हाँ, ''اَنَا اِمَامُ الْقُلُوْبِ وَ اَنْتَ اِمَامُ الْجُسُوْمِ'' यानी फरमाया कि मैं दिलों का इमाम हूँ और तुम जिस्मों के. मतलब यह कि हमारी बैअत दूसरी किस्म की है कि दिलों को मारिफते इलाही से मुनव्वर करती है. इसको सल्तनत से कोई तअल्लुक नहीं है. फिलवाक़िअ यही इमामत मकसूद बिज़्ज़ात (अस्ल) है क्यूँकि नबी-ए-

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअ्सत (तशरीफ आवरी) इसी मकसद से हुई थी कि वादी-ए-गुमराही के भटकने वालों को हिदायत करके खुदाए तआला तक पहुँचा दें. बेअ्सत से मकसूद बिज़्ज़ात (अस्ल) सल्तनत नहीं क्यूँकि सलातीन सिर्फ तमद्दुन (सिविल सोसाइटी) कायम करने के लिए होते हैं, ख्वाह शरई उसूल पर हो या कानूनी.''

(अज़ मकासिदुल इस्लाम, जिल्द : ६, सफह : ४७)

'कुलैनी' सफह : ११५ में रिवायत है कि :

''قَالَ اَبُوْ جَعْفَرَ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَا اَبَا خَالِدٍ لَنُوْرُ الْاِمَامِ فِیْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْوَرُ مِنَ الشَّمْسِ الْمُضِيْئَةِ بِالنَّهَارِ وَ هُمْ وَاللّٰهِ يُنَوِّرُوْنَ قُلُوْبَ الْمُؤْمِنِيْنَ''

यानी फरमाया इमाम जाफर अलैहिस् सलाम ने कि इमाम का नूर जो मोमिनीन के दिलों में होता है वह उस से भी ज़्यादा रौशन है जो आफताब का नूर रोज़े रौशन में होता है. खुदा की कसम वह मोमिनों के दिलों को रौशन कर देते हैं.

यह वह नूर है जो तालिबीने हक के दिलों में होता है जिस से उनको सुलूक में मदद मिलती है. और मसालिके तरीकत (तरीकत की राहों) को रोज़े रौशन की तरह मुनव्वर कर देता है. यह नूर उस इमामुल कुलूब का होता है जो खुदा रसीदा (खुदा तक पहुंचने वाला) हो. और दूसरों पर अपना असर डाल सके. बरखिलाफ जिस्मों के इमाम (बादशाहों) के कि खूनरेज़ और फाजिर भी तो हो सकता है, इस से उस को कोई तअल्लुक नहीं.

'कुलैनी' सफह : १०८ में रिवायत है कि :

''قَالَ اَبُوْ جَعْفَرَ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَا اَبَا حَمْزَةَ يَخْرُجُ اَحَدُكُمْ فَرَاسِخَ فَيَطْلُبُ لِنَفْسِهِ دَلِيْلًا وَ اَنْتَ بِطَرِيْقِ السَّمَاءِ اَجْهَلُ مِنْكَ بِطَرِيْقِ الْاَرْضِ فَاطْلُبْ لِنَفْسِكَ دَلِيْلًا''

यानी फरमाया अबू जाफर अलैहिस् सलाम ने : ऐ अबू हमज़ा! तुम ज़मीन पर चंद मील जाते हो तो एक रहबर को साथ लेते हो हालांकि ज़मीन की राहों से आस्मान की राहें ज़्यादा नामालूम हैं. उन राहों की हिदायत के लिए

रहबर की ज़्यादा ज़रूरत है. इस लिए एक रहबर अपने लिए ढूंढो. मतलब यह कि खुदा तलबी की राह में पीरे कामिल की अशद्द ज़रूरत है.''

किताब 'मकासिदुल इस्लाम' जि.:६, स.: ४८ में है कि :

''कुलैनी, स.: १०९ में रिवायत है कि अबू जाफर अलैहिस् सलाम ने अल्लाह तआला के इस कौल :

"(نُوْرًا يَّمْشِىْ بِهٖ فِى النَّاسِ) اِمَامٌ يُؤْتَمُّ بِهٖ (كَمَنْ مَثَلُهٗ فِى الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا) قَالَ الَّذِىْ لَا يَعْرِفُ الْاِمَامَ."

के बारे में फरमाया कि यानी इस आयते शरीफा में नूर से मुराद इमाम और मुर्शिद है जिस की पैरवी की जाए और जो मिसाल उस शख्स की दी गई है कि अंधेरियों से निकल नहीं सकता, इस से मुराद वह शख्स है जो इमाम को ना पहचाने यानी जो शख्स पीर की तलाश ना करे जो उसका मुकतदा व इमाम हो सके, वह हमेशा गुमराही की तारीकी (अंधेरी) में पडा रहेगा. ग़र्ज़ इमाम वही है जो सालिक को रहे तहकीक में अला वजहिल बसीरत (खूब अच्छी तरह) ले जा सके. (और खूब अच्छी तरह वही ले जा सकेगा जो अल्लाह की तरफ से मुक़र्रर हो).

'मक़ासिदुल इस्लाम' जि.:६, स.: ८३ में है कि :

'कुलैनी' (स.: ५४४) में रिवायत है कि अबू जाफर अलैहिस् सलाम से आप फरमाते हैं कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शबे मेराज में पूछा कि या रब! तेरे नज़दीक मोमिन का क्या हाल है? इर्शाद हुआ : ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो मेरे वली की इहानत (तौहीन) करे वो मेरे मुकाबले के लिए मैदान में आ खडा हो. मैं अपने औलिया की मदद व नुसरत बहुत जल्द करता हूँ. मुझे किसी बात में ऐसा तरद्दुद नहीं होता जैसे उस मोमिन की वफात के वक्त होता है जो मौत को मकरूह समझता है और मैं उसे रंजीदा करना मकरूह समझता हूँ. मेरे बाज़ (चंद) बंदे ऐसे हैं कि उनके हक में तवंगरी (मालदारी) बेहतर है. अगर मैं उन्हें फकीर बना दूँ तो वह हलाक हो जाऐंगे और बाज़ (चंद) के हक में फुक्र बेहतर है. अगर मैं उनको गनी (मालदार) कर दूँ तो वह हलाक हो जाऐंगे.

मेरा तक़र्रुब (कुर्ब) हासिल करने के लिए फराइज़ से ज़्यादा कोई चीज़ मुझे मेहबूब नहीं और बंदा नवाफिल अदा करके मुझ से करीब होता जाता है यहाँ तक कि मैं उसे दोस्त रखता हूँ. फिर जब में दोस्त रखता हूँ तो मैं उसके कान हो जाता हूँ जिनसे वह सुनता है, और आंख हो जाता हूँ जिनसे वह देखता है, और ज़बान हो जाता हूँ जिससे वह बात करता है और हाथ हो जाता हूँ जिससे वह पकडता है. अगर वह मुझे पुकारता है तो मैं उसको जवाब देता हूँ और अगर वह मुझ से कुछ मांगता है तो मैं उसे अता करता हूँ.''

'अफज़लुल फवाइद' (हिस्सा अव्वल, स.: ६९) में लिखा है कि :

''हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया कि बाबा फरिद रहमतुल्लाहि अलैह रिवायत करते हैं कि हज़रत कुत्बुद्दीन बख्तियार काकी औशी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते थे कि जो शख़्स बगैर कदमों के राहे हक पर चला वह मंज़िले मकसूद पर पहुंच गया और जिसने बगैर ज़बान उसका ज़िक्र किया उसे नेअमते विसाल हासिल हो गई, जिसने बे आंख दोस्त का जमाल देखा वह हमेशा के लिए बीना (आंख वाला) हो गया, जिसने मुँह के बगैर उसकी मुहब्बत की शराब पी वह मर्दे कामिल हो गया.

ख्वाजा निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैह जब इस बात पर पहुँचे तो ज़ार ज़ार (खूब) रोए और फरमाया कि मर्दे कामिल ख्वाह खिलवत में हो या जलवत में, कोई दम ऐसा नहीं गुज़रता कि वह अर्श के सुतून को नहीं हिलाता और उसका शोर आलमे मलकूत में बरपा नहीं होता.

इस पर हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाहि अलैह हुज़ूर की इजाज़त पर ख्वाजा निज़ामी रहमतुल्लाहि अलैह के दो शेर अर्ज़ किए :

चूँ मस्ते खिलवतश गशती फलक रा खैमा बरहम ज़न
सुतूने अर्श दर जंबाँ तन्नाबे आस्माँ दर कश
तरीक़श बे कदम मी रौ, हदीसश बे ज़बाँ मी गो
हिजाबश बे बसर मी बीं शराबश बे दहाँ दर कश

(हिदायतुस् सालिकीन, स.: ४)

बुरहानुल हकाइक स.:२६४ पर रिवायत है कि एक रोज़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ फरमा थे. चंद

असहाब हाज़िर होकर अर्ज़ किए कि आप जो अम्र पंज बिनाए इस्लाम का इस्लाम के पांच बुनियादी फराइज़) फरमाए सो हम बजा लाते हैं. मगर अब कोई आसान तर राह बताई जाए ताकि हम जल्द मंज़िले मकसूद को पहुँचें. तब हज़रत (स.) ने बैअत करके फरमाए कि तुम ज़ाहिर के पट बंद करो. फरमाया कि कलमा तय्यब का राज़ सरफराज़ फरमाए. जब तीन सौ साठ आदमी वह नेअमत से सरफराज़ हुए.

सदके जाऐं हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के! हमारी दाइमी नजात के लिए ऐसा सबक इनायत फरमाया जो ऊपर का मज़मून सबूत है इल्म-दानों के लिए. बकौल बागे इरम पंजतन पाक एक पाक दरख्त में पाए जाते हैं. मज़मून 'गुलज़ारे क़दीर' बरज़खे पंजतन मुलाहेज़ा हो तो रौशन होगा. आलमे कुबरा और आलमे सुगरा जिस का सबूत 'गुलज़ारे क़दीर' ही 'गुलज़ारे क़दीर' है. 'अलइल्मु नुक़ततु कुन' से ज़ाहिर है.

किताब 'मकासिदुल इस्लाम' जि.:६, स.:२०५ पर है :

''जिन्नों की उम्रें बहुत दराज़ होती हैं. चुनांचे आकामुल मरजान में लिखा है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रदियल्लाहु अन्हू किसी जंगल में जा रहे थे कि एक सांप पर उनकी नज़र पडी जो मर गया था. उसको कफन पहना कर दफन कर दिया. गैब से आवाज़ आई कि ऐ सरक़! मैं गवाही देता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से खुद मैंने सुना है कि तुम्हीं फरमाते थे कि तुम एक जंगल में मरोगे और एक मर्दे सालेह जो उस ज़माने में बेहतरीन अहले अर्ज़ (इंसानों) से होगा तुम्हें कफन पहना कर दफन करेगा. उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रदियल्लाहु अन्हू ने उस कहने वाले से पूछा कि खुदा तुम पर रहम करे, तुम कौन हो? कहा मैं एक जिन्न हूँ, उन जिन्नों में से जिन्होंने कुरआन शरीफ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना था. उन लोगों में से सिवाए मेरे और सरक़ के अब कोई बाकी नहीं. और सरक़ यही है जिसको आप ने कफन पहना कर दफन कर दिया.''

किताब 'मकासिदुल इस्लाम' जि.:६, स.:२०६ पर है :

''दाइरतुल मआरिफ'' में मुअल्लिम बितरस बुस्तानी ने लिखा है कि अनस रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है, वह कहते हैं कि मैं आँहज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह था. जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुअज़्ज़मा के पहाडों से बाहर निकल गए तो एक बूढे को देखा, लकडी टेकता हुआ आ रहा है. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे फरमाया कि यह चाल और आवाज़ जिन्न की है. उसने कहा, दुरुस्त है. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जिन्नों के किस क़बीले से हो? कहा : सासह इबनुस् सहीम लाक़ीस बिन इबलीस से. फरमाया : इस से तो मालूम हुआ कि तुझ में और उसमें सिर्फ दो ही पुश्त हैं. जी हाँ ! फरमाया : कितनी मुद्दत तुझ पर गुज़री? कहा : तकरीबन सारी दुनिया को खा गया. जिस ज़माने में क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया था, उस वक्त टीलों पर चढ कर देखता और लोगों को वरगलाता था. फरमाया : यह बुरा काम है. कहा : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! इताब (गुस्सा) ना फरमाइए. मैं उन लोगों से हूँ जो नूह अलैहिस् सलाम पर ईमान लाए. मैंने उनके हाथ पर तौबा की और हूद अलैहिस् सलाम से मिला और उन पर ईमान लाया और इब्राहीम अलैहिस् सलाम से मिला और आग में उनके साथ था और जब यूसुफ अलैहिस् सलाम कुँऐं में डाले गए मैं उनके हमराह था और शोऐब और मूसा अलैहिमस् सलाम से मुलाकात की और ईसा इब्ने मरयम अलैहिमस् सलाम की मुलाकात से मुशर्रफ हुआ. उन्होंने मुझ से कहा कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाकात हो तो मेरा सलाम उनको पहुँचाना. चुनांचे यह पयाम मैंने आप को पहुँचा दिया, आप पर ईमान लाया. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : अब तुम क्या चाहते हो? कहा : मूसा अलैहिस् सलाम ने तौरेत की और ईसा अलैहिस् सलाम ने इंजील की मुझे तालीम दी, अब मैं चाहता हूँ कि आप कुरआने करीम की तालीम फरमाऐं. चुनांचे हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरआन की उनको तालीम दी.

(अज़ बुरहानुल हकाइक, सः २५९, ''ईमान व इस्लाम'')

कलमए-तय्यब की फ़ज़ीलत और उसके ज़हूर के बयान में

(हदीस) अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि मैने सुना जिब्राईल अलैहिस् सलाम से कि वह खबर देते हैं खुदाए तआला से कि खुदाए तआला ने फरमाया कि नहीं नाज़िल किया मैंने कोई कलमा जो आला अफज़ल हो कलमए-'ला इलाहा इल्लल्लाह' से रूए ज़मीन पर. इसकी बरकत से कायम हैं सातों आस्मान और ज़मीन और पहाड और जंगल और दरख्त और दरिया. आगाह हो, यही कलमए-इखलास है, आगाह हो यही कलमए-शफाअत है. आगाह हो यही कलमए-बरतर है. आगाह हो यही कलमए-बुज़ुर्ग है. आगाह हो यही कलमए-मुबारक है. अगर एक पल्ले में रखे जाऐं आस्मान व ज़मीन और दूसरे पल्ले में यह कलमा, हर हाल में वज़नी निकले आस्मान व ज़मीन से. जिस ने इस कलमे को एक बार कहा बख्श दिए गए गुनाह उसके अगरचे गुनाह उसके दरिया के झाग के बराबर हों.

वाज़ेह हो कि नुज़ूले वही की दो किस्में हैं : एक किस्म जली, दूसरी खफी. जली की दो किस्म हैं : एक मकतूब जैसे कुरआने मजीद, दूसरी मलफूज़ जैसे जिब्राईल का वही करना जो अल्लाह तआला के पास से लाए. खफी की भी दो किस्में हैं : एक वह कि जिसको रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला से क़ल्बी इल्हाम के तौर पर बगैर जिब्राईल के वास्ते से सुना. इसको हदीसे कुदसी और कलामे कुदसिय्यह कहते हैं. दूसरे वह कि जिसको जिब्राईल अलैहिस् सलाम बहुक्मे मलिकुल अल्लाम (अल्लाह तआला के हुक्म से) लौहे महफूज़ से लाए. और यह हदीस किस्मे जली से है कि जिब्राईल अलैहिस् सलाम ने सुनकर खबर दी और

बयान किया कि कलमए तय्यबा के पंदरह नाम हैं. ऊपर ज़िक्र की हुई अज़मत और शरफ की बुनियाद पर हक तआला कुरआन मजीद में मुखतलिफ नामों से मज़कूर है. अव्वल कलमए-तय्यब ﴿وَ اِلَيۡهِ يَصۡعَدُ الۡكَلِمُ الطَّيِّبُ﴾ यानी और उसी की तरफ सऊद करते (चढते) हैं पाक कलमे. (२) कलमए-तय्यबा ﴿مَثَلُ كَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ﴾ (३) कलमए-इस्तेकामत ﴿اِنَّ الَّذِيۡنَ قَالُوۡا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسۡتَقَامُوۡا﴾. यानी उन लोगों ने कहा सच्चे दिल से परवरदिगार हमारा अल्लाह है, फिर इस एतेकाद पर जम गए और ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़िक्र हमेशा करते रहे. (४) कलमए-कलीद ﴿لَهٗ مَقَالِيۡدُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ﴾. उसी के लिए हैं (यानी परवरदिगार के क़ब्ज़ए-कुदरत में हैं) कुंजियाँ आस्मानों और ज़मीन की. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि मुराद इस से कलमा ‘ला इलाहा इल्लल्लाह’ है. (५) कलमए-तक़्वा ﴿لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَلۡزَمَهُمۡ كَلِمَةَ التَّقۡوٰى﴾ अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहु फरमाते हैं कि कलमए-तक़्वा से मुराद कलमए- तय्यब है. (६) कलमए-अद्ल ﴿اِنَّ اللّٰهَ يَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَ الۡاِحۡسَانِ﴾ यानी अल्लाह तआला हर शै में बराबरी व इम्तियाज़ और एहसान का हुक्म देता है. (७) कौले सदीद ﴿وَ قُوۡلُوۡا قَوۡلًا سَدِيۡدًا﴾ कि तुम कौले सदीद यानी पसंदीदह कौल कहो. (८) कलमए-अम्न ﴿وَ لٰكِنَّ الۡبِرَّ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ﴾ यानी लेकिन बिर्र (नेकी) और एहसान उसी का मकबूल है जो ईमान लाया. (९) कलमए-अहद ﴿اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنۡدَ اللّٰهِ عَهۡدًا﴾ वही शख्स फलाह व नजात पाने वाला है जिसने लिया खुदा के नज़दीक अहद. (१०) कलमए-एहसान ﴿هَلۡ جَزَآءُ الۡاِحۡسَانِ اِلَّا الۡاِحۡسَانُ﴾ एहसान का बदला एहसान है. (११) कलमए-दीन ﴿اَلَا لِلّٰهِ الدِّيۡنُ الۡخَالِصُ﴾ आगाह हो, अल्लाह ही के लिए है दीने खालिस. (१२) सिराते हमीद ﴿وَ هُدُوۡا اِلٰى صِرَاطِ الۡحَمِيۡدِ﴾ और हिदायत पा गए सिराते हमीद की तरफ. (१३) सिराते मुस्तक़ीम ﴿اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ﴾ हुक्म हुआ कि हमारी दरगाह में दुआ करो कि खुदावंदा !

चला हमको सिधी राह.

(१४) ﴿اَلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى﴾ जिन लोगों ने एहसान व नेकी की है उनके लिए नेक जज़ा है. (१५) ﴿وَ مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا اِلَى اللّٰهِ﴾ और कौन नेक कौल है उस शख्स से जो बुलाए खुदा की तरफ यानी कलमए-तौहीद की तरफ कि वो कलमा 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है.

कोई कलमा इस से बेहतर नाज़िल नहीं हुआ है. यह वह कलमा है कि अगर सत्तर बरस का काफिर एक बार सच्चे दिल से कहेगा वह जन्नती हो जाएगा और दुश्मन दोस्त बन जाएगा. दूर है तो पास हो जाएगा. ज़लील है तो इज़्ज़त वाला हो जाएगा. दोज़खी जन्नती हो जाएगा. यह आस्मान व ज़मीन, अर्श व कुर्सी और लौह व कलम और खुश्की व तरी के रहने वाले इस कलमे की बरकत से कायम हैं.

हदीस में आया है कि जब तक दुनिया में एक भी कलमा पढने वाला रहेगा कयामत नहीं आएगी. आगाह हो कि यह कलमा कलमए-इखलास है और कलमए-इस्लाम है. जब तक यह कलमा नहीं कहा जाता मुसलमान नहीं होता. और यह कलमा कलमए-रेहमत है. इसका पढने वाला रेहमत का मुस्तहिक होता है और यह कलमए-शफाअत है कि पैगंबरे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफाअत नसीब होगी और तमाम पैगंबरों, फरिश्तों और औलिया और मोमिनीन की शफाअत नसीब होगी बल्कि इस कलमे के पढने वाले को भी शफाअत (करने) का मनसब अता होगा. यह कलमा कलमए-नजात है दुनिया और आखिरत में. दुनिया में कत्ल व गारतगरी और जिज़्या व कैद व गुलामी से आखिरत में हमेशा का और आग का अज़ाब से कैसे ही किसी से गुनाह होते हों मगर जब खातिमा उसका कलमए-तय्यब पर हुआ होगा तो ज़रूर बख्शा जाएगा और यह कलमा बलंद क़द्र है. ज़मीन पर रहने वालों और आस्मान पर रहने वालों सब को इस कलमे से शरफ व बुज़ुर्गी है. रसूल व पैगंबर सब के सब इसी के लिए भेजे गए हैं. गज़वा और जिहाद का हुक्म इसी के वास्ते जारी व नाफिज़ हुआ है. अर्श उठाने वाले फरिश्तों को इसी से कुव्वत व ताकत है. मलाइका को इसी से तमानिय्यत है. ज़मीन व

आस्मान को इसी से सुकून है. दरिया के जानवरों की यही तसबीह है. जंगल के जानवरों का यही वज़ीफा है. पहाडों और हामून और जैजून और सैहून के रहने वाले इसी कलमे से ज़िंदा, आफात से महफूज़ हैं. यहाँ तक कि अल्लाह तआला का सच्चा कौल है कि ﴿اِنَّنِیْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا﴾ और एक जगह फरमाता है ﴿فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ﴾. और हदीस शरीफ में आया है कि "کُنْتُ کَنْزًا مَخْفِیًا فَانْبَعَثْ اُمَّةً مَهْدِیَّةً" (यानी था मैं एक खज़ाना रहमत का पोशीदा पस उठा मैंने मखलूक को हिदायत की). फिर हदीसे कुदसी में इर्शाद होता है : "لَوْ لَاکَ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاکَ" (यानी ऐ नबी अगर आप मकसूद ना होते तो मैं कायनात नहीं बनाता) बल्कि "لَوْ لَاکَ لَمَا اَظْهَرْتُ رُبُوْبِیَّتِیْ" (यानी अगर ऐ नबी अगर आप मकसूद ना होते तो मैं अपनी रुबूबिय्यत (रब होने) को ज़ाहिर ना करता.)

हदीस में आया है कि बिला शुबाह खुदा तआला ने पैदा किया एक दरख्त कि उसकी शाखें चार शाखें थीं. पस नाम रखा उसका दरख्ते यकीन. बागे इरम का कौल है :

पस मुहम्मद अस्ल व बाकी फूल व फल
शाख व बर्ग व तुख्म हो आए निकल
आदम व ईसा से ले कुल मुरसलीं
हैं इसी खिरमन के सारे खोशा चीं

पस यह दरख्ते यकीन कलमए-तय्यबा को कहते हैं. यानी वह कलमए-तौहीद या दावते इस्लाम दरख्ते पाकीज़ा की मानिंद है इस आयते करीमा के मुताबिक कि :

﴿ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا کَلِمَةً طَیِّبَةً کَشَجَرَةٍ طَیِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِی السَّمَاءِ﴾

और इस की तरफ इशारा है इस आयत में :

"اِلَیْهِ یَصْعَدُ الْکَلِمُ الطَّیِّبُ وَ الْعَمَلُ الصَّالِحُ یَرْفَعُهٗ"

कलमए-तय्यब से मुराद मारिफत है और अमले सालेह इस मारिफत के लिए हम्माल और खादिम के मिस्ल है और अमले सालेह सब का सब इसी लिए है कि अव्वल दिल को दुनिया से पाक करे, फिर उसकी तहारत को

बाकी रखे. चुनांचे हमारे जद्दे अमजद हज़रत आदम अलैहिस् सलाम हमेशा अपने फेल (अपनी करनी) के वास्ते इस्तेग़फार करते थे, हरगिज़ कबूल ना हुआ, लेकिन एक दिन हज़रत आदम अलैहिस् सलाम ने कहा : या इलाही! मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त के तुफैल मेरी मग़फिरत फरमा. हुक्म हुआ : तूने मुहम्मद को क्यूँकर जाना? कहा जब मेरे जिस्म में रूह फूंकी गई थी उस वक्त मैंने सर अपना उठाकर अर्श के खंबे पर ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' लिखा हुआ देखा. इस सबब से मैंने जाना कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व असहाबिही व सल्लम तेरे नज़दीक बहुत ही अज़ीज़ (इज़्ज़त वाले) और प्यारे हैं. आखिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नामे मुबारक की बरकत से हज़रत आदम अलैहिस् सलाम का इस्तिग़फार कबूल हुआ. तो अर्ज़ की कि खुदावंदा 'मुहम्मद' कौन है? हुक्म पहुंचा कि 'मुहम्मद' एक फर्ज़न्द और ज़ुर्रिय्यात (औलाद) तुम्हारी से होगा, पस इताअत उनकी तुम पर फर्ज़े ऐन है. निदा आई कि पढो: ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''

पस आदम अलैहिस् सलाम ने पढा और दायरए-इस्लाम में दाखिल हुए और मुकर्रब फरिश्तों ने भी कलमा पढा. मौलाना रूमी रहमतुल्लाहि अलैह के बक़ौल (तर्जुमा)

खुद वही है अव्वल व आखिर है वह
देख मत खबर चश्मे अहवल शिर्क को

कलमए-तय्यब :

﴿اَصْلُهَا ثَابِتٌ فِی الْاَرْضِ وَ فَرْعُهَا فِی السَّمَاءِ﴾ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' के मायना चार तरीक (तौर) पर हैं : इल्मे शरीअत और इल्मे तरीक़त और इल्मे मारिफत और इल्मे हकीकत. यानी इबादात, तकल्लुमात व आमाले फुज़ूलात आलमे मलकूत इंसानी इल्मे तरीकत के वाज़ेह हो कि मारीफत आलमे नासूत इंसानी की शरीअत और मारिफत आलमे मलकूत नफ्सानी तरीकत और मारिफत आलमे जबरूत रूहानी की मारिफते हक और मारिफत आलमे लाहूत रहमानी

की हकीकत है. पस आलमे नासूत यह जहाँ है और आलमे मलकूत वह जहाँ है और आलमे जबरूत रूहानी ना यह जहाँ ना वह जहाँ बल्कि कुर्बे हज़रते बिश्शान है और आलमे लाहूत रहमानी इत्तेसाल मअल्लाह (अल्लाह के साथ वस्ल) खुद बेनिशान है. चुनाँचे मारिफत आलमे नासूत की इस्तेकामत राह आलिमों की है और मारिफत आलमे मलकूत की इस्तेकामत राह ज़ाहिदों की है और मारिफत आलमे जबरूत की इस्तेकामत मकाम आरिफों की है. और मारिफत आलमे लाहूत की इस्तेकामत मकाम आशिकों की है जो कि मारिफत आलमे मलकूत के नज़दीक अरबाबे बसीरत व मुख्तसर हिम्मत व कासिर दीद के कलमा 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' के पढने से हासिल होती है.

(बुरहानुल हकाइक, स.: ९३)

मखज़नुल अनवार गंजुल असरार (स.:५५) में है :

वाज़ेह हो कि मलफूज़ात में क़ाज़ी अहमद ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं, रिवायत है अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक रदिय-ल्लाहु अन्हू से कि जब सय्यदुल मुरसलीन खातमुन नबिय्यीन मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शबे मेराज के दौरान तशरीफ ले गए और मकामे सिद्रतुल मुन्तहा से आगे बढे तो हर चार तरफ बाकमाल अज़मत व जलालत हिजाबे नूरानी तजल्ली के आफताब से रौशन ज़्यादा देखे जबकि नज़र आगे बढी तो देखा कि अली असदुल्लाह मुरतज़ा शेरे खुदा रदियल्लाहु अन्हू की सूरत सोने की ज़ंजीर से तौक बंदगी का गर्दन में डाले हुए कमाले जाह व जलाल के साथ खिदमते दरबानी में खडे हैं. अगरचे हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देख कर सर झुका लिया मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर हैबत और वहशत असदुल्लाह की छा गई. इसके बाद आपने सीधे तरफ जो नज़रे मुबारक फेरी तो देखा कि एक शख्स अर्शे आज़म के साये में कमली ताने सो रहा है. आप के दिल में गुज़रा ऐ अल्लाह! इस बंदए-ज़ईफ को तूने पैगंबरे अव्वलीन व आखरीन किया और मेरे नाम को अपने नाम के साथ कलमए-तय्यबा में लिखा और अपना हबीब करार दिया. मैं इस मकामे अज़मत व जलाल में बाअदब खडा हुआ थर्रा रहा हूँ यह कौन शख्स है कि इस जगह सो रहा है.

निदा आई कि ऐ मुहम्मद ! यह उवैसे क़रनी रहमतुल्लाहि अलैह है. हज़रत ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह! इनकी मुलाकात की मुझ को बहुत आरज़ू है. अगर हुक्म हो तो मुलाकात करूँ. निदा आई कि ऐ मुहम्मद! उवैसे क़रनी तीस बरस के बाद ज़रा आराम किया है. उसको तकलीफ ना दे. जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उलटी तरफ निगाह की तो देखा कि दो जानवर सब्ज़ रंग सुनहरी चोंच, पाऊं सुर्ख, तौक सियाह बंदगी दर गर्दन कबूतर की तरह हैं. एक तो खुश खुश पर्दे के अंदर से आता जाता है और दूसरा सामने नज़र किए हुए खडा है. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल में गुज़रा कि या रब यह कौन हैं? हुक्म पहुंचा कि यह जो पैगाम रसी कर रहा है यह रूहे शम्सुल आरिफीन तब्रेज़ी रहमतुल्लाहि अलैह की है कि एक मुद्दत से रूह उनकी मुझे उलफत करके बीच इस्तेकामत अबूदिय्यत बातिन व बंदगी नियाज़मंदी याद मेरी के साबित कदम है. दूसरा सुलतानुल आरिफीन बायज़ीद रहमतुल्लाहि अलैह की रूह है कि रात दिन बीच नगेहबानी दिल व जान व नियाज़मंदी इबादते समअ व बसर व इताअत फरमांबरदारी याद मेरी कि इस्तेकामत रख कर नज़दीक मेरे पासबानी करती है. ऐ मुहम्मद ! इंसान अहले सलाहिय्यत और मर्दुमे खास (खास लोग) औलिया-ए-सलिक व खुलफा-ए-सादिक व वासिलाने हक वह लोग हैं जो तरबिय्यत जज़बए-इस्लाहे बातिन व इस्तेकामत कमालिय्यत अबूदिय्यत तलकीन पासबानी हिफ्ज़े कुलूब व इताअते अम्र व ज़ाहिर व बातिन की तेरी मुताबिअत के साथ रखते हैं मगर तेरी उम्मत के लोग कि ﴿فِى مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ﴾ यानी बीच जगह रास्ती के हैं नज़दीक मालिक के जो साहिबे कुदरत है, शुमार किए गए हैं यानी अंबिया-ए-मुकर्रब बावजूद कमालिय्यते नुबुव्वत के परदए-उलूहिय्यत से बाहर हैं और खास लोग और आशिकान मेरे ब-सबबे इस्तेकामत पासबानी कमालिय्यते अबूदिय्यत व नियाज़मंदी व हिफ्ज़े कुलूब मुताबिअत नुबुव्वत के उम्मत तेरी से परदए-समदिय्यत के अंदर हैं इस आयत के मुताबिक ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ﴾ हुक्म आया है कि ऐ मुहम्मद अगर पैरवी तेरी इबादत आमाले तजल्लियाते ज़ाहिरी में अनवाअ है मगर वह कोई कि मारिफत

जज़बए-इस्लाहे बातिन व नियाज़मंदी इताअत में बा सबब तलकीने मुर्शिदे कामिल व तेरी पैरवी कि दिल व जान से साबिक कदम रहे.

﴿مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ﴾ यानी जिसने ताबेदारी की रसूल की पस तहकीक उसने ताबेदारी की अल्लाह की. वह कुर्बे हज़रत मेरे में मकामे आली रखता है. ऐ मुहम्मद! मकाम आदम का जन्नत है और मकाम मूसा का कोहे तूर है और मकाम ईसा का चौथा आस्मान है, इसी तरह दूसरे अंबिया का मकाम. मगर खास लोग औलिया-ए-सालिक व खुलफा-ए-सादिक और वासिलाने हक का ब-सबब तरबिय्यते मुर्शिदे सालिक मजज़ूब और मारिफत जज़बए-इस्लाहे बातिन और इस्तेकामते इबादत खफिय्यात व नियाज़मंदी हिफ्ज़े कुलूब व मुताबिअते बातिन से तुझ से मिले हैं कुर्बे हज़रत और अर्श के साये तले है.''

'बुरहानुल हकाइक' स.: ९८, ९९ से :

''हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि पस नज़दीक गरदाना मुझे मेरे परवरदिगार ने और ऐसा नज़्दीक हुआ कि मर्तबए-दना को पहुँचा फिर दरजए-फतदल्ला को पहुंचा. फिर दरजए-फतदल्ला को तरक्क़ी की और वहाँ से खिलवत खानए-क़ाबा क़ौसैन औव अदना को पहुँचा. यानी तिस पीछे नज़दीक हुआ. पस सख्त नज़दीक हुआ यानी बहुत नज़दीक हुआ मिकदार (बराबर) दो कमान के या ज़्यादा नज़दीक और पूछा कुछ मेरे परवरदिगार ने मुझे. पस मैं जवाब ना दे सका. पस रखा अपने दस्ते कुदरत कि जिन के तईं अपने सीने के दरमियान और अता फरमाया मुझे परवरदिगार ने इल्म अव्वलीन व आखरीन का, और तालीम किया यानी सिखाया तरह तरह के इल्म. एक इल्म के तईं (के बारे में) ऐसा बताया और अहद लिया मुझ से मेरे परवरदिगार ने उसके पोशीदा रखने का कि किसी से ना कहो और कोई उसके उठाने की ताकत नहीं रखता सिवाए मेरे और दूसरा एक इल्म था कि मुख्तार गर्दाना (करार दिया) उसके खास व आम की तरफ.

हदीस : आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ अबू बकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हू! तुम पर रोज़ों नमाज़ों की ज़्यादती से अफज़ल

नहीं हो बल्कि एक राज़ की वजह से जो उसके सीने में डाला गया है.

(बुरहानुल हकइक, स.: ८२)

हदीस "عَـرَفْـتُ رَبِّـىْ بِرَبِّىْ" यानी पहचाना मैंने अपने रब को अपने रब के साथ. हदीस ''देखा मैं रब को रब की आंखों से' यानी खुद में खुद को देख कर हैरान हुए और खुद फरमाने लगे "رَأَيْـتُ رَبِّـىْ لَيْـلَةَ الْمِعْرَاجِ فِىْ اَحْسَنِ صُوْرَةٍ" यानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहे मेरे रब को मेराज की रात मैं देखा खूबसूरत. अब अल्लाह तआला अपने हबीब की ज़बान से फरमाता है कि "مَـا كَـذَبَ الْـفُؤَادُ مَـا رَاٰى" झूट नहीं कहा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल ने. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैंने दीदए-दिल से हक तआला को मुशाहेदा किया. लिखा है कि जब आप ने बिसाते इंबेसात पर कदम रखा तन खिदमत में दिल कुर्बत में, जान मुशाहेदे में, सर मुवासलत (वस्ल) में मसरूफ हुआ कि किसी ने मखलूकाते इलाही से इस भेद को ना पाया और उस वक्त किसी ने ना जाना कि कदमगाह आप के कहाँ हैं और कदम ने ना जाना कि नफ्स कहाँ है और दिल ने ना जाना कि जान कहाँ है और जान ने ना जाना कि सर कहाँ है. यह मकाम निहायत मरातिब व मुशाहेदात से है और गायत उलूमे मुकाशिफात से और क़ाबा क़ौसैन औव अदना यह एक मर्तबा है कि मखलूकाते इलाही से आज तक किसी का फहम व इदराक वहाँ तक नहीं पहुँच सकता है.

मुसलमानों पर फ़र्ज़ है कि वह अपने ज़माने के इमाम को शनाख्त करे

('प्यारे रसूल (स.) की प्यारी बातें' स.: १९१ से नक्ल)

जैसा कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं :

१) जो शख्स अपने ज़माने के इमाम को पहचाने बगैर मरा वह यकीनन जहालत की मौत मरा. (यानी ईमानी मौत से महरूम रहा और सारी ज़िंदगी इस्लाम से बेखबर रहा.) अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

२) जिस ने मेरी इताअत की उसने यकीनन अल्लाह की इताअत की, जिसने मेरी नाफरमानी की उसने यकीनन अल्लाह तआला की नाफरमानी की, जिसने मेरे अमीर (इमामे ज़माँ) की इताअत की उसने यकीनन मेरी इताअत की और जिसने मेरे अमीर की नाफरमानी की उसने यकीनन मेरी नाफरमानी की. (मुस्लिम)

३) इमाम तो इसी लिए मुक़र्रर किया जाता है कि तुम उसकी इताअत करो. इसी लिए तुम उसके खिलाफ ना करना. (बुखारी, मुस्लिम)

४) तुम सुनो और इताअत करो. उन पर जो फर्ज़ है उस का बोझ (ज़िम्मेदारी) उन पर है और तुम पर जो फर्ज़ है उस का बोझ तुम पर है. (मुस्लिम)

५) अल्लाह तआला फरमाता है जिस ने मेरे वली से दुश्मनी की वह यकीनन मुझ से जंग करता है.

६) खुश हो, खुश हो, खुश हो, मेरी उम्मत की मिसाल उस बारिश की मानिंद है जिस की निसबत मालूम नहीं कि उसकी इब्तेदा अच्छी है या आखिर. और वह उम्मत किस तरह हलाक हो सकती है जिस की इब्तेदा में मैं हूँ, दरमियान में मेरे बाद बारह खुलफा (मुजद्दिदीन) और आखिर में मसीह इब्ने मरयम अलैहिमस् सलाम हैं.

७) मुहम्मद बिन मुस्लिम रदियल्लाह अन्हु से रिवायत है कि मैंने अबू

जाफर रदियल्लाहु अन्हु को कहते हुए सुना कि ऐ मुहम्मद! खुदा की कसम है कि इस उम्मत में जिस ने सुबह की और अल्लाह की तरफ से उसके लिए ज़ाहिरन इमामे आदिल ना हो तो उस ने सुबह गुमराही में बसर की और इसी हालत में मरा तो कुफ्र और निफाक़ की मौत मरा. (कुलैनी, स.: ७८६)

८) तुम पर तुम्हारे ज़माने के इमाम की शिनाख्त फर्ज़ है. सब से ज़्यादा नेक बख्त (तकदीर वाला) वह शख्स है जो अपने ज़माने के इमाम को पहचाने और बैअत करे और उसको अपनी जान व माल और औलाद का मालिक समझे. (रावी हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रदियल्लाहु अन्हू)

९) इमाम मेहदी अलैहिस् सलाम के ज़हूर की खबर सुनते ही तुम पर फर्ज़ है कि तुम उसकी बैअत में ज़रूर दाखिल हो जाओ, चाहे बर्फ पर घुटनों के बल चलना पडे. (मुस्लिम)

१०) इमामुज़ ज़मान के पहचान की यह निशानी बतलाई गई है कि वह मुकर्ररह वक्त पर अल्लाह की तरफ से भेजे जाऐंगे और दीन को ताज़ा करेंगे जैसा कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं:

"اِنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ لِهٰذِهِ الْاُمَّةِ عَلٰى رَأْسِ كُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَنْ يُجَدِّدُ لَهَا دِيْنَهَا."

यानी बेशक अल्लाह तआला हर सदी (सौ साल) के सर पर एक मुजद्दिद मबऊस फरमाएगा (भेजेगा) जो उनका दीन ताज़ा करेगा. (अबू दाऊद)

११) "لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ قَبْلِكُمْ شِبْرًا بِشِبْرٍ وَ ذِرَاعًا بِذِرَاعٍ حَتّٰى لَوْ دَخَلُوْا جُحْرِ ضَبٍّ تَبِعْتُمُوْهُمْ. قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اَلْيَهُوْدُ وَ النَّصَارٰى؟ قَالَ فَمَنْ؟ (بخارى)

तर्जुमा : यकीनन ऐ मुसलमानो ! तुम अपने से पहली कौमों के कदम बा कदम चलोगे, उनकी बालिश्त के बराबर बालिश्त और उनके हाथ के बराबर हाथ. यहाँ तक कि अगर वह किसी सूसमार (यानी गोह) के सूराख में दाखिल हुए होंगे (जो बहुत तारीक और गंदा होता है) तो तुम भी उनकी पैरवी करोगे. अर्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह! क्या पहली कौमों से मुराद यहूद और नसारा हैं? फरमाया : और कौन?

”لَيَاْتِيَنَّ عَلٰى اُمَّتِىْ مَا اَتٰى عَلٰى بَنِىْ اِسْرَائِيْلَ حَذْوَ النَّعْلِ بِالنَّعْلِ وَ اِنَّ بَنِىْ (१२) اِسْرَائِيْلَ تَفَرَّقَتْ عَلٰى ثِنْتَيْنِ وَ سَبْعِيْنَ مِلَّةً وَ تَفْتَرِقُ اُمَّتِىْ عَلٰى ثَلَاثٍ وَّ سَبْعِيْنَ مِلَّةً كُلُّهُمْ فِى النَّارِ اِلَّا مِلَّةً وَاحِدَةً، قَالُوْا : مَنْ هِىَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ : مَا اَنَا عَلَيْهِ وَ اَصْحَابِىْ.“ (ترمذی)

तर्जुमा : ज़रूर ज़रूर मेरी उम्मत पर वह हालात आऐंगे जो बनी इस्राईल पर आए, इसी तरह जैसे एक जूती दूसरी जूती की हम शक्ल होती है. और बनी इस्राईल बहत्तर फिर्क़ों में बटे थे और मेरी उम्मत तेहत्तर फिर्क़ों में बटेगी. उन में से सब आग में जाऐंगे सिवाए एक फिर्के के. सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हू ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! वह कौनसा फिर्क़ा होगा? फरमाया: वही जिस तरीक पर कि मैं हूँ और मेरे सहाबा किराम हैं. (तिर्मिज़ी)

”لَوْ كَانَ مُوْسٰى وَ عِيْسٰى حَيَّيْنِ لَمَا وَسِعَهُمَا اِلَّا اتِّبَاعِىْ“ (१३)

तर्जुमा : अगर मूसा और ईसा अलैहिस् सलाम इस वक्त ज़िंदा होते तो उन्हें भी मेरी पैरवी के बगैर चारा ना होता. (अलयवाक़ीत वल जवाहीर और तफसीरे इब्ने कसीर)

”اِنَّ جِبْرَئِيْلَ اَخْبَرَنِىْ اِنَّ عِيْسٰى ابْنَ مَرْيَمَ عَاشَ عِشْرِيْنَ وَ مِائَةَ سَنَةٍ“ (१४)

(तब्रानी) तर्जुमा : जिब्राईल अलैहिस् सलाम ने मुझे खबर दी है कि ईसा इब्ने मरयम अलैहिमस् सलाम एक सौ बीस साल ज़िंदा रहे थे.

”يُوْشَكُ اَنْ يَّأْتِىَ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَبْقٰى مِنَ الْاِسْلَامِ اِلَّا اِسْمُهٗ وَ لَا يَبْقٰى (१५) مِنَ الْقُرْآنِ اِلَّا رَسْمُهٗ مَسَاجِدُهُمْ عَامِرَةٌ وَ هِىَ خَرَابٌ مِنَ الْهُدٰى عُلَمَاءُ هُمْ شَرٌّ مِنْ تَحْتِ اَدِيْمِ السَّمَاءِ ، مِنْ عِنْدِهِمْ تَخْرُجُ الْفِتْنَةُ وَ فِيْهِمْ تَعُوْدُ.“

तर्जुमा : लोगों पर ऐसा ज़माना आने वाला है कि इस्लाम का सिर्फ नाम और कुरआन के सिर्फ अलफाज़ बाकी रह जाऐंगे. उनकी मस्जिदें बज़ाहिर आबाद होंगी मगर हिदायत से खाली और वीरान होंगी. उनके उलमा आस्मान के नीचे बदतरीन मखलूक होंगे. इन उलमा में से ही फितना निकलेगा और उनमें ही फिर लौट आएगा. (शअबुल ईमान)

(۱٦) ”عَنْ زِيَادٍ ابْنِ لَبِيْدٍ قَالَ ذَكَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ شَيْئًا فَقَالَ ذَاكَ عِنْدَ اَوَانِ ذَهَابِ الْعِلْمِ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ كَيْفَ يَذْهَبُ الْعِلْمُ وَ نَحْنُ نَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَ نُقْرِئُهُ اَبْنَائَنَا وَ يُقْرِئُهُ اَبْنَائُنَا اَبْنَائَهُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ؟ فَقَالَ ثَكِلَتْكَ اُمُّكَ زِيَادُ! اِنْ كُنْتُ لَاَرَاكَ مِنْ اَفْقَهِ رَجُلٍ بِالْمَدِيْنَةِ اَوَ لَيْسَ هٰذِهِ الْيَهُوْدُ وَ النَّصَارٰى يَقْرَءُوْنَ التَّوْرَاةَ وَ الْاِنْجِيْلَ لَا يَعْمَلُوْنَ بِشَيْءٍ مِّمَّا فِيْهِمَا.

तर्जुमा : ज़ियाद बिन लबीद रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि एक मर्तबा नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक चीज़ का ज़िक्र किया और फरमाया कि यह इल्म के चले जाने के वक्त होगी. मैंने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! इल्म किस तरह जा सकता है जबकि हम कुरआन मजीद पढते हैं और उसे अपनी औलाद को पढाऐंगे और आगे हमारे बेटे इसे अपनी औलाद को कयामत तक पढाते रहेंगे. आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ ज़ियाद! तेरी माँ तुझ को खोए! मैं तो तुझे इस शहर में बहुत समझदार इंसान समझता था. क्या यह यहूद और ईसाई तौरेत और इंजील नहीं पढते? मगर वह इन में से किसी चीज़ पर अमल नहीं करते. (अहमद)

(۱۷) ”بَدَأَ الْاِسْلَامُ غَرِيْبًا وَ سَيَعُوْدُ كَمَا بَدَأَ. فَطُوْبٰى لِلْغُرَبَاءِ“

तर्जुमा : इस्लाम गरीबुल वतनी की हालत में शुरू हुआ और फिर एक ज़माने में वैसा ही हो जाएगा जैसा कि शुरू हुआ था. पस मुबराक हो (दीन के लिए) गरीबुल वतनी इख्तियार करने वालों को. (मुस्लिम)

(۱۸) ”لَا تَزَالُ مِنْ اُمَّتِىْ اُمَّةٌ قَائِمَةٌ بِاَمْرِ اللّٰهِ لَا يَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ وَ لَا مَنْ خَالَفَهُمْ حَتّٰى يَأْتِىَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ هُمْ عَلٰى ذَالِكَ. (بخارى و مسلم)

तर्जुमा : मेरी उम्मत में से हमेशा एक ना एक जमाअत खुदा के हुक्म पर कायम रहेगी. उनको बे मदद छोडने वाले और उनकी मुखालिफत करने वाले उनको कुछ नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे यहाँ तक कि अल्लाह तआला का हुक्म आ जाएगा और वह इसी हालत में (दीन

पर) कायम होंगे. (बुखारी, मुस्लिम)

(१९) "اِنَّــهُ سَيَــكُــوْنُ فِــىْ اٰخِــرِ هٰــذِهِ الْاُمَّةِ قَــوْمٌ لَهُمْ مِثْلُ اَجْــرِ اَوَّلِهِمْ يَــأْمُــرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُقَاتِلُوْنَ اَهْلَ الْفِتَنِ." (بيهقى)

तर्जुमा : इस उम्मत के आखिर में एक ऐसी कौम पैदा होगी जिन्हें उन से पहले गुज़री हुई कौमों की मानिंद अजर मिलेगा. वह नेकी का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे और दीन में फितना व फसाद पैदा करने वालों का मुकाबला करेंगे. (बैहक़ी)

(२०) "مَثَلُ اُمَّتِىْ مَثَلُ الْمَطَرِ لَا يُدْرىٰ اَوَّلُهُ خَيْرٌ اَمْ آخِرُهُ" (ترمذى)

तर्जुमा : मेरी उम्मत की मिसाल उस बारिश की तरह है जिस के बारे में यह मालूम नहीं कि उसका पहला हिस्सा बाबरकत है या कि आखरी हिस्सा. (तिर्मिज़ी)

मर्तबए-इंसाने कामिल

यह जामिअ (हामिल) है तमामी गैब और शहादत का और यह काइन व बाइन है यानी ज़ाहिर है. उसका ज़ाहिर मिला हुआ है हक से और बातिन उसका टूटा हुआ खल्क (मखलूक) से. 'अस्सूफी' काइन व बाइन और वुजूब व इमकान मसावी (बराबर) है नज़दीक उसके क्यूँकि दोनों सिफत और शान उसके हैं. साहिबे कलीदे मखाज़िन लिखते हैं : (तर्जुमा) यानी सूरत इंसान की लिबास ज़ाते हक है और हक सूरत पकडा है. उसमें अफरादे आलम लिबास सूरत इंसान के हैं और "اَلْاِنْسَانُ سِرِّیْ وَ اَنَا سِرُّهٗ وَ الْاِنْسَانُ بُنْيَانُ الرَّبِّ" बीच हक उसके है और कलमाते 'व अनल हक्क व अनल्लाह' वगैरा वास्ते उसके है इस लिए आदमी तमाम खुदाई मजमअ और असरारे खुदाई का नमूना, उसके जमाले बाकमाल का आईना है. शेर :

आदम आईना जमाले तू बूद
आलम हमा मज़हरे कमाले तू बूद
आँकस कि ना कर्द नफ्से खुद रा इदराक
के महरमे मेहफिल विसाले तू बूद

अल्लाह तआला का कौल: ﴿وَ صَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ﴾ और सूरत बनाई तुम्हारी फिर अच्छी की सुरत तुम्हारी. सूरतें क़द्र कशीदा और खलकते एतेदाल (मुतवाज़िन तखलीक) के साथ करके. इमाम क़शीरी रहमतुल्लाहि अलैह ने यह मतलब बताए हैं कि उसने तुम्हारा ज़ाहिर आरास्ता कर दिया कमाले कुदरत के साथ, और तुम्हारे बातिन को ज़ीनत दी जमाले कुरबत से और मोहक्क्रिकों के यहाँ इंसान का हुस्न यह है कि उसको औसाफे काइनात की सूरत से आरास्ता कर दिया और खसाइस के खुलासे के साथ मखसूस होने का शरफ बख्शा ताकि सब मौजूदाते अलवी और सिफली (आस्मानी और ज़मीनी), मलकी और मलकूती का नमूना हो तो हुस्ने मानवी मुराद है ज़ाहिरी हुस्न नहीं.

और बेहरुल हकाइक में लिखा है कि इंसान की सूरत का हुस्न इस बात में है कि वह आईना जहाँ नुमा है. सब उलवी और सिफली हकाइक और ज़ाहिरी व बातिनी दकाइक का हामिल है और ज़ात और सिफात की मारिफत के अनवारे हकीकत जामे से ज़ाहिर हैं. (बुस्तानुल आरिफीन, स.: २६५)

ख्वेशतन रा मस्ख करदी ऐ सफूल
ज़ेआँ वजूदी कि बुद्द आँ रश्के उक़ूल

यानी सफूल माने पस्ती और उकूल फरिश्तों के मायना और वजूद से मुराद इंसान की हकीकत है. यानी ऐ कमीने! तूने अपने आप को इस हकीकत से मस्ख कर दिया है जो फरिश्तों की रश्क का मकाम था.

नुकता : अगर कोई शख्स आईने में अपना मुँह देख कर यह कहे कि मैं मस्ख नहीं हुआ तो हम कहेंगे कि मस्ख से हमारी मुराद सूरत का मस्ख होना यानी सूरत का बदल जाना नहीं है बल्कि सीरत का मस्ख होना यानी अच्छी आदतों का बदल जाना है. ﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْ أَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ﴾ यानी हम ने आदम को अच्छी सूरत में पैदा किया है. इस आयत की तफसीर में लिखा है कि हम ने इंसान में लाहूती हकाइक और मलकूती हकाइक और जबरूती हकाइक और नासूती हकाइक यह सब जमा कर दिए थे जिस के सबब वह इंसान मलाइका का मसजूद था. लेकिन इस इंसान ने सब को छोड कर नासुती हकीकत को पसंद किया और आलमे सिफली में जा पडा. इसी का नाम मस्खे मानवी और मस्खे सीरत है.

इन आयात को जमा करने का मकसूद यही है कि हर आईने में अपना मुँह देखें. मुअल्लिमे मलकूत की तामीर को कलअदम करार देकर अपनी सूरत को हुवैदा करना अल्लाह ज़ुलजलाल का मकसद है ताकि अपना दीदार आप करें, अपना कलमा आप पढें, अपनी मेराज आप पाकर खासाने हक को हक की तालीमे मानवी शश जिहत में, शश हर्फों में, लफ्ज़ बा लफ्ज़, हर्फ बा हर्फ, मिन व अन (जैसा का जैसा) पाना पंच वक्ती मेराज हुज़ूरे क़ल्ब की खातिरदारी मतलूब है जो अैन मेराजुल मोमिनीन है.

यह दलाइल और अहादीस और अशआर, इशारे व रुमूज़ पेश करने की मज़ीद 'गुलज़ारे क़दीर' में सआदत हासिल है ताकि पढने वाले और

समझने वाले कहीं गलती पाऐं तो माफ फरमाऐं.

हर कि खिदमत कर्दह ऊ मखदूम शुद
हर कि खुद रा दीदह ऊ महरूम शुद

बुस्तानुल आरिफीन, स.: १३६, १३७ में है :

नसाई और इब्ने हब्बान वगैरा हज़रत अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हू नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा हज़रत मूसा अलैहिस् सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया और अर्ज़ भी ऐन मुनाजात की हालत में हुई कि ऐ पाक ज़ात! मुझे कोई ऐसा कलमा या इस्मे आज़म बताया जाए कि मुझे जब तुझे पुकारना मंजूर हो तब इसी कलमे से पुकार लिया करूँ. तब उस पाक ज़ात की तरफ से ईशारा हुआ कि ऐ मूसा : तुम 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा करो और यही कह कर हमें पुकार लिया करो. यह सुन कर हज़रत मूसा अलैहिस् सलाम ने दोबारा अर्ज़ की कि ऐ पाक ज़ात! 'ला इलाहा इल्लल्लाह' यह तो एक ऐसा आम कलमा है जिस को आम तौर पर सब लोग कहते हैं. भला इस में मेरी खुसूसिय्यत ही क्या है. इलाही! मैं तो कोई खास कलमा लेना चाहता हूँ जो मेरे सिवा कोई दूसरा शख्स ना जाने. उस पाक ज़ात की तरफ से जवाब मिला कि ऐ मूसा! तुम ने इस मुबारक कलमे को मामूली समझ कर इसकी क़द्रदानी ना की. ऐ मूसा! यह तो वह खासुल खास कलमा है कि अगर सातों तबक़ आस्मान के और सातों तबक़ ज़मीन के किसी तराज़ू के एक पल्ले में रखे जाएं और सिर्फ 'ला इलाहा इल्लल्लाह' दूसरी तरफ रखा जाए तो भी यह कलमए-तय्यबा भारी और वज़नी रहेगा. और सातों तबक़ आस्मान और सातों तबक़ ज़मीन के हल्के ठहरेंगे.

दिगर अर्ज़ काबिले क़द्र यह है, (हज़रत) बज़्ज़ाज़ अपनी मुसनद (हदीस की किताब) में अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत करते हैं कि फरमाया नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि अर्शे इलाही के सामने एक अज़ीमुश् शान नूर का सुतून यानी खंबा है. जब कोई दुनिया में 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' मुँह से निकालता है तब वह नूरानी खंबा खुद बखुद हरकत में आता है. उस वक्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फरमाता है कि ऐ सुतून!

ठहर, हरकत ना कर. तब सुतून अर्ज़ करता है कि इलाही! जब तक 'ला इलाहा इल्लल्लाह' के पढने वाले की बख्शिश ना होगी तब तक उसकी सिफारिश और शफाअत के लिए हरकत ही में रहूँगा. तब अल्लाह पाक की तरफ से इर्शाद होता है कि अच्छा! हम ने 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' पढने वाले को बख्श दिया. फिर वह सुतून ठहर जाता है. गौर करने का मकाम है कि कहाँ इस कलमे का पढने वाला और कहाँ वह सुतून. यह वही मज़मून है कि जिस को वह ज़ाते पाक अपने कलामे मुबारक में इर्शाद फरमाता है कि मिसाल कलमए-तय्यबा की ऐसी है जैसा कि मुबारक दरख्त की जड ज़मीन में है और शाखें आस्मान की तरफ. इसी तरह कलमा 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' दुनिया में है और उसकी शाखें यानी नूरानी सुतून सातवें आस्मान पर है. सुबहानल्लाह सुबहानल्लाह! इस ज़मीन पर 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पढो और वहाँ पर बख्शे जाओ.

उर्दू तर्जुमा 'शम्सुल आरिफीन' बाब : २, स.: ११, १२ में है :

इंसान के वुजूद में दो दम हैं ; एक वह जो अंदर जाता हे, दूसरा वह जो बाहर आता है. इन दमों पर दो फरिश्ते मुअक्किल हैं. जब इंसान अंदर की तरफ दम लेता है तो मुअक्किल अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ करता है कि परवरदिगार मैं अंदर दम क़ब्ज़ करूँ या फिर बाहर जाने दूँ? और दम जब बाहर जाता है तो भी यही अर्ज़ करता है और वह दम जो इस्मे अल्लाह के तसव्वुर से बाहर निकलता है वह नूरानी सूरत में बारगाहे इलाही में चला जाता है, और मिस्ल मोती के हो जाता है कि जिसकी कीमत का मुकाबला दोनों जहाँ के असबाब भी नहीं कर सकते. और वह बेबहा मोती है. इसी वास्ते फक़ीरों को अल्लाह का खज़ांची कहते हैं. अल्लाह बस बाकी हवस.

'बाबुल मीम - मिस्बाहुल हयात' स.: १६३, १६४ में है :

मशिय्यत वह है जो तजल्लियाते ज़ाती हैं वास्ते ईजाद मुक़द्दम के या नाबूद करने मौजूदिय्यत आलम के. दीगर हर्फे मबदा व मआद वह है जो तन आदमी का अव्वल तबीअत मुतलक था बाद जिस्म मुतलक हुआ. बाद उस से खाक हुआ और खाक नबात हुई और नबात ग़िज़ा हैवान की हुई और हैवान ग़िज़ा इंसान का हुआ और ग़िज़ा नुतफा हुआ और नुतफा अलक़ा हुआ

और अलक़ा मुज़ग़ा हुआ और मुज़ग़ा उरूक़ और इज़ाम (हड्डी) और गोश्त हुआ, बाद पैदा हुआ. पहले तिफ्ल (बच्चा) हुआ फिर जवान हुआ और फिर कोहल (अधेड उम्र) हुआ और शेख (बूढा) हुआ और मर गया और बअ्स हुआ (दोबारा उठाया गया). 'मबदा' उतरते आने को बोलते हैं और 'मआद' जैसा उतरता आता है वैसा चढते जाने को बोलते हैं.

बुरहानुल हकाइक, स.: ३९२ :

अल्लाह तआला का कौल :

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اتَّقُوْا اللّٰهَ وَ كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ﴾

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो! डरो अल्लाह से और हो जाओ सच्चों के साथ.

मसनवी (तर्जुमा)

तू गनीमत जान इस तौफीक को
गर तू पाया सोहबते सिद्दीक को

☆☆

मैं उसके फैज़े सोहबत से हुआ इकसीरे आज़म हूँ
मिले जो आन कर मुझ से तिलाई रंगे अहमर हूँ

हदीस: "لَا يُحِبُّ اللّٰهَ غَيْرَ اللّٰهِ وَ لَا يَذْكُرُ اللّٰهُ اِلَّا اللّٰهَ" तर्जुमा : हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू से नक्ल है कि कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि बेशक अल्लाह तआला जब किसी बंदे को अपना मेहबूब बनाता है तो जिब्राईल अलैहिस् सलाम मुनादी (एलान) करते हैं कि अल्लाह तआला ने फलाँ को दोस्त रखा सो मैं उसे दोस्त रखता हूँ. फिर उसे जिब्राईल दोस्त रखता है. इसके बाद जिब्राईल अलैहिस् सलाम आस्मान में मुनादी (एलान) करते हैं कि बेशक अल्लाह तआला ने फलाँ शख्स को दोस्त रखा है सो तुम भी उसको दोस्त रखो. फिर अहले आस्मान उसको दोस्त रखते हैं और उसके लिए ज़मीन में कबूलिय्यत रखी जाती है और अल्लाह ही के साथ मदद है और असमत (बचाव) और तौफीक है.

बुरहानुल हकाइक, स.: १६६ :

हदीस :

“اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَ اَبُوْ بَكْرٍ اَسَاسُهَا وَ عُمَرُ حِيْطَانُهَا وَ عُثْمَانُ سَقْفُهَا وَ عَلِىٌّ بَابُهَا”

तर्जुमा : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : मैं इल्म का शहर हूँ और अबू बकर रदियल्लाहु अन्हू उसकी बुनियाद और जड हैं और उमर रदियल्लाहु अन्हू उसकी दीवारें हैं और उस्मान रदियल्लाहु अन्हू उसकी छत हैं और अली रदियल्लाहु अन्हू उसका दरवाज़ा हैं.

बुरहानुल हकाइक, स.: १७२ :

(हदीस) कहा इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने कि इल्म के दस हिस्से हैं. उसमें से नौ हिस्से हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हू को दिए गए और एक हिस्से में और दूसरे तमाम लोग शरीक हैं.

रिवायत है अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हू सब मुफस्सिरों के रईसों में थे. छे लाख नुकते कुरआन में उनसे मैंने पाए हैं. (मखज़नुल अनवार तर्जुमा गंजुल असरार, स.: २२४)

बुरहानुल हकाइक, स.: १६७ :

नक्ल है कि जब सय्यिदुल मुरसलीन खातमुन् नबिय्यीन शफीउल मुज़निबीन हबीबे रब्बुल आलमीन साहिबे क़ाबा क़ौसैन रसूलुस् सक़लैन अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शबे मेराज में खिलाफते रब्बानी का जामह (लिबास) और खिर्क़ा कुलाह व कचकोल बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त से जो पाया तो हुक्म हुआ कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक मुद्दत के बाद अपने प्यारों से पूछना. जो मेरे बंदों की ऐबपोशी को इख्तियार करे उसको यह हवाले करना. उसके बाद जो जो होगा यह उनको पहुंचेगा. जबकि हज़रत रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेराज से दुनिया में तशरीफ लाए तो बाद एक मुद्दत के अव्वल अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हू से पूछा ऐ अबू बकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हू! अगर खिलाफत का जामह (लिबास) और खिर्क़ा कुलाह व कचकोल तुम्हें दूँ तो तुम क्या करोगे? अबू बकर रदियल्लाहु अन्हू ने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! खुदा की बंदगी में इबादत व तक़वा बहुत करूँगा और ज़ाहिर व बातिन इताअत की सलहिय्यत और

नुबुव्वत की मुताबेअत (पैरवी) को मुक़द्दम रखूँगा (अव्वलिय्यत दूँगा). इसके बाद हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहु अन्हू से पूछा कि अगर तुम को दूँ तो तुम क्या करोगे? अमीरुल मोमिनीन उमर फारूक रदियल्लाहु अन्हू ने कहा, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! खुदा की रज़ा के लिए अद्ल व इंसाफ कायम करूँगा, और निगाह रखूँगा और हक हकदार को पहुंचाऊँगा यानी ज़ालिम के साथ इंसाफ करूँगा और मज़लूम का इंसाफ करूँगा कि किसी पर ज़ुल्म ना हो. इसके बाद अमीरुल मोमिनीन उस्माने ग़नी रदियल्लाहु अन्हू से पूछा कि ऐ उस्मान! अगर तुम को दूँ तो तुम क्या करोगे? हज़रत उस्मान रदियल्लाहु अन्हू ने कहा कि या रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! खुदा की रज़ामंदी के वास्ते गरीबों, मोहताजों और कमज़ोरों को सखावत के ज़रीए खाना खिलाऊँ और परेशान हाल मजबूरों और बेवा औरतों, दरवेशों, फक़ीरों और कमज़ोरों की खबरगीरी करता रहूँगा. इसके बाद अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हू से पूछा कि ऐ अली (रदियल्लाहु अन्हू) अगर तुम को दूँ तो तुम क्या करोगे? अली रदियल्लाहु अन्हू ने कहा या रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह के मखलूक के ऐब की परदापोशी करूँगा और इंसानों के गुनाह छुपाऊँगा. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुझ को यही हुक्म हुआ था कि तेरे यारों में से जो यह जवाब दे उसको खिलाफते रब्बानी का खिरक़ा अता करना. पस ऐ अली (रदियल्लाहु अन्हू) मैं तुझ को नसीहत करता हूँ कि आम लोग, जवान मर्द और तालिबे सादिक को यह सोहबते तरबिय्यत व पंद पज़ीरी (नसीहत पकडने के ज़रीए) से बैअत और इरादत के खिरक़े के लाइक हो गया हो तो तलकीने इर्शाद माअना जज़्बा इस्लाहे बातिन व खिलाफते रब्बानी उसको अता करो और नसीहत किजीओ और पासबानी यादे हक तआला व तलकीन तिलावत हिफ्ज़े कुलूब से उनके दिल व जान में इस्तेक़ामत दिजिओ और दस्ते बैअत पकड कर इरादते खिरक़ए-कुलाह पहुँचाइयो ताकि तलक़ीन व इर्शाद से मेरी उम्मत के सच्चे तालिब लोग मारिफते हक तआला की तरबिय्यत जज़्बए-इस्लाहे बातिन से दिल में इस्तेक़ामत पावें और हज़रते कुर्ब की पासबानी के ज़रीए खुदा तक पहुँचें.

खानवादए-क़दीरिया के चश्मो चिराग

नूर चश्म ख्वाजा सय्यद अबू तुराब शाह क़ादरी चिश्ती यमनी नबीरह (पोते) हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी क़दीर (हलकट्टा शरीफ) को चौधवाँ उर्से क़दीर के मौके पर बमकाम आस्तानए-क़दीरी, बतारिख १४ मुहर्रमुल हराम १४१३ हि. मुताबिक १६ जूलाई १९९२, बरोज़ जुमेरात खिलाफते क़ादरीया आलीया अता की गई.

'गुलज़ारे क़दीर' के तमाम हुकूक साहबज़ादह तुराब क़दीरी के हक में महफूज़ हैं. मौला तआला तौफीके रफीक से नवाज़े, खिदमते खल्क से शर्फे कुबूलिय्यत पाऐं. आमीन.

दुआगो जानशीने क़दीर, ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी उफिया अन्हु (रहमतुल्लाहि अलैह) 'साहब' क़दीरी (हलकट्टा शरीफ)

''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''

शिजरा-ए-तय्यबा क़ादरीया आलीया खुलफाइया
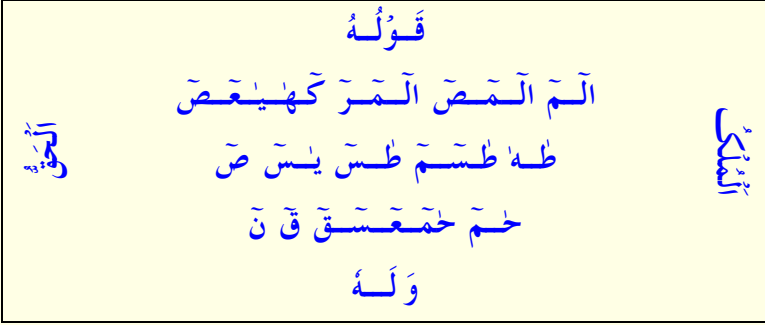
फकीर खाकपाए 'सहिब' क़दीरी **ख्वाजा सय्यद अबू तुराब शाह क़ादरी** अलचिश्ती यमनी 'तुराब' क़दीरी उफिया अन्हु

(तारीखे खिलाफत १४ मुहर्रमुल हराम १४१३ हि. मुताबिक १६ जूलाई १९९२, चौधवाँ उर्से क़दीर के मौके पर बमकाम हलकट्टा शरीफ)

इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ मेहबूबे सालिकीन मुश्ताक़े साइलीन मकसूदे तालिबीन वारिसे इल्मे क़दीरी जानशीने हज़रते क़दीर

मुर्शिदी हज़रत **ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी अलचिश्ती यमनी 'साहिब' क़दीरी** रहमतुल्लाहि अलैह
तारीखे खिलाफत : २२ रबीउस्सानी १३७५ हि.
तारीखे विसाल : १५ ज़ीक़ादा १४३२ हि. मुताबिक १४ अक्तूबर २०११

इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ तस्कीने आशिकीन, तामीरे आरिफीन, तासीरे कामिलीन, तफसीरे वासिलीन, मकसूदे शाहिदीन, तमहीदे मुसद्दिकीन **मुर्शिदुना हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी अलचिश्ती यमनी क़दीर** रहमतुल्लाहि अलैह, हलकट्टा शरीफ (तारीखे खिलाफत : २४ जमादिल आखिर १३४८ हि.) (विसाल : १३ मुहर्रमुल हराम १३९९ हि.)

इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ मअदने इरफान, वाकिफे राज़े पिनहां, शेखुल मशाइख हज़रत शेख करीमुल्लाह क़ादरी चिश्ती मोईनाबादी रहमतुल्लाहि अलैह (खिलाफत १३३१ हि., विसाल १३५२ हि.)
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यद शाह चंदा हुसैनी चिश्ती अलक़ादरी साकिने किन्नी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर क़ादरी हैद्राबादी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत मुहम्मद उमर मौजूद शाह क़ादरी राजपूरी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यद इरफान अली शाह क़ादरी जोरासी सज्जादा हज़रत चिराग दहलवी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत मौलाना मौलवी सय्यद जाफर अली शाह क़ादरी मौदूदी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत ख्वाजा सय्यद हसन क़ादरी मौदूदी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत अकबर अली शाह क़ादरी मौदूदी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यद मुहम्मद मीर अलमारूफ बहली शाह क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यद अम्रल्लाह शाह क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेख बहाउद्दीन शाह क़ादरी शाहाबादी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेख नजमुल हक्क शाह क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेख अबुल कलाम अब्दुल अज़ीज़ क़ादरी शकरपारा रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत बहाउद्दीन क़ादरी शुत्तारी रहमतुल्लाहि अलैह

इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत ताजुल आरिफीन सय्यदना ताजुद्दीन शाह अब्दुर् रज़्ज़ाक जमालुल इराक़ क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेखुल मुतक़द्दिमीन वल मुतअख्खिरीन गौसुस सक़लैन कुत्बुल कौनैन आले हसनैन नजीबुत तरफैन सय्यदुल औलिया मेहबूबे सुबहानी अबू मुहम्मद मीराँ मुहियुद्दीन शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेखुल आरिफीन अबू सईद मुबारक अल-मखज़ूमी रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेखुत तालिबीन ख्वाजा अबुल हसन अली अल-क़रशी अलहुंकारी रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेखुस् साइमीन अबुल फरह यूसुफ अल्-तरतूसी रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेखुर् राकिईन अब्दुल वाहिद बिन अब्दुल अज़ीज़ तमीमी रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेखुल वासिलीन अबू बकर शिबली रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेखुल कामिलीन सय्यदुत् ताइफह शेखुल मशाइख ख्वाजा अबुल क़ासिम जुनैद बग़दादी रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेखुल आशिक़ीन ख्वाजा अबुल हसन सिर्री सुक़ती रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शेखुस् सालिकीन मारूफ कर्खी रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यदुल आकिफीन इमाम अली रज़ा रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यदुल काज़िमीन इमाम मूसा काज़िम रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यदुल आरिफीन इमाम जाफर सादिक़ रदियल्लाहु अन्हू

इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यदुत् ताहिरीन इमाम मुहम्मद बाक़र रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यदुल आबिदीन इमाम ज़ैनुल आबिदीन अली इब्ने हुसैन रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यदुश् शोहदा शहीदे करबला अबुल आइम्मा इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत अमीरुल मोमिनीन सय्यदना इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत अमीरुल मोमिनीन इमामुल मुस्लिमीन खातमुल खुलफाइर् राशिदीन मौलाए मोमिनीन, मज़हरुल अजाइब वल ग़राइब, नूरुल मशारिक़ वल मग़ारिब, बाबुल इरफान, शारिहुस् सिर्री वल कुरआन, काशिफुर् रम्ज़ वल असरार, क़ासिमुल फैज़ वल अनवार, असदुल्लाहिल ग़ालिब सय्यदना मौलाना अली इब्ने अबी तालिब कर्रमल्लाहु वजहहु व रदियल्लाहु अन्हू
इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सय्यदुल मुरसलीन खातमुन् नबिय्यीन शफीउल् मुज़निबीन रहमतुल लिलआलमीन इमामुल अव्वलीन वल आखिरीन अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हो अता दीदारे हक गौसुल वरा का वास्ता
मुर्शिदे कामिल क़दीरे बासफा का वास्ता
या इलाही बख्श दे इसियाँ हमारे बख्श दे
हादिए बरहक मुहम्मद मुस्तफा का वास्ता

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

शिजरए-सिलसिलए-चिश्तिया निज़ामिया बंदानवाज़िया क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस् सलातु वस् सलामु अला रसूलिही सय्यदिना मुहम्मदिन व आलिही व असहाबिही अजमईन

फक़ीर हक़ीर मन **ख्वाजा सय्यद अबू तुराब शाह** क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी तुराब क़दीरी उफिया अन्हू

इलाही बहुरमते पीरे कामिल हज़रत ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

इलाही बहुरमते पीरे कामिल रौशन ज़मीर फैज़े आसार हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह हुसैन मुहम्मद अकबर मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह वलीयुल्लाह मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह मुहम्मद अकबर मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह हुसैन सानी मुहम्मद अलहुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह हुसैन शाह वली अलहुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह असदुल्लाह अल्-हुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह मन्नल्लाह अलहुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह असदुल्लाह हुसैनी बुज़ुर्ग

क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह हुसैनुल्लाह हुसैनी कलाँ क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह असदुल्लाह हुसैनी कलाँ क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह न्हन्ने उर्फ शाह असदुल्लाह हुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह हुसैनी शाह वली क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह सफियुल्लाह हुसैनी सानी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह असदुल्लाह हुसैनी बुज़ुर्ग क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह असकरुल्लाह हुसैनी बुज़ुर्ग क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह सफियुल्लाह हुसैनी लच्छन मेग क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह मुहम्मद असग़र मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यद शाह मुहम्मद मुहम्मद अकबर अलहुसैनी शाह बडे हुसैनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा कुत्बुल अक़ताब फर्दुल अहबाब सदरुद्दीन अबुल फतह वली-ए-अकबर सादिक जाफर सानी हज़रत सय्यद शाह यूसुफ अलहुसैनी आशिक़े शेहबाज़, बयारे हमराज़, आरिफे सरअफराज़ आगाह सैर राज़ बलंद परवाज़ बंदानवाज़ गेसू दराज़ क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा नसीरुल मिल्लति वद् दीन मेहमूद अवधी हज़रत ख्वाजा नसीरुद्दीन चिराग दहलवी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा शमअे मेहफिले असफिया हज़रत निज़ामुद्दीन

औलिया मुहम्मद शाह बदायूनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा मीज़ाने सेहर शेख हज़रत फरीदुद्दीन मसऊद अजोधनी गंजशकर ज़ोहदुल अंबिया क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा ज़ातुल अक़ताब हज़रत कुत्बुद्दीन कुत्बुल अक़ताब व क़मरुल बाब रौशी अलक़रशी बख्तियार काकी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजए-ख्वाजगान कामिले मिल्लत वद् दीन हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती हम्दे दीन-ओ-दुनिया रा कर्द चिश्ती हसन संजरी हिन्दल वली अता-ए-रसूल क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजए-अम्नो अमाने हर दो जहान साहिबे हकीकत वल फुरक़ान हज़रत अबू अनवार शेख उस्मान हारूनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सय्यारुल मुल्के रूही व बदनी हाजी शर्फ ज़ंदानी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सैर चश्म मौजूद व मकसूद हज़रत कुत्बुल अक़ताब अबू मौदूद चिश्ती क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा वाक़िफे असरारे इलाही मकबूले रब्बानी वासिले सुबहानी हज़रत नासिरुद्दीन अबू यूसुफ चिश्ती क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा कामिले फैज़े सरमद हज़रत रुक्नुद्दीन अबू मुहम्मद चिश्ती क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा मकबूले बारगाहे ज़ुलजलाल हज़रत अबू अहमद अबदाल चिश्ती क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सरखीले चिश्तीया ज़ुमरए-उश्शाक़ हज़रत अबू इसहाक़ चिश्ती शामी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा वाकिफे हालात मअनवी व सुरी हज़रत अबू इब्राहीम ममशाद अलवी दैन्नूरी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा मुहीत वाला गौहरी अमीनुद्दीन अबू हुबैरतुल

बसरी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सरशारे बेगैशी सदीदुद्दीन हुज़ैफा अलमरअशी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा फैज़ बख्श हर दो जहाँ सुलतान इब्राहीम अधम शाह बलखी तारिकुद् दुनिया वासिले दीन क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजए-ज़ाते फय्याज़ अबुल फैज़ फुज़ैल इब्ने अयाज़ खुरासानी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा इश्के बेरिया शैदा अबुल फज़्ल अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़
इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा गुलशने बागे इरफान समरी अबू नस्र अलहसन अलबसरी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजा सुलताने औलिया अबुल हसन हैदरे कर्रार अमीरुल मोमिनीन इमामुल मुत्तक़ीन सय्यदना अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हू

इलाही बहुरमते हज़रत ख्वाजए-कायनात सुलतानुल अंबिया खैरुल असफिया अबुल क़ासिम

मुहम्मद मुस्तफा सूफिया

पैगंबरे इलाह खत्मुल मुरसलीन शफीउल मुज़निबीन रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हिदायात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ نَوَّرَ قُلُوْبَ الْعَارِفِیْنَ بِنُوْرِ مَعْرِفَتِهٖ وَ الْفُرْقَانِ
وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْاِنْسِ وَ الْجَآنِّ
مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِہٖ وَ اَصْحَابِہٖ ذِی الْفَضْلِ وَ الْاِحْسَانِ صَلٰوۃً وَّ سَلَامًا دَائِمًا
اَمَّا بَعْدُ

पीरे कामिल की मारिफत और बैअत व इत्तेबा की ज़रूरत

(किताब 'मकासिदुल इस्लाम' से नक्ल)

कुलैनी स.:१०८ में रिवायत है

"قَالَ اَبُوْ جَعْفَرَ عَلَیْهِ السَّلَامُ یَا اَبَا حَمْزَۃَ یَخْرُجُ اَحَدُکُمْ فَرَاسِخَ فَیَطْلُبُ لِنَفْسِهٖ دَلِیْلًا وَ اَنْتَ بِطَرِیْقِ السَّمَاءِ اَجْهَلُ مِنْکَ بِطَرِیْقِ الْاَرْضِ فَاطْلُبْ لِنَفْسِکَ دَلِیْلًا"

यानी फरमाया इमाम अबू जाफर अलैहिस् सलाम ने : ऐ अबू हमज़ा! तुम ज़मीन पर चंद फरसख (मील) जाते हो तो एक रहबर को साथ लेते हो हालांकि ज़मीन की राहों से आस्मान की राहें ज़्यादा तर मजहूल (नामालूम) हैं. उन राहों की हिदायत के लिए रहबर की ज़्यादातर ज़रूरत है इस लिए एक राहबर अपने लिए तलब करो. मकसूद यह है कि राहे खुदा तलबी में पीरे कामिल की अशद्द (शदीद) ज़रूरत है.

कुलैनी स.:१०९ में रिवायत है :

"قَالَ اَبُوْ جَعْفَرَ عَلَیْهِ السَّلَامُ فِیْ قَوْلِهٖ تَعَالٰی ﴿نُوْرًا یَّمْشِیْ بِهٖ النَّاسُ﴾ اِمَامًا یُؤْتَمُّ بِهٖ (کَمَنْ مَّثَلُهٗ فِی الظُّلُمَاتِ لَیْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا) قَالَ الَّذِیْ لَا یَعْرِفُ الْاِمَامَ."

यानी इसी आयते शरीफा में नूर से मुराद इमाम और मुर्शिद है जिस की पैरवी की जाए और जो मिसाल उस शख्स की दी गई है कि अंधेरियों से

निकल नहीं सकता उस से मुराद वह शख़्स है जो इमाम को ना पहचाने यानी जो शख़्स पीर की तलाश ना करे जो उसका मुक़तदा और इमाम हो सके वह हमेशा गुमराही की तारीकी में पडा रहेगा. अलग़र्ज़ इमाम वही है जो सालिक को राहे तहकीक में अला वजहिल बसीरत (बसीरत के साथ) ले जा सके.

कुलैनी स.: ११७ में मरवी है :

”عن الرضا علیه السلام الامام واحد دهره لا یدانیه احد و لا یعاد له احد و لا یوجد منه بدل و لا له مثل و لا ینظر مخصوص بالفضل کله من غیر طلب منه و لا اکتساب بل اختصاص من المفضل الوهاب فمن ذا الذی یبلغ معرفة الامام و یمکنه اختیاره هیهات هیهات ضلت العقول و حارث الالباب و اعین البلغاء عن وصف شان من شانه.“

यानी हज़रत इमाम रज़ा अलैहिस् सलाम ने फरमाया कि इमाम अपने ज़माने में यगाना और बेनज़ीर होता है और उसके फज़ाइल इक्तसाबी नहीं होते बल्कि हक तआला की तरफ से उसको खुसूसिय्यत होती है, इमाम की मारिफत किसी को नहीं हो सकती, उसके एक एक वस्फ में अक्ल हैरान होती है. इन्तेहा

इस इमाम को इस्तेलाहे सूफिया में कुतुब कहते हैं. हरचंद (अगरचे) वह आदमीयों में मिले जुले रहते हैं मगर उनको कोई नहीं पहचान सकता और कमालात उनके वहबी (अल्लाह की देन) होते हैं. औलिया अल्लाह उनसे वसूल और ईसाल इलल्लाह (अल्लाह तक पहुँचने) के तरीके मालूम करते हैं, उनको ज़ाहिरी सलतनत से कोई तअल्लुक (रिश्ता) नहीं होता. चुनांचे कुलैनी स.: १६७ में लिखा है :

”عن المفضل عن أبی عبد الله قال سألته عن الامام یمانی اقطار الارض و هو فی بیته مرخی علیه ستره.“

देखिए इस से ज़ाहिर है कि इमाम अबू अब्दुल्लाह ऐसे उज़लत गज़ीं (तनहाई पसंद) थे कि अकसर पर्दे के अंदर तशरीफ रखते थे. अब कहिए कि उनको सलतनत से क्या तअल्लुक.

मकासिदुल इस्लाम जि.:६, स.: ५९ में लिखा है कि :

कुलैनी स.:१७३ में रिवायत है कि : अबू अब्दुल्लह अलैहिस् सलाम फरमाते हैं कि खुदा तआला ने नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात से पहले आप पर एक किताब नाज़िल फरमाई कि यह तुम्हारी वसिय्यत नुजबा की तरफ है. आप ने जिब्राईल अलैहिस् सलाम से पूछा, नुजबा कौन हैं? कहा अली और उनकी औलाद अलैहिमुस् सलाम. इस किताब पर सोने की मोहरें लगी हुई थीं. नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह किताब अली अलैहिस् सलाम को देकर फरमाया कि एक मोहर तोड कर देखो और जो कुछ उस में है उस पर अमल करो. चुनांचे आप ने उसपर अमल किया. फिर वह किताब इमाम हसन अलैहिस् सलाम को दी, उन्होंने भी उसकी मोहर तोड कर देखा और जो कुछ उसमें लिखा था देखा और उस पर अमल किया. इसी तरह वह किताब इमाम हुसैन अलैहिस् सलाम और उनके फर्ज़ंद अली और उनके बाद मुहम्मद बिन अली और इमाम जाफर सादिक और मूस काज़िम अलैहिमुस् सलाम को पहुंची और सब ने जो कुछ उसमें था उसपर अमल किया और आइंदा भी नस्ल बाद नस्ल वह किताब इमाम मेहदी अलैहिस् सलाम तक पहुंचेगी.'' इन्तेहा (मुखतसर)

इस रिवायत से इतना तो ज़रूर साबित है कि इमामत को सलतनत लाज़िम नहीं वरना कुल अइम्मए-किराम जिहाद करके ज़रूर सलतनत हासिल फरमाते. जिस तरह नुबुव्वत को सलतनत लाज़िम नहीं. इसी वजह से हज़ारहा अंबिया गुज़रे जिन को नुबुव्वत मिली मगर सलतनत ना थी. बहरहाल, इस रिवायत से ज़ाहिर है कि यह इमामत सिर्फ पीरी मुरीदी से मुतअल्लिक है जो ज़ाविया नशीन (जंगल में बैठे) हज़रात सूफिया किया करते थे.

किताब 'मकासिदुल इस्लाम' जि.:६, स.:५९ में है :

कुलैनी सफह : १७१ में इस वसिय्यत नामे से मुतअल्लिक अबू अब्दुल्लाह अलैहिस् सलाम का कौल नक्ल किया है :

''فلما توفی و مضی علی ابن الحسین دفعھا الی محمد بن علی علیہ السلام

ففتح الخاتم الخامس فوجد فیھا علی فسر کتاب اللہ و صدق اٰبائک و

ورث ابنک و اضطبغ الامة و قم بحق الله عز و جل و قل الحق فی الخوف و الامن و لا تخش اِلّا اللّٰہَ ففعل."

यानी उसमें हुक्म था कि हक इलाही के साथ कियाम करो और हक बात कहो चाहे हालते खौफ हो या अम्न, और सिवाए खुदाए तआला के किसी से ना डरना. चुनांचे उन्होंने वैसा ही किया. देखिए, बावजूद यह कि साफ हुक्म था कि बगैर खौफ के हक बात कहना और उसकी तामील भी की मगर दावा सलतनत का ना किया और अगर दावा करते तो ज़रूर अल्लाह की तरफ से कामयाब होते क्यूँकि मज़बूत रिवायत के मुताबिक वह वसिय्यत नामा हक तआला की तरफ से जिब्राईल अलैहिस् सलाम के वास्ते से सादिर हुआ था. इस से ज़ाहिर है कि आप को ज़ाहिरी सलतनत का हुक्म ही ना था.

'मकासिदुल इस्लाम' जि.:१०, स.:५४ पर लिखा है कि :

इर्शाद हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ को हमारा हाथ समझ लो और उनकी बैअत को हमारी बैअत. चुनांचे इर्शाद है :

﴿اِنَّ الَّذِیۡنَ یُبَایِعُوۡنَکَ اِنَّمَا یُبَایِعُوۡنَ اللّٰہَ﴾

यानी ऐ नबी, जो लोग ज़ाहिरन आप के हाथ में हाथ मिलाते हैं वह आप का हाथ नहीं हमारा हाथ है. ﴿یَدُ اللّٰہِ فَوۡقَ اَیۡدِیۡہِمۡ﴾ क्यूँकि पेशतर ही से बैअ (खरीदी) और उसकी कीमत का तसफीया (फैसला) हो चुका है. अब अगर कोई इस बैअत को तोड दे और अपनी जान व माल में अपनी ज़ाती ख्वाहिश और खुद मुख्ताराना तसर्रुफ करने लगे और यह भूल जाए कि वह अमानत के तौर पर हमारे पास हैं तो उसका नुकसान उसी को होगा. हम भी कीमत यानी जन्नत ना देंगे. जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿فَمَنۡ نَّکَثَ فَاِنَّمَا یَنۡکُثُ عَلٰی نَفۡسِہٖ﴾

और जो शख्स इस वादे को जो हाथ में हाथ दे कर किया था जिस की तकमीले बैअ हो चुकी थी पूरा करे तो हम उसको अज्रे अज़ीम देंगे. जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَ مَنْ اَوْفٰی بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا﴾

हदीसे कुदसी :

"لَا يَزَالُ عَبْدِیْ يَتَقَرَّبُ اِلَیَّ بِالنَّوَافِلِ حَتّٰی اُحِبَّهُ فَاِذَا اَحْبَبْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ وَ بَصَرَهُ وَ يَدَهُ وَ لِسَانَهُ وَ بِیْ يَسْمَعُ وَ بِیْ يُبْصِرُ وَ بِیْ يَبْطِشُ وَ بِیْ يَنْطِقُ."

यानी अल्लाह तआला फरमाता है कि जब कोई बंदा मेरा मुकर्रब हो जाता है तो मैं उस बंदे को अपना दोस्त बना लेता हूँ और जिस वक्त मैंने दोस्त बना लिया तो मैं बंदे के कान और आंखें और हाथ और ज़बान बन जाता हूँ, वह मेरे ही कानों से सुनता है और मेरी ही आंखों से देखता है और मेरे ही हाथ से पकडता है और मेरे ही ज़बान से बोलता है. ऐ अल्लाह! तेरी तौफीक से.

'मकासिदुल इस्लाम' जि.:६, स.: ७८ पर लिखा है कि :

कुलैनी स.:४९६ में अबू अब्दुल्लाह अलैहिस् सलाम का इर्शाद नक्ल है:

"اَلْمُؤْمِنَةُ اَعَزُّ مِنَ الْمُؤْمِنِ وَ الْمُؤْمِنُ اَعَزُّ مِنَ الْكِبْرِيْتِ الْاَحْمَرِ فَمَنْ رَاٰی مِنْكُمُ الْكِبْرِيْتَ الْاَحْمَرَ؟"

(तर्जुमा) यानी ईमानदार औरत ईमानदार मर्द से ज़्यादा नादिरुल वुजूद (कमयाब) है और ईमानदार मर्द किब्रीतुल अहमर से भी ज़्यादा नादिरुल वुजूद (कमयाब) है. तुम में से किसी ने किब्रीतुल अहमर देखी है? खत्म

'मकासिदुल इस्लाम' जि.:६, स.: ६१ :

कुलैनी स.:२०४ में यह रिवायत है कि अबुल हसन अलैहिस् सलाम ने फरमाया :

"وَ اَبُوْ مُحَمَّدٍ اِبْنِیْ خَلَفٌ مِنْ بَعْدِیْ فَعِنْدَهُ عِلْمٌ مَا يُحْتَاجُ اِلَيْهِ وَ مَعَهُ آلَةُ الْاِمَامَةِ"

यानी मेरे बेटे अबू मुहम्मद मेरे बाद खलीफा हैं क्यूँकि उनको 'मा युहताजु इलैह' का इल्म है और उनके साथ आलए-इमामत भी है. इस से ज़ाहिर है कि आलए-इमामत (इमामत का हथ्यार) आलाते हर्ब (जंग के हथ्यार) नहीं हैं बल्कि इल्मे तक़र्रुब इल्लाह (अल्लाह की कुरबत) है जो मशाइखीने इज़ाम को हुआ करता है.

'मकासिदुल इस्लाम' जिल्द ६, सफहः६१ :

कुलैनी स.:११९ में रिवायत है कि इमाम रज़ा अलैहिस् सलाम ने फरमाया कि इमामत एक खास रुत्बा है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस् सलाम को बादे नुबुव्वत और खुल्लत (दोस्त बनाने) खास तौर पर अता हुआ था. चुनांचे अल्लाह तआला का इर्शाद है : ﴿اِنِّیْ جَاعِلُکَ لِلنَّاسِ اِمَامًا﴾ उन्होंने कमाल खूशी में अर्ज़ किया : ﴿وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ﴾ यानी इलाही ! मेरी औलाद में भी इमाम होंगे? इर्शाद हुआ : ﴿لَا یَنَالُ عَھْدِی الظّٰلِمِیْنَ﴾ इस आयत ने ज़ालिम की इमामत को हमेशा के लिए बातिल कर दिया. खत्म

इस से साबित हुआ कि इमामत एक मअनवी रुत्बा जलीलुल कदर (बुज़ुर्गी वाला) है जो हज़रत खलीलुल्लाह अलैहिस् सलाम को इनायत हुआ था. इसको सलतनते ज़ाहिरी से कोई तअल्लुक नहीं. चुनांचे हज़रत इब्राहीम और इसहाक व याकूब अलैहिमुस् सलाम वगैरा का अइम्मा होना और सलातीन ना होना नुसूसे क़तइय्या (कुरआनी दलीलों) से साबित है. अलबत्ता यह इमामत फुज्जार और ज़ालिमीन को नहीं मिल सकती क्यूँकि वह वहबी है कसबी नहीं (यानी अल्लाह की तरफ से होते हैं, कमाए नहीं जा सकते). जैसा कि अभी हज़रत रज़ा अलैहिस् सलाम के इर्शाद से साबित है.

'मकासिदुल इस्लाम' जिल्द : ६, सफह : ५० :

कुलैनी, स.: २५८ में है :

"عن ابی جعفر علیه السلام قال وجدنا فی کتاب علی رضی الله عنه "اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ یُوْرِثُهَا مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ" و انا اَهل بیتی الذین اورثهم الله الارض و نحن المتقون و الارض کلها لنا."

यानी अली रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि ज़मीन अल्लाह की है जिस को चाहता है उसका वारिस बना देता है और अंजाम (आखिरत) मुत्तकीयों के लिए है. मैं और मेरे अहले बैत वह लोग हैं जिन को खुदा ने ज़मीन का वारिस बना दिया है. हम लोग मुत्तक़ी हैं, अब पूरी ज़मीन हमारी है.

यह तो ज़ाहिर है कि ना अली कर्रमल्लाहु वजहहु का क़ब्ज़ा शाम वगैरा पर हुआ था ना हज़रत की औलादे अमजाद का. इसके बावजूद आप फरमाते

हैं कि तमाम ज़मीन हमारी है. इस का मतलब वही है जो औलिया अल्लाह ने कहा है कि इंसाने कामिल खलीफतुल्लाह है और उसका तसर्रुफ तमाम आलम में जारी है.

कुलैनी, स.: १५० में मरवी है कि इमाम जाफर अलैहिस् सलाम ने फरमाया कि जैसे आदमी हमारे ताबेअ (फरमांबरदार) हैं वैसे ही जिन्नात भी ताबेअ हैं. जब हमें किसी काम में जल्दी मंज़ूर होती है तो हम उनको रवाना करते हैं.

कुलैनी, सफहः२९९ में इमाम जाफर अलैहिस् सलाम का कौल नक्ल है. आप फरमाते हैं कि जिस चीज़ को अल्लाह तआला ने पैदा किया है, परिंद हो या चरिंद, बल्के जिस में रूह हो वह सब बनी आदम से ज़्यादा हमारी बात सुनते हैं और हमारी इताअत करते हैं.

यह बात औलिया अल्लाह के तजुर्बों और खवारिक़े आदात (करामतों) से साबित है. अब देखिए यह खिलाफते माअनवी के लवाज़िम व आसार हैं कि बावजूद यह कि इंस व जिन्न और तमाम मखलूकात ताबेए फरमान थे मगर इमाम अबू जाफर मुहम्मद बाकर अलैहिस् सलाम वगैरा ने कभी इमारते ज़ाहिरी (हुकूमत) का कस्द नहीं फरमाया और ना सलतनत में मुदाखलत (दखल अंदाज़ी) की.

'मकासिदुल इस्लाम' जि.:६, स.: ५५ में है :

कुलैनी, स.:११४ में है :

"كان ابو عبد الله يقول نحن ولاة امر الله و خزنة علم الله و عيبة وحى الله."

यानी अबू अब्दुल्लाह अलैहिस् सलाम फरमाते हैं कि हम वालियाने अम्रे इलाही (अल्लाह के हुक्म के सरदार) और खज़ाना -दाराने इल्मे इलाही और अल्लाह की वही के जामदानी हैं.

जब जिहाद और मुल्क गीरी (सलतनत) से इन हज़रात को कोई तअल्लुक नहीं तो वालियाने मुल्क होने का यही मतलब हुआ कि वह वालियाने मुल्के मअनवी हैं. इनकी इताअत ज़रूरी है. इसी वजह से तसव्वुफ में पीर की इताअत को निहयात ज़रूरी समझते हैं और साफ लिखते हैं कि पीर की इताअत के बगैर इस आलम में रास्ता ही नहीं मिलता.

'मकासिदुल इस्लाम' जिल्द ६, सफहः ८५ में है :

कुलैनी, स.:२५५ में रिवायत है कि अबू अब्दुल्लाह अलैहिस् सलाम ने फरमाया कि हमारे नज़दीक असरारे इलाही में से एक सिर्र है जिस को पहुँचाने के हम मामूर (पाबंद) हैं. चुनांचे वह हम ने पहुँचा दिया मगर हम ने ना उसका महल पाया ना उसके अहल ना उसको उठाने वाले, यहाँ तक कि ऐसे लोगों को खुदा तआला ने पैदा किया जिन की तखलीक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तीनत (अखलाक) और उनकी आल और औलाद की तीनत (अखलाक) से हुई और उस नूर से पैदा हुई जिस से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी आल व औलाद पैदा हुई. चुनांचे उन्होंने कबूल किया.

यह वही हज़रात पुख्ता एतेकाद वाले हज़रात हैं जिन्होंने पीराने इज़ाम के इर्शादात को तसलीम करके तसव्वुफ में इल्मी और अमली तौर पर कमाल पैदा किया और असरार व अनवार हासिल किए और अइम्मा किराम ने उनकी माअनवी (बातिनी) तालीम में दिल दही की (दिल को लगा लिया).

'मकासिदुल इस्लाम' जि.:११, स.: ३४ में लिखा है कि :

खसाइसे कुबरा में रिवायत है कि फरमाया नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जन्नत के दरख्तों के हर पत्ते पर ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' लिखा है. 'मवाहिबुल लदुन्निया' में कआब अहबार से मरवी है कि आदम अलैहिस् सलाम ने अपने फरज़ंद शीस अलैहिस् सलाम की तरफ मुतवज्जह होकर फरमाया कि ऐ फरज़ंद! तुम मेरे बाद खलीफा हो. पस खिलाफत को तकवा की इमारत और मज़बूत दस्तगाह के साथ लो और जब याद करो तुम अल्लाह तआला को तो उसके मुत्तसिल (साथ) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम ज़िक्र करो. मैंने उनका नाम साक़े अर्श (अर्श के सुतून) पर लिखा देखा है जब मैं रूह और कीचड में था. फिर तमाम आस्मानों पर फिर कर देखा तो कोई जगह ऐसी नहीं जहाँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लिखा हुआ ना हो और मेरे रब ने मुझे जन्नत में रखा तो वहाँ कोई महल और कोई बालाखाना (टेरेस) और बरआम्दा (दालान) ऐसा नहीं देखा जिस पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम का नाम ना लिखा हो. और तमाम हूरों के सीनों पर और जन्नत के दरख्तों के और शजरे तूबा और सिदरतुल मुनतहा के पत्तों पर और पर्दों के गिर्द और फरिश्तों की आंखों के बीच में नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखा हुआ है. इस लिए अकसर उनका ज़िक्र किया करो. फरिश्ते क़दीम से हर वक्त उनका ज़िक्र किया करते हैं.

'मकासिदुल इस्लाम' जि.:१, सफहः १०८ में तहरीर है कि :

अल्लामा ज़रक़ानी ने शरहे 'मवाहिबुल लदुन्निया' में लिखा है कि :

روی ابن ابی عاصم فی السنة و ابو نعیم عن انس رضی الله عنه "ان الله قال یا موسی من ادخله و هو جاهل بمحمد صلی الله علیه و سلم ادخله النار فقال موسی و من محمد؟ قال یا موسی و عزتی و جلالی ! ما خلقت خلقًا اکرم علی منه کتبت اسمه مع اسمی علی العرش قبل ان اخلق السّمٰوٰت و الشمس و القمر بالفی الف سنة." انتهی

यानी हक तआला ने मूसा अलैहिस् सलाम से फरमाया कि ऐ मूसा (अलैहिस् सलाम) जो मुझ से मिले और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ना जाने उसको मैं आग में डालूँगा. मूसा अलैहिस् सलाम ने अर्ज़ की कि : मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कौन हैं? फरमाया : कसम है मेरी इज़्ज़त और जलाल की! उनसे ज़्यादा बुज़ुर्ग किसी को मैंने पैदा नहीं किया. उनका नाम अपने नाम के साथ आसमान व ज़मीन, शम्स व क़मर पैदा करने के बीस लाख बरस पहले लिखा.

इस से ज़ाहिर है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जाहिल रहना जहन्नम में दाखिल होने का सबब है. इस लिए उसकी ज़िद यानी मारिफत (पहचानना) ज़रूरी है. इसी वजह से इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया : "اَلْاِیْمَانُ اَلْمَعْرِفَةُ وَ التَّصْدِیْقُ وَ الْاِقْرَارُ."

यानी मारिफत, तसदीक और इकरार का नाम ईमान है.

'मकासिदुल इस्लाम' जि.:११, स.: ४० में लिखा है कि :

हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से ले कर ईसा अलैहिस् सलाम तक

एक लाख कई हज़ार नबी गुज़रे हैं. तो फिर तमाम मखलूक के नबी हज़रत क्यूँकर हो सकते हैं? इसका जवाब कुरआन शरीफ से यह मिलता है कि तमाम अंबिया अलैहिमुस् सलाम भी हज़रत के उम्मती हैं क्यूँकि हक तआला फरमाता है :

﴿وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَا اٰتَيْتُكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَّ حِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَ كُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗ ، قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَ اَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِىْ ، قَالُوْا اَقْرَرْنَا قَالَ فَاشْهَدُوْا وَ اَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ﴾

(सूरह आले इम्रान, पारा ३, रुकू ९, पहली आयत)

यानी जब अल्लाह तआला ने नबीयों से इकरार लिया कि अगर आए तुम्हारे पास रसूल जो तसदीक करने वाला हो उस चीज़ का जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर ईमान लाओ और उसको मदद दो. कहा, क्या तुम ने इकरार किया, कहा उन्होंने इकरार किया. पस तो गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में हूँ.

'मवाहिब' में लिखा है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नूर और अंबिया के अनवार पैदा हुए तो हज़रत के नूर को हुक्म फरमाया कि अंबिया के नूरों को देखो. हज़रत के नूर ने उनके नूर को ढांप लिया. उन्होंने कहा, ऐ रब! किस के नूर ने हमारे नूरों को ढांप लिया. फरमाया यह नूर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह का है. अगर तुम उन पर ईमान लाते हो तो मैं तुम्हें अंबिया बनाऊँगा. उन्होंने कहा हम उन पर और उनकी नुबुव्वत पर ईमान लाए. फरमाया कि मैं इस पर गवाह रहूँ. हाँ. यह ﴿وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ﴾ की कैफिय्यत है.

इसके बाद मवाहिब में शेख तक़ीयुद्दीन सुबकी का कौल नक्ल किया है कि इस से साबित है कि कुल अंबिया और उनकी उम्मतें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत हैं. अलग़र्ज़, ना कोई नबी हज़रत के उम्मती होने से खारिज होते हैं, ना कोई उम्मती.

'मकासिदुल इस्लाम' जिल्दः ११, स.ः ३० में लिखा है कि :

शारेह ज़रक़ानी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा है कि अबुश् शेख और

हाकिम ने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत की है कि खुदा तआला ने ईसा अलैहिस् सलाम की तरफ वही की कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाओ और अपनी उम्मत को हुक्म करो कि वह भी उन पर ईमान लाए क्यूँकि अगर मुहम्मद ना होते तो मैं ना आदम को पैदा करता ना जन्नत को ना दोज़ख को. मैंने जब अर्श को पानी पर पैदा किया तो वह हिलने लगा. इस पर मैंने ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' लिखा जिस से वह साकिन हो गया.

किताब 'बुस्तानुल आरिफीन' स.: ३४३ पर लिखा है कि :

इल्मे बातिन हमचू मसका इल्मे ज़ाहिर हमचू शीर
कै बुवद बे-शीर मसका कै बुवद बे-पीर पीर

(यानी बातिनी इल्म मस्के की तरह है और ज़ाहिरी इल्म दूध की तरह. जिस तरह दूध के बगैर मस्का नहीं हो सकता इसी तरह बगैर पीर पीर नहीं बन सकते.)

मलफूज़ हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैह :

''फरमाते हैं कि औरतों का मामला हमारे मामले से बेहतर है क्यूँकि वह हर महीने में गुस्ल करके नापाकी से पाक होती हैं. और हमें सारी उम्र पाकी का गुस्ल नसीब ना हुआ. अल्लाहु अकबर! और आप ने फरमाया कि अगर एक बार सारी उम्र में ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' बायज़ीद (रहमतुल्लाहि अलैह) से सही और दुरुस्त निकल आए तो फिर बायज़ीद (रहमतुल्लाहि अलैह) को किसी से खौफ नहीं है.''

'बरकाते ज़िक्र यानी फज़ाइले ज़िक्र' उर्दू, स: ८३, हदीस : ६ में है :

हज़रत शद्दाद रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं और हज़रत उबादह रदियल्लाहु अन्हू इस वाकिए की तसदीक करते हैं कि एक मर्तबा हम लोग हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर थे. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कोई अजनबी (गैर मुस्लिम) तो मजमए (महफिल) में नहीं. हम ने अर्ज़ किया, कोई नहीं. इर्शाद फरमाया : किवाड बंद कर दो. इसके बाद इर्शाद फरमाया : हाथ उठाओ और कहो 'ला इलाहा इल्लल्लाहु'. हम ने थोडी देर हाथ उठाए रखे (और कलमा तय्यबा पढा). फिर

फरमाया 'अलहम्दु लिल्लाह'. ऐ अल्लाह! तूने मुझे यह कलमा देकर भेजा है और उस कलमे पर जन्नत का वादा किया है और तू वादा खिलाफी नहीं करता. इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम से फरमाया कि खुश हो जाओ, अल्लाह ने तुम्हारी मगफिरत फरमा दी.

(फ) गालिबन अजनबी को इस लिए दरयाफ्त फरमाया था और इसी लिए किवाड बंद कराए थे कि उन लोगों को कलमए-तय्यबा पढने पर तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मगफिरत की बशारत (खुशखबरी) की उम्मीद होगी, औरों के मुतअल्लिक यह उम्मीद ना हो. सूफिया ने इस हदीस से मशाइख का अपने मुरीदीन की जमाअत को ज़िक्र तलकीन करने पर दलील ली है. चुनांचे 'जामिउल उसूल' में लिखा है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सहाबा किराम को गिरोही और इन्फेरादी तौर पर ज़िक्र की तलकीन करना साबित है. जमाअत को तलकीन करने में इस हदीस को पेश किया है. इस सूरत में किवाडों का बंद करना मुस्तफिदीन (हाज़िरीन) की तवज्जोह पूरी तरह यकसू करने की ग़र्ज़ से हो. और इसी वजह से अजनबी को दरयाफ्त फरमाया कि गैर का मजमए (महफिल) में होना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर तशत्तुत (تَشَتُّـت) का सबब अगरचे ना हो लेकिन मुस्तफिदीन के तशत्तुत (تَشَتُّـت) का एहतेमाल तो था ही.

चे खुश अस्त बा तू बज़्मे बनहुफ्ता साज़ करदन
दर खाना बंद करदन सर शीशा बाज़ करदन
(जानाँ)

(यानी कैसे मज़े की चीज़ है तेरे साथ खुफिया साज़ कर लेना घर का दरवाज़ा बंद कर देना और बोतल का मुँह खोल देना.)

﴿لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا وَ لَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا وَ لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ﴾

(सुरह आराफ, रुकू ३, आयत: २२)

यानी उनके दिल हैं उनसे तफक्कुह (गौर व फिक्र) नहीं करते और

उनके आंख हैं उनसे देखते नहीं और उनके कान हैं उनसे सुनते नहीं, यह लोग चौपाए जानवर की मानिंद हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गुमराह.

'मकासिदुल इस्लाम', जिल्द : ११, सफह : २५ में लिखा है कि :

''मवाहिबुल् लदुन्निया' में लिखा है कि एक कौम हामिलीने कुरआन यानी हुफ्फाज़ दोज़ख में दाखिल की जाएगी. उनको मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम भुला दिया जाएगा. जिब्राईल अलैहिस् सलाम जाकर उनको हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक याद दिलाऐंगे. जब वह नामे मुबारक याद दिलाऐंगे और उसका ज़िक्र करेंगे तो दोज़ख की आग बुझ जाएगी और सिमट कर उनसे अलाहिदा हो जाएगी.

मतलब यह है कि जिस क़द्र हिस्सा आग का उनको जलाता था वह कुछ तो बुझ जाएगा और कुछ सिमट कर दूर हो जाएगा. अब खयाल किजीए कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि किस क़द्र अज़मत व शौकत है कि सिर्फ आप के नामे मुबारक के ज़िक्र करने से दोज़ख की आग हट जाएगी बल्कि सर्द हो जाएगी. हालांकि वह आग किसी चीज़ से मुतास्सिर नहीं होती. चुनांचे हदीस शरीफ में है कि अगर एक चिंगारी उसकी ज़मीन पर डाली जाए तो पत्थरों को जलाते हुए पानी को चीर फाड कर दोज़ख तक पहुँच जाएगी.

अल्लाह तआला का कौल :

﴿اُعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ﴾

यानी इबादत करो तुम अल्लाह की जो सिवाए उसके माबूद और मौजूद नहीं तुम्हारे लिए.

"قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ خَالِصًا دَخَلَ الْجَنَّةَ بِلَا حِسَابٍ."

यानी फरमाया रसूले मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिस ने कहा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' खालिसन (पाक रहा शिर्के जली व खफी से) वह दाखिल होगा जन्नत में बगैर हिसाब के.

"مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مَرَّةً غَفَرَ اللّٰهُ لَهٗ ذَنْبَهٗ وَ اِنْ كَانَ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ."

यानी फरमाया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, जो एक बार कलमा पढे हक तआला उसके तमाम गुनाह बख्श देता है अगरचे मिस्ले कफे दरिया के मानिंद हो.

"مَنْ قَالَ لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ اَلْفَ مَرَّاتٍ لَا بِالتَّحْقِيْقِ فَهُوَ كَافِرٌ"

तर्जुम : जिस ने कलमए-तय्यबा को बगैर तहकीक हज़ार बार कहा वह काफिर है.

पस नसीहत हासिल करो ऐ आंख वालो !

ईमान नाम है (१) ज़बान से इकरार (२) दिल से तसदीक (३) आज़ा से अमल करने का. (इब्ने माजह, इमाम ग़ज़ाली)

फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जिसने कलमए-तय्यब कहा, फिर इसी अकीदे पर मर गया वह जन्नत में दाखिल होगा. हज़रत अबू ज़र ग़िफारी रदियल्लाहु अन्हू ने अर्ज़ किया अगरचे उसने ज़िना और चोरी की हो? आप ने फरमाया अगरचे उसने ज़िना किया हो और चोरी की हो. हज़रत अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हू ने दूसरी मर्तबा कहा, अगरचे उसने ज़िना किया हो और चोरी की हो? तीसरी मर्तबा पूछा अगरचे उसने ज़िना किया हो और चोरी की हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगरचे उसने ज़िना किया हो और चोरी की हो, ख्वाह अबू ज़र की नाक खाक आलूद हो जाए. (यानी यह बात तुझे कितनी ही नागवार गुज़रे, वो जन्नती है.)

(बुखारी, मुस्लिम)

इन हदीसों की अस्ल इबारत अरबी में जिन किताबों का हवाला दिया गया है ब जिन्से (वैसी की वैसी) मौजूद है, यहाँ तवालत के खौफ से सिर्फ उर्दू तर्जुमा किया गया है.

जो शख्स कलमए-तय्यबा कहे और उसके दिल में जौ (के दाने) के बराबर ईमान हो तो वह दोज़ख से निकाला जाएगा, जो शख्स 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहे और उसके दिल में गेहूँ के बराबर ईमान हो तो वह दोज़ख से निकाला जाएगा. जो शख्स कलमा कहे और उसके दिल में ज़र्रा बराबर ईमान

हो तो वह भी दोज़ख से निकाला जाएगा. (बुखारी)

जो शख्स सच्चे दिल से ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की गवाही देगा अल्लाह तआला उस पर दोज़ख की आग हराम कर देंगे.

हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हू ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! क्या मैं लोगों को इस फरमान की खबर दे दूँ (ताकि) वह खुश हो जाऐं? आप ने फरमाया : नहीं, यह सुन कर वह इसी पर भरोसा कर बैठेंगे. (बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत वहब बिन मुनब्बह रदियल्लाहु अन्हू से पूछा गया कि तुम्हारे लिए कलमए-तय्यब जन्नत कि कुंजी नहीं? कहा ज़रूर है लेकिन हर कुंजी के लिए दंदाने होते हैं. पस तू लाए कुंजी दंदाने वाली तो खोला जाएगा तेरे लिए, अगर ना लाए ऐसी कुंजी तो ना खोला जाएगा तेरे लिए. दंदानों से मुराद यहाँ इकरार बिल्लिसान (ज़बान से इकरार) और तसदीक बिलक़ल्ब (दिल से तसदीक) है. (बुखारी और तज़किरए-गौसिया)

मौलाना ऐनी रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया कि लुगत में ईमान के मायना तसदीक के हैं और शरीअत में दिल और ज़बान से तसदीक के हैं और कमाले ईमान आमाल से हासिल होता है.

किताब 'हिदायतुस् सालिक फी हल्लि तफसीरिल मदारिक' में लिखा है कि ईमाने शरई से मुराद तसदीके क़ल्बी मआ इकरारुल् लिसानी (और ज़बानी इकरार) है. अमल इसमें दाखिल नहीं बल्कि उस से खारिज है और कमाले ईमान की शर्त है.

इर्शाद : सब से पहले हर मुरीद पर फर्ज़ और लाज़िम है कि अव्वल अपने रहबर व मुर्शिद को सब से अफज़ल व आला समझे, इसकी पैरवी और हुक्म की तामील में दुरेग ना करें, अपने तमाम मुआमलात में दिल व जान से अपने मुर्शिद की खुशी और रज़ामंदी को मुक़द्दम जाने और सब की मुहब्बत पर इश्के पीर को तरजीह दे (बढकर जाने). राज़ छुपाने को फर्ज़ और उसके इज़हार को नाजायज़ जाने और वह जो तुम को ताकीद से कहा गया है, उसके हासिल करने में खूब कोशिश करे. हदीस शरीफ है कि अल्लाह तआला के ज़िक्र के बगैर जो सांस भी निकले वह मुर्दा है. फिर अपनी हर सांस पर निगाह रखे. इर्शाद है :

”ذِكْرُ اللِّسَانِ لَخَلْخَةٌ وَ ذِكْرُ الْقَلْبِ وَسْوَسَةٌ وَ ذِكْرُ الرُّوْحِ مُشَاهَدَةٌ“

यानी ज़बान से ज़िक्र लखलखह, दिल से ज़िक्र वसवसा, रूह से ज़िक्र मुशाहेदा है. पस जो हालात व वारदात हों वह ज़बानी या लिख कर इत्तला करते रहें और अपने ज़ाहिर व बातिन को शरीअत व तरीकत के मुताबिक ढाल लें. पस सुलूक इलल्लाह व फी अल्लाह व मअ अल्लाह मरातिबे इंसानी. इलाही का अपने इख्तियार व इरादे से ऐनिय्यत के साथ तै करना और शुग्ले ज़िक्र व फिक्र यह सब वसीला हैं वहदत को पहुंचने के लिए उरूज व नुज़ूल का, खयाल रखना लाज़िम है.

खुद अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿أَ تَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ اَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ، أَ فَلَا تَعْقِلُوْنَ﴾

(तर्जुमा) क्या तुम हुक्म करते हो लोगों को नेक काम का और भूलते हो अपने आप को हालांकि पढते हो किताब. क्या तुम समझते नहीं.

(तर्जुमए-आशिकी)

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है :

”مَا تَزَالُ قَدَمَا عَبْدٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُسْأَلَ عَنْ اَرْبَعٍ عَنْ عُمُرِهٖ فِيْمَا اَفْنَاهُ وَ عَنْ شَبَابِهٖ فِيْمَ اَبْلَاهُ وَ عَنْ مَالِهٖ مِنْ اَيْنَ اكْتَسَبَهُ وَ فِيْمَ اَنْفَقَهُ وَ عَنْ عِلْمِهٖ مَاذَا عَمِلَ فِيْهِ.“ (بيهقى ، وغيره)

तर्जुमा : कयामत के दिन आदमी के कदम उस वक्त तक अपनी जगह से नहीं हट सकते जब तक चार सवाल ना कर लिए जाऐं. (१) उम्र किस मशगले में खत्म की? (२) जवानी किस काम में खर्च की? (३) माल किस तरह कमाया और कहाँ कहाँ खर्च किया था? (४) अपने इल्म पर क्या अमल किया था?

एक हदीस में इर्शाद है कि इल्म दो तरह का होता है. एक वह जो सिर्फ ज़बान पर हो, वह अल्लाह तआला का खास है और गोया इस आलम पर कामिल हुज्जत है. दूसरे वह इल्म है जो दिल पर असर करे. वह इल्मे नाफेअ है. हासिल यह कि ज़ाहिरी इल्म के साथ बातिनी इल्म भी हासिल करे ताकि

इल्म के साथ दिल भी मुत्तसिफ (आरास्ता) हो जाए वरना अगर दिल में उसका असर ना हो तो वह अल्लाह तआला की दलील होगी और कयामत के दिन उस पर पूछ होगी कि उस पर क्या अमल किया. नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शादे मुबारक है :

"اِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ اِلٰى صُوَرِكُمْ وَ اَمْوَالِكُمْ وَ لٰكِنْ يَّنْظُرُ اِلٰى قُلُوْبِكُمْ وَ اَعْمَالِكُمْ"

तर्जुमा : हक तआला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों को और आमाल को देखते हैं. (मिशकात, मुस्लिम) (किताब 'इस्लाम क्या है?' लेखक मुहम्मद मनज़ूर नोमानी, स.: २८ से नक्ल)

कलमए-शरीफ दर अस्ल एक अहद और इकरार है

कलमए-शरीफ के दोनों जुज़ (हिस्से) ''ला इलाहा इल्लल्लाहु - मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' के मतलब की जो तशरीह और वज़ाहत ऊपर की गई है उस से आप ने समझ लिया होगा कि यह कलमा दर अस्ल एक इकरार नामा और अहदनामा है इस बात का कि मैं सिर्फ अल्लाह तआला को खुदाए बरहक और माबूद व मालिक मानता हूँ और उसी की इताअत, उसी की इबादत और बंदगी करूँगा और बंदा को जिस तरह अपने मौला व आका के हुक्मों पर चलना चाहिए इसी तरह मैं उसके हुक्मों पर चलूँगा और हर चीज़ से ज़्यादा मैं उस से मुहब्बत और तअल्लुक रखूँगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैं खुदा का बरहक रसूल तसलीम करता हूँ. अब में एक उम्मती की तरह उनकी इताअत और पैरवी करूँगा और उन की लाई हुई शरीअत पर अमल करता रहूँगा.

दरअस्ल इसी अहद व इकरार का नाम ईमान है और तौहीद व रिसालत की शहादत देने का भी यही मतलब व मकसद है. लेहाज़ा कलमा पढने वाले हर मुसलमान को चाहिए कि वह अपने को इस अहद व शहादत का पाबंद समझे और उस की ज़िंदगी इसी उसूल के मुताबिक गुज़ारे ताकि वह अल्लाह के नज़दीक एक सच्चा मोमिन व मुस्लिम हो और नजात और जन्नत का हकदार हो. ऐसे खुश नसीबों के लिए बडी बशारतें हैं जो कलमए-तय्यबा के इन दो हिस्सों (तौहीद व रिसालत) को सच्चे दिल से कबूल करें और दिल व ज़बान और अमल से इस की शहादत दें.

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हू से फरमाया : ''जो कोई सच्चे दिल से ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की शहादत दे तो अल्लाह तआला ने दोज़ख की आग ऐसे शख्स पर हराम कर दी है.'' (बुखारी व मुस्लिम)

भाइयो ! ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की हकीकत और उसके वज़न को खूब समझ के दिल व ज़बान से उसकी शहादत दो और फैसला कर लो कि अपनी ज़िंदगी इस शहादत के मुताबिक गुज़ारेंगे ताकि हमारी शहादत झूठी ना ठहरे क्यूँकि इस शहादत ही पर हमारे ईमान व इस्लाम का और हमारी नजात का दारोमदार है. पस चाहिए कि ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' पर हमारा पक्का एतेकाद व ईमान हो, ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' हमारा इकरार व एलान हो, ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' हमारी ज़िंदगी का उसूल और पूरी दुनिया के लिए हमारा पैगाम हो, उसको फैलाने और ऊँचा करने के लिए हम जीयें और मरें.

नमाज़

नमाज़ की अहमिय्यत

अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने और तौहीद व रिसालत की गवाही देने के बाद सब से पहला और सब से बडा फर्ज़ इस्लाम में ''नमाज़'' है.

नमाज़ अल्लाह तआला की खास इबादत है जो दिन में पांच मर्तबा फर्ज़ की गई है. कुरआन शरीफ की पचासों आयतों में और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सैंकडों हदीसों में नमाज़ की बडी सख्त ताकीद फरमाई गई है और उसको दीन का सुतून और दीन की बुनियाद कहा गया है.

नमाज़ की यह खास तासीर (असर) है कि अगर वह ठीक तरीके से अदा की जाए और अल्लाह तआला को हाज़िर व नाज़िर समझते हुए पूरी तवज्जोह से खुशूअ व खुज़ूअ के साथ पढी जाए तो उस से आदमी का दिल पाक व साफ होता है और उसकी ज़िंदगी दुरुस्त हो जाती है और बुराइयाँ उस से छूट जाती हैं और नेकी और सच्चाई की मुहब्बत और खुदा का खौफ उसके दिल में पैदा हो जाता है. इसी लिए इस्लाम में दूसरे तमाम फर्ज़ों से ज़्यादा इसकी ताकीद है और इसी वास्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दस्तूर था कि जब कोई शख्स आप के पास आकर इस्लाम कबूल करता तो आप तौहीद की तालीम के बाद पहला अहद (वादा) उस से नमाज़ का ही लिया करते थे. अलग़र्ज़, कलमे के बाद नमाज़ ही इस्लाम की बुनियाद है.

नमाज़ ना अदा करना और नमाज़ ना अदा करने वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नज़र में

अहादीस से मालूम होता है कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ ना पढने को कुफ्र की बात और काफिरों का तरीका

क़रार देते थे. और फरमाते थे कि जो शख्स नमाज़ ना पढे उसका दीन में कोई हिस्सा नहीं है. चुनांचे सहीह मुस्लिम की एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''ईमान और कुफ्र के दरमियान नमाज़ छोड देने ही का फासला है.'' (मुस्लिम)

मतलब यह है कि बंदा अगर नमाज़ छोड देगा तो कुफ्र से मिल जाएगा और उस का यह अमल काफिरों का सा अमल होगा.

एक दूसरी हदीस में आया है कि ''इस्लाम में उसका कुछ भी हिस्सा नहीं जो नमाज़ ना अदा करता हो.'' (दुर्रे मन्सूर बहवाला बज़्ज़ाज़)

नमाज़ पढना कितनी बडी दौलत है और कैसी नेक बख्ती है और नमाज़ छोडना कितनी बडी हलाकत और कैसी बदबख्ती है इस का अंदाज़ा करने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह एक हदीस और सुनिए:

''एक दिन रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ की ताकीद फरमाते हुए इर्शाद फरमाया कि जो कोई नमाज़ को अच्छी तरह और पाबंदी से अदा करेगा तो उसके वास्ते कयामत में वह (यानी नमाज़) नूर होगी और उसके लिए (ईमान व इस्लाम) की दलील होगी और नजात दिलाने का ज़रीआ बनेगी और जो कोई उसको खयाल से और पाबंदी से अदा नहीं करेगा तो वह उसके लिए नूर होगी और ना दलील बनेगी और ना वह उसको अज़ाब से नजात दिलाएगी और वह शख्स कयामत में क़ारून, फिरऔन, हामान और उबैय्य बिन खल्फ के साथ होगा. (मुसनदे अहमद)

भाइयो ! हम में से हर एक को सोचना चाहिए कि अगर हम ने अच्छी तरह और पाबंदी से नमाज़ अदा करने की आदत ना डाली तो फिर हमारा हश्र और हमारा अंजाम क्या होने वाला है.

किताब 'बुरहानुल हकाइक' सफह : ३५८ में है :

चुनांचे फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ''اَلصَّلٰوةُ مِعْرَاجُ الْمُؤْمِنِيْنَ'' (नमाज़ मोमिनों की मेराज है.) और फरमाया ''اَلصَّلٰوةُ مِعْرَاجُ الْوَاصِلِيْنَ'' (नमाज़ वासिलीन की मेराज है.) अल्लाह तआला का कौल :

''اَبْدَانُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَ قُلُوْبُهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ''

यानी उनके बदन दुनिया में हैं और उनके दिल आखिरत में. पस ज़ाहिर हुआ कि इस मकाम में गोया रात है ना दिन. अल्लाह तआला का कौल :

﴿اَلَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَائِمُوْنَ﴾

यानी वह लोग जो अपनी नमाज़ की पाबंदी करते हैं.

हदीस "صَلٰوةُ الْاَنْبِيَاءِ وَ الْاَوْلِيَاءِ وَ الْخُلَفَاءِ يُصَلُّوْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ دَائِمِيْنَ" यानि नमाज़ अंबिया और औलिया और खुलफा पढते हैं दिल में हमेशा. आयते करीमा : ﴿وَ اعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ﴾

यानी बंदगी कर अपने रब की जब तक कि पहुँचे तुझ को यकीन. यानी यार बातों से नहीं मिलता है तू अमल कर कि मकसद हासिल हो.

किताब 'इस्लाम क्या है?' सफह : ४६ में है :

''आओ हम सब इब्राहीम अलैहिस् सलाम के अलफाज़ में दुआ करें कि

﴿رَبِّ اجْعَلْنِىْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِىْ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَاءِ رَبَّنَا اغْفِرْ لِىْ وَ لِوَالِدَىَّ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ﴾

(तर्जुमा) ऐ परवरदिगार! आप मुझ को और मेरी नस्ल को नमाज़ कायम करने वाला बना दिजीए. ऐ रब ! मेरी दुआ को कबूल फरमा. ऐ परवरदिगार! मुझ को और मेरे वालिदैन को और सब ईमान वालों को कयामत के दिन बख्श दिजीए.

ज़कात

ज़कात की फर्ज़िय्यत और अहमिय्यत

कुरआन शरीफ में जगह जगह नमाज़ के साथ साथ ज़कात की ताकीद की गई है. अगर आप कुरआन शरीफ की तिलावत करते होंगे तो उसमें बीसीयों जगह पढा होगा : ﴿اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ﴾ (यानी नमाज़ कायम करो और ज़कात दिया करो.) मुसलमानों की लाज़मी सिफत यह बयान की गई है कि ﴿اَلَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ﴾ यानी वह नमाज़ कायम करते हैं और ज़कात देते हैं. इस से मालूम हुआ कि जो लोग नमाज़ नहीं

पढते और ज़कात नहीं देते वह मुसलमान नहीं हैं. क्यूँकि इस्लाम की जो बातें और जो सिफतें मुसलमानों में होनी चाहियें वह उनमें नहीं हैं. बहरहाल, नमाज़ ना पढना और ज़कात ना देना कुरआन शरीफ के बयान के मुताबिक मुसलमानों की सिफत नहीं है बल्कि काफिरों और मुश्रिकों की सिफत है.

किताब 'बुरहानुल हकाइक' स.: ३५९ पर 'ज़कात के असरार' के बयान में :

ज़कात तहारते नफ्स है और राहतुल कुलूब (नफ्स की सफाई और दिलों के लिए राहत) है. और मजमूअ-ए-तसव्वुफ में लिखा है कि ज़कात तीन किस्म पर है : शरीअत, तरीकत और हकीकत. ज़काते शरीअत यह है कि पूरे साल में दो सौ दिरहम पर पांच दिरहम खुदा की राह में दे, और ज़काते तरीकत यह है कि दो सौ दिरहम में साल पूरा होने के बाद पांच दिरहम बाकी रखे, बाकी अल्लाह की राह में दे डाले और ज़काते हकीकत यह है कि साल पूरा होने के बाद सब दो सो दिरहम खुदा के नाम दे दे क्यँकि दरवेशी खुद फरोशी है. शेर :

और क्या है ज़कात तर्क व ईसार
उश्शाक़ हैं वस्ल के तलबगार

(किताब 'इस्लाम क्या है?' स.: ५५)

रोज़ा

रोज़े की अहमिय्यत और फर्ज़िय्यत

इस्लाम की बुनियादी तालीमात में ईमान, नमाज़ और ज़कात के बाद रोज़े का बयान कुरआन शरीफ में फरमाया गया है.

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ﴾

यानी ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े रखना फर्ज़ किया गया है जैसे कि तुम से पहली उम्मतों पर भी फर्ज़ किया गया था ताकि तुम में तकवा की सिफत पैदा हो.

हज

हज की फर्ज़िय्यत

इस्लाम के अरकान में से आखरी रुक्न हज है. कुरआन शरीफ में हज की फर्ज़िय्यत का एलान करते हुए फरमाया गया है :

﴿وَ لِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا، وَّ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ عَنِ الْعَالَمِيْنَ﴾

यानी और अल्लाह के वास्ते बैतुल्लाह का हज करना फर्ज़ है और उन लोगों पर जो वहाँ तक पहुंचने की इस्तेताअत (ताकत) रखते हों और जो लोग ना मानें तो अल्लाह बे नियाज़ है सब दुनिया से.

(किताब 'बुरहानुल हकाइक', सः ३६५)

हज की फज़ीलत

अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है :

﴿وَ اِذْ بَوَّأْنَا لِاِبْرَاهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِىْ شَيْئًا وَّ طَهِّرْ بَيْتِىَ لِلطَّائِفِيْنَ وَ الْقَائِمِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ﴾

तफसीर में इस आयत के साहिबे तफसीरे क़ादरी लिखते हैं कि अरबाबे इशारात की ज़बानी हक तआला फरमाता है कि तुम्हारे दिल जो मेरी किब्रीयाई का दारुस् सलतनत है उसे सब चीज़ों से पाक करो और किसी गैर को इस में राह ना दो. इस वास्ते कि हमारि मुहब्बत के शराब का पैमाना है. हज़रत दाऊद अलैहिस् सलाम की तरफ वही आई कि मेरे लिए घर साफ कर कि मेरी नज़रे अज़मत उस पर पडे. हज़रत दाऊद अलैहिस् सलाम ने अर्ज़ की कि कौनसा मकान तेरी गुंजाईश रखता है यानी तेरे जलाल और अज़मत के लायक है. इर्शाद हुआ कि मोमिन बंदे का दिल. दाऊद अलैहिस् सलाम ने पूछा कि उसे क्यूँकर साफ करूँ? (किस तरह साफ करूँ?) हुक्म हुआ कि इश्क की आग उसमें लगा दे ताकि जो कुछ मेरे सिवा है सब को जला दे. शेरः

खुश आं आतिश कि अंदर दिल फरोज़द
बजुज़ हक हर चे पेश आयद बसोज़द

पारा ४, सुरह आले इम्रान, रुकू १० :

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَ لَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَ اعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّ لَا تَفَرَّقُوْا﴾

ऐ ईमान वालो! डरते रहो अल्लाह से जैसा डरना चाहिए उस से और ना मरो मगर मुसलमान और मज़बूत पकडो रस्सी अल्लाह की सब मिल कर और फूट ना डालो.

मुखातिब ईमान वालों को किया गया है. ईमान हकीकी तलाश करें खालिक के हुक्म से डरते रहो अल्लाह से, खौफे खुदा दिल में पैदा करें, ना मरो मगर मुसलमान मायनों में मुसलमान बनें. मज़बूत पकडो अल्लाह की रस्सी. यानी ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' को दिल से पकडें इस हदीस के मुताबिक : (मिस्बाहुल हयात, स.: ६८०)

''اَلْاِيْمَانُ سِرٌّ فِيْ صَدْرِ الْمُؤْمِنِ وَ الْاِسْلَامُ عَلَيْهِ مُبَيِّنَةٌ''

यानि पैगंबरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ईमान राज़ है मोमिन के सीने में और इस्लाम आशकारा है उस राज़ का. निहायत गौर व फिक्र दरकार है. इस लिए तलब करो कामिल पीर को जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं :

''فرض الانسان يطلب الشيخ كاملة و فى المكان و فى العجم و فى الشام و الروم''

यानी नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया फर्ज़ है हर एक मुसलमान पर तलब करना कामिल पीर को अगर हो मकान में क्या अजम में या शाम में या रोम में तो लाज़िम हो हर एक मुसलमान पर अपनी औरतों, फर्ज़न्दों, कनीज़ों को मुरीद करवाकर हक से अदा होना.

(किताब 'बुरहानुल हकाइक' स.: २६०)

और फूट ना डालो. ﴿وَ كُوْنُوْا مَعَ الصَّادِقِيْنَ﴾ और हो जाओ सच्चों के

साथ. मज़ीद इर्शादे बारी तआला मुलाहेज़ा होः ﴿كَتَبَ اللّٰهُ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ﴾ फरमाया अल्लाह तआला ने, लिखा है अल्लाह तआला ने दिलों में उन के ईमान के बारे में यानी साहिबे ईमान वह लोग हैं जो अल्लाह की यकताई पर और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत पर दिल से तसदीक करते हैं. इस तहरीर को खालिक के पास से आई हुई हमारा वुजूदे हकीकी बारी तआला का वुजूद है और ना किसी फरिश्ते की मजाल है कि हम को बनाए. जब हमारा खालिक मुवज्जिद है तो हम को हमारी ही किताब में (यानी बदन में) ढूँढें ताकि हमारा बदन पाक पाकीज़ा होकर खालिक की बारगाह में एक दिन पहुंचना है और काबिले इनाम व इकराम होना है. इसी इल्म से आगाह करने की खातिर अंबिया अलैहिमुस् सलाम भेजे गए. हम वह उम्मती हैं कि नबीयों का नबी, पैगंबरों का पैगंबर, हादीयों का हादी के ज़रीए उसको खिलाफत कयामत कायम होने तक जारी व सारी रखा है. क्यूँ ना ढूँढें ऐसे रहबराने कामिल को ﴿وَ جَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ هُوَ اجْتَبٰكُمْ﴾ यानी और कोशिश करो अल्लाह की राह में जैसा कि उसका हक है, उसने तुमको मुन्तखब किया है. मैं खुद इस हकीकी ईमान की लज़्ज़त से आशना (वाकिफ) होकर हदीस शरीफ के मफहूम के मुताबिक कि मोमिन वह है जो अपने लिए पसंद करे वही अपने मोमिन भाई के लिए पसंद करे. इसी खातिर से और इल्म की आगाही के लिए 'गुलज़ारे क़दीर' में जो कुछ तहरीर है नाज़िरीन के सामने मौजूद है. यह तहरीर सिर्फ पढने के लिए नहीं है बल्कि जानना बूझना, सोचना समझना किसी कामिल शेख को पाकर पाना वरना रायगाँ. एक दिन जाना खुब नहीं. इसी अमानत के बोझ में खयानत है, इंसान बारी तआला की खुशनूदी का मज़हर है वरना रोज़े हश्र शर्मिंदगी, पसमांदगी मुर्दनी छा जाएगी. हम ज़िंदा के हाथ के बने हुए यहाँ भी वहाँ ज़िंदा रहें. यही ज़िंदगी की खातिर में अपनी जान व माल खर्च कर रहा हूँ और करूँगा. मश्रिक से मगरिब तक शुमाल से जुनूब तक जहाँ तक हुक्मराने वक्त हैं उन सब को तुगरा पचरंगी के ज़रीए दावते फिक्र दे चुका हूँ. मुझ अदना बंदे की दुआ खुदा-ए-कुद्दूस ने कबूल फरमाई. अब हर फर्दे बशर को दावते फिक्र देता हूँ और आगाह करता हूँ कि सिवाए इस इल्म के मौत का आना और उस

से महरूम जाना बेकार है. खुदावंदा ! हमारी इंसानिय्यत को शऊर (अक्ल) अता फरमा. तेरे मंशा के मुताबिक और तेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करते हुए हमें अपने हुज़ूर बुला. सिवाए तेरे हमारा यहाँ और वहाँ कौन है. हम तुझ ही से मांगते हैं, तू ही हमारा वाली वारिस है. इसी तालीम व तफहीम (समझाने) की खातिर कसीर (बहुत) खलीफे बनाया सिर्फ इस खातिर कि ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' मोमिनों के दिलों में पहुँचे. बहुत खलीफों को खिलाफत अता करने में मैं अपने ख्वाहिशे नफ्स से काम लिया हूँ तो तू दाना व बीना (जानने वाला देखना वाला) है, मुवाखेज़ा (पकड) फरमा सकता है. अगर मैं हक तआला की खुशनूदी की खातिर खिलाफत अता किया हूँ तो आबाद व शाद फरमा यह तेरा चमन है. इस मन के चमन को संवारने की खातिर इस क़दर खिलाफतें अता किया हूँ और कोई लालच इस में पोशीदा नहीं. आज खुलफा और मुरीदीन तालिब सादिक जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं. उन सब पर अयाँ (वाज़ेह) है. मेरी ज़िंदगी और मेरी तबीअत और मेरी लालच दीन की खातिर है या दुनिया की खातिर. लाखों मुरीदीन इस हाथ पर हाथ ले कर किया और कसीर खुलफा आलम में कारगुज़ार (काम कर रहे) हैं. किस क़दर बडी फकीरी रखते हैं, जिस का हाथ पकडते हैं उनको माअनवी (बातिनी) मायनों में बक़दरे हौसला इल्म बख्शते हैं. जब तो दुनिया में आज तक मैंने किसी खलीफा के गियाब में कुछ नहीं सुना और ना मेरी ज़िंदगी भर सुनाए. मेरे रब! मुझे और मेरे मुरीदों को तेरे ज़िक्र व शुग्ल में लज़्ज़त अता फरमा. यही लज़्ज़त हमारी क़ब्र और हश्र तक काम दे. मुझे जो लज़्ज़त मयस्सर आई उसी लज़्ज़त को पेश कर रहा हूँ ताकि हमारा हश्र व नश्र खुशनूदी-ए-बारी तआला हो. ऐ मेरे रब ! तेरा किस मुँह से शुक्र अदा करूँ, मैं और मेरी आल औलाद ने ना कभी तावीज़ फलीते मुरीदों को बांध कर और उन के खयालात को उलटे लकीर सीथे हिंदसे डाल कर फकीरी नहीं की बल्कि हक तआला के इल्म को दिल में बिठलाकर हज़ारों मर्ज़ों (बीमारीयों) की शिफा, हज़ारों खैर व बरकतों की बरकत तेरे कलमए- तय्यबा को करार दिया. तू ही हमारे ईमानों की हिफाज़त फरमा. ऐसा सीधा सादा फकीर, लाखों मुरीद, कसीर खलिफे

रखते हुए मौजूदा ज़मीन पर एक मामूली मकान भी ना बना सका. खुदा और खुदा का रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शाहिद (गवाह) है और ना ज़िंदगी भर नाजायज़ दस्ते सवाल दराज़ किया और ना दिल में खयाल पैदा हुआ कि कैसे मकान तामीर करूँ. पाक ज़ात का लाख लाख शुक्र है मौजूदा मकानदार मुहिब्बे रफीक शेख बुड्ढन क़ादरी मालिके मकान २७० तकिया जमाल बी बैरून फतह दरवाज़ा के इल्म व अमल से मेरी दिलजोई और मेरी आल व औलाद की दिलजोई की खातिर मकान खरीदना या बनाना ही पसंद ना आया. आज दुनिया में ऐसे भी नेक बख्त मौजूद हैं कि उनका घर का घर मुझे मां बाप से ज़्यादा चाहते हैं. खुदावंदा ! तू इन्हें इसका अज्र अता फरमा. उनके कुलूब नूरे ईमान से मुनव्वर रहें. जो जो मुझ पर एहसान फरमाते हैं तू उन पर एहसान फरमा. मैं तेरी खातिर यह सब कुछ बर्दाश्त कर रहा हूँ और करूँगा. मुझ से बढ कर मेरे बीवी बच्चे हकदार हैं तेरी रेहमत के. हम सब को तेरी खातिरदारी मतलूब है. हो सकता है कि अगर पाक ज़ात चाहे तो एक दो दिन में घर बन सकता है. मालूम होता है मेरा रब जब मनजूर फरमाएगा उस वक्त घर तयार होगा. यही हिम्मत व इस्तेकलाल के गुज़ारे पर गुज़र बसर कर रहा हूँ. खुदावंदा ! जो मेरे दिल में है तू वह बखूबी जानता है, मैं कह कर क्यूँ रुसवा बनूँ. ऐ मेरे रब ! मैंने जो मांगा उस को अता फरमाया और तुझी से मुलतजी हूँ तू ही अता करेगा. मौजूदा वक्त मज़ीद इज़ाफे के साथ 'गुलज़ारे क़दीर' का तबआ (छपना) यह कोई छोटा काम नहीं, बडे से बडा काम था. अल्लाह तआला के फज़्ल से और अता-ए-करीमी से पूरा हुआ. अल्लाह पाक मोहसिनीन को अज्रे अज़ीम से नवाज़े. आमीन

अल्लाह तआला का कौल :

﴿اِنَّا اَنْزَلْنَا اِلَيْکَ الْکِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْکُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا اَرٰکَ اللّٰهُ﴾

हम ने तुम्हारे पास किताब मकसद से उतारी है ताकि तुम बसीरत से जो अल्लाह ने तुम्हें समझाई है लोगों के दरमियान फैसला करो. बरखुरदारे मन ख्वाजा सय्यद मुहम्मद इब्राहीम शाह क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी सल्लमहू जुमला हुकूके किताब 'गुलज़ारे क़दीर' तुम्हारे हक में महफूज़ हैं और रहेंगे. साहबज़ादे! मैंने बडी जाँफशानी से मज़ामीन को बडी बडी किताबों

से अख्ज़ (हासिल) करके "مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ" के मुताबिक लिखा हूँ, इसको इसी हालत में मेहफूज़ रखो.

﴿اَللّٰهُ الَّذِیْ اَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَ الْمِيْزَانَ، وَ مَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ﴾

(तर्जुमा) वह अल्लाह है जिस ने नाज़िल किया किताब को हक के साथ और मीज़ान को, तू क्या जाने शायद कयामत करीब हो.

साहबज़ादे ! आप को और तमाम खुलफा को, मुरीदों को, तालिबों को जिस इल्म से आश्नाई बख्शा हूँ उसको कायम व दायम रखने में हरगिज़ सुस्ती ना करो बल्कि बेहद मुहब्बत से उसमें कोशिश करो ताकि रोज़े कयामत मुझे मेरे खालिक के सामने पीराने तरीकत और अवामुन् नास के रूबरू शर्मिंदगी ना हो, हमेशा अपने तकवा व तहारत को बलंद रखने की सई (कोशिश) करो जिस में हमारी नजात है. मैं अल्लाह पाक पर तवक्कुल करके खुदा और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हाज़िर व नाज़िर जान कर बाहोश व हवास लिख रहा हूँ. खुदावंदा ! अपने फज़्ल व करम से जैसा हमें नवाज़ा है हम को हमारे चाहने वालों को नवाज़. जो जो साहिबे समझ मेरी 'गुलज़ारे क़दीर' को पढें समझें, बूझें, कहीं गलती पाऐं बख्श दें. जद्दे आला हुज़ूरे वाला गौसुल आज़म जहान के दस्तगीर मोहतरम व मुअज़्ज़म का कसीदा व कलाम जो कुछ भी मुझे मयस्सर आया मेरा और मेरे चाहने वालों का कलाम पेश करने की सआदत हासिल है. खुदावंदा ! इस किताब के पढने और बूझने वालों पर हमेशा हमेशा अपना फज़्ल व करम फरमा. बार बार यही इल्तेजा है. यह चंद कल्मे ज़ब्ते तहरीर (कलमात लिखे) हैं, इसकी तू क़द्र फरमा. तेरे नाम पर तवक्कुल करके लिखा हूँ मौला तआला कबूल फरमा.

तारीखे इख्तेताम तबाअत (दूसरी बार) २७ शाबानुल मुअज़्ज़म १३८५ हि. बकलमे खुद ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी 'क़दीर' मुताबिक २१ दिसंबर १९६५.

हकीकते ज़िक्र

मुसन्निफ : साबिर तवक्कली 'शाहीन'

''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''

दुनिया का कोई मज़हब और आस्मानी किताब ऐसी नहीं जिस में अल्लाह तआला के ज़िक्र की अहमिय्यत व फज़ीलत ना बयान की गई हो. इस्लाम में जितना ज़ोर अल्लाह पाक के ज़िक्र पर दिया गया उतना किसी और इबादत के लिए नहीं. यही वजह है कि कुरआन व हदीस और बुज़ुर्गों के अहवाल व अकवाल ज़िक्र की तरगीब व तहरीस से भरे हुए हैं.

मौजूदा एटमी दौर की बेपनाह मसाइब व आलाम का गिला करने वाले और मआशी व इक्तेसादी बदहाली का रोना रोने वाले यह चाहते हैं कि उनकी तमाम परेशानीयों को दूर करने का कोई नुस्खा कीमीया असर हाथ आ जाए मगर वह अल्लाह तआला के बतलाए हुए अमल के तरीके को कबूल नहीं करते और अपने खयाली उसूलों और खुद के बनाए हुए रास्तों में उलझ कर हलाक हो जाते हैं. यह कोई ढकी छुपी बात नहीं है कि अल्लाह तआला ने हर दर्द की दवा और हर परेशानी का हल अपने पाक व बलंद ज़िक्र में छुपा रखा है. मगर हम अल्लाह तआला की हिदायत पर अमल पैरा नहीं होते जिन्हें अपना कर ही सारी ज़िंदगी कामयाब गुज़ारी जा सकती है. अल्लाह तआला हम सब को अपने ज़िक्र की लज़्ज़त, बरकत, मिठास, सुरूर और तमानिय्यत से नवाज़े. अमीन सुम्मा आमीन बतुफैल सय्यदना व मौलाना ताहा व यासीन सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व असहाबिही अजमईन बिरहमतिका या अरहमर् राहिमीन

अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿فَاذْكُرُوْنِىٓ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِىْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ﴾

तर्जुमा : पस तुम मेरा ज़िक्र करो, मैं तुम्हारा ज़िक्र करूँगा और मेरा शुक्र अदा करते रहो नाशुक्री ना करो. (सुरह बक़रह, रुकूः १८)

ज़िक्र तसव्वुफ का अस्ल उसूल है और तमाम सूफिया के सब तरीकों

में राइज है. जिस शख्स के लिए ज़िक्र का दरवाज़ा खुल गया उसके लिए अल्लाह तआला तक पहुंचने का दरवाज़ा खुल गया और जो अल्लाह तआला तक पहुंच गया वह जो चाहता है पाता है कि अल्लाह तआला के यहाँ किसी चीज़ की भी कमी नहीं है.

हक तआला का इर्शाद है कि मेरा शुक्र अदा करते रहो और नाशुक्री ना करो. जिस क़द्र शुक्र अदा होगा उतना ही नेमतों में इज़ाफा होगा. अल्लाह तआला के शुक्र गुज़ार बंदों को रेहमते खुदावंदी हर तरफ से ढाँक लेती है और कुफ्राने नेमत (नेमतों का इंकार) करने वालों से हर नेमत छीन ली जाती है. यह बात यकीनी है कि ज़िक्र ही शुक्र अदा करने का वाहिद ज़रीआ है. मुहद्दिसीने किराम ने लिखा है कि ज़िक्र शुक्र की जड है. जो अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं करता वह शुक्र भी अदा नहीं करता. एक हदीस में आया है कि हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस् सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया कि आप ने मुझ पर बहुत से एहसानात किए हैं, मुझे तरीका बता दीजिए कि मैं आप का बहुत शुक्र अदा करूँ. अल्लाह तआला ने फरमाया कि जितना भी तुम मेरा ज़िक्र करोगे उतना ही शुक्र अदा होगा. दूसरी हदीस में हज़रत मूसा अलैहिस् सलाम की यह दरख्वास्त बयान की गई है कि या अल्लाह! तेरी शान के मुनासिब किस तरह शुक्र अदा हो? हक तआला ने फरमाया कि तुम्हारी ज़बान हर वक्त ज़िक्र के साथ तर व ताज़ा रहे.

ज़िक्र की इसी अहमिय्यत व फज़ीलत के मद्दे नज़र जगह जगह अल्लाह तआला का इर्शाद है कि

﴿فَاِذَا اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَ اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَ اِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّالِّيْنَ﴾

तर्जुमा : फिर जब तुम (हज के मौके पर) अरफात से वापिस आ जाओ तो मुज़दलिफा में (ठहर कर) अल्लाह का ज़िक्र करो और इस तरह ज़िक्र करो जिस तरह तुम को बतला रखा है. दर हकीकत तुम इस से पहले पूरे नावाक़िफ थे. (सूरह बकरह, रूकू:२५)

ज़िक्र के अवकात, ज़िक्र के मरातिब और ज़िक्र के फायदे व बरकात

अल्लाह तआला ने खुद भी अपने कलामे पाक में मुखतलिफ आयतों में बयान फरमाऐ हैं. चुनांचे इर्शाद होता है कि :

﴿فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَاءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا، فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَا آتِنَا فِى الدُّنْيَا وَّ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ o وَ مِنْهُمْ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَا آتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ o اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا وَ اللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ o﴾

तर्जुमा : फिर जब तुम हज के मनासिक (अरकान) पूरे कर चुको तो अल्लाह का ज़िक्र किया करो जिस तरह तुम अपने आबा व अजदाद (पुर्खों) का ज़िक्र किया करते हो. (यानी जिस तरह तुम अपने पुर्खों का ज़िक्र करते हो) बल्कि अल्लाह तआला का ज़िक्र उस से भी बढ कर होना चाहिए. उन में से बाज़ (चंद) लोग ऐसे हैं जो अपनी दुआओं में यूँ कहते है कि या अल्लाह हमें दुनिया ही में दे दे (सो उनको तो जो मिलना होगा दुनिया ही में मिल जाएगा) और उनके लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं और बाज़ (चंद) लोग यँ कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम को दुनिया में भी बेहतरी अता फरमा और आखिरत में भी बेहतरी अता फरमा और हम को दोज़ख के अज़ाब से बचा. सो यही हैं जिन को उन के अमल की वजह से (दोनों जहाँ में) हिस्सा मिलेगा और अल्लाह जल्द ही हिसाब लेने वाला है. (सूरह बकरह, रूकूः २५)

यह रात दिन मुशाहदे की बात है कि हम कभी अपने पुर्खों का तज़किरा छेड देते हैं तो घंटों नहीं थकते. उनकी एक एक बात का ज़िक्र इस तरह करते हैं कि वक्त गुज़रने का एहसास तक नहीं रहता. अल्लाह तआला का इर्शाद है कि मेरा ज़िक्र अपने आबा व अजदाद (पुर्खों) के ज़िक्र से कहीं ज़्यादा बढ चढ कर होना चाहिए. यही एक शुक्र गुज़ार बंदे की जानिब से मेरी नेमतों का बेहतरीन शुक्र है.

हदीस में आया है कि तीन शख्सों की दुआ रद नहीं होती; एक वह जो कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो, दूसरा मज़लूम, तीसरा वह बादशाह जो ज़ुल्म नहीं करता हो. (जामिउस् सग़ीर)

अल्लाह तआला से दिन रात दुआऐं मांगने वाले गौर फरमाऐं कि ज़िक्र दुआ की कबूलिय्यत की कुंजी है और ज़िक्र के बगैर बाबे इजाबत (कबूलिय्यत का दरवाज़ा) खुलता नहीं. अल्लाह तआला का वादा है कि ज़ाकिर की दुआ ज़रूर कबूल करूँगा. अल्लाह पाक हम सब को अपने ज़िक्र व शुक्र की नेमतों से सरफराज़ फरमाए.

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह बकरह, रूकूः २५)

﴾وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدَاتٍ﴿

तर्जुमा : और (हज के ज़माने में मिना में भी ठहर कर) गिनती के दिनों में अल्लाह को याद किया करो, उस का ज़िक्र किया करो.

आप ने देखा ! रोज़ा, नमाज़, हज वगैरा सारे फराइज़ ज़िक्र की अहमिय्यत और उसकी फज़ीलत की खबर दे रहे हैं. बेशक अल्लाह तआला का ज़िक्र तमाम इबादात का मकसूद व मतलूब है.

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह आले इम्रान, रूकूः३)

﴾وَ اذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيْرًا وَّ سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَ الْاِبْكَارِ﴿

तर्जुमा : और कसरत से अपने रब का ज़िक्र किया किजीए और सुबह व शाम तसबीह किया किजीए. यही वह नुसखा कीमीया असर है जिसे अपना कर अरब के सेहरा के बोरिया नशीन मशरिक व मगरिब के फरमांरवा (हाकिम) बन गए और देखते ही देखते सारी रूए ज़मीन पर छा गए. लेकिब जब यही ज़िक्र हम से छूट गया तो अल्लाह तआला की रेहमतों ने भी अपना मुँह फेर लिया. आज भी हम मुसलमान किताब व सुन्नत (कुरआन व हदीस) की रौशनी में अगर ज़िक्र को अपना लें तो कोई वजह नहीं कि दोनों जहाँ में सरफराज़ ना हों. अल्लाह पाक हर मुसलमान को अपने ज़िक्र की लज़्ज़त का आशना बना दे. आमीन

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह आले इम्रान, रूकूः २०)

﴾اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيَامًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ يَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ ، رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلاً سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴿

तर्जुमा : (पहले से मौला तआला अहले बसीरत दानिशवरों का

तज़केरा फरमाते हुए इर्शाद फरमा रहे हैं) वो ऐसे लोग हैं जो अल्लाह तआला का ज़िक्र करते हैं खडे भी और बैठे भी और लेटे हुए भी और आस्मानों और ज़मीनों के पैदा होने में गौर करते हैं (और गौर व फिक्र के बाद यह कहते हैं) ऐ हमारे रब! आपने यह सब बेकार तो पैदा नहीं किया, हम आप की तसबीह करते हैं, आप हम को अज़ाबे जहन्नम से बचा लिजीए.

अल्लाह तआला अपनी मारिफत रखने वालों की तारीफ फरमा रहे हैं कि अहले बसीरत उठते बैठते और आराम करते वक्त मेरा ज़िक्र करते हैं और मेरी सनअत (बनाना) और हिकमत में फिक्र व तदब्बुर करते हैं. यही दानिशमंद और साहिबे फिरासत हैं कि उनके तमाम अवकात मेरे ज़िक्र से भरे हैं और यही उनकी दानिशमंदी और कामयाबी का राज़ है.

किताबुल्लाह (कुरआन) का सरसरी मुतालेआ भी किजीए तो यह बात वाज़ेह हो जाती है कि अल्लाह तआला यह चाहते हैं कि अहले ईमान सुबह व शाम हर लम्हा दमबदम उठते बैठते और लेटे हुए ग़र्ज़ कि हर हाल में उसका ज़िक्र करते रहें और एक लम्हा के लिए भी उसकी याद से गाफिल ना होने पाऐं.

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह निसा, रूकू:१५)

﴿فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوۃَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ قِيَامًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِھِمْ﴾

तर्जुमा: जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको तो अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल हो जाओ खडे भी बैठे भी और लेटे भी, किसी हाल में उसकी याद और ज़िक्र से ग़ाफिल ना हो.

एक और जगह इर्शाद होता है : (सूरह एराफ, रूकू: २४)

﴿وَ اذْکُرْ رَّبَّکَ فِیْ نَفْسِکَ تَضَرُّعًا وَّ خِيْفَۃً ، وَّ دُوْنَ الْجَھْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ وَ لَا تَکُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ﴾

तर्जुमा : और अपने रब का ज़िक्र किया कर अपने दिल में पोशीदा आवाज़ के बगैर आहिस्ता इस तरह कि आजिज़ी भी हो और अल्लाह का खौफ भी हो, हमेशा सुबह को भी और शाम को भी और गफलत वालों में से ना हो.

सूफिया-ए-किराम पर एतेराज़ करने वाले इस फरमाने इलाही को गौर से पढें और खुद ही फैसला करें कि ज़िक्र बिलक़ल्ब और ज़िक्रे खफी वगैरा के जो उसूल व कवाइद सूफीया ने मुरत्तब फरमाए हैं वह किताब व सुन्नत के मुताबिक हैं या खिलाफ.

मुसनदे अबू याला में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि वह ज़िक्रे खफी जिस को फरिश्ते भी ना सुन सकें सत्तर दरजे दो चंद (बढा हुआ) होता है जब कयामत के दिन अल्लाह तआला तमाम मखलूक को हिसाब के लिए जमा फरमाऐंगे और किरामन कातिबीन (दो फरिश्ते) आमाल नामे ले कर आऐंगे तो इर्शाद होगा फलाँ बंदे के आमाल देखो, कुछ और बाकी हैं? वह अर्ज़ करेंगे हम ने कोई भी ऐसी चीज़ नहीं छोडी जो लिखी ना हो और मेहफूज़ ना हो. तब इर्शाद होगा कि हमारे पास उसकी ऐसी नेकी बाकी है जो तुम्हारे अमल में नहीं, वो ज़िक्रे खफी है.

बैहक़ी ने शअबुल ईमान में सय्यदा आइशा रदियल्लाहु अन्हा से यह हदीस नक्ल की है कि जिस ज़िक्र को फरिश्ते भी ना सुन सकें वह उस ज़िक्र से जिस को वो सुनें सत्तर दर्जा बढा हुआ है. किसी शाइर ने क्या खूब कहा है:

मियाने आशिक व माशूक रम्ज़ेस्त
किरामन कातिबीं रा हम खबर नेस्त

यानी मुहिब्ब और मेहबूब में एक ऐसी रम्ज़ (राज़) भी है जिस की किरामन कातिबीन को भी खबर नहीं होती.

कितने खुश नसीब हैं वह लोग जो अपने ज़ाहिरी आमाल और फराइज़ के अलावा ज़िक्रे खफी की सरमदी (लाफानी) दौलत से भी मालामाल हैं और जिन को एक लम्हे के लिए भी ज़िक्रे हक से गफलत नहीं होती. यही वह ज़िक्र बिलक़ल्ब की दौलत है जिसे पाकर एक मोमिन पुकार उठता है :

हर नफस कलमए-बिलक़ल्ब अदा होता है
हर कदम फज़्ले इलाही के सज़ावार है हम
(शाहीन)

अल्लाह तआला के ज़िक्र से क़ल्बी (दिली) लगाव और रगबत ही

ईमान की सब से बडी निशानी है. अल्लाह तआला के ज़िक्र से लापरवाही और बेतवज्जुही खुली हुई मुनाफिकत है. अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّ عَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ﴾ (सूरह अनफाल)

तर्जुमा : ईमान वाले तो वही लोग हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो (उसकी अज़मत व हैबत के तसव्वुर से) उनके दिल डर जाते हैं और जब उन पर अल्लाह की आयतें पढी जाती हैं तो उनके ईमान को बढा देती हैं और वह अपने अल्लाह पर तवक्कुल करते हैं.

इसी सिलसिले में आगे उनकी नमाज़ वगैरा के ज़िक्र के बाद इर्शाद है : ''यही लोग सच्चे ईमान वाले हैं. उनके बडे बडे दर्जे हैं, उनके रब के पास और मगफिरत है और इज़्ज़त की रोज़ी है.''

ज़िक्र से गाफिल और उसको नज़र अंदाज़ करने वाले मुनाफिक़ीन से कुरआन मुखातिब है : (सूरह निसा, रूकूः २१)

﴿وَ اِذَا قَامُوْا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى يُرَاءُوْنَ النَّاسَ وَ لَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا﴾

तर्जुमा : (मुनाफिकों की हालत का बयान है) और जब नमाज़ को खडे होते हैं तो बहुत ही काहिली से खडे होते हैं और अल्लाह तआला का ज़िक्र भी नहीं करते, मगर यूँ ही थोडा सा. यह तो मुनाफिकों का बयान है. जो मुसलमान कि मुतलक ज़िक्र के बारे में नहीं जानते उन्हें कुरआन की रौशनी में किस नाम से याद करें? अल्लाह पाक हम सब को अपने ज़िक्र के नूर व सुरूर से सरफराज़ फरमाए. आमीन

कुरआन शाहिद है कि मुसलमानों की तबाही की वुजूहात में ज़िक्र से गफलत भी एक बडी वजह है. शैतान जब किसी जमाअत को बहकाना चाहता है तो उसे अल्लाह के ज़िक्र से दूर कर देता है. अल्लाह के ज़िक्र से महरूमी तमाम भलाईयों से महरूमी है. चुनांचे इर्शादे बारी तआला है:

﴿اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَاءَ فِى الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ

﴿يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلَاةِ ، فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ﴾

तर्जुमा : शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुव्वे के ज़रीए तुम में आपस में अदावत (दुशमनी) और बुग्ज़ पैदा करदे और तुम को अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ से रोक दे. क्या अब भी इन से बाज़ नहीं आओगे? (सूरह माइदह, रूकू:१२)

एक मोहतात अंदाज़े के मुताबिक बीस फीसद मुसलमान शराब और जुव्वे की लानत में मुब्तेला हैं और तकरीबन अस्सी फीसद नमाज़ और अल्लाह के ज़िक्र से महरूम हैं. अल्लाह तआला का इर्शाद है कि शैतान तो यही चाहता है कि तुम्हें शराब और जुव्वे का आदी बनाकर नमाज़ और अल्लाह के ज़िक्र से गाफिल बना कर हलाक कर डाले. यह जानने के बाद भी तुम शराब और जुव्वा नहीं छोडोगे और नमाज़ के साथ अल्लाह के ज़िक्र को नहीं अपनाओगे? आखिर यह लापरवाही और मेरे अेहकामात से बददिली कब तक?

सच तो यह है कि मुसलमान जब तक फरमाने इलाही के मुताबिक नमाज़ और ज़िक्र नहीं अपनाऐंगे, ज़िल्लत और रूसियाही (ख्वारी) उनका मुक़द्दर बनी रहेगी और यह कौम कभी अपनी मंज़िले मकसूद ना पा सकेगी. अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह ताहा, रूकु: १)

﴿اِنَّنِیْ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ وَ اَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِیْ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِیَةٌ اَكَادُ اُخْفِیْهَا لِتُجْزٰی كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰی﴾

तर्जुमा : बेशक मैं ही अल्लाह हूँ और मेरे सिवा कोई माबूद नहीं. पस तुम (ऐ मूसा) मेरी ही इबादत कया करो और मेरे ही ज़िक्र के लिए नमाज़ कायम करो. बिला शुबा कयामत आने वाली है, मैं उसको पोशीदा रखना चाहता हूँ ताकि हर शख्स को उस के किए का बदला मिल जाए.

ऊपर की आयत से यह बात वाज़ेह हो गई कि नमाज़ के कयाम का हुक्म भी अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए है. हकीकत तो यह है कि जो नमाज़ ज़िक्र से खाली हो वह नमाज़ ही नहीं होती. ज़िक्र के फज़ाइल बयान करने से पेशतर मुनासिब मालूम होता है कि कुछ नमाज़ के बारे में भी लिखूँ

ताकि नमाज़ की फरज़िय्यत व अहमिय्यत की रौशनी में ज़िक्र की अज़मत व जलालत (इज़्ज़त) वाज़ेह हो जाए.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा, हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक्ल करते हैं कि इस्लाम की बुनियाद पांच सुतूनों पर है : सब से पहले 'ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं. इसके बाद नमाज़ का कायम करना, ज़कात अदा करना, हज करना और रमज़ान मुबारक के रोज़े रखना. (मुत्तफीक़ आलिया)

मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि इस हदीस में उलमा-ए-किराम के इस कौल की दलील है कि ''ईमान के बाद सब से मुकद्दम नमाज़ है.''

हज़रत अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर्दी के मौसम में बाहर तशरीफ लाए और पत्ते दरख्तों से गिर रहे थे. आप ने एक दरख्त की टहनी हाथ में ली, उसके पत्ते और भी गिरने लगे. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ अबू ज़र (रदियल्लाहु अन्हू) मुसलमान बंदा जब इखलास से अल्लाह के लिए नमाज़ अदा करता है तो उस से उसके गुनाह ऐसे ही गिरते हैं जैसे यह पत्ते दरख्त से गिर रहे हैं.

इखलास से नमाज़ अदा की जाए तो नमाज़ी के तमाम गुनाह माफ हो जाते हैं और इखलास की दौलत अल्लाह के ज़िक्र के बगैर मुमकिन नहीं. दिलों की सफाई और निय्यत की पाकीज़गी ज़िक्र की सब से पहली खुसूसिय्यत है. यही वजह है कि ज़िक्र के फज़ाइल में उलमा ने लिखा है कि तमाम आमाल अल्लाह के ज़िक्र ही के वास्ते मुक़र्रर किए गए हैं. तमाम आमाल में वही अमल अफज़ल है जिसमें ज़िक्र की कसरत हो. रोज़ों में वही रोज़ा अफज़ल है जिसमें ज़िक्र की कसरत हो. हज में वही हज अफज़ल है जिसमें ज़िक्र की कसरत हो. जिहाद में वही जिहाद अफज़ल है जिसमें ज़िक्र की कसरत हो. ग़र्ज़ कि ज़िक्र के बगैर कोई अमल अफज़ल नहीं है.

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक्ल करते हैं कि आप ने एक मर्तबा इर्शाद फरमाया : बताओ अगर किसी शख्स के दरवाज़े पर एक नहर जारी हो जिस में वह पांच मर्तबा रोज़ाना गुस्ल करता हो, क्या उसके बदन पर कुछ मैल बाकी रहेगा? सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया : कुछ भी बाकी नहीं रहेगा. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि यही हाल पांचों नमाज़ों का है कि अल्लाह तआला उनकी वजह से गुनाहों को माफ फरमा देते हैं.

(बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजह)

नमाज़ जो ज़िक्र के लिए है उसकी यह फज़ीलत है कि नमाज़ी के तमाम गुनाह खत्म हो जाते हैं और जो हर लम्हा अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल हैं उन पर जो भी अलताफे शाहाना (महरबानियाँ) हों वह बयान के मोहताज नहीं.

हज़रत अबू मुस्लिम सालबी रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि मैं हज़रत अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हू की खिदमत में हाज़िर हुआ, वो मस्जिद में तशरीफ फरमा थे. मैंने अर्ज़ किया कि एक साहब ने आप की तरफ से यह हदीस नक्ल की है कि आप ने हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमान सुना है कि जो शख्स अच्छी तरह वज़ू करे और फिर फर्ज़ नमाज़ अदा करे तो हक तआला उस दिन वह गुनाह जो चलने से हुए हों और वह गुनाह जो उसके हाथों ने किया हो और वह गुनाह जो उसके कानों से सादिर हुए हों और वह गुनाह जो उस ने आंखों से किया हो और वह गुनाह जो उसके दिल में पैदा हुए हों सब को माफ फरमा देते हैं. हज़रत अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया कि मैं ने यह मज़मून हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कई मर्तबा सुना है. (इमाम अहमद)

अल्लाहु अकबर! नमाज़ में यह ज़िक्र ही की बरकत है कि तमाम जिस्मानी आज़ा (हिस्सों) के गुनाह दूर हो जाते हैं. बडे खुश नसीब हैं वह लोग जो पांच वक्त की नमाज़ के अलावा भी ज़िक्र से गाफिल नहीं रहते और अपनी एक एक सांस में अल्लाह तआला का ज़िक्र अदा करते रहते हैं. किसी शाइर ने क्या अच्छी बात कही है :

गाफिल ! ज़े एहतियाते नफ्स यक नफस मबाश
शायद हमीं नफस नफसे वापसीं बुवद

तर्जुमा : ऐ गाफिल! अपनी सांस की आमद शुद (आने जाने) से एक सांस के लिए भी गाफिल ना रह. हो सकता है कि यही सांस तेरी ज़िंदगी की आखरी सांस हो.

हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने अल्लाह तआला के इर्शादे पाक ﴿اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنۡهٰى عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَ الۡمُنۡكَرِ﴾ (यानी बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरी हरकतों से रोकती है) के बारे में पूछा तो आप ने इर्शाद फरमाया कि जिस शख्स की नमाज़ ऐसी ना हो और उसको बेहयाई और बुरी हरकतों से ना रोके तो वह नमाज़ ही नहीं.

हज़रत अबुल आलिया रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि अल्लाह तआला के इर्शाद ﴿اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنۡهٰى﴾ का मतलब यह है कि नमाज़ में तीन चीज़ें होती हैं; इखलास, अल्लाह का खौफ और अल्लाह का ज़िक्र. जिस नमाज़ में यह तीन चीज़ें नहीं वह नमाज़ ही नहीं.

इखलास नेक कामों का हुक्म करता है और अल्लाह का खौफ बुरी बातों से रोकता है. और अल्लाह का ज़िक्र इखलास और तकवा दोनों को मुहीत (घेरे) हुए है जो खुद मुस्तक़िल अच्छी बातों का हुक्म करता है और बुरी बातों से रोकता है.

हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हू हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक्ल करते हैं कि जो नमाज़ बुरी बातों से और नामुनासिब हरकतों से ना रोके वह नमाज़ अल्लाह की कुरबत के बजाए अल्लाह से दूरी पैदा करती है. हज़रत सय्यदना हसन रदियल्लाहु अन्हू भी हुज़ूर सरापा अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यही नक्ल करते हैं कि जिस शख्स की नमाज़ उसको बुरी बातों से ना रोके वह नमाज़ ही नहीं बल्कि उसकी नमाज़ की वजह से अल्लाह से दूरी पैदा होती है.

हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हू भी हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यही इर्शाद नक्ल है. अहले ईमान गौर फरमाऐं कि नमाज़ के लिए इखलास और खूशूअ का होना कितना ज़रूरी है और जिस

नमाज़ में इखलास और खूशूअ ना हो वह नमाज़ नमाज़ ही नहीं होती.

हज़ारों मुसलमान ऐसे हैं जो नमाज़ पढते हैं और सैंकडों ऐसे हैं जो जमाअत का भी एहतेमाम करते हैं लेकिन इसके बावजूद इस बुरी तरह पढते हैं कि वह नमाज़ अज्र व सवाब का ज़रीआ बनने की बजाए नाकिस होने की वजह से मुँह पर मार दी जाती है.

आमाल की कबूलिय्यत के लिए कुरबानी के बारे में अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَ لَا دِمَاؤُهَا وَ لٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ﴾

तर्जुमा : हक तआला के पास उनका गोश्त पहुँचता है और ना खून बल्कि उसके पास तो तुम्हारा तकवा और इखलास पहुंचता है, जिस दरजे का इखलास होगा उसी दरजे की मकबूलिय्यत होगी.

हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मुझे यमन भेजा तो मैंने आखरी वसीय्यत की दरख्वास्त की तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि दीन के हर काम में इखलास का एहतेमाम करना कि इखलास से थोडा अमल भी बहुत कुछ है.

हज़रत सौबान रदियल्लाहु अन्हू कहते हैं कि मैंने सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि इखलास वालों केलिए खुशहाली हो कि वह हिदायत के चिराग हैं, उनकी वजह से सख्त से सख्त फितने दूर हो जाते हैं.

हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हू सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक्ल करते हैं कि जो शख्स चालीस दिन इखलास के साथ ऐसी नमाज़ पढे कि तकबीरे ऊला फौत ना हो (ना छूटे) तो उसको दो परवाने मिलते हैं; एक जहन्नम से छुटकारे का परवाना, दूसरा निफाक़ से बरी होने का परवाना. (तिर्मीज़ी)

मतलब यह कि जो इस तरह चालीस दिन इखलास से नमाज़ अदा करे कि शूरू ही से इमाम के साथ शरीक हो तो वह जहन्नम में दाखिल ना होगा ना मुनाफिकों में दाखिल होगा.

कितने खूश नसीब हैं वह लोग जिन्हें इखलास के साथ इबादत की तौफीक हो. इखलास के लिए तमाम अहले तरीक़त ने ज़िक्र को अमले मुजर्रब बतलाया है. यह हकीकत है कि इबादत में वज़न इखलास से पैदा होता है. जिस क़द्र इखलास होगा अमल उतना ही वज़नी होगा. इसी इखलास के पैदा करने के लिए मशाइख सूफिया की जूतीयाँ सीधी करनी पडती हैं. मशाइख का फैसला है कि तमाम आमाल में इखलास व खूशूअ और अल्लाह तआला से तअल्लुक व निसबत के लिए ज़िक्र से बढकर और कोई शै (चीज़) नहीं. अहादीस में मनकूल है कि ज़िक्र अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा करता है और मुहब्बत ही इस्लाम की रूह और दीन का मरकज़ है और सआदत व नजात का मदार (ज़रीआ) है. जो शख्स ये चाहता है कि अल्लाह तआला की मुहब्बत को अपना ले तो उसको चाहिए कि अल्लाह तआला के ज़िक्र की कसरत करे जिस तरह पढना और तकरार करना इल्म का दरवाज़ा है इसी तरह अल्लाह का ज़िक्र उसकी मुहब्बत का दरवाज़ा है.

जब बंदा ज़िक्र की कसरत से नफ्स, क़ल्ब (दिल) और रूह की सफाई पा लेता है तो उसका हर अमल इखलास और खुशूअ का नमूना बन जाता है. ज़िक्र से अल्लाह तआला की मारिफत का दरवाज़ा खुल जाता है. ज़िक्र अल्लाह के साथ हुज़ूरी (कुरबत) पैदा करता है. ज़िक्र से मुराकेबा नसीब होता है जो मर्तबए-एहसान तक पहुँचा देता है. यही मर्तबा है जिस में अल्लाह तआला की इबादत ऐसी नसीब होती है गोया अल्लाह तआला को देख रहा है. यही मर्तबा सूफीया-ए-किराम के मकसद की इंतेहा होता है और इसी ज़िक्र की बदौलत अल्लाह वालों की नमाज़ें आज भी हमारी तारीख का शाहकार हैं.

हज़रत राबेआ बसरी रहमतुल्लाहि अलैहा रात भर नमाज़ में मशगूल रहतीं. सुबह सादिक के बाद थोडी देर सो रहतीं और जब सुबह का सूरज अच्छी तरह रौशन हो जाता तो घबरा कर उठतीं और नफ्स को मलामत करतीं कि कब तक सोता रहेगा, करीब ही क़ब्र का ज़माना आने वाला है जिस में सूर फूंकने तक सोना ही होगा. जब मौत का वक्त करीब हुआ तो एक खादिमा को वसिय्यत फरमाई कि यह ऊनी गोदडी जिस को वह तहज्जुद

के वक्त पहना करती थीं इसी में मुझे कफन दे देना और किसी को मेरे मरने की खबर ना करना. चुनांचे वसिय्यत के मुताबिक तजहीज़ व तकफीन कर दी गई. बाद में उस खादिमा ने ख्वाब में देखा कि वह निहायत उम्दा लिबास पहनी हुई हैं. उसने पूछा वह आप की गोदडी क्या हुई जिस में कफन दिया गया था? फरमाया कि लपेट कर मेरे आमाल के साथ रख दी गई है. खादिमा ने दरख्वास्त की मुझे कोई नसीहत फरमाऐं. कहा कि अल्लाह का ज़िक्र जितना भी कर सको करती रहो क्यूँकि इसकी वजह से तुम क़ब्र में काबिले रश्क बन जाओगी.

हज़रत अत्तार रहमतुल्लाहि अलैह एक रोज़ बाझार तशरीफ ले गए. वहाँ एक दीवानी बांदी फरोख्त हो रही थी. उन्होंने खरीद ली. जब रात का कुछ हिस्सा गुज़रा तो वह दीवानी उठी और वज़ू करके नमाज़ शुरू कर दी और नमाज़ में उसकी यह हालत थी कि आंसूओं से दम घुटा जा रहा था. उसके बाद उसने कहा, ऐ मेरे माबूद ! आप को मुझ से मुहब्बत रखने की कसम, मुझ पर रहम फरमा दीजिए. हज़रत अत्तार रहमतुल्लाहि अलैह ने यह सुन कर फरमाया कि ऐ लौंडी! यूँ कह कि ऐ अल्लाह! मुझे आप से मुहब्बत रखने की कसम. यह सुन कर उसको गुस्सा आया और कहने लगी, उसके हक की कसम! अगर उसको मुझ से मुहब्बत ना होती तो तुम्हें यूँ मीठी नींद ना सुलाता और मुझे यूँ खडा ना करता. उसके बाद उसने यह अशआर पढे:

اَلْكَرْبُ مُجْتَمِعٌ وَ الْقَلْبُ مُحْتَرِق   وَ الصَّبْرُ مُفْتَرِقٌ وَ الدَّمْعُ مُسْتَبِق

(तर्जुमा) बेचैनी बढ रही है और दिल जल रहा है
दामने सब्र तार तार हो गया और आंसू बह रहे हैं

كَيْفَ الْقَرَارُ عَلٰى مَنْ لَا قَرَارَ لَهُ   مِمَّا جَنَاهُ الْهَوٰى وَ الشَّوْقُ وَ الْقَلَق

(तर्जुमा) उसे किस तरह करार आ सकता है जिस को इश्क व शौक
और बेचैनी के हमलों ने ज़रा भी चैन लेने ना दिया

يَا رَبِّ اِنْ كَانَ شَيْءٌ فِيْهِ لِيْ فَرَجٌ   فَامْنُنْ عَلَيَّ بِهِ مَا دَامَ بِيْ رَمَق

(तर्जुमा) या रब! अगर ऐसी कोई चीज़ हो सकती है जिस में गम
से नजात हो तो उस को ज़िंदगी में देकर मुझ पर एहसान फरमा

इसके बाद कहा, या अल्लाह! मेरा और आप का मुआमला अब राज़

नहीं रहा, मुझे उठा लिजीए. यह कह कर एक चीख मारी और मर गई.

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रदियल्लाहु अन्हू इशा की नमाज़ के बाद मुसल्ले (जानमाज़) पर बैठ जाते और दुआ के वास्ते हाथ उठाते और रोते रहते और दुआ में मशगूल रहते. कहते हैं कि खिलाफत के बाद से जनाबत के गुस्ल की नौबत नहीं आई.

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि अलैह दिन भर मसाइल में मशगूल रहने के बावजूद रात में तीन सौ रकअत नफ्ल पढते थे. हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैह एक रकअत में पूरा कुरआन शरीफ पढ लेते थे.

हज़रत साबित बन्नानी रहमतुल्लाहि अलैह इस क़द्र अल्लाह के सामने रोते थे कि हद नहीं. किसी ने अर्ज़ किया कि आंखें जाती रहेंगी. जवाब दिया कि इन आंखों से रोऐं नहीं तो फिर उन से फायदा ही क्या? और हमेशा यह दुआ करते थे कि या अल्लाह! अगर किसी को क़ब्र में नमाज़ पढने की इजाज़त हो सकती हो तो मुझे भी हो जाए.

हज़रत अबू सिनान रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि खुदा की कसम, मैं उन लोगों में था जिन्होंने साबित रहमतुल्लाहि अलैह को दफ्न किया. दफ्न करते हुए क़ब्र की एक ईंट गिर गई तो मैं ने देखा कि वह खडे नमाज़ पढ रहे हैं. मैंने अपने साथी से कहा देखो यह क्या हो रहा है. उसने मुझे कहा चुप हो जाओ. जब दफ्न कर चुके तो उनके घर जाकर उनकी बेटी से पूछा कि साबित रहमतुल्लाहि अलैह का अमल क्या था? बेटी ने कहा, क्यूँ पूछते हो? हम ने देखा हुआ किस्सा बयान किया. बेटी ने कहा, मेरे वालिद ने पचास बरस शब बेदारी की और सुबह को हमेशा यह दुआ किया करते थे कि या अल्लाह अगर तू किसी को यह दौलत अता करे कि वह क़ब्र में नमाज़ पढे तो मुझे भी अता फरमा.

हज़रत इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैह इल्मी मशगलों और क़ाज़ियुल कुज़ात (चीफ जस्टिस) होने के बावजूद रोज़ाना दो सौ रकअतें नवाफिल पढते थे.

हज़रत मुहम्मद बिन नस्र मुहद्दिस रहमतुल्लाहि अलैह इस इन्हेमाक से

नमाज़ पढते कि जिस की मिसाल मुश्किल है. एक मर्तबा पेशानी पर एक भिड ने काटा. खून भी निकल आया मगर नमाज़ में हरकत ना हुई ना खुशूअ व खुज़ूअ में कोई फर्क आया. आप के बारे में मशहूर है कि नमाज़ में लकडी की तरह खडे रहते थे.

हज़रत बाकी बिन मुखल्लद रहमतुल्लाहि अलैह रोज़ाना तहज्जुद और वित्र की तेरह रकअत में पूरा कुरआन शरीफ पढते थे.

हज़रत हन्नाद मुहद्दिस रहमतुल्लाहि अलैह बहुत ज़्यादा रोते थे. उनके एक शागिर्द कहते हैं कि एक मर्तबा सुबह को हमें सबक पढाते रहे. उसके बाद वज़ू वगैरा से फारिग होकर ज़वाल तक नफलें पढते रहे. दोपहर को घर तशरीफ ले गए और थोडी देर में आकर ज़ोहर की नमाज़ पढाई और अस्र तक नफ्लों में मशगूल रहे. फिर अस्र की नमाज़ पढाई और कुरआन पाक की तिलावत मगरिब तक फरमाते रहे. मगरिब के बाद में वापिस चला आया. मैंने उनके एक पडोसी से हैरत से पूछा कि यह शख्स किस क़द्र इबादत करने वाले हैं. पडोसी ने कहा सत्तर सालों से उनका यही अमल है और तुम उनकी रात की इबादत देखोगे तो और भी हैरत करोगे.

हज़रत सईद बिन अलमुसय्यब रदियल्लाहु अन्हू ने पचास बरस तक इशा और फजर एक ही वज़ू से पढी. हज़रत इमामे आज़म रदियल्लाहु अन्हू ने पचास बरस तक एक ही वज़ू से इशा और फजर की नमाज़ें पढीं. दोपहर को सिर्फ थोडी देर सोना आप का मामूल था. और यह फरमाते कि दोपहर के सोने का हदीस में हुक्म है.

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाहि अलैह का मामूल था कि रमज़ानुल मुबारक में साठ कुरआन शरीफ पढते थे. हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हू जब वज़ू फरमाते तो चहरे का रंग मुतगय्यर हो जाता था (बदल जाता था). किसी ने पूछा, यह क्या बात है? तो इर्शाद फरमाया कि एक बडे जब्बार बादशाह के हुज़ूर में खडे होने का वक्त आ गया है.

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रदियल्लाहु अन्हू रोज़ाना एक हज़ार नफ्ल रकआत पढते थे. तहज्जुद कभी सफर या हज़र में नागा नहीं हुआ. जब वज़ू करते तो चेहरा ज़र्द हो जाता था और जब नमाज़ को खडे होते तो बदन पर

लरज़ा (कपकपी) आ जाता. किसी ने पूछा तो फरमाया कि तुम्हें खबर नहीं कि किस के सामने खडा होता हूँ. एक मर्तबा नमाज़ पढ रहे थे कि घर में आग लग गई और यह नमाज़ में मशगूल रहे. लोगों ने पूछा तो फरमाया कि दुनिया की आग से आखिरत की आग ने गाफिल रखा.

हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हू के बारे में नक्ल किया गया है कि जब नमाज़ का वक्त आता तो चेहरे का रंग बदल जाता और बदन पर कपकपी आ जाती. किसी ने पूछा तो फरमाया कि उस अमानत के अदा करने का वक्त है जिस को आसमान व ज़मीन ना उठा सके और पहाड उसके उठाने से आजिज़ हो गए. मैं नहीं समझता कि उसको पूरा कर सकूँगा या नहीं.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा जब अज़ान की आवाज़ सुनते तो इस क़द्र रोते कि चादर तर हो जाती, रगें फूल जातीं, आंखें सुर्ख हो जातीं. हज़रत उवैस क़रनी रदियल्लाहु अन्हू बाज़ मर्तबा (कभी कभी) रुकू करते और तमाम रात इसी हालत में गुज़ार देते. कभी सज्दा करते और तमाम रात एक ही सज्दे में गुज़ार देते. इखलास के पैकर और सरापा खुशूअ अल्लाह वाले अपनी ज़िंदगी के जो अमली नमूने छोड गए वह आज भी हमारे लिए मीनारए-नूर हैं.

एक मर्तबा हज़रत सुफयान सौरी रदियल्लाहु अन्हू पर गलबए-हाल हुआ तो सात रोज़ तक घर में रहे, ना खाते थे ना पीते थे ना सोते थे. आप के शेख को इस वाकिए की इत्तला की गई. शेख ने पूछा कि नमाज़ के अवकात महफूज़ हैं या नहीं? लोगों ने अर्ज़ किया नमाज़ के अवकात बेशक महफूज़ हैं यानी नमाज़ वक्त पर पढते हैं. यह सुन कर शेख ने फरमाया :

“اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَجْعَلْ لِلشَّيْطٰنِ عَلَيْهِ سَبِيْلًا”

(तर्जुमा) तमाम तारीफ अल्लाह ही के लिए है जिसने शैतान को उस पर मुसल्लत ना होने दिया.

ज़िक्र के तहत मैंने इजमालन (मुख्तसर तौर पर) नमाज़ के भी कुछ आदाब व शराइत और अल्लाह वालों की नमाज़ों के ईमान अफ्रोज़ वाकेआत भी लिख दिए ताकि आम्मतुल मुसलिमीन नमाज़ के ज़रीए ज़िक्र की अज़मत व जलालत से वाक़िफ हो जाऐं.

आप ने अभी अभी मुतालेआ किया (पढा) कि जो नमाज़ इखलास, खुशूअ और हुज़ूरी-ए-क़ल्ब (पूरे दिल) से खाली है वह नमाज़ ही नहीं. नमाज़ के लिए इखलास, अल्लाह का खौफ और अल्लाह का ज़िक्र बेहद ज़रूरी है. किताब व सुन्नत पर अमल पैराई के दावेदार नमाज़ तो पढते हैं मगर किताब व सुन्नत के मुताबिक इखलास, तकवा और ज़िक्र को हासिल करने की कोशिश नहीं करते. कुरूने ऊला (पहले ज़माने) में एक काफिर और मुशरिक को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमाने मुबारक के हक़ (सच्चा) होने का जितना यकीन था उसका सौवाँ हिस्सा भी हम नाम निहाद (बराए नाम) मुसलमानों को नसीब नहीं.

रईसुल मुशरिकीन (मुशरिकों का सरदार) उबैय्य बिन खल्फ मक्का के मुशरिकीन में इस्लाम का बडा सख्त तरीन दुश्मन था. हिजरत से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा करता था कि मैंने एक घोडा पाला है, उसको बहुत कुछ खिलाता हूँ. उस पर सवार होकर (अल्लाह की पनाह) तुम को कत्ल करूँगा. हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा उस से फरमाया था कि इंशाअल्लाह मैं तुझ को कत्ल करूँगा. जंगे ओहद में वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तलाश करता फिरता था और कहता फिरता कि अगर वह आज बच गए तो मेरी खैर नहीं. चुनांचे हमले के इरादे से वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के करीब पहुंच गया. सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम ने चाहा भी कि दूर ही से किस्सा तमाम (खत्म) करदें. मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि आने दो. जब वह करीब आया तो सालारे आज़म सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी के हाथ से बर्छी लेकर मारा जो उसकी गर्दन पर लगा, और हल्की सी खराश आ गई मगर उस की वजह से घोडे से लुढकता हुआ गिरा और कई मर्तबा गिरता पडता भागा और अपने लशकर में पहुंच गया और चिल्लाता था कि खुदा की कसम मुझे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कत्ल कर दिया. कुफ्फार ने उसको इत्मेनान दिलाया कि मामूली सी खरोच है, कोई फिक्र की बात नहीं. मगर वह कहता था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का में कहा था कि मैं तुझ को

कत्ल करूँगा. खुदा की कसम वह मुझ पर थूक भी देते तो मैं मर जाता. लिखते हैं कि उसके चिल्लाने की आवाज़ ऐसी हो गई थी जैसे बैल की होती है.

अबू सुफयान ने जो इस लडाई में ज़ोरों पर था, इसको शर्म दिलाई कि इस ज़रा सी खरोच से इतना चिल्लाता है. उसने कहा तुझे खबर भी है यह चोट किस ने लगाई है. यह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ज़र्ब (मार) है. मुझे इस से जिस क़द्र तकलीफ हो रही है लात व उज़्ज़ा (काफिरों के बुत) की कसम! अगर यह तकलीफ सारे हिजाज़ (अरब) वालों को तकसीम करदी जाए तो सब हलाक हो जाएेंगे. मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुझ से मक्का में कहा था कि मैं तुझ को कत्ल करूँगा. मैंने उसी वक्त समझ लिया था कि मैं उनके हाथ से ज़रूर मारा जाऊँगा. मैं उनसे छूट नहीं सकता. अगर वह इस कहने के बाद मुझ पर थूक भी देते तो मैं उस से भी मर जाता. चुनांचे मक्का मुकर्रमा पहुंचने से एक दिन पहले वह रास्ते ही में मर गया.

हम मुसलमानों के लिए निहयात गैरत व इबरत का मकाम है कि एक काफिर पक्के काफिर और बदतरीन दुश्मन को तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादे गिरामी के सच्चा होने का इस क़द्र यकीन हो कि उसको अपने मारे जाने का ज़रा भी तरद्दुद या शक नहीं था. लेकिन हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात को यकीनी कहने के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत और इखलास के दावे के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में होने पर फख्र के बावजूद कितने इर्शादात पर अमल करते हैं और जिन बातों से आप ने मना फरमाया है उनसे कितना बचते हैं, कितना डरते हैं, कितना कांपते हैं. यह हर शख्स के अपने ही गिरेबान में मुँह डाल कर देखने की बात है, कोई दूसरा किसी के बारे में क्या कह सकता है.

अल्लाह तबारका व तआला का हुक्म है कि ﴿وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ﴾ (तर्जुमाः मेरे ज़िक्र के लिए नमाज़ कायम करो.) और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताकीद है कि इखलास तक़्वा और ज़िक्र के बगैर नमाज़ ही

नहीं होती. मगर हम मुसलमान हैं कि सब कुछ जानते हुए भी खुदा और रसूल के एहकामात पर अमल नहीं करते जिस का नतीजा ज़ाहिर है कि दुनिया की बदतरीन कौमों में हमारा शुमार होता है. वह कौनसी ज़िल्लत व रुसवाई है जो हमारे वुजूद से वाबस्ता नहीं. आज दुनिया में एक अरब से ज़्यादा मुसलमान होकर भी गैरों के मोहताज और मातहत हैं. वरना अल्लाह तआला का वादा है कि मोमिन ही ज़मीन के वारिस हैं. अल्लामा इकबाल रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि :

आलम है फक़त मोमिने जाँबाज़ की मीरास
मोमिन नहीं जो साहिबे लौलाक नहीं है

अल्लाह तआला की रेहमतें ईमान वालों के लिए वक्फ हैं और अहले ईमान वही लोग हैं जो दम भर के लिए भी अल्लाह तआला के ज़िक्र से गफलत नहीं बरतते. अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह हज, रूकू:५)

﴿وَ بَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ٥ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ﴾

(तर्जुमा) और आप (जन्नत वगैरा) की खुशखबरी सुना दिजीए. ऐसे खुशूअ करने वालों को जिन का यह हाल है कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल लरज़ जाते हैं.

दूसरी जगह अहले ईमान की यह खुसूसिय्यत बतलाई गई है कि

﴿رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ﴾

तर्जुमा: (कामिल ईमान रखनेवाले) वह ऐसे लोग हैं कि उनको अल्लाह के ज़िक्र से ना खरीद गफलत में डालती है ना फरोख्त. (सूरह नूर, रूकू:५)

अल्लाह का ज़िक्र तमाम आमाल में अफज़ल व अकमल और तमाम इबादात में इखलास व खुशूअ का सरचश्मा होने से हज़रत मूसा अलैहिस् सलाम व हज़रत हारून अलैहिस् सलाम को इर्शाद हुआ कि

﴿وَ لَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ﴾

(तर्जुमा) और मेरे ज़िक्र में सुस्ती ना करना. (सूरह ताहा, रूकू:३)

अरब व अजम पर हुक्मरानी करने वालों ने जब ज़िक्रे इलाही में सुस्ती पैदा की तो ज़िल्लत व रुसवाई उनका मुकद्दर बन गई. यही वह इबरत की

जगह है जहाँ अल्लामा इकबाल हमारा हमारे असलाफ का तकाबुल करते हुए रो पडे :

वह मुअज़्ज़ज़ थे ज़माने में मुसलमाँ होकर
और तुम ख्वार हुए तारिके कुरआँ होकर

कुरआन मजीद में जगह जगह अल्लाह तआला ने ज़िक्र से रगबत ईमान की निशानी और ज़िक्र से सुस्ती कुफ्र की निशानी बतलाई है. अहले ईमान की तारीफ में इर्शाद है कि : (सूरह रअद, रूकू:४)

﴾وَ يَهْدِیْ اِلَیْهِ مَنْ اَنَابَ ، الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ﴿

तर्जुमा : और जो शख्स अल्लाह की तरफ मुतवज्जह होता है उसको हिदायत फरमाते हैं. वह ऐसे लोग होते हैं जो अल्लाह पर ईमान लाऐ और अल्लाह के ज़िक्र से उनके दिलों को इत्मेनान होता है. खूब अच्छी तरह जान लो कि अल्लाह के ज़िक्र (में ऐसी खासिय्यत है कि उस) से दिलों को इत्मेनान हासिल होता है.

यह दिल का इत्मेनान और कामिल यकसूई ही थी कि सय्यदना अली कर्रमल्लाहु वजहहु के तीर लगते तो वह नमाज़ की हालत में निकाल लिए जातेऔर आपको खबर तक ना होती. काफिरों के बारे में अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह कहफ, रूकू:११)

﴾وَ عَرَضْنَا جَهَنَّمَ یَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِیْنَ عَرْضًا o الَّذِیْنَ كَانَتْ اَعْیُنُهُمْ فِیْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِیْ﴿

तर्जुमा : और हम दोज़ख को उस रोज़ (कयामत के दिन) काफिरों के सामने पेश कर देंगे जिन की आंखों पर हमारे ज़िक्र से पर्दा पडा हुआ था.

मतलब यह कि कयामत में काफिरों के सामने दोज़ख लाई जाएगी कि आज अपनी आंखों से अल्लाह तआला के ज़िक्र से इंकार और गफलत का नतीजा देखो और अपनी बद आमालीयों का खमियाज़ा भुगतो. शब बेदार अहले ज़िक्र (रात भर जाग कर ज़िक्र करने वालों) से मुखातबत है :

﴿تَتَجَافٰی جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ طَمَعًا وَّ مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُوْنَ ٥ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا اُخْفِیَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ جَزَاءً ۢبِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾

उनके पहलू ख्वाब गाहों (बिस्तरों) से अलाहिदा रहते हैं इस तरह पर कि अज़ाब के खौफ से और रेहमत की उम्मीद से वह अपने रब को पुकारते हैं और हमारी दी हुई चीज़ों में से खर्च करते हैं. पस कोई नहीं जानता कि ऐसे लोगों की आंखों की ठंडक का क्या क्या सामान गैब के खज़ाने में मेहफूज़ है जो बदला है उनके आमाल का. (सूरह सज्दा, रूकू:२)

कुरआन का दावा है कि अहले ईमान ज़ाकिरों के लिए मौला तआला ने जो नेमतें जमा कर रखी हैं उसका अंदाज़ा लगाना भी किसी इंसान के लिए मुमकिन नहीं. अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही बेहतर जानते हैं कि ज़िक्र करने वालों को मेहशर में क्या क्या मिलेगा. एक हदीस में आया है कि बंदा आखिर शब (रात के आखरी वक्त) में अल्लाह के यहाँ बहुत मुकर्रब होता है. अगर तुझ से हो सके तो उस वक्त अल्लाह का ज़िक्र किया कर. (जामिउस् सग़ीर)

अल्लाह वाले खूब जानते हैं कि अल्लाह के ज़िक्र से बढ कर कोई चीज़ नहीं. खुद अल्लाह तआला का फरमान है: ﴿وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ﴾ (सूरह अनकबूत, रूकू:५) और अल्लाह का ज़िक्र सब से बडा है.

यह अल्लाह के ज़िक्र की अज़मत व बुज़ुर्गी, खूबी व किब्रीयाई तो है कि ज़मीन व आस्मान का खालिक खुद हुक्म दे रहा है कि

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ٥ وَ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا﴾

(सूरह अहज़ाब, रूकू:६)

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह तआला का खूब कसरत से ज़िक्र किया करो और सुबह व शाम उसकी तसबीह करते रहो.

वो अहले ईमान से नहीं जो अल्लाह तआला के हुक्म से सरताबी करे (ना माने) और उसके ज़िक्र से गफलत बरते. वह लोग जो नमाज़ और जमाअत की पाबंदी करते तो हैं मगर अल्लाह तआला के ज़िक्र को अहमिय्यत नहीं देते वह यह फरमाने इलाही भी देख लें :

﴿فَوَيۡلٌ لِّلۡقٰسِيَةِ قُلُوۡبُهُمۡ مِنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ اُولٰٓـئِكَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ﴾

तर्जुमा : पस हलाकत है उन लोगों के लिए जिनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से मुतास्सिर नहीं होते, यह लोग खुली गुमराही में हैं. (सुरह ज़ुमर, रूकू: ३)

अहादीस में आया है कि जो शख्स ज़िक्र से गाफिल होता है वह माल व दौलत और हुकूमत के बावजूद ज़लील व ख्वार होता है. दिल में एक खास किस्म की क़सवत (सख्ती) है जो ज़िक्र के अलावा किसी चीज़ से भी नर्म नहीं होती. यही वजह है कि कुरआन में ज़िक्र से मुतास्सिर ना होने वालों को खुली गुमराही में मुब्तेला किया गया है. ज़िक्र करने वाले मर्दों और औरतों से कुरआन मुखातिब है :

﴿وَ الذّٰكِرِيۡنَ اللّٰهَ كَثِيۡرًا وَّ الذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةً وَّ اَجۡرًا عَظِيۡمًا﴾

तर्जुमा : और अल्लाह तआला का कसरत से ज़िक्र करने वाले मर्द और अल्लाह का ज़िक्र करने वाली औरतें इन सब के लिए अल्लाह तआला ने मगफिरत और अज्रे अज़ीम तयार कर रखा है. (सूरह अहज़ाब, रूकू:५)

खुश नसीब हैं वह मर्द और औरतें जिन्हें अल्लाह के ज़िक्र की तौफीक़ नसीब हुई और जिन्हें कुरआन मजीद में मगफिरत और अज्रे अज़ीम की बशारत (खुशखबरी) दी गई है.

ईमान की पहले शर्त तौहीद व रिसालत की शहादत (गवाही) और हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बेपनाह मुहब्बत है. हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत और आप की पैरवी में वही लोग कामयाब हुऐ हैं जिन्हें अल्लाह के ज़िक्र की तौफीक नसीब हुई. अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह अहज़ाब, रूकू: ३)

﴿لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِىۡ رَسُوۡلِ اللّٰهِ اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنۡ كَانَ يَرۡجُو اللّٰهَ وَ الۡيَوۡمَ الۡاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيۡرًا﴾

तर्जुमा : बेशक तुम लोगों के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेहतरीन नमूना हैं हर उस शख्स के लिए जो अल्लाह से और आखिरत से डरता और कसरत से अल्लाह तआला का ज़िक्र करता हो.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत ही नहीं बल्कि अल्लाह तआला की हिदायत भी उन्हीं को अता होती है जो उठते बैठते और लेटे हुए हर हाल में अल्लाह तआला के ज़िक्र को अपना ओढना बिछौना बना लेते हैं. अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह ज़ुमर, रूकूः ३)

﴿اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحۡسَنَ الۡحَدِيۡثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ تَقۡشَعِرُّ مِنۡهُ جُلُوۡدُ الَّذِيۡنَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ ثُمَّ تَلِيۡنُ جُلُوۡدُهُمۡ وَ قُلُوۡبُهُمۡ اِلٰى ذِكۡرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهۡدِىۡ بِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ﴾

तर्जुमा : अल्लाह तआला ने बडा उम्दा कलाम (कुरआन) नाज़िल फरमाया जो ऐसी किताब है जो बाहम मुशाबहत रखती है और बार बार पढी जाती है जिस से उन लोगों के बदन कांप उठते हैं जो अपने रब से डरते हैं तो उनके बदन और दिल नर्म (व गुदाज़) होकर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ मुतवज्जह हो जाते हैं. यह अल्लाह की हिदायत है जिस को चाहता है उसके ज़रीए से हिदायत फरमा देता है.

अल्लाह तआला का ज़िक्र वह बेश कीमती खज़ाना है जिस में दुनिया व आखिरत की तमाम नेमतें करीने (सलीके) से रख दी गई हैं. अब यह तालिबे मौला पर मुनहसिर (दार व मदार) है कि वह इस खज़ाने से जितना जी चाहे अपना हिस्सा उठा ले. खुदावंदे करीम व रहीम की आम रेहमत यह नहीं चाहती कि उसका बंदा दुनिया में मौजूद किसी तअल्लुक व रिश्ते के सबब उसके ज़िक्र से गाफिल रह जाए. यही वजह है कि मौला तआला ने अपने ज़िक्र को सब पर फज़ीलत दे कर यह बात वाज़ेह कर दी कि मेरे ज़िक्र से कोई शै बडी नहीं, जो बंदा मेरे ज़िक्र को किसी शै से तोलता है वह मेरी अज़मत व बुज़ुर्गी से वाकिफ नहीं. दुनिया व आखिरत में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मेरे ज़िक्र से बढ कर हो. मेरे ज़िक्र का तालिब ही मेरी नेमतों का हकदार है. जिस ने मेरे ज़िक्र से रूगर्दानी की (मुँह फेरा) वह मेरी रेहमतों से महरूम हो गया. पस तालिबे मौला को चाहिए कि दमबदम ज़िक्रे इलाही करता रहे ताकि हमेशा हमेशा रेहमते इलाही में करवटें बदलता रहे. चुनांचे अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह मुनाफिकून, रूकूः २)

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَ لَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذَالِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخَاسِرُوْنَ﴾

ऐ ईमान वालो! तुम को तुम्हारे माल और औलाद अल्लाह के ज़िक्र से गाफिल ना करने पाऐं और जो लोग ऐसा करेंगे वही नुकसान उठाने वाले होंगे (क्यूँकि माल जायदाद औलाद वगैरा सारी चीज़ें तो दुनिया ही में खत्म हो जाने वाली हैं और अल्लाह तआला का ज़िक्र अब्दल आबाद (हमेशा हमेशा) काम देने वाला है.)

बाकी और कायम रहने वाली दौलत को छोड कर फानी और हादिस (खत्म होने वाली) चीज़ों को जमा करने वाला बदनसीब नहीं तो और क्या है? इसके बरखिलाफ जिसने ज़िक्रे इलाही को अपनी एक एक सांस का अमीन और मुहाफिज़ बना लिया वह यह जंग जीत गया. अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह आला, रूकूः१)

﴿قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ، وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى﴾

तर्जुमा : बेशक कामयाब हो गया वह शख्स जो पाक हो गया और अपने रब के नाम का ज़िक्र करता रहा और नमाज़ पढता रहा.

हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अन्हू हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक्ल करते हैं कि 'तज़क्का' से मुराद यह है कि ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की तसदीक करे और बुतों को खैरबाद कहे. हज़रत इकरीमा रदियल्लाहु अन्हू और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से भी 'तज़क्का' के मायना इस कलमए-तय्यबा की गवाही बयान की गई है.

ऊपर की आयत से यह बात वाज़ेह हो गई कि जिसने कलमए-तय्यबा का ज़बान से इकरार किया दिल से तसदीक की और कलमए-तय्यबा पर अफने तमाम आज़ा (जिस्मानी हिस्सों) के साथ अमल किया वह ईमान की लज़्ज़त पा गया. ईमान के साथ साथ अल्लाह तआला का ज़िक्र भी करता रहा और इखलास व खुशूअ के साथ नमाज़ भी पढता रहा तो यकीनन वह अपनी मंज़िले मकसूद तक पहुंच गया. यह हकीकत है कि दुनिया के तमाम कारोबार में अल्लाह तआला को उसके ज़िक्र के सिवा कोई और चीज़ पसंद

नहीं. अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह जुमा, रूकूः २)

﴿فَاِذَا قُضِیَتِ الصَّلَاۃُ فَانۡتَشِرُوۡا فِی الۡاَرۡضِ وَ ابۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِ اللّٰہِ وَ اذۡکُرُوا اللّٰہَ کَثِیۡرًا لَّعَلَّکُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ﴾

तर्जुमा : फिर जब (जुमा की) नमाज़ पूरी कर चुको तो ज़मीन पर फैल जाओ और खुदा का फज़्ल (यानी रोज़ी) तलाश करो और अल्लाह तआला का कसरत से ज़िक्र करते रहो ताकि तुम फलाह (कामयाबी) को पहुंच जाओ.

नमाज़, रोज़ा, हज और जिहाद वगैरा तमाम आमाल में अल्लाह तआला अपने ज़िक्र की ताकीद फरमा रहे हैं. वह लोग जो नमाज़ वगैरा तो पढते हैं मगर ज़िक्र को कोई अहमिय्यत नहीं देते उन्हें जान लेना चाहिए कि ज़िक्र से रूगर्दानी (मुँह फेरना) बडा भारी गुनाह है. अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह मुजादेला, रूकूः ३)

﴿اِسۡتَحۡوَذَ عَلَیۡہِمُ الشَّیۡطٰنُ فَاَنۡسٰہُمۡ ذِکۡرَ اللّٰہِ ، اُولٰٓئِکَ حِزۡبُ الشَّیۡطٰنِ اَلَاۤ اِنَّ حِزۡبَ الشَّیۡطٰنِ ہُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ﴾

तर्जुमा : (पहले से मुनाफिकों का ज़िक्र है) उनपर शैतान का तसल्लुत (कब्ज़ा) हो गया. पस शैतान ने उनको अल्लाह के ज़िक्र से गाफिल कर दिया, यह लोग शैतान का गिरोह हैं, खूब समझ लो, यह बात यकीनी है कि शैतान का गिरोह नुकसान वाला है.

किस क़द्र इबरत का मकाम है कि ज़िक्र से गफलत बरतने वालों को शैतानी गिरोह कहा गया और इस गिरोह का अंजाम खसारा (नुकसान) तो है ही, गाफिलीन (गफलत वालों) की दूसरी सज़ा भी देख लिजीए. अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह जिन्न, रूकूः १)

﴿وَ مَنۡ یُّعۡرِضۡ عَنۡ ذِکۡرِ رَبِّہٖ یَسۡلُکۡہُ عَذَابًا صَعَدًا﴾

(और जो अल्लाह के ज़िक्र से मुँह फेरले अल्लाह उसे सख्त अज़ाब में चलाएगा.)

अल्लाह के ज़िक्र से मुँह फेर लेने वालो! आओ दिल व निगाह पर

मोहर ना लगी हो तो गौर से यह फरमाने हक पढो और सोचो कि ज़िक्र को नज़र अंदाज़ करने का बदला क्या है : (सूरह ज़ुखरुफ, रूकूः४)

﴿وَ مَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰـنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ﴾

तर्जुमा : जो शख्स रहमान के ज़िक्र से अंधा हो जाए हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, पस वह हर वक्त उसके साथ रहता है.

आखिर में इतना कुछ लिखने के बाद मैं अपने दीनी भाईयों से यही कहूँगा कि क्या अब भी वक्त नहीं आया कि खुलूसे दिल से मौला तआला के ज़िक्र को अपनाकर दुनिया व आखिरत की कामयाबी पा लें?

﴿أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِيْنَ آمَنُوْا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ﴾

(तर्जुमा) क्या ईमान वालों के लिए इसका वक्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र के लिए झुक जाऐं. (सूरह हदीद, रूकूः२)

अल्लाह तआला अपने हबीब खलील सय्यदना व मौलाना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, व हमा (और तमाम) पीराने तरीकत रदियल्लाहु अन्हुम के वसीले से हर कलमा गो (कलमा पढने वाले) मुसलमान को अपने ज़िक्र की लज़्ज़त व मिठास से सरफराज़ फरमाए. आमीन सुम्मा आमीन

वह लोग जिन की यह आदत है कि बुज़ुर्गाने दीन की हर बात को मलामत का निशाना बनाऐं और सूफिया की तालीमात पर ऐतेराज़ करें और हर मुआमले में कुरआन का हवाला तलब करें, हम ने ऐसे हज़रात के लिए कुरआन की नूरानी आयतें खोल कर बयान करदीं. अब शमए रिसालत के परवानों के लिए अहादीस के ज़खीरे से अल्लाह तआला के ज़िक्र के बारे में हकीकत रौशन करने वाली हिदायात पेश कर रहे हैं.

हदीस शरीफ की कोई किताब भी ऐसी नहीं कि इस मुबारक ज़िक्र से खाली हो इस लिए तमाम अहादीस का बयान करदेना मुमकिन नहीं, हां नमूने के लिए एक आयत और एक हदीस भी काफी है. और जिसको अमल नहीं करना है उसके लिए दफतर के दफतर भी बेकार हैं.

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम से नक्ल करते हैं कि दुनिया मलऊन (लानत की हुई जगह) है और जो कुछ दुनिया में है सब मलऊन है मगर अल्लाह का ज़िक्र और वह चीज़ जो उसके करीब हो और आलिम और तालिबे इल्म. (तिर्मीज़ी, इब्ने माजह, बैहक़ी)

दुनिया और दुनिया के कारोबार में अल्लाह तआला को ज़िक्र और ज़िक्र से करीब यानी वाबस्ता उमूर और आलिम और तालिबे इल्म के सिवा कोई चीज़ पसंद नहीं, ज़िक्र वह अज़ीम चीज़ है कि उसकी बदौलत मलऊन दुनिया मेहबूब बन सकती है. एक हदीस में आया है कि :

''मैं ऐसी जमाअत के साथ बैठूँ जो सुबह की नमाज़ के बाद आफताब निकलने तक अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल हो, मुझे ज़्यादा पसंद है इससे कि चार अरब गुलाम आज़ाद करूँ. इसी तरह ऐसी जमाअतों के साथ बैठूँ जो असर की नमाज़ के बाद से गुरूब तक अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल रहे यह ज़्यादा पसंद है चार गुलाम आज़ाद करने से.''

एक हदीस में है कि जो शख्स सुबह की नमाज़ जमाअत से पढे फिर सूरज निकलने तक अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल रहे और फिर दो रकअत नफ्ल पढे, उसको ऐसा सवाब मिलेगा जैसा कि हज और उम्रा पर मिलता है और हज और उम्रा भी वह जो कामिल हो.

एक हदीस में आया है कि मैं एक जमाअत के साथ सुबह की नमाज़ के बाद से सूरज निकलने तक ज़िक्र में मशगूल रहूँ यह मुझे दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा मेहबूब है, इसी तरह असर की नमाज़ के बाद से गुरूब तक एक जमाअत के साथ ज़िक्र में मशगूल रहूँ, यह मुझे दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा पसंद है. इन्ही वुजूहात से सुबह की नमाज़ के बाद और असर की नमाज़ के बाद औराद (वज़ीफों) का मामूल है और हज़राते सूफिया के यहाँ तो इन दोनों वक्तों का खास एहतेमाम है कि सुबह की नमाज़ के बाद अज़कार व अशगाल (ज़िक्र व वज़ीफों) में एहतेमाम फरमाते हैं और असर के बाद औराद का एहतेमाम फरमाते हैं.

मुदव्वनह में मालिक रहमतुल्लाहि अलैह से नक्ल किया गया है कि फजर की नमाज़ के बाद सूरज के निकलने तक बातें करना मकरूह है. और हनफिया (किताब) में है साहिबे दुर्रे मुख्तार ने भी इस वक्त बातें करना

मकरूह लिखा है

हज़रत अब्दुर् रहमान बिन सुहैल बिन हनीफ रदियल्लाहु अन्हु ने नक्ल किया है कि नबी-ए-मोहतरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर तशरीफ फरमा थे कि आयते पाक : (सूरह कहफ, रूकू:४)

﴿وَ اصْبِرْ نَفْسَکَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَ لَا تَعْدُ عَیْنَاکَ عَنْهُمْ تُرِیْدُ زِیْنَةَ الْحَیَاةِ الدُّنْیَا وَ لَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِکْرِنَا وَ اتَّبَعَ هَوٰهُ وَ کَانَ أَمْرُهٗ فُرُطًا﴾

(तर्जुमा) आप अपने आप को उन लोगों के साथ बैठने का पाबंद रखा किजीए जो सुबह शाम अपने रब को पुकारते हैं (उसका ज़िक्र करते हैं). सिर्फ उसकी रज़ा हासिल करने के लिए और सिर्फ दुनिया की रौनक के खयाल से आप की नज़र (और तवज्जोह) उनसे हटने ना पाऐ (दुनिया की रौनक से यह मुराद है कि रईस व अमीर मुसलमान हो जाऐं तो इस्लाम को फरोग़ हो) और आप ऐसे शख्स का कहना ना मानें जिसका दिल हम ने अपने ज़िक्र से गाफिल रखा है. और वह अपनी ख्वाहिशात का गुलाम है और उसका हाल हद से बढ गया है.

जब यह आयत नाज़िल हुई तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों की तलाश में निकले एक जमाअत को देखा कि अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल है. कुछ लोग उनमें बिखरे हुए बालों वाले हैं और खुश्क खालों वाले और सिर्फ एक कपडे वाले हैं (कि नंगे बदन सिर्फ एक लुंगी उनके पास है) जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको देखा तो उनके पास बैठ गए और इर्शाद फरमाया कि : ''तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिस ने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फरमाए कि खुद मुझे उनके पास बैठने का हुक्म है.'' (इब्ने जरीर, तबरानी, इब्ने मर्दवैह)

एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको तलाश फरमाया तो मस्जिद के आखरी हिस्से में बैठे हुए पाया कि अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल थे, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं कि जिसने मेरी ज़िंदगी ही में

ऐसे लोग पैदा फरमाए कि मुझे उनके पास बैठने का हुक्म है. फिर फरमाया : तुम ही लोगों के साथ ज़िंदगी है और तुम्हारे ही साथ मरना है. यानी जीने और मरने के साथी और रफीक तुम ही लोग हो.

अल्लाह तआला की बंदगी और रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत का दावा करने वालो, सुनो! यह कैसी रूह परवर, ईमान अफ्रोज़ और दिल व जान नवाज़ खुशखबरी है कि अल्लाह के हबीब व खलील अफज़लुल अंबिया ताजदारे असफिया सय्यदना व मौलाना अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों को तलाश फरमा रहे हैं, उनके साथ अपनी हम नशीनी और रिफाकत (साथ बैठने) पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा फरमा रहे हैं, जिनकी एक झलक देख लेना अहले ईमान के मुहब्बत की मेराज है. वह ज़ाकिरीन को तलाश फरमाकर अपनी खुशनूदी और अपनी हम नशीनी की बशारत (खुशखबरी) दे रहे हैं. अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर मर मिटने वालों के लिए क्या ज़िक्र की फज़ीलत के लिए किसी और बयान की ज़रूरत बाकी है?

एक हदीस में है कि हज़रत सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हू वगैरा सहाबा किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम की एक जमाअत अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल थी कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए तो यह लोग चुप हो गए, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम लोग क्या कर रहे थे? अर्ज़ किया ज़िक्रे इलाही में मशगूल थे. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मैंने देखा कि रहमते इलाही तुम लोगों पर उतर रही है, तो मेरा दिल भी चाहा कि अगर तुम्हारे साथ शिरकत करूँ. फिर इर्शाद फरमाया कि अलहम्दु लिल्लाह, अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा किए जिन के पास बैठने का मुझे हुक्म हुआ.

इब्राहीम नखई रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि ﴿الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ﴾ से मुराद ज़िक्र करने वालों की जमाअत है. कुरआन व अहादीस के इन्ही जैसे अहकाम से सूफिया ने यह कायदा बनाया कि मशाइख को भी मुरीदीन के

पास बैठना ज़रूरी है, इसके अलावा दिलों के इज्तेमा को अल्लाह तआला की रहमत व राफत के मुतवज्जह करने में खास दखल है.

शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिसे दहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने किताब 'हुज्जतुल्लाहिल् बालिगह' में कई जगहों पर इस मज़मून को एहतेमाम से इर्शआद फरमाया है. यह सब उस जमाअत के बारे में है जो अल्लाह का ज़िक्र करने वाली हो कि अहादीस में कसरत से इसकी तरगीब आई है. इस के खिलाफ अगर कोई शख्स गाफिलों की जमाअत में फंस जाए और उस वक्त ज़िक्र में मसरूफ हो तो उस के बारे में भी अहादीस में कसरत से फज़ीलतें आई हैं.

ऐसे मौके पर आदमी को और भी ज़्यादा एहतेमाम और तवज्जोह के साथ अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल होना चाहिए ताकि उनकी नहूसत से महफूज़ रहे. अहादीस में आया है कि गाफिलों की जमाअत में अल्लाह का ज़िक्र करने वाला ऐसा है जैसा कि जिहाद में भागने वालों की जमाअत में से कोई जम कर मुकाबला करे.

एक हदीस में है कि गाफिलों में ज़िक्र करने वाला ऐसा है जैसा भागने वालों की तरफ से कुफ्फार का मुकाबला करे, और वह ऐसा है जैसे अंधेरे घर में चराग, और वह ऐसा है जैसे पतझड वाले दरख्तों में कोई सरसब्ज़ व शादाब दरख्त हो. ऐसे शख्स को अल्लाह तआला उस जन्नत का घर पहले ही दिखा देंगे और हर आदमी और हैवान के बराबर उसकी मगफिरत की जाएगी.

सिलसिलए-आलिया क़ादरीया क़दीरीया से वाबस्ता लाखों मुरीदीन गौर फरमाऐं कि अल्लाह तआला ने हमें सय्यदी व सनदी व मुर्शिदी व मौलाई हुज़ूर ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी रहमतुल्लाहि अलैह के ज़रीए कलमए-तय्यबा पर अमल की लाज़वाल दौलत के साथ उठते बैठते सोते जागते हर दम और हर हाल में ज़िक्र बिलक़ल्ब की वह सरमदी मताए बेबहा (अबदी दौलते बेश कीमत) अता फरमाई कि हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिसदाक अल्लाह तआला के बेपनाह अलताफ व इनायात के हकदार होंगे. आज गुनाहों से भरी हुई इस दुनिया में जहाँ हर तरफ गाफिलों के सिवा कोई नहीं आप जहाँ भी ठहर कर ज़िक्र करेंगे

इंशाअल्लाह तआला हदीस शरीफ के मुताबिक रहमते इलाही के हकदार होंगे.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो तुम में से रातों को मेहनत करने का काबिल ना हो और कंजूसी की वजह से माल भी खर्च नहीं किया जाता हो और बुज़दिली की वजह से जिहाद में भी शिरकत ना कर सकता हो उसको चाहिए कि अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करे.

(तबरानी, बैहक़ी, बज़्ज़ाज़)

आज के पुर आशूब (फितने भरे) दौर में जबकि जिहाद, ज़कात और नफ्ल इबादतें बराए नाम रह गई हैं, अल्लाह का ज़िक्र अल्लाह की कितनी बडी नेमत है कि उससे हर किस्म की कोताहियों की तलाफी हो जाती है.

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि अल्लाह का ज़िक्र ईमान की अलामत है और निफाक से बरी होना है, शैतान से हिफाज़त है और आग से बचाव है.

इन्ही फायदों की वजह से अल्लाह का ज़िक्र बहुत सी इबादतों से अफज़ल करार दिया गया है, खास तौर पर शैतान के गलबे से बचने में इसका खास फायदा है. एक हदीस में आया है कि शैतान घुटने जमाए हुए आदमी के दिल पर मुसल्लत रहता है, जब वो अल्लाह का ज़िक्र करता है तो ये आजिज़ व ज़लील होकर पीछे हट जाता है, आदमी गाफिल होता है तो यह वसवसे डालना शुरू कर देता है, इसी लिए सूफिया-ए-किराम ज़िक्र की कसरत कराते हैं ताकि दिल में शैतान के वसवसों की गुंजाइश ना रहे और दिल इतना क़वी (मज़बूत) हो जाए कि शैतान का मुकाबला कर सके.

यही राज़ है कि सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फैज़ाने सोहबत से यह कुव्वते क़ल्बिया (दिल की कुव्वत) आला दर्जे पर हासिल थी कि उनको ज़र्बें लगाने की ज़रूरत पेश ना आती थी, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने से जितनी दूरी होती गई उतनी ही क़ल्ब के लिए इस मुक़व्विए-क़ल्ब खमीरा (ऐसी दवा जो दिल को कुव्वत बख्शे) की ज़रूरत बढती गई. अब

कुलूब इस हद तक माउफ हो चुके हैं कि बहुत से इलाज से भी कुव्वत का वह दर्जा तो हासिल नहीं होता लेकिन जितना भी हो जाता है बहुत गनीमत है.

एक बुज़ुर्ग का किस्सा नक्ल किया जाता है कि उन्होंने अल्लाह तआला से दुआ की कि शैतान के वसवसे डालने की सूरत उन पर ज़ाहिर हो जाए कि किस तरह वसवसा डालता है तो उन्होंने देखा कि दिल के बाऐं तरफ मूँढे के पीछे मच्छर की शक्ल से बैठा हुआ है, एक लंबी सूंड मुँह पर है जिसको सूई की तरह से दिल की तरफ ले जाता है, दिल को ज़िक्र करने वाला पाता है तो जल्दी से सूंड को खींच लेता है और दिल को गाफिल पाता है तो उस सूंड के ज़रीए वसवसे और गुनाहों का ज़हर दिल के अंदर दाखिल कर देता है.

एक हदीस में भी यह मज़मून आया है कि शैतान अपनी नाक का अगला हिस्सा आदमी के दिल पर रखे हुए बैठा रहता है, जब वो अल्लाह का ज़िक्र करता है तो ज़िल्लत से पीछे हट जाता है और जब वह गाफिल होता है तो उसके दिल को लुकमा बना लेता है.

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया किः अल्लाह तआला का फरमान है कि मैं अपने बंदे के साथ वैसा ही मुआमला करता हूँ जैसा कि वह मेरे साथ गुमान रखता है और जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ, बस अगर वह मुझे अपने दिल से याद करता है तो मैं भी उसको अपने दिल में याद करता हूँ और अगर वह मजमा में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं इस मजमा से बेहतर (यानी फरिश्तों के) मजमा में ज़िक्र करता हूँ. अगर बंदा मेरी तरफ एक बालिश्त मुतवज्जह होता है तो मैं एक हाथ इसकी तरफ मुतवज्जह हो जाता हूँ, और अगर वह एक हाथ बढाता है तो में दो हाथ उसकी तरफ मुतवज्जह होता हूँ और अगर वो मेरी तरफ चल कर आता है तो मैं उस की तरफ दौड कर आता हूँ. (बुखारी, मुस्लिम, इमाम अहमद, तिर्मीज़ी, नसाई, इब्ने माजह, बैहक़ी)

हदीस शरीफ से यह बात वाज़ेह हो गई कि अल्लाह तआला अपने बंदे के साथ उसके गुमान कि मुवाफिक मुआमाल करता है, जब यह बात साबित हो गई तो किसी भी हालत में अल्लाह तआला के लुत्फ व करम की उम्मीद

करनी चाहिए और उसकी रेहमत से कभी भी मायूस ना होना चाहिए. हम लाख गुनाहगार सही लेकिन मालिकुल मुल्क की रेहमत भी महदूद नहीं, गुलाम को हमेशा अपने आका के लुत्फ व करम की उम्मीद रखनी चाहिए. किसी आरिफ ने क्या अच्छी बात कही है :

शाहा ज़े करम बर मन दरवेश निगर
बर हाले मन खस्ता व दिल रेश निगर
हर चंद नीम लायके बखशाइशे तू
बर मन मनगर बर करमे ख्वेश निगर

यानी ऐ शहंशाहे ज़मीन व आस्मान अपने करम से मुझ फकीर को देख, मेरी खस्ता हाली और टूटे हुए दिल पर नज़र फरमा, अगरचे कि मैं तेरी बखशिश के लायक नहीं हूँ लेकिन ऐ करीम व कारसाज़ तू मुझे नहीं बल्कि अपने करम को देख और मेरी बखशिश फरमा. आमीन

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि वह अगर मुझे दिल में याद करता है तो मैं भी उसको अपने दिल में याद करता हूँ. अगर वह मेरी तरफ चल कर आता है तो मैं उसकी तरफ दौड कर चलता हूँ. अल्लाह मशाइख पर अपनी रेहमते कामिला नाज़िल फरमाए. दीन को और अल्लाह तआला के मंशा को जैसा इन हज़रात ने समझा उसकी मिसाल मुमकिन नहीं.

उलमा-ए-दीन एक मुसलमान को फराइज़ व वाजिबात की अदाई के बाद ज़बानी ज़िक्र व तिलावत के फायदे बता सकते हैं, नफ्स, क़ल्ब और रूह व सिर्र की कुंजी तो सिर्फ मशाइख रखते हैं. जो मुरीद ज़बान से, क़ल्ब से, रूह से अपने तमाम वुजूद से अल्लाह तआला को याद कर रहा हो उसे मौला तआला भी किस किस अंदाज़ से याद फरमाएगा, उसकी लज़्ज़त तो अहले तरीकत ही जानते हैं.

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि मेरा बंदा जब तक मुझे याद करता रहता है मैं उसके हमराह होता हूँ. वह खुश नसीब जिन को अपने मशाइख से ज़िक्र बिलक़ल्ब की दौलत नसीब होती है और जिन की हर सांस अपने माबूद के ज़िक्र में खर्च होती है इस से बढकर अल्लाह तआला के कुर्ब व साथ की दौलत और कौन पा सकता है. यही वजह है कि औलिया अल्लाह को

﴿لَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَ لَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ﴾ के लाफानी एज़ाज़ से नवाज़ा गया.

हज़रत अबूदरदा रदियल्लाहु अन्हू से मनकूल है कि एक मर्तबा सय्यदुल कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम से इर्शाद फरमाया कि क्या मैं तुम को ऐसी चीज़ ना बताऊँ जो तमाम आमाल में बेहतरीन चीज़ है और तुम्हारे मालिक के नज़दीक सब से ज़्यादा पाकीज़ा और तुम्हारे दर्जों को बहुत ज़्यादा बलंद करने वाली और सोने और चांदी को (राहे खुदा में) खर्च करने से भी ज़्यादा बेहतर और (जिहाद में) तुम दुश्मनों को कत्ल करो वह तुम को कत्ल करें इस से भी कहीं बढ कर हो? सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया ज़रूर बतलाइए. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया : (वह) अल्लाह का ज़िक्र है.

यूँ तो अहादीस में सदका, जिहाद वगैरा की भी बहुत बडी फज़ीलत बयान की गई है लेकिन उनकि ज़रूरतें वक्ती हैं और अल्लाह तआला का ज़िक्र दाइमी है, और सब से ज़्यादा अहम और सब से ज़्यादा अफज़ल है.

एक हदीस में आया है कि हर चीज़ के लिए एक सीक़ल (मैल कुचैल साफ करने वाली चीज़) होती है और दिलों की सफाई करने वाली चीज़ (सीक़ल) अल्लाह का ज़िक्र है. और कोई चीज़ अल्लाह के ज़िक्र से बढ कर अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाली नहीं. हदीस में चूंकि ज़िक्र को दिल की सफाई का ज़रीया बताया गया है, उस से भी अल्लाह के ज़िक्र का सब से अफज़ल होना साबित होता है, इसलिए कि हर इबादत में उसी वक्त इबादत हो सकती है जब इखलास से अदा हो, और इखलास का दारो-मदार दिलों की सफाई पर है, इसी वजह से सूफिया ने कहा है कि इस हदीस में ज़िक्र से मुराद ज़िक्रे क़ल्बी है ना कि ज़िक्रे लिसानी, और ज़िक्रे क़ल्बी यह है कि दिल हर वक्त अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल हो जाए और इसमें क्या शक है कि यह हालत इबादतों से अफज़ल है. इस लिए कि जब यह हालत हो जाए तो फिर कभी इबादत छूट ही नहीं सकती कि सारे ज़ाहिरी व बातिनी जिस्मानी आज़ा (हस्से) दिल के ताबेअ हैं और दिल जिस चीज़ के साथ वाबस्ता हो जाता है सारे ही आज़ा (हिस्से) उसके साथ हो जाते हैं.

ममलिकते बदन में किसी अज़्व (हिस्से) की मजाल नहीं कि

सुलतानुल आज़ा (हिस्सों का सरदार) की हुक्म अदूली करे और यह मशहूर बात है कि रिआया अपने बादशाह के दीन व मिल्लत पर अमल पैरा होती है, काश इबादत करने वाले दिल का मकाम भी जानें. मेरे हुज़ूर क़िब्ला मुर्शिदी व मौलाई हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी व चिश्ती व यमनी मद्द ज़िल्लहुल आली अपने मुरीदीन को अफज़लुज़् ज़िक्र कलमा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'', इस तरह बिलक़ल्ब अदा करवाते हैं कि दिल की हर धडकन तौहीद व रिसालत की शहादत देने लगती है. यह ज़िक्र बिलक़ल्ब का ही एजाज़ है कि आज भी सैंकडों अहले सिलसिला नींद की हालत में भी कलमए-तय्यबा के ज़ाकिर हैं. किसी आरिफ ने क्या खूब कहा है :

नफस की आमद व शुद है नमाज़े अहले यकीन
जो यह क़ज़ा हो तो फिर दोस्तो क़ज़ा समझो

हज़रत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हू रावी हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख्स अल्लाह पाक का ज़िक्र करता है और जो नहीं करता उन दोनों की मिसाल ज़िंदा और मुर्दे की सी है कि ज़िक्र करने वाला ज़िंदा है और ज़िक्र ना करने वाला मुर्दा है.

(बुखारी, मुस्लिम, बैहक़ी)

हुज़ूर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो अल्लाह तबारक व तआला का ज़िक्र नहीं करता वह ज़िंदा भी मुर्दे हि के हुक्म में है. उसकी ज़िंदगी भी बेकार है.

ज़िंदगी नतवाँ अस्त हयाते कि मरा
ज़िंदा आनस्त कि बा दोस्त विसाले दारद

हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं :

''قَالَ اَكْثِرُوْا ذِكْرَ اللّٰهِ حَتّٰى يَقُوْلُوْا مَجْنُوْنٌ''

कि अल्लाह का ज़िक्र ऐसी कसरत से किया करो कि लोग मजनून कहने लगे.

''اُذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا يَقُوْلُ الْمُنَافِقُوْنَ اِنَّكُمْ مُّرَاؤُوْنَ''

(तर्जुमाः अल्लाह का ज़िक्र ऐसे करो कि मुनाफिकीन देख कर कहे कि तुम तो दिखावा कर रहे हो. (तबरानी, बैहक़ी)

हज़रत अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हू रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने इर्शाद फरमाया कि अल्लाह का ज़िक्र ऐसी कसरत से किया करो कि लोग तुम्हें मजनून कहने लगें. एक हदीस में आया है कि ऐसा ज़िक्र करो कि मुनाफिक तुम्हें रियाकार कहने लगें.

ताकीद है कि इतनी कसरत से अल्लाह पाक का ज़िक्र करो कि लोग दीवाना बोल उठें. दूसरा मतलब यह है कि बेवकूफों और मुनाफिकों के पागल या रियाकार कहने से ऐसी बडी दौलत छोडना ना चाहिए बल्कि इस कसरत और एहतेमाम से अल्लाह का ज़िक्र करना चाहिए कि लोग तुम को पागल समझ कर तुम्हारा पीछा छोड दें, और दीवाना जब ही कहा जाएगा जब निहायत कसरत और पूरी यकसूई के साथ ज़िक्र हो और ज़िक्र के सिवा किसी और चीज़ का होश ना रहे.

इब्ने कसीर रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हू से नक्ल किया है कि हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने कोई चीज़ बंदों पर ऐसी फर्ज़ नहीं फरमाई जिस की कोई हद मुक़र्रर ना करदी हो और फिर उसके उज़्र को कबूल ना फरमा लिया हो बजुज़ अल्लाह के ज़िक्र के. ना उसकी कोई हद मुक़र्रर फरमाई ना अक्ल रहने तक किसी को माज़ूर करार दिया. चुनांचे अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿اُذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا﴾

अल्लाह पाक का खूब कसरत से ज़िक्र किया करो. रात में, दिन में, जंगल में, दरया में, सफर में, हज़र में, फक्र में, मालदारी में, बीमारी में, सेहत में, आहिस्ता पुकार कर दिल में खयाल में उठते बैठते और लेटे हुए हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र जारी व सारी रहे.

इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैह ने किताब 'मुनब्बिहात' में लिखा है कि हज़रत सय्यदना उसमान रदियल्लाहु अन्हू से ﴿وَ كَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَّهُمَا﴾ के बारे में मनकूल है कि वह सोने की एक तख्ती थी जिस में सात सतरें (लाइनें) लिखी हुई थीं जिनका तर्जुमा यह है :

१)	मुझे तअज्जुब है उस शख्स पर जो मौत को जानता हो फिर हंसता हो.

२)	मुझे तअज्जुब है उस शख्स पर जो यह जानता हो कि दुनिया आखिर एकदिन खत्म होने वाली है फिर भी उसमें रगबत करे.

३)	मुझे हैरत है उस शख्स पर जो यह जानता हो कि हर चीज़ मुक़द्दर से है फिर भी किसी चीज़ के जाते रहने पर अफसोस करे.

४)	मुझे हैरत है उस शख्स पर जिस को आखिरत में हिसाब का यकीन हो फिर भी माल जमा करे.

५)	मुझे हैरत है उस शख्स पर जिस को जहन्नम की आग का इल्म हो फिर भी वह गुनाह करे.

६)	मुझे हैरत है उस शख्स पर जो अल्लाह को जानता हो फिर किसी और चीज़ का ज़िक्र करे.

७)	मुझे हैरत है उस शख्स पर जिस को जन्नत की खबर हो फिर दुनिया में किसी चीज़ से राहत पाए.

हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैह हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अन्हू से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक्ल किया है कि हज़रत जिब्राईल मुझे अल्लाह के ज़िक्र की इस क़दर ताकीद करते रहे कि मुझे यह गुमान होने लगा कि ज़िक्र के बगैर कोई चीज़ फायदा ना देगी.

इन सब रिवायात से मालूम हुआ कि ज़िक्र की जितनी भी कसरत मुमकिन हो उसमें कोई कमी ना की जाए.

हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुलबिजादैन रदियल्लाहु अन्हू एक सहाबी थे जो लडकपन में यतीम हो गए थे. अपने चचा के पास रहते थे. चचा भी बडी शफकत व मुहब्बत से रखता था. हज़रत अब्दुल्लाह घर वालों से छुप कर मुसलमान हो गए तो चचा को खबर हो गई. उसने गुस्से में बिलकुल नंगा करके अपने घर से निकाल दिया. माँ भी आप के मुसलमान होने से नाराज़ थी लेकिन माँ थी, एक मोटी सी चादर आप को नंगा देख कर दे दी जिस को हज़रत अब्दुल्लाह ने दो टुकडे करके एक से सतर ढांका और दूसरा ऊपर डाल लिया और मदीना तय्यबा पहुंच गए. आका-ए-नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस्तानए-आलिया पर पडे रहा करते थे और बहुत

कसरत से बलंद आवाज़ के साथ ज़िक्र किया करते थे. आप को देख कर हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया कि क्या यह शख्स रियाकार है कि इस तरह आवाज़ से ज़िक्र करता है. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : नहीं, यह अव्वाबीन में है. (यानी अल्लाह की तरफ झुकने और तवज्जह रखने वालों में है.) गज़वए-तबूक में शहीद हुए. सहाबा किराम ने देखा कि रात को क़ब्रों के करीब चराग जल रहा है, करीब जाकर देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ब्र में उतरे हुए हैं. हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फारूक रदियल्लाह अन्हुमा को इर्शाद फरमा रहे हैं कि लाओ अपने भाई को मुझे पकडा दो. दोनों जलीलुल क़द्र सहाबा रदियल्लाह अन्हुमा ने हज़रत अब्दुल्लाह की लाश को पकडा दिया, दफ्न के बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ अल्लाह ! मैं इस से राज़ी हूँ, तू भी इस से राज़ी हो जा. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि यह सारा मंज़र देख मुझे तमन्ना हुई कि काश यह लाश मेरी होती.

एक हदीस में आया है कि कुछ आदमी ज़िक्र की कुंजियां हैं कि जब उनकी सूरत देखी जाए तो अल्लाह का ज़िक्र किया जाए, यानी उनकी सूरत देख कर ही अल्लाह का ज़िक्र याद आए. एक हदीस में है कि तुम में बेहतरीन वह शख्स है जिस के देखने से अल्लाह तआला की याद आए, और उसके कलाम से इल्म में इज़ाफा हो और उसके अमल से आखिरत की रगबत पैदा हो. एक हदीस में है कि अल्लाह तआला के वली वह लोग हैं जिनको देख कर अल्लाह याद आए. एक हदीस में है कि तुम में बेहतरीन लोग वह हैं जिन को देख कर अल्लाह की याद ताज़ा हो, और यह बात जब ही हासिल हो सकती है जब कोई शख्स कसरत से ज़िक्रे इलाही का आदी हो और जिस को खुद ही ज़िक्र की तौफीक ना हो उसको देख कर क्या किसी को अल्लाह की याद आ सकती है.

हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह का इर्शाद है कि किसी अमल को इस वजह से ना करना कि लोग देखेंगे तो यह भी रिया में दाखिल है. और इस वजह से किसी अमल को करना ताकि लोग देखें यह शिर्क में

दाखिल है.

खुश नसीब है वह ज़ाकिर जो शिर्क और रिया दोनों से बच कर हक तआला के ज़िक्र में दिल और रूह के साथ दुनिया और मा फीहा से बेनियाज़ हो जाए.

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू से मनकूल है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि सात आदमी हैं जिनको अल्लाह तआला अपने साए में ऐसे दिन जगह इनायत फरमाएगा जिस दिन उनके साए के सिवा कोई साया ना होगा : (१) एक आदिल बादशाह, (२) वह जवान जो जवानी में अल्लाह की इबादत करता हो, (३) वह शख्स जिस के दिल में हमेशा मस्जिद का खयाल रहता हो, (४) वो दो शख्स जिन में अल्लाह ही के वास्ते मुहब्बत हो ओर इसी के लिए मिलें और इसी के लिए जुदा हों, (५) वह शख्स जिस को कोई हसीन शरीफ औरत अपनी तरफ माइल करे और वह कह दे कि मुझे अल्लाह का डर मना करता है, (६) वह शख्स जो ऐसे मखफी तरीक से सदका दे कि दूसरे हाथ को भी खबर ना हो, (७) वह सख्स जो तन्हाई में अल्लाह का ज़िक्र करे और आंसू बहने लगें. (बुखारी, मुस्लिम)

हदीस शरीफ में आंसू बहने का मतलब यह है कि अपने मआसी (गुनाहों) को याद करके दीदह व दानिस्ता रोने लगे. और दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि गलबए शौक में बे इख्तियार आंखों से आंसू निकलने लगे.

हज़रत साबिन बन्नानी रहमतुल्लाहि अलैह एक बुज़ुर्ग का कौल लिखते हैं, वह फरमाते हैं मुझे मालूम हो जाता है कि मेरी कौनसी दुआ कबूल हुई. लोगों ने पूछा कि किस तरह मालूम हो जाता है? फरमाने लगे जिस दुआ से बदन के रोंगटे खडे हो जाते हैं, दिल धडकने लगता है और आंखों से आंसू बहने लगते हैं वह दुआ कबूल होती है.

हदीस शरीफ में उन सात आदमियों में से एक वह शख्स भी है जो तन्हाई में अल्लाह का ज़िक्र करे और रोने लगे. इस शख्स में दो खूबियाँ जमा हैं और दोनों आला दर्जे की हैं, एक इखलास की तन्हाई में अल्लाह का ज़िक्र

करने में मशगूल हुआ, दूसरे अल्लाह का खौफ या शौक कि दोनों में रोना आता है और दोनों कमाल हैं, किसी ने क्या खूब कहा है :

हमारा काम है रातों को रोना यादे दिलबर में
हमारी नींद है महवे खयाले यार हो जाना

हदीस के अलफाज़ में "رَجُلٌ ذَكَرَ اللّٰهَ خَالِيًا" यानी एक वह आदमी जो अल्लाह का ज़िक्र करे इस हाल में कि खाली हो, सूफिया ने खाली होने के दो मतलब लिखे हैं; एक यह कि आदमीयों से खाली हो जिस का मतलब तन्हाई के है. यह आम मतलब जो मुहद्दिसीन बयान करते हैं, दूसरा यह कि दिल अग़यार (गैरों) से खाली हो. सुफिया का इर्शाद है कि असल खिलवत यही है, इस लिए अकमल दर्जा तो यह है कि दोनों खिलवतें हासिल हों लेकिन कोई शख्स मजमए में हो और दिल गैरों से बिलकुल खाली हो और ऐसे वक्त अल्लाह के ज़िक्र से कोई शख्स रोने लगे तो भी इसमें दाखिल है क्यूँकि मजमए का होना ना होना उसके हक में बराबर है.

हज़रत क़िब्ला सय्यदी व मुर्शिदी व सनदी व मौलाई हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी मद्द ज़िल्लहुल आली के तरबिय्यत याफ्ता हलक़ा बगोश शाहिद (गवाह) व वाक़िफ (जानकार) हैं कि हुज़ूर क़िब्ला मद्द ज़िल्लहुल आली की तालीमात में क़ल्ब की यकसूई को अव्वलिय्यत हासिल है. लाखों वाबस्तगाने सिलसिलए-आलिया भी कलमए-तय्यबा की दिल से तसदीक की बदौलत तमाम वसाविस और लायानी तफक्कुरात (फिक्रों) से छुटकारा पाकर अल्लाह तआला के ज़िक्र की दाइमी नेमतों से फैज़याब हो रहे हैं और आम मकामात पर भी खिलवत ही की तरह अल्लाह तआला के ज़िक्र से तज़कियए-नफ्स, तसफियए-क़ल्ब, तजल्लिए- रूह और तखलियए-सिर्र के फुयूज़ात व बरकात से फायदा हासिल कर रहे हैं. यह हुज़ूर क़िब्ला की तालीमात ही का फल है कि अग़यार (गैरों) के इल्तेफात से खाली होकर ज़िक्रे इलाही के नूर से दुनिया को रौशन करने वाले सूरज की तरह जगमगाने लगता है. अल्लाह तआला का हज़ार हज़ार शुक्र व एहसान के फैज़ाने क़दीरी ने लाखों क़ादरी गुलामों को "رَجُلٌ ذَكَرَ اللّٰهَ خَالِيًا" की अज़ीम नेमत से सरफराज़ फरमाकर कयामत के दिन में सायए-रहमते इलाही का उम्मीदवार बना दिया. अलहम्दु लिल्लाहि अला

ज़ालिक. ज़ालिका फज़्लुल्लाहि युतीही मंय्यशाउ.

मैं कैसे भूल जाऊँ उस सखी दाता को ऐ साबिर
नज़र मिलते ही जिस ने दौलते कौन व मकाँ दे दी

(शाहीन)

बेशक अल्लाह की याद में या उसके खौफ से रोना बडी ही दौलत है. एक हदीस है कि जो शख्स अल्लाह के खौफ से रोए यहाँ तक कि उसके आंसूओं में से कुछ ज़मीन पर टपक जाए तो उसको कयामत के दिन अज़ाब नहीं होगा. एक हदीस में है कि दो आंखों में जहन्नम की आग हराम है, एक वह आंख जो अल्लाह के खौफ से रोई हो उसपर जहन्नम की आग हराम है और जो आंख अल्लाह की राह में जागती हो उसपर भी हराम है, और जो आंख अल्लाह की राह में ज़ाए (खराब) हो गई हो उस पर भी जहन्नम की आग हराम है.

एक हदीस में है, जो शख्स तन्हाई में अल्लाह का ज़िक्र करने वाला हो वह ऐसा है जैसे अकेला कुफ्फार के मुकाबले में चल पडा हो.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बिस्र रदियल्लाहु अन्हू से मनकूल है कि एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! शरीअत के अहकाम तो बहुत से हैं ही मुझे एक चीज़ कोई ऐसी बता दीजिए जिसको मैं अपना दस्तूर और मामूल बना लूँ (यानी जिस खास तौर पर अपना लूँ) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तू हर वक्त अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल रह. (इब्ने अबी शीबह, इमाम अहमद, तिर्मीज़ी, इब्ने माजह, बैहक़ी)

शरीअत के अहकाम बहुत होने का मतलब यह है कि हर हुक्म की बजा आवरी ज़रूरी है लेकिन हर चीज़ में कमाल पैदा करना और उसको मुस्तक़िल मशग़ला बनाना दुशवार है, इस लिए उन में से एक चीज़ जो सब से अहम हो मुझे ऐसी बता दिजीए कि उसे दाइमी तौर पर अपना मामूल बना लूँ और हर वक्त चलते फिरते उठते बैठते, आबादी व जंगल में हमेशा करता रहूँ. अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया ऐसी अज़ीम शान वाली, अफज़ल व अकमल चीज़ अल्लाह का ज़िक्र है जो किसी

हालत में भी छूटने ना पाए.

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हू को यमन वालों की तबलीग व तालीम के लिए अमीर बनाकर भेजा तो आप ने हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हू को कुछ वसीय्यत भी फरमाई थीं और हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हू ने भी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ सवालात किए थे. इसी ज़िम्न में हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि जुदाई के वक्त जो आखरी गुफ्तगू हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हुई वह यह थी, ''मैंने पूछा कि सब आमाल में अल्लाह तआला के नज़दीक मेहबूब तरीन अमल कौन सा है? हुज़ूर रहमतुल् लिलआलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि उस हाल में तेरी मौत आए कि तू अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल हो.

(इब्ने अबिद् दुनया, बज़्ज़ाज़, इब्ने हब्बान, तबरानी, बैहक़ी)

एक हदीस में आया है कि अल्लाह तआला के ज़िक्र से मुहब्बत अल्लाह तआला से मुहब्बत की अलामत है और अल्लाह तआला से बुग्ज़ (दुशमनी) की अलामत उसके ज़िक्र से बुग्ज़ (दुशमनी) है.

हज़रत अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि जिन लोगों की ज़बान अल्लाह तआला के ज़िक्र से हमेशा तरोताज़ा रहती है वह जन्नत में हंसते हुए दाखिल होंगे.

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कयामत के दिन एक अवाज़ देने वाला आवाज़ देगा कि अक्लमंद लोग (اولو الالباب) कहाँ हैं? लोग पूछेंगे कि अक्लमंद लोगों से कौन मुराद हैं? जवाब मिलेगा वह लोग जो अल्लाह का ज़िक्र खडे बैठे और लेटे हुए करते थे. (यानी हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करते रहते थे.) और आस्मानों और ज़मीनों के पैदा होने के बारे में गौर करते थे और कहते थे कि या अल्लाह आप ने यह सब बेफायदा तो पैदा किया ही नहीं, हम आप की तसबीह करते हैं, आप हम को जहन्नम की आग से बचा लिजीए, इसके बाद उन लोगों के लिए एक झंडा बनाया जाएगा जिसके साये में यह सब जाऐंगे और उनसे कहा जाएगा हमैशा के लिए जन्नत में दाखिल हो

जाओ. (असबहानी)

इब्ने अबिद् दुनया ने एक मुरसल हदीस नक्ल की है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा सहाबा की एक जमात के पास तशरीफ ले गए जो चुप चाप बैठे थे. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया : क्या बात है, किस सोच में बैठे हो? सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया : अल्लाह की मखलूकात की सोच में हैं. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : हाँ, अल्लाह की ज़ात में गौर ना किया करो कि (वह वराउल वरा है यानी अल्लाह तआला की ज़ात वहम व गुमान से बहुत बलंद व बरतर है, उसकी ज़ात के बारे में सोच व फिक्र करना गुमराही है) अलबत्ता उसकी मखलूकात में गौर किया करो.

किसी ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु अन्हा से अर्ज़ किया कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोई अजीब बात सुना दिजीए. आप ने फरमाया कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कौनसी बात ऐसी थी जो अजीब ना थी. एक मर्तबा रात को तशरीफ लाए, मेरे बिस्तर मेरे लिहाफ में लेट गए. फिर इर्शाद फरमाया कि छोड मैं तो अपने रब की इबादत करूँ. यह फरमाकर उठे और वज़ू फरमाया और नमाज़ की निय्यत बांध कर रोना शुरू कर दिया, यहाँ तक कि आंसू सीनए-मुबारक पर बहते रहे. फिर इसी तरह रुकू में रोते रहे, फिर सज्दे में इसी तरह रोते रहे. सारी रात इसी तरह गुज़ार दी यहाँ तक कि सुबह की नमाज़ के वास्ते हज़रत बिलाल रदियल्लाह अन्हु बुलाने के लिए आ गए. मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह तआला ने आप की बखशिश फरमा दी है, फिर आप इतना क्यूँ रोए? इर्शाद फरमाया : क्या मैं अल्लाह तआला का शुक्र गुज़ार बंदा ना बनूँ? फिर फरमाया मैं क्यूँ ना रोता जबकि आज यह आयतें ﴿اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوَاتِ وَ الۡاَرۡضِ﴾ से ﴿فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾ (सूरह आले इम्रान, रूकूः११) नाज़िल हुई. फिर फरमाया कि हलाकत है उस शख्स के लिए जो इनको पढे और गौर व फिक्र ना करे.

आमिर बिन अब्दे कैस रदियल्लाहु अन्हू कहते हैं मैंने सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम से सुना है एक से, दो से, तीन से नहीं (बल्कि उनसे ज़्यादा

यानी बहुत सारे सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम से सुना है) कि ईमान की रौशनी और ईमान का नूर गौर व फिक्र है.

एक मर्दे मोमिन की इस क़ल्बी (दिली) कैफिय्यत और दिल के गौर व फिक्र को सूफिया की इस्तलाह में मुराकेबा कहते हैं और मुराकेबा ही ज़िक्र बिलक़ल्ब की पहली मंज़िल है.

उम्मे दरदा रदियल्लाहु अन्हू से किसी ने पूछा कि हज़रत अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हू की अफज़ल तरीन इबादत क्या थी? आप ने जवाब दिया गौर व फिक्र. हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद मनकूल है कि एक साअत (लम्हे) का गौर व फिक्र साठ बरस की इबादत से अफज़ल है.

हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि एक लम्हे का गौर व फिक्र अस्सी साल की इबादत से अफज़ल है.

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक्ल करते हैं कि एक आदमी छत पर लेटा हुआ आस्मान और सितारों को देख रहा था, फिर कहने लगाः खुदा की कसम मुझे यकीन हो गया है कि तुम्हारा पैदा करने वाला भी कोई ज़रूर है. ऐ अल्लाह! तू मेरी मग़फिरत फरमा दे, हक तआला की नज़रे रेहमत उस की तरफ मुतवज्जह हुई और उसकी मग़फिरत हो गई.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबुल फज़्ल अब्बास, हज़रत अबू दरदा, हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हुम फरमाते हैं कि एक लम्हे का गौर व फिक्र तमाम रात की इबादत से अफज़ल है लेकिन उसका यह मतलब भी नहीं कि फिर इबादत की ज़रूरत नहीं रहती बल्कि हकीकत यह है कि इबादत फर्ज़ हो या वाजिब, सुन्नत हो या मुस्तहब अपनी जगह वही दर्जा रखती है जिस दर्जे की वह इबादत होती है.

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैह से नक्ल किया गया है कि आप ने एक मर्तबा ख्वाब में शैतान को बिलकुल नंगा देखा. आप ने उससे फरमाया कि तुझे शर्म नहीं आती कि आदमीयों के सामने नंगा होता है? वह कहने लगा, यह कोई आदमी हैं, आदमी वह है जो शूनेज़ीया की मस्जिद में

बैठे हैं जिन्होंने मेरे बदन को दुबला कर दिया और मेरे जिगर के कबाब कर दिए, हज़रते जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि मैं शूनेज़ीया की मस्जिद में गया, मैंने देखा कि चंद हज़रात घुटनों पर सर रखे हुए मुराकबे में मशगूल हैं. जब उन्होंने मुझे देखा तो कहने लगे कि खबीस की बातों से कहीं धोके में ना पड जाना.

हज़रत अबू सईद खज़्ज़ाज़ रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि मैंने ख्वाब में देखा शैतान ने मुझ पर हमला किया, मैं उसको लकडी से मारने लगा. उसने मेरी मार की ज़रा भी परवाह ना की, मैं हैरान था कि (इतने में) गैब से आवाज़ आई, यह लकडी से नहीं डरता, यह दिल के नूर से डरता है, और दिल का नूर दिल के ज़िक्र के बगैर हासिल नहीं होता.

हरगिज़ नमीरद आँके दिलश ज़िंदा शुद बइश्क
सबत अस्त बर जरीदए-आलम दवामे मा

(हाफिज़ शेराज़ी)

बहुत सी अहादीस में ज़िक्र का सब से अफज़ल होना वारिद हुआ है. हज़रत सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हू से किसी ने पूछा कि सब से बडा अमल क्या है? उन्होंने फरमाया कि तुम ने कुरआन शरीफ नहीं पढा, कुरआने पाक में है : ﴿وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ﴾ (पारह: २१, रुकूः १) कि कोई चीज़ अल्लाह के ज़िक्र से बढ कर नहीं.

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अगर तुम हर वक्त ज़िक्र में मशगूल रहो तो फरिश्ते तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में तुम से मुसाफहा करने लगें. एक हदीस में है कि मुफरद लोग बहुत आगे बढ गए, सहाबा रदियल्लाह अन्हुम ने अर्ज़ किया 'मुफरद' कौन हैं? आप ने इर्शाद फरमाया जो अल्लाह के ज़िक्र में वालेहाना तरीके पर मशगूल हैं.

इस हदीस की बिना (बुनियाद) पर सूफीया ने लिखा है कि सलातीन और उमरा (हाकिमों) को अल्लाह के ज़िक्र से ना रोकना चाहिए कि उसकी वजह से वह आला दरजात हासिल कर सकते हैं.

हज़रत अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि अल्लाह के ज़िक्र को अपनी मसर्रतों और खूशीयों के अवकात में कर, वो तुझ को मशक्कतों

और तकलीफों के वक्त काम देगा.

हज़रत सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि जब बंदा राहत व मालदारी और खूशी के अवकात में अल्लाह का ज़िक्र करता है, फिर उसको कोई मशक्कत और तकलीफ पहुंचे तो फरिश्ते कहते हैं कि मानूस (यानी जानी पहचानी) आवाज़ है जो ज़ईफ (कमज़ोर) बंदे की है. फिर अल्लाह तआला के यहाँ उसकी सिफारिश करते हैं और जो शख्स राहत व खूशी के अवकात में अल्लाह का ज़िक्र ना करता हो फिर कोई तकलीफ उसको पहुंचे और उस वक्त वह अल्लाह का ज़िक्र करे तो फरिश्ते कहते हैं कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, उन में से एक दरवाज़ा सिर्फ ज़ाकिरों के लिए है.

एक सफर से वापसी हो रही थी, एक जगह पहुंच कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आगे बढने वाले कहाँ हैं? सहाबा रदियल्लाह अन्हुम ने अर्ज़ किया बाज़ (कुछ) तेज़ चलने वाले आगे चले गए. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया वह आगे बढने वाले कहाँ हैं जो अल्लाह के ज़िक्र में वालेहाना (दिल से) मशगूल हैं, जो शख्स यह चाहता है कि जन्नत से खूब सैराब हो वह अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करे.

एक हदीस में है कि जो शख्स अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करे वह निफाक़ से बरी (आज़ाद) है. एक हदीस में है कि अल्लाह तआला उस (ज़िक्र करने वाले) से मुहब्बत फरमाता है.

हज़रत मआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जन्नत में जाने के बाद अहले जन्नत को दुनिया की कसी चीज़ का भी रंज व अफसोस ना होगा सिवाए उस घडी के जो दुनिया में अल्लाह के ज़िक्र के बगैर गुज़र गई हो.

(तबरानी, बैहक़ी)

अहले जन्नत जन्नत में दाखिल होकर एक मर्तबा अल्लाह तआला के ज़िक्र का अज्र व सवाब खुद अपनी आंखों से देखेंगे कि कितना ज़्यादा मिल रहा है तो उस वक्त अपनी कोताही और ग़फलत पर जिस क़द्र भी अफसोस होगा ज़ाहिर है. दुनिया में ऐसे अल्लाह वाले भी हैं जिन को दुनिया अल्लाह के ज़िक्र के बगैर अच्छी नहीं लगती. हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैह ने

अपनी किताब 'मुनब्बिहात' में लिखा है कि यहया बिन मआज़ राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह अपनी मुनाजात (दुआ) में कहा करते थे :

اِلٰهِیُ لَا یَطِیبُ اللَّیُلُ اِلَّا بِمُنَاجَاتِکَ وَ لَا یَطِیبُ النَّهَارِ اِلَّا بِطَاعَتِکَ وَ لَا یَطِیبُ الدُّنُیَا اِلَّا بِذِکُرِکَ فَلَا تَطِیبُ الْآخِرَةُ اِلَّا بِعَفُوِکَ وَ لَا تَطِیبُ الْجَنَّةُ اِلَّا بِرُؤُیَتِکَ

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! रात अच्छी नहीं लगती मगर तुझ से राज़ व नियाज़ के साथ और दिन अच्छा नहीं लगता मगर तेरी इबादत के साथ और दुनिया अच्छी नहीं मालूम होती मगर तेरे ज़िक्र के साथ और आखिरत भली नहीं लगती मगर तेरी माफी के साथ और जन्नत में लुत्फ नहीं मगर तेरे दीदार के साथ.

हज़रत ख्वाजा कुत्बुद्दीन मौदूद चिश्ती फरमाते हैं :

मज़न बे यादे मौला यक नफस रा
अगर दर सौमआ या कनिश्ती

यानी ऐ मुखातिब ! तू किसी बुतखाने में बैठ या गिरजा घर में, लेकिन बंदगी की शर्त यह है कि तेरी एक सांस भी ज़िक्रे इलाही से खाली ना हो.

सय्यिदुत् ताइफा हज़रत अबुल क़ासिम जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैह के पीर व मुर्शिद हज़रत सिर्री सुक़ती रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि मैंने हज़रत जुरजानी रहमतुल्लाहि अलैह को देखा कि सत्तू फांक (खा) रहे हैं. मैंने पूछा कि यह खुश्क ही फांक रहे हो. कहने लगे मैंने रोटी चबाने और निगलने का जब हिसाब लगाया तो मालूम हुआ कि एक निवाला चबाने और निगलने में इतना वक्त ज़्यादा खर्च होता है कि आदमी इतनी देर में सत्तर मर्तबा 'सुबहानल्लाह' कह सकता है. इस लिए मैंने चालीस बरस से रोटी खाना छोड दी और सत्तू फांक कर गुज़ारा कर लेता हूँ.

पस अज़ सी साल ई मायना मुहक्क़क शुद बह खाकानी
कि यक दम बखुदा बूदन बह अज़ मुल्के सुलेमानी

तीस साल की मुसलसल तहक़ीक़ व कडी मेहनत के बाद खाकानी पर यह नुकता खुला कि दम भर का ज़िक्रे इलाही हज़रत सुलेमान अलैहिस् सलाम की बादशाही से कहीं (ज़्यादा) बेहतर है. अपनी एक एक सांस की

निगहबानी करने वाले औलिया व सालिहीन ने एक लम्हे की गफलत भी गवारा ना की और हर हाल में नफ्स की आमद व शुद (सांस लेने और छोडने) पर कडी नज़र रखी.

हज़रत मनसूर बिन मोअतमर रहमतुल्लाहि अलैह के बारे में लिखा है कि चालीस बरस तक इशा के बाद किसी से बात नहीं की. हज़रत रबी बिन हैसुम के बारे में लिखा है कि बीस बरस तक जो बात करते उस को एक पर्चे पर लिख लेते और रात को अपने दिल से हिसाब करते कि कितनी बात इस में ज़रूरी थी और कितनी गैर ज़रूरी.

हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जब जन्नत के बागों पर गुज़रो तो खूब मज़े उडाओ (यानी हर नेमत का मज़ा चखो). किसी ने अर्ज़ किया जन्नत के बाग क्या हैं? आप ने फरमाया कि ज़िक्र के हल्के.

(इमाम अहमद, तिर्मीज़ी, बैहक़ी, अबू याला, हाकिम)

किताब 'अलफवाइद फीस् सलाति वल मुवाइद' के मुसन्निफ ने लिखा है कि आदमी ज़िक्र पर मुदावमत (हमेशगी) से तमाम आफतों से महफूज़ रहता है. सहीह हदीस में आया है, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाते हैं कि मैं तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र की कसरत का हुक्म करता हूँ और उसकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख्स के पीछे कोई दुशमन लग जाए और वह उससे भाग कर किसी किले में महफूज़ हो जाए, और ज़िक्र करने वाला अल्लाह का हम नशीन (साथ रहने वाला) होता है. इस से बढ कर और क्या फायदा होगा कि वह मालिकुल मुल्क का हम नशीन हो जाए. इसके अलावा ज़िक्र की कसरत से शरहे सद्र (दिल के शुकूक मिट जाते) हैं, दिल मुनव्वर हो जाता है, दिल की सख्ती दूर हो जाती है, इस के अलावा और भी बहुत से ज़ाहिरी और बातिनी फायदे हासिल होते हैं जिन का तफसीली बयान मुमकिन नहीं.

एक हदीस में आया है कि अल्लाह का ज़िक्र दिलों की शिफा है यानी दिल में जिस किस्म की बीमारीयां पैदा होती हैं जैसे तकब्बुर, हसद, कीना वगैरा सब ही बीमारीयों का इलाज है.

हज़रत अबू उमामा बाहली रदियल्लाहु अन्हू की खिदमत में एक साहब तशरीफ लाए और अर्ज़ किया कि मैंने ख्वाब में देखा है कि जब भी आप अंदर जाते हैं या बाहर आते हैं या खडे होते हैं या बैठते हैं तो फरिश्ते आप के लिए दुआ करते हैं. हज़रत अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया अगर तुम्हारा दिल चाहे तो तुम्हारे लिए भी वह दुआ कर सकते हैं. फिर आप ने ﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا﴾ से ﴿رَحِيْمًا﴾ (सूरह अहज़ाब, रूकूः ३) तक आयत पढी, गोया इस तरफ इशारा फरमाया कि अल्लाह तआला कि रेहमत और फरिश्तों की दुआ तुम्हारे ज़िक्र पर मुनहसिर (दारोमदार) है. जितना तुम ज़िक्र करोगे उतना ही उधर से ज़िक्र होगा.

हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अबू सईद रदियल्लाहु अन्हुमा दोनों हज़रात इस (बात) की गवाही देते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, इर्शाद फरमाते थे कि जो जमात अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल हो फरिशते उस जमात को सब तरफ से घेर लेते हैं और रेहमत उन को ढांप लेती है और सकीनत (सुकून) उन पर नाज़िल होती है. अल्लाह तआला उनका तज़िकरा अपनी मजलिस में फख्र के तौर पर फरमाता है. (इब्ने अबी शीबह, इमाम अहमद, मुस्लिम तिर्मिज़ी, इब्ने माजह, बैहक़ी)

हज़रत अबू ज़र गिफारी रदियल्लाहु अन्हू हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक लंबी हदीस नक्ल फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि मैं तुझे अल्लाह के तक़वा की वसिय्यत करता हूँ कि तमाम चीज़ों की जड तक़वा है और कुरआन शरीफ की तलावत और अल्लाह के ज़िक्र का एहतेमाम कर कि इस से आस्मानों में तेरा ज़िक्र होगा और ज़मीन में नूर का सबब बनेगा. अकसर अवकात चुप रहा कर कि भलाई से खाली कोई बात ना हो. यह बात शैतान को दूर करती है और दीन के कामों में मददगार होती है. ज़्यादा हंसी से भी बचता रह कि इस से दिल मुर्दा हो जाता है और चेहरे का नूर जाता रहता है. जिहाद करते रहना कि मेरी उम्मत की फकीरी यही है. मिसकीनों से मुहब्बत रखना अपने से ऊंचे लोगों पर निगाह ना करना कि इस से अल्लाह की उन नेमतों की नाक़द्री पैदा होती है जो अल्लाह ने तुझे अता फरमाई हैं. अज़ीज़ व अकारिब

(रिश्तेदारों) से तअल्लुकात जोडने की फिक्र रखना और अगरचे वह तुझ से तअल्लुकात तोड दें. हक बात कहने में आगे पीछे ना होना अगरचे किसी को कडवी ही लगे. अल्लाह के मुआमले में किसी की मलामत की परवाह ना करना. तुझे अपनी ऐब बीनी (खुद के ऐबों को देखना) दूसरों के ऐबों पर नज़र ना करने दे. (यानी तेरी नज़र हमेशा अपने ऐबों और अपनी बुराई पर रहनी चाहिए, दूसरों की बुराईयों को ना देखना चाहिए.) और जिस ऐब में तू खुद मुब्तेला हो उसमें दूसरे पर गुस्सा ना करना. ऐ अबू ज़र ! (रदियल्लाहु अन्हू) अच्छी तदबीर से बढ कर कोई अक्लमंदी नहीं और नाजायज़ बातों से बचना बेहतरीन परहेज़गारी है और खुश खुल्की (अच्छे अखलाक) से बढ कर कोई शराफत नहीं. (तबरानी, जामेअ सगीर)

अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वालों के चेहरों पर दुनिया में रौनक और आखिरत में नूर होगा. जो शख्स रास्तों और घरों में, सफर में और हज़र में कसरत से ज़िक्र करे कयामत में उस के गवाही देने वाले भी कसरत से होंगे. जो दिल अल्लाह तआला के ज़िक्र से महरूम होगा वह दिल अल्लाह तआला की मुहब्बत में मशगूल नहीं बल्कि मखलूक की मुहब्बत में मुब्तेला होगा. जिस पहाड पर या मैदान में अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाएगा वह फख्र करते हैं. हदीस में आया है कि एक पहाड दूसरे पहाड को आवाज़ देकर पूछता है कि कोई ज़िक्र करने वाला आज तुझ पर गुज़रा है? अगर वह कहता है कि गुज़रा है वो वह पहाड यह सुन कर खुश होता है. सिर्फ ज़िक्र की यह फज़ीलत है तो अंदाज़ा लगाइए कि अफज़लुज़् ज़िक्र ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' के फज़ाइल व बरकात का क्या आलम होगा.

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शादे गिरामी है कि ईमान की सत्तर से ज़्यादा शाखें हैं, उनमें सबसे अफज़ल ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' का पढना है, और सब से कम दर्जा रास्ते से किसी तकलीफ देने वाली चीज़ (ईंट, पत्थर, कांच का टुकडा, लकडी या कांटा वगैरा) का हटा देना है. और हया भी ईमान की एक (खुसूसी) शाख है. (हदीस की किताबों से अलफाज़ के इख्तेलाफ के साथ)

क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि उलमा की एक जमात ने उन शाखों की तफसील बयान करने का एहतेमाम किया है और इज्तेहाद से उन तफसीलात के मुराद होने का हुक्म लगाया है, हालांकि इस मिकदार की खुसूसी तफसील मालूम ना होने से ईमान में कोई नुक्स पैदा नहीं होता जबकि ईमान के उसूल व फुरूअ (छोटे बडे कायदे) तमाम के तमाम तफसील से मालूम और तहकीक किए हुए हैं.

खिताबी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि इस तादाद की तफसील अल्लाह और उसके रसूल के इल्म में है, और शरीअते मुतह्हरा में मौजूद है, तो इस तादाद के साथ तफसील का मालूम ना होना कुछ नुकसानदेह नहीं.

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन शाखों में सब से आला तौहीद यानी कलमए-तय्यबा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' को करार दिया है जिस से मालूम हो गया कि ईमान में सब से ऊपर उसका दर्जा है, उस से ऊपर कोई चीज़ ईमान की शाख नहीं है जिस से यह बात भी वाज़ेह हो गई कि अस्ल तौहीद है जो हर मुकल्लफ (जिस पर फराइज़ लागू होते हैं) पर ज़रूरी है, और सब से नीचे उस चीज़ का दूर करना है जो किसी मुसलमान के लिए नुकसान दह हो सकती है, बाकी सब शाखें उनके दरमियान हैं जिन की तफसील मालूम होना ज़रूरी नहीं. मुखतसर तौर पर ईमान लाना काफी है जैसा कि सब फरिश्तों पर ईमान लाना ज़रूरी है लेकिन उनकी तफसील और उनके नाम हम नहीं जानते, लेकिन मुहद्दिसीन की एक जमात ने इन शाखों की तफसील में मुखतलिफ किताबें लिखी हैं. इमाम बैहक़ी ने एक किताब तसनीफ फरमाई (लिखी) जिस का नाम ही ''शाअबुल ईमान'' रखा है. इस मज़मून में अबू अब्दुल्लाह हलबी ने 'फवाइदुल मिनहाज' शेख अब्दुल जलील ने 'शाअबुल ईमान' और इसहाक़ इब्ने कुरतुबी ने 'किताबुन् नसाइह' और इमाम अबू हातिम ने 'वसफुल ईमान व शुअबुहू' लिखी हैं. बुखारी की शरह करने वालों ने इस बाब में मुखतलिफ किताबों से तलखीस करते हुए उनको मुखतसर तौर पर जमा फरमाया है. जिस का हासिल यह है कि :

दर अस्ल कामिल ईमान तीन चीज़ों के मजमूए का नाम है :

अव्वल तसदीके क़ल्बी, यानी दिल से तमाम बातों का यकीन करना.

दूसरे ज़बान से इकरार करना.

तीसरे बदन के तमाम आज़ा (हिस्सों) से मुतअल्लिका आमाल की तकमील करना.

यानी ईमान की तमाम शाखें तीन हिस्सों पर मुश्तमिल है : अव्वल वह जिन का तअल्लुक निय्यत व एतेकाद और तसदीके क़ल्बी से है, दूसरे वह जिन का तअल्लुक ज़बान से है, तीसरे वह जिन का तअल्लुक बाकी तमाम बदन के हिस्सों से है, ईमान की तमाम चीज़ें इन तीन में दाखिल हैं.

मेरे वालिद मरहूम हज़रत अबुन् नस्र सय्यद शाह मुईनुद्दीन मुहम्मद अब्दुल मन्नान तवक्कुल शाह 'साबिर' निज़ामी चिश्ती क़ादरी सोहरवर्दी रहमतुल्लाहि अलैह को हज़रत अरिफुल हक बेहलूल शाह तबक़ाती निज़ामाबादी रहमतुल्लाहि अलैह, हज़रत मुसव्विरे फितरत ख्वाजा हसन निज़ामी दहलवी, हज़रत सय्यद हबीब ताहिर रिफाई क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह, हज़रत अमीरे हमज़ा रिफाई मदनी रहमतुल्लाहि अलैह, वगैरह कुल ३६ मशाइखीन से तमाम सलासिल में सनदे खिलाफत व इजाज़त हासिल थी. और हुज़ूर क़िब्ला वालिदे मोहतरम से मुझ हकीर को इजाज़त व खिलाफत अता होने के बावजूद कलमए-तय्यबा की ज़बानी इकरार और क़ल्बी तसदीक की सरमदी तालीमात हासिल करने के लिए हुज़ूरी सय्यदी व मुर्शिदी हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी मद्द ज़िल्लहुल आली का तालिब बनना पडा.

हुज़ूर क़िब्ला सय्यद व मौलाई मद्द ज़िल्लहुल आली ने मुझ कमतरीन को १९६० में खिलाफते आलिया क़ादरीया खुलफाइया से सरफराज़ फरमाकर "اقرار باللسان و تصدیق بالقلب" (ज़बान से इकरार और दिल से तसदीक) की रौशनी में कलमए-तय्यबा के असरार व निकात बतला कर जब 'मन अरफा' की शश जेहत खोली तो मेरा रुवाँ रुवाँ पुकार उठा :

तुझे मैं क्या दुआ दूँ ऐ निगाहे मस्त कि तू ने
नफस की आमद व शुद में हयाते जावदाँ दे दी

(शाहीन)

कलमए-तय्यबा के इकरार, कलमए-तय्यबा की तसदीक और कलमए-तय्यबा पर तमाम जिस्मानी हिस्सों के साथ यकीन व अमल की जो तालीमात क़दीर के दर से मैंने हासिल कीं आज उसी का खुलासा आप के सामने पेश कर रहा हूँ ताकि हर मुसलमान कलमए-तय्यबा से अपनी फलाह व नजात का सीधा रास्ता पा ले और कलमए तय्यबा को अपना कर बोल उठेः

कयामत तक अगर कोशिश करे अर्ज़ व समा वाले
कसम अल्लाह की कलमे का सानी ला नहीं सकते
(शाहीन)

हज़रत ख्वाजा नसीरुद्दीन मेहमूद चराग दहलवी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं :

''अस्ली ज़िंदगी वही है जो यादे हक में गुज़रे और जो उसके अलावा है वो बमंज़िलए मौत है जैसा कि नबी-ए-करीम का इर्शाद है :

''كُلُّ نَفْسٍ يَخْرُجُ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللّٰهِ فَهُوَ مَيِّتٌ''

कि जो सांस अल्लाह तआला के ज़िक्र के बगैर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निकले वह मुर्दा है. किसी बुज़ुर्ग ने क्या खूब फरमाया है :

ज़िंदगी नातवाँ अस्त हयाते कि मरा
ज़िंदा आनस्त कि बा दोस्त विसाले दारद

दाइमुल फर्ज़ (हमेशा फर्ज़ रहने वाला) ज़िक्र यह है कि हर दम ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' का ज़िक्र करना है. चुनांचे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है : जो शख्स दाइमी फर्ज़ अदा नहीं करता अल्लाह तआला उसके वक्ती फर्ज़ को कबूल नहीं करता. चार वक्ती फर्ज़ यह हैं : नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात. और दाइमी फर्ज़ ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' है. पस तालिबे हक को इस दाइमी फर्ज़ से गाफिल नहीं रहना चाहिए. चुनांचे शेखुल इस्लाम हज़रत ख्वाजा कुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं :

मज़न बे यादे मौला यक नफस रा
अगर दर सौमआ या कनिश्ती

पस इंसान को सांस लेते वक्त और बाहर निकालते वक्त हर हाल में

ज़ाकिर रहना चाहिए ताकि इस दाइमी ज़िक्र से दिल की इस्लाह हो. जैसा कि हदीस शरीफ में आया है :

“لِكُلِّ شَيْءٍ مِصْقَلَةٌ وَ مِصْقَلَةُ الْقَلْبِ ذِكْرُ اللّٰهِ”

कुछ दरवेश ऐसे भी हैं जिन की ज़बान साकिन (चुप) होती है और दिल यादे इलाही में मशगूल होता है जिस को खुद अपने कानों से सुन लेता है. (किताब ‘मिफ्ताहुल आशिकीन’, चौथी मजलिस, मलफूज़ाते हज़रत ख्वाजा नसीरुद्दीन मेहमूद अवधी चराग दहलवी रहमतुल्लाहि अलैह)

शेखुल मुतअख्खिरीन हज़रत सुलतान बाहू क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह के चीदह चीदह (चुने हुए) मलफूज़ात का एक पूरा खाका नाज़िरीन की खिदमत में पेश है. आप फरमाते हैं कि याद रखो, जो शख्स तमाम उम्र रोज़ा रखे, नमाज़ पढे, हज करे, ज़कात दे, शब व रोज़ तिलावते कुरआन करता रहे मगर कलमए-तय्यबा अदा ना करे या उस से थोडा भी इन्हेराफ करे वह हरगिज़ मुसलमान नहीं है. और कोई इबादत उसकी मकबूल नहीं. जैसे काफिर या अहले बिदअत व खारजी की तमाम इबादतें रायगाँ (बरबाद) है, क्यूँकि हदीस में अफज़लुज़् ज़िक्र ‘‘ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह’’ आया है. इबादत ज़िक्र की मोहताज है और अहले ज़िक्र व फिक्र गैर मोहताज हैं. जिस शख्स के दिल में तसदीके ईमान नहीं उसे ज़िक्र भी हासिल नहीं. ऐसे शख्स को मोमिन व मुसलमान भी नहीं कह सकते.

अब जानना चाहिए कि तसदीके क़ल्बी किस चीज़ से हासिल होती है. तसदीक़े क़ल्बी ज़िक्रे क़ल्ब से हासिल होती है और ज़िक्रे क़ल्ब मुर्शिद व वासिल इलल्लाह (अल्लाह तक रहुनमाई करने वाला और पहुंचाने वाले) से, जिसकी यह सिफत हो, (يُحْيِي الْقَلْبَ وَ يُمِيْتُ النَّفْسَ) (जो नफ्स को मारे और दिल को ज़िंदा रखे), जिस तरह ज़बान एक अज़्व है यही दिल का हाल है. वह जिस्मानी हिस्सों में से एक हिस्सा है जिस तरह की ज़बान बलंद अवाज़ से कलमए-तय्यबा पढती है दिल भी उसी तरह अवाज़ से कहने लगता है ‘‘ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह’’ और अपने कानों से सुनता भी है बशर्तेकि शेख की यह सिफत भी हो : “يُحْيِي السُّنَّةَ وَ يُمِيْتُ الْبِدْعَةَ”

जो बिदअतों को मिटाए और सुन्नतों को ज़िंदा करे.)

अल्लाह तआला का पाक फरमान है : (सूरह इनआम)

﴿وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّ عَدْلًا﴾

और तेरे रब का कलमा सच्चाई और इंसाफ और एतेदाल के एतेबार से पूरा है. हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हू हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक्ल करते हैं कि रब के कलमे से मुराद ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' है.

इस आयते शरीफा में कलमए-तय्यबा की तीन बुनियादी और अहम खुसूसिय्यात बतलाई गई हैं, वह यह हैं कि कलमए-तय्यबा मुकम्मल और जामेअ कलमा है, कलमए-तय्यबा सच्चा कलमा है, कलमए-तय्यबा इंसाफ और एतेदाल वाला कलमा है. इन तीनों कुरआनी व हक़्क़ानी मेयार पर सिवाए कलमए-तय्यबा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' के कोई और कलमा पूरा नहीं उतरता.

रोज़े मीसाक़ तमाम अंबिया अलैहिमुस् सलाम रब्बुल आलमीन के हुक्म से हुज़ूर सय्यदना व मौलाना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए और कलमए-तय्यबा का इकरार, कलमए-तय्यबा की तसदीक दिल और ज़बान से की और कलमए-तय्यबा के तक़ाज़ों की तकमील और उस पर अमल का वादा किया जिस पर अल्लाह और अल्लाह के फरिश्ते गवाह हैं. जब दुनिया में हज़रत आदम अलैहिस् सलाम तशरीफ लाए और आप की उम्मत ने यह कलमा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु आदमु सफीयुल्लाह' पढा, मगर इस कलमे के इकरार से मीसाक़ वाले कलमे की तकमील ना हो सकी, फिर मुखतलिफ अंबिया अलैहिमुस् सलाम आऐ और उनकी उम्मतों ने मुखतलिफ कलमे पढे मगर तौहीद व रिसालत की तकमील व तसदीक अधूरी ही रही. आखिर में वह ज़ाते गिरामी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाई जिसकी खातिर यह सारी कायनात पैदा की गई और उम्मते मरहूमा को वह कलमए-तय्यबा नसीब हुआ जिस के लिए तमाम अंबिया अलैहिमुस् सलाम और तमाम मज़ाहिब आलमे वजूद में आए. कलमए-तय्यबा के ज़रीए इस तौहीद व रिसालत की तकमील हो गई जिस की तशरीह व वज़ाहत की खातिर ज़बूर, तौरेत, इंजील मुक़द्दस, कुरआने

मजीद और तमाम आस्मानी सहीफे नाज़िल हुए.

ला इलाहा इल्लल्लाहु आदमु सफीयुल्लाह

ला इलाहा इल्लल्लाहु नूहुन नजीयुल्लाह

ला इलाहा इल्लल्लाहु इब्राहीमु खलीलुल्लाह

ला इलाहा इल्लल्लाहु मूसा कलीमुल्लाह

ला इलाहा इल्लल्लाहु दाऊद खलीफतुल्लाह

ला इलाहा इल्लल्लाहु ईसा रूहुल्लाह

वगैरा वगैरा तमाम कलमे मुसल्लमा (कबूल) मगर इन में मकसूद बिज़्ज़ात (अस्ल मकसूद) कोई नहीं, सब तुफैली और फुरूई है. तौहीद व रिसालत का जामेअ, अल्लाह तआला की ज़ात व सिफात और हकीकते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हामिल (लिए हुए) कलमा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' जब आया तो सारे कलमे मनसूख हो गए. कलमए-तय्यबा की जामइय्यत और पूरा होने की मुकम्मल तशरीह व वज़ाहत किसी मखलूक के बस की बात नहीं, दुनिया में जितने मज़ाहिब और आस्मानी किताबें आई वह सब मिल कर भी तौहीद व रिसालत की लामेहदूद तारीफ व तौसीफ का एक ज़र्रा बयान ना कर सके. यही इस कलमए-तय्यबा के मुकम्मल और पूरा होने का एक रौशन सबूत है. एक अंग्रेज़ मुफक्किर का बयान है कि अगर सारी ज़मीन पर से तमाम इस्लामी तालीमात और कुरआन व अहादीस के ज़खीरों को मिटा दिया जाए और सिर्फ कलमए-तय्यबा बाकी रह जाएगा तो यकीन मानो कि इस्लाम अपनी पूरी तालीमात के साथ मौजूद है. चुनांचे अल्लामा इकबाल ने फरमाया :

ऐ अहले नज़र ज़ौके नज़र खूब है लेकिन
जो शै की हकीकत को ना समझे वह नज़र क्या
(इकबाल)

एक नूर बा आवाज़ ही मुज़मर नहीं इस में
हर चीज़ की तकमील का सामान है कलमा
(शाहीन)

ऐ क़ारी-ए-कुरआँ तुझे अल्लाह नज़र दे
तो बोल उठे बोलता कुरआन है कलमा
(आमीन सुम्मा आमीन)

कुरआन ने कलमे की दूसरी खुसूसिय्यत सच्चाई बतलाई है. झूठ और सच का एक बहुत ही आसान और बेहतरीन पैमाना लिखता हूँ, जिस का वुजूद हो वह सच है, जिस का वुजूद ना हो वो झूठ है. सब से बडी सच्चाई अल्लाह तआला की ज़ात व सिफात का इकरार और सब से बडा झूठ मौला तआला का इंकार है. दुनिया वालों का इल्म और मेयार तो मुझे मालूम नहीं, मगर तमाम अल्लाह वालों का कहना है कि वाजिबुल वुजूद सिर्फ हक तआला की ज़ात है, अल्लाह के सिवा यह मकाम व मर्तबा किसी को हासिल नहीं, अल्लाह तआला की ज़ात के मा सिवा जितनी बातें होंगी उनकी अपनी कोई बुनियाद होगी ना वुजूद होगा. किसी आरिफ ने क्या अच्छी बात कही है :

"الله جل جلاله وجودٌ محمد ﷺ موجودٌ" यानी अल्लाह तआला वुजूद है, मुहम्मद मौजूद हैं

सुबहानल्लाह ! क्या मीम का पर्दा है कि वुजूद मौजूद हो गया.

वुजूद की इस तशरीह और वज़ाहत के बाद हर साहबे अक्ल यह समझ सकता है की तौहीद व रिसालत की गवाही से बढ कर और क्या सच्चाई हो सकती है, अगर पहले के अंबिया के कलमे मकसूद बिज़्ज़ात होते तो फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाते ना कलमए-तय्यबा पर ईमान और नजात का मदार होता. कलमए-तय्यबा का अज़ल से अबद तक बरकरार रहने खुद उसकी आफाकी सच्चाई का सब से बडा सुबूत है.

यही है बाइसे तखलीके आलमे हस्ती
हर एक ज़र्रह में सरगर्मे कार है कलमा

(शाहीन)

कलमए-तय्यबा की सच्चाई का एजाज़ (मोजेज़ा) तो देखो कि कलमे से मुतअल्लिक तमाम तालीमात और फराइज़ व इबादात सब के सब बरहक, वाजिब और मुसल्लमा हो गए. जिन का कलमए-तय्यबा से कोई तअल्लुक नहीं वह आमाल व अकवाल भी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास काबिले कबूल नहीं. इस लिए किसी आरिफ का शेर है :

इब्तेदा ला इलाहा इल्लल्लाहु

इन्तेहा मुहम्मदुर रसूलुल्लाह

कलमा वुजूदे बारी तआला और हकीकते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़बान से इकरार और दिल से तसदीक करना है. लेहाज़ा इस से बढकर कोई सच्चाई और हकीकत नहीं हो सकती.

कुरआन मजीद ने कलमए-तय्यबा की तीसरी खुसूसिय्यत यह बतलाई है कि कलमए-तय्यबा इंसाफ और एतेदाल का मतलब भी समझाता है. अद्ल का मतलब यही है कि कोई चीज़ अपनी हद से बढ कर हो ना कम, आइए ज़रा कलमए-तय्यबा की ज़ाहिरी खुसूसिय्यत और मियाना रवी का नज़्ज़ारा करें.

कलमए-तय्यबा के दो हिस्से हैं : एक 'ला इलाहा इल्लल्लाहु', दूसरा 'मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'. पहला हिस्सा तौहीद दूसरा रिसालत है. तौहीद के बगैर रिसालत और रिसालत के बगैर तौहीद का इकरार बेमायना है. ज़मीन व आस्मान के खालिक ने तौहीद व रिसालत दोनों को ईमान के तराज़ू के दो पलडे बनाए हैं और किसी भी तराज़ू के दो पलडे होना ज़रूरी है. इन दो पलडों के बगैर मीज़ाने अद्ल का तसव्वुर भी गलत होगा. यही वह दो पलडे हैं जिन में हर शख्स के आमाल को तोला जाएगा. जिस तराज़ू के दो पलडे मसावी और बराबर ना हों या जिस तराज़ू के किसी पलडे में पासंग (कमी या ज़्यादती) हो वह तराज़ू सहीह और वो तोल अद्ल नहीं कहलाएगा. इस लिए तराज़ू के दोनों पलडों का सहीह मसावी और हम वज़न होना ज़रूरी है वरना इंसाफ और एतेदाल के तक़ाज़े पूरे ना होंगे. कलमए-तय्यबा के दोनों पलडों में कोई पासंग या कमी व बेशी नहीं है, दोनों बराबर हम वज़न और मसावी हैं. अकीदए तौहीद के हम पल्ला और हम रुत्बा सिर्फ अकीदए रिसालत है और तौहीद व रिसालत का साथ चोली दामन का साथ है.

किसी और नबी या रसूल के कलमे को मीज़ाने अद्ल बनाना दुशवार है. किसी नबी के कलमे के दोनों जुज़ (हिस्से) मसावी (बराबर), हम वज़न और हम पल्ला नहीं हैं बल्कि सब में पासंग और कमी व बेशी पाई जाती है.

सब से अहम बात तो यह है कि कलमे के दोनों हिस्सों का हकीकत में

एक होना अव्वलीन शर्त है और यह एज़ाज़ जो सिर्फ कलमए-तय्यबा को हासिल है किसी और कलमे को यह खूबी मयस्सर नहीं. तौहीद के हम-पल्ला सिर्फ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की रिसालत है, किसी और की नहीं और सिर्फ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ही कलमे में रिसालत का इकरार है, किसी और नबी के कलमे में रिसालत की गवाही नहीं है. अल्लाह ज़मीन व आस्मानों का नूर है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह का नूर हैं. नूर ही नूर के मुकाबिल हो सकता है, नूर ही नूर के पहले में जगह पा सकता है, नूर ही नूर की हकीकत का हामिल हो सकता है. चूँकि अल्लाह और उसके रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों की हकीकत नूर है इस लिए दोनों की तौहीद व रिसालत का अकीद हम-पल्ला करार पाया. यह शरफ व वकार और यह नूरी कुर्बे इत्तेसाल किसी नबी, वली या फरिश्ते को नसीब नहीं. इस लिए अल्लाह तआला की तौहीद के मुकाबिल किसी नबी की शहादत हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत के बराबर नहीं हो सकती. जब कमी व बेशी होगी तो एतेदाल खत्म हो जाएगा. कलमे का मकसूद तौहीद के साथ रिसालत की शहादत है. अगर रिसालत की शहादत ना दी गई तो कलमे का मकसूद खत्म हो जाएगा. आदम सफीयुल्लाह, नूह नजीयुल्लाह, इब्राहीम खलीलुल्लाह, इस्माईल ज़बीहुल्लाह, मूसा कलीमुल्लाह, दाऊद खलीफतुल्लाह, ईसा रूहुल्लाह, ग़र्ज़ कि तमाम कलमे पढ डालिए सिवाए मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का इकरार कहीं भी नहीं मिलेगा और मीज़ाने अद्ल की पहली शर्त यही तौहीद व रिसालत की यकजाई है, नूर की तौहीद और नूर की रिसालत के बाद कलमए-तय्यबा का हुस्ने एतेदाल और रंगे मसावात (बराबरी) देखिए :

अल्लाह इस्मे ज़ात, मुहम्मद इस्मे ज़ात, इधर तौहीद उधर रिसालत, इधर नूर उधर नूर, इधर ज़ात उधर ज़ात, इस के चार हर्फ अलिफ, लाम, लाम, हे, उसके चार हर्फ मीम, है, मीम, दाल, इस में दो लाम उसमें दो मीम, इसके लाम पर तशदीद उसके मीम पर तशदीद, इसके दोनों हुरूफ अलिफ के साथ यकजा हों तो खुद उम्मुल किताब (कुरआन) आयत ‘अलिफ लाम

मीम', इस में नुक़ता है ना उसमें नुक़ता. और यह बात मुसल्लम है कि इस्मे आज़म बे नुक़ता है, ''ला इलाहा इल्लल्लाहु'' के बारह हुरूफ मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह के बारह हुरूफ, दोनों में कोई नुक़ता नहीं, दिन के बारह घंटे रात के बारह घंटे, दोनों के चौबीस घंटे, दोनों के चौबीस हुरूफ, एक साल के बारह महीने, बारह महीनों का एक साल, बारह साल का एक दौर, आस्मान के बारह बुरुज, अहले बैत के बारह इमाम, पूरे कलमे में चौबीस हुरूफ, चार और दो को जमा किया है छे हुए, कलमे के छे महल, इधर तीन महल उधर तीन महल, अल्लाह तआला का इर्शाद है ﴿خَلَقَ السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضَ فِی سِتَّةِ اَيَّامٍ﴾ यानी हम ने छे दिन में ज़मीन व आस्मान पैदा किए.

यह तल्ख हकीकत कोई माने कि ना माने
अफसाना तखलीक का उनवान है कलमा

(शाहीन)

किसी और कलमे में जामइय्यत, माअनविय्यत, अफज़लिय्यत, अकमलिय्यत, हुस्ने एतेदाल, रंगे मसावात, सच्चाई, गहराई और यकताई मुमकिन नहीं. बेशक यही कलमए-तय्यबा है जो मुकम्मल, जामेअ और हक्क व एतेदाल के हर मेयार पर पूरा उतरता है. बेशक इसी कलमे के बारे में अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह इनआम)

﴿وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّکَ صِدْقًا وَّ عَدْلًا﴾

और तेरे रब का कलमा सच्चाई और इंसाफ और एतेदाल के एतेबार से पूरा हुआ है.

व मा अलैना इल्लल् बलागुल् मुबीन

फुयूज़ाते कलमए-तय्यबा

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह इब्राहीम, रूकूः ३)

﴿يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ آمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ ، وَ يُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ﴾

तर्जुमा : अल्लाह तआला ईमान वालों की पक्की बात (कलमए-तय्यबा) से दुनिया और आखिरत दोनों में मज़बूत रखता है और काफिरों को दोनों जहाँ में गिरा देता है और अल्लाह तआला जो चाहता है करता है.

हज़रत बरा बिन आज़िब रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जब क़ब्र में सवाल होता है तो मुसलमान ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की गवाही देता है, आयते शरीफा में 'अलक़ौलुस् साबित' (पक्की बात) से यही मुराद है.

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु अन्हा से भी यही नक्ल किया गया है.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि मुसलमान जब मरता है तो फरिश्ते उस वक्त हाज़िर होते हैं उस को सलाम करते हैं, जन्नत की खुशखबरी देते हैं, उस की नमाज़े जनाज़ा में शरीक होते हैं, और जब वह दफ्न हो जाता है तो उसको बिठाते हैं और उस से सवाल व जवाब होते हैं, जिन में यह भी पूछा जाता है कि तेरी गवाही क्या है? वह कहता है

"اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ"

आयते शरीफा में 'क़ौले साबित' से यही मुराद है.

हज़रत अबू क़तादह रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि दुनिया में 'क़ौले साबित' से मुराद 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' है और आखिरत में क़ब्र का सवाल व जवाब मुराद है.

हज़रत ताऊस से भी यही नक्ल किया गया है.

दुनिया वालों के लिए अल्लाह तआला की जानिब से कुरआन मजीद वह आखरी सहीफए-हिदायत है जिस पर अमल किए बगैर दुनिया में

कामयाबी नसीब हो सकती है ना आखिरत में. इसी कुरआन को ले कर अरब के सहरा नशीनों (रेगिस्तान में रहने वालों) ने क़ैसर व किसरा की अज़ीमुश् शान सलतनतों का तख्ता उलट दिया, इसी कुरआन पर अमल पैरा हो कर दुनिया की कौमों से अपनी बरतरी और हुकूमत का लोहा मनवा लिया, इसी कुरआन मजीद को अपने लिए नमूनए अमल बनाकर इल्म व हुनर के आसमान के आफताब बन कर जगमगाए, इसी कुरआन की बदौलत ज़िंदगी की हर जंग में कामयाब हुए और सारी दुनिया से जो चाहा मनवह लिया, इसी कुरआन की असर आफरीनी (असर पैदा करनेवाली सिफत) और फरमाँरवाई (हुक्मरानी) का एजाज़ था कि अरब के रेगिस्तान में दो वक्त की रोटी को तरसने वाले मशरिक व मगरिब के मालिक बन गए, इसी कुरआन पर कामिल यकीन व एतेमाद ने वह हौसला व इस्तेक़ामत अता फरमाई कि हर नामुमकिन काम मुमकिन हो गया. कुरआन जब तक मुसलमानों का रहबर व हादी रहा मुसलमान हर कौम पर गालिब रहे और जब मुसलमानों ने कुरआन को नज़रअंदाज़ कर दिया तो दुनिया की हर कौम उन पर मुसल्लत हो गई. यह बदनसीब कौम अपनी तबाही पर रोती है मगर यह नहीं सोचती कि उस की तबाही और बरबादी की वजूहात क्या हैं. दुनिया की तारीख गवाह है कि मुसलमानों ने जो कुछ पाया था वह कुरआन की हिदायत के मुताबिक कलमए-तय्यबा को अपना कर पाया था और जब यही कलमए-तय्यबा सिर्फ ज़बानों पर रह गया, उस की दिल से तसदीक और उस पर तमाम जिस्मानी हिस्सों के साथ अमल की कोशिश ख्तम हो गई तो मुसलमानों से उनकी इज़्ज़त और शोहरत, दौलत और हुकूमत छीन ली गई और उन्हें अपने से छोटी और ज़लील कौमों की गुलामी में दे दिया गया, खुद को मुसलमान और कुरआन को अपने लिए आस्मानी हिदायत नामा मानने वाले जब तक अल्लाह तआला की हिदायहा पर खुलूसे दिल से साथ अमल नहीं करेंगे तब तक यह ज़िल्लत व नहूसत का शर्मनाक दौर बाकी रहेगा. आज भी मुसलमान अगर कुरआनी तालीमात को अपना कर उन पर दिल व जान से अमल करने लगें तो इंशा अल्लाह कोई वजह नहीं कि मौला तआला उन्हें माफ ना करदे. कुरआन गवाह है कि अल्लाह तआला ईमान वालों को पक्की बात (यानी

कलमए-तय्यबा) से दुनिया व आखिरत दोनों को मज़बूत रखता है और काफिरों को दोनों जहाँ में गिरा देता है और अल्लाह तआला जो चाहता है करता है. (सूरह इब्राहीम). नऊज़ु बिल्लाह! क्या अल्लाह की आदत (कुदरत) बदल गई? या काफिरों से अज़ाब उठा लिया गया? या कुरआनी हुक्म बेअसर हो गया है? या हम ने कुरआनी तकाज़ों के मुताबिक तौहीद व रिसालत को नहीं अपनाया जिस की पादाश में क़अ्रे मज़ल्लत (ज़िल्लत की खाई) में हम ढकेल दिए गए हैं.

जवाब साफ है, अल्लाह की आदत बदली ना काफिरों पर से अज़ाब उठाया गया और ना कुरआनी हुक्म बेअसर है बल्कि हकीकत तो यह है कि नाम निहाद मुसलमान कुरआन और अकीदए तौहीद व रिसालत से लापरवाह और कलमए-तय्यबा के इकरार, कलमए-तय्यबा की तसदीक और कलमए-तय्यबा पर अमल से दूर होकर अमलन जब काफिरों और मुश्रिकों की सफ में दाखिल हो गए तो अज़ाब के ज़्यादा मुस्तहिक (सज़ावार) ठहरे. यही वजह है कि नाम निहाद मुसलमान हर काफिर मुशरिक के हाथों पिट रहे हैं. दुनिया तो गई, डर यह है कि कहीं आखिरत भी जहन्नम जैसा ना बन जाए. ऐ हमारे रब! हमें दोज़ख की आग से बचा.

अल्लाह तआला का वादा है कि जो लोग कलमए-तय्यबा का ज़बान से इकरार करते हैं, दिल से तसदीक, हाथ पैर और तमाम हिस्सों के साथ उस पर अमल करते हैं तो ऐसे ईमान वालों को अल्लाह तआला उनके कलमए-तय्यबा पर यकीन व अमल की बदौलत दुनिया व आखिरत दोनों में मज़बूत व मुतमइन रखेगा और कभी उन्हें गिरने या तबाह होने ना देगा. बेशक अल्लाह तआला जो चाहता है वही करता है.

कलमए-तय्यबा के साथ मेरा बार बार इकरार और तसदीक और अमल का लिखना बिला वजह नहीं है बल्कि ऐन खुदा व रसूल के मंशा के मुताबिक है. कलमा के लिए शर्त है :

اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَ تَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ.

यानी कलमए-तय्यबा के ज़बानी इकरार के साथ दिल से तसदीक भी करो.

सय्यदना इमामे आज़म रहमतुल्लाहि अलैह से मनकूल है कि :

اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَ تَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ.

कलमए-तय्यबा का ज़बान से इकरार, कलमए-तय्यबा की दिल से तसदीक और कलमए-तय्यबा पर जिस्मानी आज़ा के साथ अमल, ईमान है.

कुरआन मजीद में अहले ईमान से मुराद वही लोग है जो कलमए-तय्यबा के इकरार व तसदीक और उस पर अमल करने वाले हैं. अल्लाह तआला इन्हीअहले ईमान का मुहाफिज़ व निगहबान, कारसाज़ व कारफरमा है. ऐसे लोग अपने ईमान और कलमए-तय्यबा की बदौलत अल्लाह तआला से जो चाहते हैं मांग लेते हैं. इर्शादे रब्बानी है :

﴿وَ الَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَ صَدَّقَ بِهٖ اُولٰٓئِکَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ، لَهُمْ مَّا یَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ، ذٰلِکَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِیْنَ o لِیُکَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِیْ عَمِلُوْا وَ یَجْزِیَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِیْ کَانُوْا یَعْمَلُوْنَ﴾

तर्जुमा : और जो लोग (अल्लाह की तरफ से या उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से) सच्ची बात (यानी कलमए-तय्यबा) ले कर आऐ और खुद भी उसकी तसदीक की तो यह लोग मुत्तक़ी हैं. यह लोग जो चाहेंगे उन के लिए उनके परवरदिगार के पास वह सब कुछ है, यह बदला है नेक काम करने वालों का ताकि अल्लाह तआला उनके बुरे आमाल को उनसे दूर करदे और नेक कामों का बदला दे. (सूरह ज़ुमर, रूकूः४)

जो लोग अल्लाह तआला की तरफ से लाने वाले हैं वह अंबिया हैं और जो लोग अल्लाह के रसूल की तरफ से लाने वाले हैं वह उलमा व मशाइख हैं.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मनकूल है कि सच्ची बात से मुराद (कलमए-तय्यबा है). चंद मुफस्सिरीन ने اَلَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ (यानी जो शख्स अल्लाह की तरफ से सच्ची बात कलमए-तय्यबा ले कर आया) से मुराद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और صَدَّقَ بِهٖ (वह लोग जिन्होंने उसकी तसदीक की) से मुराद मोमिनीन नक्ल किया है.

कुरआन मजीद में जगह जगह कलमए-तय्यबा की अहमिय्यत व फज़ीलत और उसके ज़िक्र की अज़मत और उस पर कायम रहने के दाइमी

फ़ुयूज़ व बरकात को बार बार बयान फरमाया गया है बल्कि साफ साफ यह बात बतला दी गई कि दुनिया व आखिरत दोनों की हर तरक्की और कामयाबी की कुंजी इसी कलमे का ज़बान से इकरार, इसी कलमे की दिल से तसदीक और इसी कलमे पर तमाम जिस्मानी आज़ा के साथ अमल करना है. अल्लाह पाक हर मुसलमान को अपने कलमए-तय्यबा के अनवार व तजल्लियात से सरफराज़ फरमाए. आमीन

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि इस में ज़रा भी शक नहीं कि तमाम ज़िक्रों में अफज़ल और सब से बढा हुआ ज़िक्र कलमए-तय्यबा है कि यही वह दीन की बुनियाद है जिस पर सारे दीन की तामीर है, यह वह पाक कलमा है कि दीन की चक्की उसी के गिर्द घूमती है. इसी वजह से सूफिया और आरिफीन इसी कलमए-तय्यबा का एहतेमाम फरमाते हैं और सारे अज़कार (वज़ीफों) पर इसी को तरजीह (अव्वलियत) देते हैं. और इसी कलमए-तय्यबा की जितनी मुमकिन है कसरत कराते हैं क्यूँकि तजुर्बे से इस में जिस क़द्र फायदे और मुनाफे मालूम हुए हैं वह किसी दूसरे में नहीं. चूंकि यह पाक कलमा दीन की अस्ल (बुनियाद) है, ईमान की जड है इस लिए जितनी भी इसकी कसरत की जाएगी इतनी ही ईमान की जड मज़बूत होगी. ईमान का मदार इसी कलमे पर है बल्कि दुनिया के वुजूद का मदार भी इसी कलमे पर है. चुनांचे हदीस में वारिद है कि कयामत उस वक्त तक कायम नहीं हो सकती जब तक ज़मीन पर कोई 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' कहने वाला मौजूद हो. (मफहूम)

हज़रत मआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि हुज़ूर ने फरमाया कि 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' शहादत जन्नत की कुंजीयां हैं. (मुसनदे अहमद)

कुंजीयां इस लेहाज़ से फरमाया कि हर दरवाज़ा हर जन्नत की कुंजी यही कलमए-तय्यबा है. इसके अलावा इस कलमे के भी दो जुज़ (हिस्से) हैं, एक 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' का ज़बान से इकरार और 'मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह' की दिल से तसदीक. कोई भी दरवाज़ा इन दोनों के मजमूए से खुल सकता है (जैसे 'मास्टर की' हर ताले को खोल देती है). मुहद्दिसीन किराम की सराहत

(वज़ाहत) है कि जहाँ जहाँ जन्नत में दाखिल होने या दोज़ख के हराम होने का ज़िक्र है वहाँ ''ला इलाहा इल्लल्लाहु'' से पूरा कलमए-तय्यबा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' मुराद है.

हज़रत यहया रहमतुल्लाहि अलैह रिवायत करते हैं कि हज़रत तलहा रदियल्लाहु अन्हू को लोगों ने देखा कि निहायत गमगीन बैठे हैं. किसी ने पूछा क्या बात है? फरमाया मैंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह सुना था कि मुझे एक ऐसा कलमा मालूम है कि जो शख्स मरते वक्त इस को कहे तो मौत की तकलीफ उस से हट जाए, रंग चमकने लगे और खूशी का मंज़र देखे. मगर मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछने की कुदरत ना हुई. हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया मुझे मालूम है. हज़रत तलहा रदियल्लाहु अन्हू खुश होकर कहने लगे वह क्या है? हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया कि हमें मालूम है कि कोई कलमा उस से बढा हुआ नहीं है जिस को हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा अबू तालिब पर पेश किया था और वह है ''ला इलाहा इल्लल्लाहु''. यह सुन कर हज़रत तलहा रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया अल्लाह की कसम! यही है, अल्लाह की कसम! यही है. (बैहक़ी, हाकिम)

कलमए-तय्यबा का असरार नूर व सुरूर होना बहुत से रिवायात से मालूम और मफहूम होता है. अल्लामा हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैह ने 'मुनब्बिहात' में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हू से नक्ल किया है कि : अंधेरे पांच हैं और पांच ही उन के लिए चराग हैं :

१)दुनिया की मुहब्बत अंधेरा है जिस का चराग तक़वा है.

२)गुनाह अंधेरा है जिस का चराग तौबा है.

३)क़ब्र अंधेरा है जिस का चराग ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' है.

४)आखिरत अंधेरा है जिस का चराग नेक अमल है.

५)पुल सिरात अंधेरा है जिस का चराग यकीन है.

आमने सामने दो मकानों के दरम्यान एक रौशन चराग रख दिजीए फिर देखिए कि दोनों मकानों का अंधेरा चराग की रौशनी से कम हो जाएगा. क़ब्र

दुनिया और आखिरत की दरम्यानी मंज़िल है, उसका चराग कलमए-तय्यबा जितना ज़्यादा रौशन और नूर वाला होगा उतना ही दोनों जानिब यानी दुनिया व आखिरत के अंधेरों पर अपनी रौशनी डालेगा. कहने को तक़वा, तौबा, कलमा, अमले सालेह और यकीन बज़ाहिर अलग अलग हैं लेकिन अहले दिल जानते हैं कि सब का खुलासा और मजमूआ यही मुकद्दस व बरतर कलमए-तय्यबा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' है. यह खुद तक़वा, तौबा, अमले सालेह और यकीन का वह पाक व साफ सरचश्मा है जिस से ईमान व ईक़ान की तमाम नेहरें निकलती हैं.

हज़रत उस्मान ज़ुन्नूरैन (दो नूर वाले) रदियल्लाहु अन्हू से मनकूल है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल के वक्त सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम को इस क़द्र सदमा था कि बहुत से मुखतलिफ तौर के वसाविस (अलग अलग तरह के वसवसों) में मुब्तेला हो गए. सय्यदना उस्मान रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं मैं भी उन लोगों में था जो वसाविस में घिरे हुए थे. सय्यदना उमर रदियल्लाहु अन्हू मेरे पास तशरीफ लाए मुझे सलाम किया मगर मुझे बिलकुल पता ना चला. उन्होंने सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हू से शिकायत की. इसके बाद दोनों हज़रात तशरीफ लाए और सलाम किया और हज़रत अबू बकर ने पूछा कि तुम ने अपने भाई उमर रदियल्लाहु अन्हू के सलाम का भी जवाब ना दिया (क्या बात है?) मैंने अर्ज़ किया मैंने तो ऐसा नहीं किया. हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया ऐसा ही हुआ. मैंने अर्ज़ किया कि मुझे आप के आने की भी खबर नहीं हुई कि कब आए और कब सलाम किया. हज़रत अबू बकर रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया सच है, ऐसा ही हुआ होगा. शायद तुम किसी सोच में बैठे होगे. मैंने अर्ज़ किया सच में मैं एक गहरी सोच में था. हज़रत अबू बकर सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हू ने पूछा वह क्या था? मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाल हो गया और हम ने यह भी ना पूछ लिया कि इस काम की नजात किस चीज़ में है. हज़रत अबू बकर रदियल्लाह अन्हु ने फरमाया कि मैं पूछ चुका हूँ, और मैंने कहा तुम पर मेरे मां बाप कुरबान, तुम ही इसे पूछने के ज़्यादा हकदार व मुस्तहिक थे. हज़रत

अबू बकर रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया मैंने हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा था कि इस काम की नजात क्या है? आप ने फरमाया कि जो शख्स इस कलमे को कबूल करले जिस को मैं ने अपने चचा अबू तालिब पर पेश किया था और उन्होंने रद कर दिया था, वही कलमा नजात है. (अबू याला, इमाम अहमद, बैहक़ी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल पर सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम पर कयामते सुग़रा बरपा थी, बडे बडे जलीलुल क़द्र सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम दीनी उमूर की तकमील और नजात के खयाल से कांप रहे थे. अकसर अपने होश व हवास खो बैठे थे. हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु अन्हू और हज़रत तलहा रदियल्लाहु अन्हू जैसे बुज़ुर्ग सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम मुखतलिफ वसवसों और अंदेशों में मुब्तेला हो गऐ थे और सैंकडों अपनी जगह हैरान व परेशान थे कि हम ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दीन का मदार और नजात का हतमी (कतई) ज़रीया नहीं पूछा. जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया कि मैं यह बात पूछ चुका हूँ तो फर्ते मसर्रत (खूशी की ज़्यादती) से सय्यदना उस्मान रदियल्लाहु अन्हू खडे हो गए, इन्तेहाई अक़ीदत और वालेहाना मुहब्बत के आलम में कहने लगे, आप पर मेरे मां बाप कुरबान, वाकई आप की ज़ाते गिरामी इसी अव्वलिय्यत और बुज़ुर्गी की मुस्तहिक थी जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आप को अता फरमाई. जब हज़रत सिद्दीके अकबर रदियल्लाहु अन्हू ने कलमए-नजात बतलाया सारे वसवसे और अंदेशे खत्म हो गए. आज जो मुसलमान कलमए-तय्यबा पाकर भी मुतमइन ना हो उसे अल्लाह पर और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यकीन है ना एतेमाद. ऐसा शख्स किसी रहमत व नेमत का मुस्तहिक नहीं. जिस कलमए-नजात को पाकर हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु अन्हू और हज़रत तलहा रदियल्लाहु अन्हू जैसे सहाबा किराम फर्ते मसर्रत और जोशे अकीदत से झूम उठे वही कलमए-इखलास आज के मुसलमान के सामने पेश किया जाता है तो नऊज़ु बिल्लाह, मुंह फेर कर चल देते हैं और कलमए-तय्यबा को ज़रा सी भी अहमिय्यत नहीं देते. यह पांच वक्त की

नमाज़ अदा करने वाले घमंडी मुसलमान क्या सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम से ज़्यादा शरीअत के पाबंद और तरीकत के आमिल हैं जिन की इत्तेबाअ को किताब व सुन्नत ने अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इत्तबाअ क़रार दिया. काश आज के मुसलमान कलमए-तय्यबा की अहमिय्यत व फज़ीलत को समझें और सहाबा किराम की तरह उसे अपने लिए वसीलए नजात बना लें. आमीन सुम्मा आमीन.

मुहद्दिसीन किराम ने ऊपर ज़िक्र की हुई हदीस की वज़ाहत में लिखा है कि इस काम की नजात क्या है? इस के दो मतलब हैं; एक यह कि दीन के काम तो बहुत से हैं, उन सब कामों में मदार किस चीज़ पर है जिस के बगैर चारा ना हो? इस का जवाब ज़ाहिर है कि दीन का सारा मदार ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' पर है और इस्लाम की जड यही कलमए-तय्यबा है. दूसरा मतलब यह है कि इस काम यानी दीन में दिक्कतें (मुश्किलें) भी पेश आती हैं, वसवसे भी घेरते हैं, शैतान की मुदाखिलत भी एक हमेशा की मुसीबत है, दुनयावी ज़रूरतें भी अपनी तरफ खींचती रहती हैं, इस सूरत में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद का मतलब यह हुआ कि कलमए-तय्यबा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की कसरत इन सब चीज़ों का इलाज है क्यूँकि बेशक कलमए-तय्यबा इखलास पैदा करने वाला है. कुफ्र और शिर्क की गंदगीयों को धो कर दिलों को साफ करने वाला है, अहले ईमान को दुनिया और आखिरत दोनों में सहारा देने वाला है, अल्लाह तआला से इज़्ज़त, मगफिरत और जन्नत दिलाने वाला है. नज़अ (मौत के वक्त) में, क़ब्र में, हश्र में, पुल सिरात पर हर जगह काम आने वाला है, शैतान के मक्र व फरेब और वसवसों से बचा कर हक तआला तक पहुंचाने वाला है. सहीह हदीस में है कि कलमए-तय्यबा अपने ज़ाकिर से नन्नानवे किस्म की बलाऐं दूर करता है जिन में सब से कम (दर्जे की) बला वह गम है जो हर वक्त आदमी पर सवार रहता है.

मुसलमानो! देखो, दीन का मदार और नजात का ज़रीया हज़रत सिद्दीके अकबर रदियल्लाहु अन्हू ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

से नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, फितरा, सदका, खैरात, नेक आमाल, औराद व वज़ीफे कुछ नहीं बतलाया बल्कि दीन का मदार और नजात का ज़रीया कलमए-तय्यबा को करार दिया. इस का साफ मतलब यही है कि नमाज़ व रोज़ा, हज व ज़कात और तमाम नेक आमाल कलमए-तय्यबा के साथ हों तो कबूल वरना रद कर दिए जाऐंगे. नेक आमाल के अलावा जिस के साथ कलमए-तय्यबा होगा वह दोनों जहान में शाद व आबाद होगा. हम ने आप को कलमए-तय्यबा का इकरार, कलमए-तय्यबा की तसदीक और कलमए-तय्यबा पर अमल के आसान, मुजर्रब (तजुर्बा किए हुए) और किताब व सुन्नत के मुताबिक मसनून तरीके बतलाए हैं, उन पर चलना और अमल करना आप का अपना काम है. अल्लाह, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम और बुज़ुर्गाने दीन की तालीमात की रौशनी में कोई मुसीबत हो या बला हो, माली परेशानी हो या कारोबार का मुआमला हो, बीमारी हो, तकलीफ हो, मुक़द्दमा हो, ज़िंदगी के तमाम तक़ाज़े हों या मौत के बाद के तमाम मरहले हों; सब का हल यही कलमए-तय्यबा है और उस का रात दिन कसरत के साथ ज़बान से, दिल से और रूह से ज़िक्र करना है. अगर किसी को अल्लाह पर, उसके रसूल पर, किताब व सुन्नत की तालीमात पर यकीन नहीं, भरोसा नहीं तो वह यह कलमा छोड दे अपना रास्ता अलग बना ले. इस से हमारा दुनिया में और आखिरत में कोई रिश्ता नहीं, तअल्लुक नहीं.

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह ज़ुमर, रूकू:१)

﴿فَبَشِّرۡ عِبَادِ الَّذِیۡنَ یَسۡتَمِعُوۡنَ الۡقَوۡلَ فَیَتَّبِعُوۡنَ اَحۡسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓئِکَ هُمۡ اُولُوا الۡاَلۡبَابِ﴾

पस आप मेरे ऐसे बंदों को खुशखबरी सुना दिजीए जो इस कलामे पाक को कान लगाकर सुनते हैं, फिर उसकी बेहतरीन बातों (यानी कलमए-तय्यबा) की पैरवी करते हैं, यही हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत की और यही हैं जो अक्ल वाले हैं.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदिहल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि हज़रत

सईद बिन ज़ैद रदियल्लाह अन्हू, हज़रत अबू ज़र गिफारी रदियल्लाहु अन्हू और हज़रत सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हू यह तीनों हज़रात जाहिलिय्यत (इस्लाम के ज़ाहिर होने से पहले) के ज़माने ही में 'ला इलाहा इल्लल्लाहु' पढा करते थे. आयते शरीफा में ''अहसनुल क़ौल'' से यही मुराद है.

'अहसनुल क़ौल' के लिए हज़रत ज़ैद बिन असलमह रदियल्लाहु अन्हू से भी मनकूल है कि यह आयतें इन तीन हज़रात सईद बिन ज़ैद बिन उमर बिन नुफैल, अबू ज़र ग़िफारी और सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हुम के बारे में नाज़िल हुई हैं जो जाहिलिय्यत के ज़माने में भी 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पढा करते थे.

हम किसी का शेर सुनते हैं तो सौ सौ तरह से उस के मायना व मतलब जानने और समझने की कोशिश करते हैं, हालांकि वह भी हम जैसे ही किसी इंसान का खयाल होता है, फर्क सिर्फ इतना होता हैं कि जो बात हम नस्र (नज़्म की ज़िद) में कह सकते हैं वही बात एक शाइर नज़्म में कह देता है. एक शेर के लिए तो हम बहुत कुछ सोचते हैं और उस के तमाम पहलूओं का जायज़ा लेकर उसमें छुपी हुई रूह को पा लेने की कोशिश करते हैं मगर कुरआन मजीद जो कलामे इलाही है, अम्न व सलामती का सहीफा है, जिस पर अमल और यकीन के बगैर हमारी दुनिया व आखिरत दोनों में कामयाबी मुमकिन नहीं उसकी हमह-गीर (हर बात को समेटने वाली) अज़ीमुश् शान आयतों पर गौर व फिक्र करने और सोचने और समझने की हमें फुरसत ही नहीं होती. बस यूँ ही कहीं से कोई आयत पढ ली और कुछ सोचे समझे बगैर कलामे मजीद को रख दिया. यही हमारा तरीका है, हम वह मुसलमान हैं जो अल्लाह पाक के कलामुल्लाह में से किसी आयत पर इतना भी गौर नहीं करते जितना किसी इंसान के शेर पर हम सोचते हैं. क्या हमारा यह तरीका हमें किसी सिराते मुस्तक़ीम तक पहुंचा सकता है? कुरआन से हिदायत और रौशनी पाना हो तो हमें अपने फिक्र व नज़र के अंदाज़ को बदलना होगा और कलामुल्लाह की एक एक आयत को उसके सहीह मायना और मफहूम के साथ खूब अच्छी तरह सोच समझ कर अपनाना और उस पर दिल व जान के साथ अमल करना होगा, तभी हमारी नजात और हमारी कामयाबी मुमकिन है.

कलामुल्लाह (कुरआन) में उन लोगों के लिए खुशखबरी है जो कलामुल्लाह को हुज़ूरे क़ल्ब (सच्चे दिल) के साथ बडे शौक से कान लगा कर सुनते हैं, फिर उस की बेहतरीन बातों (यानी तौहीद व रिसालत) की पैरवी करते हैं. अल्लाह तआला का इर्शाद है कि यही लोग समझदार हैं और अल्लाह तआला ऐसे ही लोगों को हिदायत अता फरमाता है.

हज़रत अबू ज़र ग़िफारी रदियल्लाहु अन्हू, हज़रत सईद बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हू, हज़रत सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हू की ज़िंदगी का मकसद क्या था? इन हज़रात की तमन्ना क्या थी और यह क्या चाहते थे? तारीखे इस्लाम का कोई भी तालिबे इल्म यह बात बडे भरोसे से कह सकता है कि इन आशिकाने खुदा व रसूल की तमाम जद्दोजोहद तो रिसालत की तकमील के लिए और ईमान व नजात पाने के लिए थी. जाहिलिय्यत के ज़माने में भी यह हज़रात 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पढा करते थे, यह तौहीद के काइल (मानने वाले) और रिसालत के मुंतज़िर (इंतेज़ार करने वाले) थे. उनकी तमाम फिक्र व कोशिश यही थी कि हम दुनिया से बाईमान जाऐं, मुवह्हिदीन (तौहीद को मानने वाले) जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए और कलमए-तय्यबा से फैज़याब हुए तो अल्लाह पाक उनको अपने कलाम में अपने हबीब व खलील सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रीये यह खुशखबरी दे रहा है कि आप मेरे ऐसे बंदों को खुशखबरी सुना दिजीए जो इस कलामे पाक को कान लगाकर सुनते हैं, फिर उसकी अच्छी बातों यानी तौहीद व रिसालत के अकीदे को अपना कर उसके तकाज़ों को पूरा करते हैं बेशक अल्लाह तआला ऐसे ही लोगों को हिदायत फरमाता है और बेशक यही लोग समझदार हैं जो तौहीद व रिसालत को अपनाते हैं और उसके मुताबिक अपनी ज़िंदगी गुज़ारते हैं. ऊपर लिखी हुई आयत से यह वाज़ेह हो गया कि :

कुरआन को हक समझ कर पढने, सुनने और उस के तौहीद व रिसालत के अकीदे पर चलने वालों के लिए समझदार होने की ईमान की नजात की और हिदायत की खुशखबरी है, सारा कलामे मजीद ही कलामे इलाही है मगर उसमें 'अहसनुल क़ौल' ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर

रसूलुल्लाह'' है. दुनिया के तमाम फलसफे दोहराने वाले, ज़मीन व आस्मान के मसाइल गिनवाने वाले, माद्दीय्यत के तमाम उलूम जानने वाले 'ऊलुल अलबाब' यानी समझदार नहीं हैं.

अल्लाह की नज़र में समझदार तो बस वही हैं जो तौहीद व रिसालत की गवाही दें और तौहीद व रिसालत की मुकर्रर की हुई राह यानी किताब व सुन्नत की पैरवी में अपनी ज़िंदगी गुज़ारें. बेशक ऐसे ही लोग समझदार हैं जो कलमए-तय्यबा पर ईमान लाते हैं और तौहीद व रिसालत के अकीदे पर जमे हुए रहते हैं, हिदायत उन्ही को नसीब होती है. और नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है: ''कसम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम में से कोई ईमानदार नहीं हो सकता जब तक कि उसके नज़दीक मैं (१) उसके नफ्स से, (२) उसके माल से, (३) उसकी औलाद से, (४) उसके मां बाप से और (५) तमाम लोगों से ज़्यादा मेहबूब ना हो जाऊँ.'' (बुखारी, मुस्लिम)

बखुदा! एक ईमान वाला ज़िंदगी के किसी लम्हे में 'मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह' का नूरी व क़ुदसी व अर्शी व अज़ली व अबदी ज़िक्र नहीं छोड सकता. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बेपनाह मुहब्बत ही एक मुसलमान के ईमान का सब से ऊँचा मेयार है.

इर्शादे गिरामी है कि जो शख्स सच्चे दिल से (तसदीक बिलक़ल्ब से) ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की गवाही देगा अल्लाह तआला उस पर दोज़ख की आग हराम कर देंगे.

हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) क्या मैं लोगों को इस फरमान की खबर दे दूँ ताकि वह खुश हो जाऐं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : नहीं, यह सुन कर वह इसी पर भरोसे कर बैठेंगे (यानी अमल करना छोड देंगे). (बुखारी व मुस्लिम)

लोग शरीअत के दूसरे एहकामात से कोताही ना करें इस खयाल से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुकूत फरमाया (खामोश रहे) वरना हकीकत यह है कि आमाल के बगैर भी कलमए-तय्यबा जन्नत में

दाखिल होने के लिए काफी है.

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कयामत के दिन अल्लाह तआला का फरमान होगा ''जहन्नम से हर उस शख्स को निकाल लो जिस ने 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा हो, और उस के दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान हो और उस शख्स को निकाल लो जिस ने 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा हो, या मुझे याद किया हो या किसी मौके पर मुझ से डरा हो.'' (हाकिम)

कलमए-तय्यबा की तसदीक के बगैर अगर कोई शख्स किताब व सुन्नत की ज़ाहिरी पैरवी करता है तो ऐसा शख्स बज़ाहिर मुसलमान ही कहलाएगा मगर इंदल्लाह वह मोमिन नहीं हो सकता. सिर्फ इस्लाम का ज़बानी इकरार करके फराइज़ अदा करने वालों से कुरआन इस तरह मुखातब है : (सूरह हुजुरात, रूकू:२)

﴿قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَ لٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا﴾

तर्जुमा: तुम यह मत कहो हम ईमान लाए, यह कहो कि हम इस्लाम लाए.

यानी हम ने खुदा और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और नमाज़ व रोज़ा, हज व ज़कात को कबूल किया और उस पर अमल किया, हम ने इस्लाम की इत्तबा (पैरवी) की. जब तुम नेक आमाल के साथ तौहीद व रिसालत के अकीदे और उस के तमाम दूसरे लवाज़िमात को हक मान कर दिल से तसदीक कर लोगे तो मोमिन कहलाओगे वरना सिर्फ इकरार व अमल की वजह से, ﴿وَ لَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ﴾ (सूरह हुजुरात)

तर्जुमा : और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में दाखिल नहीं हुआ, के मिसदाक़ ही रहोगे.

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ﴾ (सूरह निसा)

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ.

यानी ज़बान से इकरार के साथ दिल से तसदीक भी करो. इकरार और तसदीक करने वालों के बारे में फरमान है कि ﴿وَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ﴾

(सूरह मुजादेला) उन लोगों के दिल में अल्लाह तआला ने ईमान को मज़बूत फरमा दिया. जब ईमान के साथ अहले ईमान नेक अमल करते हैं तो यूँ नवाज़ा जाता है : ﴿اِنَّ الَّذِیۡنَ آمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ اَجۡرٌ غَیۡرُ مَمۡنُوۡنٍ﴾

तर्जुमा : बेशक जो लोग ईमान लाऐ और नेक अमल किए उन के लिए ऐसा अज्र है जो कभी थमने वाला नहीं. (सूरह सज्दा)

फर्ज़ की तकमील अमल से और अकीदे की तकमील यकीन से होती है. यकीन तभी कामिल हो सकता है जब अल्लाह तआला अपने फज़्ल व करम से दिल की आंखें खोल दे. ﴿ذٰلِکَ فَضۡلُ اللّٰهِ یُؤۡتِیۡهِ مَنۡ یَّشَآءُ﴾

हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है : ''ईमान क़ल्बी (दिल की) चीज़ है (और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल को नहीं बल्कि दिलों को देखता है) सिवाए अल्लाह के इस से कोई वाकिफ नहीं. हां, इस्लाम को लोग जान सकते हैं.'' (सहीह बुखारी)

इस्लाम ज़ाहिर है लेकिन ईमान और तक़्वा क़ल्बी चीज़ है. (इमाम मुहम्मद, नसाई, अबू याला)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने अर्ज़ किया, आमाल में कौनसा अमल अफज़ल है? फरमाया : इस्लाम (यानी नमाज़, हज, ज़कात और माहे रमज़ान के रोज़े वगैरा) फिर साइल (पूछने वाले) ने पूछा कि इस्लाम कौनसा अफज़ल है? फरमाया : ईमान. (इमाम अहमद, तबरानी)

इर्शादे गिरामी है : (सूरह आले इम्रान, रूकू:१२)

﴿كُنۡتُمۡ خَیۡرَ اُمَّةٍ اُخۡرِجَتۡ لِلنَّاسِ تَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَ تَنۡهَوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ تُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ ، وَ لَوۡ اٰمَنَ اَهۡلُ الۡكِتٰبِ لَكَانَ خَیۡرًا لَّهُمۡ مِّنۡهُمُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَ اَكۡثَرُهُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ﴾

तर्जुमा : ऐ उम्मते रसूल ! तुम लोग (सब अहले मज़ाहिब से) बेहतरीन जमात हो कि वह जमात लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए ज़ाहिर (पैदा) की गई है. तुम लोग नेक कामों को बतलाते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो, अगर अहले किताब भी ईमान ले आते तो उन के लिए बेहतर था, उन में से कुछ तो मुसलमान हैं (ईमान ले

आए) लेकिन अकसर हिस्सा उनमें से काफिर है.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि 'अच्छी बातों का हुक्म करते हैं' का यह मतलब है कि इस का हुक्म करते हैं कि वह ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' की गवाही दें और अल्लाह के एहकाम का इकरार करें और ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' सारी अच्छी चीज़ों में से बेहतरीन चीज़ है और सब से बढी हुई है.

अम्र बिलमअरूफ (अच्छाई का हुक्म देने) का दावा करने वालों से कोई पूछे कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमान के बारे में क्या खयाल है? कलमए-तय्यबा को अपनी ज़िंदगी का मकसद करार देने वाले 'अम्र बिलमअरूफ' के ज़्यादा पाबंद हैं या आप?

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह नहल)

﴿اِنَّ اللّٰهَ یَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ وَ اِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَ یَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْکَرِ وَ الْبَغْیِ ، یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ﴾

तर्जुमा : बेशक अल्लाह तआला हुक्म फरमाता है अद्ल का और एहसान का और कराबत दारों (रिश्तेदारों) को देने का और मना फरमाता है फहेश बातों से और बुरी बातों से और किसी पर ज़ुल्म करने से, अल्लाह तआला तुम को नसीहत फरमाता है ताकि तुम नसीहत को कबूल करो.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हू से मनकूल है कि अद्ल से मुराद 'ला इलाहा इल्लल्लाह' और एहसान से मुराद फराइज़ की तकमील है.

इन आयतों में मौला तआला ने कलमए-तय्यबा की मारिफत और हुसूले एहसान (तसव्वुफ) की तलब और तकमील का खुला हुक्म दिया है.

अल्लाह पाक का इर्शाद है : (सूरह अहज़ाब, रूकूः९)

﴿یٰاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِیْدًا o یُّصْلِحْ لَکُمْ اَعْمَالَکُمْ وَ یَغْفِرْ لَکُمْ ذُنُوْبَکُمْ ، وَ مَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِیْمًا﴾

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चाई की पक्की बात (कलमए-तय्यबा) कहो. अल्लाह तुम्हारे आमाल अच्छे कर देगा, और गुनाह

माफ कर देगा. जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत (फरमाँबरदारी) करेगा वह बडी कामयाबी को पहुंचेगा.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा और हज़रत इकरीमा रदियल्लाहु अन्हू दोनों से रिवायत है की ''क़ौलन सदीदन'' का मतलब यह है कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा करो. अपने आमाल की दुरुस्तगी, आखिरत और नजात का रात दिन ढिंडोरा पीटने वाले ज़रा इन आयतों को गौर से पढें और अल्लाह के नुस्खे पर अमल करें. कुरआन ने आमाल की दुरुस्तगी, गुनाहों की माफी और आखिरत में अज़ीमुश् शान कामयाबी का वाहिद ज़रीया कलमए-तय्यबा की कसरत और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत को बतलाया है.

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह हा-मीम सज्दा, रूकूः४)

﴿اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ٥ نَحْنُ اَوْلِيٰٓـؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ ، وَ لَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِىْٓ اَنْفُسُكُمْ وَ لَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ٥ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ﴾

तर्जुमा : बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर मुस्तकीम रहे (यानी इसी अकीदे पर जमे रहे) उन पर फरिश्ते उतरेंगे (मौत के वक्त क़ब्र में और कयामत में यह कहते हुए कि) ना खौफ खाओ ना रंज करो और खुशखबरी लो उस जन्नत की, जिसका तुम से वादा किया गया है. हम दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हारे रफीक (साथी) थे और आखिरत में भी तुम्हारे रफीक रहेंगे और आखिरत में तुम्हारे लिए जिस चीज़ को तुम्हारा दिल चाहे वह मौजूद है और वहाँ जो तुम मांगोगे वह मिलेगा (यह सब इनाम व इकराम) अल्लाह तआला की तरफ से बतौर मेहमानी के है.

(अल्लाह तआला की बखशिश और रहमत की कसम, कलमए-तय्यबा के फिदाईयों के लिए यही फरमाने इलाही सारी ज़मीन के तमाम खज़ानों से कई दर्जे ज़्यादा बेहतर है.)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि ''सुमस्

तक़ामू'' का मतलब यह है कि फिर ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह'' के इकरार पर कायम रहे. हज़रत इब्राहीम और हज़रत मुजाहिद रदियल्लाहु अन्हुमा से भी यही मनकूल है कि मरने तक 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पर कायम रहे.

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू से मनकूल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अपने ईमान की तजदीद करते रहा करो (यानी ताज़ा करते रहा करो). सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! ईमान की तजदीद किस तरह करें? इर्शाद फरमाया : 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कसरत से कहते रहा करो. (इमाम अहमद, तबरानी, हाकिम)

एक रिवायत में है कि ईमान पुराना हो जाता है जैसा कि कपडा पुराना हो जाता है. इस लिए अल्लाह तआला से ईमान की तजदीद (تجدید) मांगते रहा करो.

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह' की कसरत से गवाही देते रहा करो, और इस से पहले कि ऐसा वक्त आए कि तुम इस कलमे को ना कह सको (यानी मौत से पहले) जितना मुमकिन हो इस मुक़द्दस कलमे को दोहराते रहा करो. (अबू याला रहमतुल्लाहि अलैह)

जो लोग यह चाहते हैं कि उन्हें हक तआला से ईमान की दौलत मिले, इज़्ज़त मिले, दौलत मिले, तरक्की और खुशहाली अता हो, दुनिया और आखिरत में उन्हें किसी बात का रंज ना हो, किसी अज़ाब का खौफ ना हो, नज़अ में क़ब्र में, हश्र में रहमते खुदावंदी साथ रहे, उन पर फरिश्ते उतरें और उन्हें जन्नत की बशारत (खुशखबरी) दें और जन्नत में वह खुदाए रहीम व करीम के महमान रहें तो ऐसे लोगों को अल्लाह तआला का हुक्म है कि वह कलमए-तय्यबा को अपना कर तौहीद व रिसालत के अकीदे पर अपनी पूरी ज़िंदगी गुज़ार दें. बेशक रब्बे क़दीर कलमा वालों को कभी ना मुराद नहीं होने देगा.

इर्शादे बारी है : (सूरह रहमान)

﴿هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ﴾

तर्जुमा : भला एहसान का बदला एहसान के सिवा कुछ और भी हो सकता है. पस तुम अपने रब की कौन कौन सी नेमतों को झुठलाओगे.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि आयते शरीफा का मतलब यह है कि जिस शख्स पर मैंने दुनिया में 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने का इनआम किया, भला आखिरत में उसका जन्नत के सिवा और क्या मुआवज़ा हो सकता है? हज़रत इकरीमा रदियल्लाहु अन्हू और हज़रत सय्यदना इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हू से भी यही मनकूल है कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने का बदला जन्नत के सिवा और क्या हो सकता है?

जिस को अल्लाह के कलाम पर, रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमानों पर और कलमए-तय्यबा से बखशिश व मग़फिरत पर यकीन नहीं वह मुसलमान नहीं बल्कि अल्लाह तआला की बेशूमार नेमतों को झुठलाने वाला फासिक़ (गुनहगार) है. अल्लाह तआला जिसको अपनी नेमतों से नवाज़ना और हर मकाम पर साबित कदम रखना चाहता है उसे कलमए-तय्यबा पर यकीन व इस्तेकामत अता फरमाता है. मौला तआला जिसकी बखशिश व मगफिरत चाहता है उसी को यह कलमए-तक़वा "ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" अता फरमाता है.

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सूरह फतह)

﴿فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَ كَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَ اَهْلَهَا﴾

तर्जुमा : पस अल्लाह तआला अपनी सकीनत (सुकून व तहम्मुल या खास रहमत) अपने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल फरमाई और मोमिनीन पर और उन को कलमए-तक़वा पर जमाए रखा और वही कलमए-तक़वा के मुस्तहिक़ और अहल थे.

कलमए-तक़वा से अकसर रिवायात में यही कलमए-तय्यबा मुराद है. अता खुरासानी रहमतुल्लाहि अलैह से कलमए-तक़वा "ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" नक्ल किया गया है. हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत सलमह रदियल्लाहु अन्हुमा ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

यही नक्ल किया है, इस से मुराद 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है.

हज़रत अबी इब्ने कअब, हज़रत अली, हज़रत उमर फारूक़, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुम और बहुत सारे सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम से कलमए-तक़्वा यही 'ला इलाहा इल्लल्लाह' मुराद है. तिर्मीज़ी ने हज़रत बरा बिन आज़िब रदियल्लाहु अन्हू से नक्ल किया है कि इस से मुराद 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है.

इस आयते करीमा से यह बात वाज़ेह हो गई कि अल्लाह तआला जिसे नवाज़ना चाहता है उसे कलमए-तक़्वा पर जमाए रखता है और जिसे कलमए-तय्यबा की इस्तेक़ामत नसीब होती है उसे अल्लाह तआला की सकीनत नाज़िल होती है. किसी अज़ली बदबख्त को यह दौलते दारैन नहीं मिलती.

मशहूर मुफस्सिर व मुहद्दिस अल्लामा जलालुद्दीन मुहम्मद अब्दुर् रहमान स्यूती रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा है कि यह रिवायत कई तरीकों से मुखतलिफ अलफाज़ में नक्ल की गई है. चंद रिवायतों में अल्लाह तआला का यह भी इर्शाद है कि ''मैंने कलमए-तय्यबा इस शख्स को इसी लिए अता फरमाया था कि उसकी मग़फिरत कर दूँ.''

अल्लाह अल्लाह ! किस क़द्र लुत्फ व करम है कि तौफीक़े दर्द और अताए मग़फिरत दोनों की नवाज़िश हो रही है. ऐ कलमए-तय्यबा वालो ! आओ उस रहीम व करीम मौला तआला की बारगाह में सर बसजूद हो जाओ जिस ने तुम्हें कलमए-तय्यबा से नवाज़ कर तुम्हारी मग़फिरत फरमादी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा रावी हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया 'ला इलाहा इल्लल्लाह' वालों पर क़ब्रों में वहशत है ना मैदाने हश्र में. इस वक्त गोया वह मंज़र मेरे सामने है कि जब वह अपने सरों से मिट्टी झाडते हुए (क़ब्रों से) उठेंगे और कहेंगे कि तमाम तारीफ उस अल्लाह के लिए है जिस ने हम से रंज व गम दूर कर दिया.

(तबरानी, बैहक़ी)

हज़रत अबुद् दरदा रदियल्लाहु अन्हू रावी हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख्स सौ मर्तबा 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पढा

करे तो हक तआला कयामत के दिन उसको ऐसा रौशन चेहरा वाला बनाकर उठाएगा जैसे चौधवीं रात का चांद होता है और जिस दिन यह तसबीह पढे उस दिन उस से अफज़ल अमल वाला वही शख्स हो सकता है जो इस से ज़्यादा पढे. (तबरानी)

अल्लाहु अकबर ! सौ मर्तबा पढने की यह फज़ीलत है तो जिस की एक एक सांस कलमए-तय्यबा अदा कर रही हो और जो दिन रात में चौबीस हज़ार (मर्तबा) कलमए-तय्यबा 'ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' का रूहानी तोहफा अपने खालिक व मालिक के हुज़ूर में पेश करे उस पर क्या क्या नवाज़िशें ना होंगी.

बडे खुश नसीब हैं कलमए-तय्यबा के वह दाइमी ज़ाकिर (हमेशा ज़िक्र करने वाला) जिस की इस खुसूसिय्यत की अंबिया ने पेशीनगोई फरमाई. हज़रत ईसा रूहुल्लाह अलैहिस् सलाम फरमाते हैं कि (सय्यदना व मौलाना) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की उम्मत के आमाल (मीज़ान में) इस लिए सब से भारी हैं कि उन की ज़बानें एक ऐसे कलमे के साथ मानूस हैं जो उनसे पहली उम्मतों पर भारी था, वह कलमा 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है. (असबहानी)

यह एक हकीकत है कि उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में कलमए-तय्यबा का जितना ज़ोर और कसरत है किसी उम्मत में उतनी कसरत नहीं है. हज़ारों लाखों मशाइख हैं और हर शेख के हज़ारों मुरीद हैं और तकरीबन सभी के यहाँ कलमए-तय्यबा का ज़िक्र हज़ारों की तादाद में रोज़ाना मामूलात में दाखिल है. हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे दहलवी रहमतुल्लाहि अलैह ने 'कौले जमील' में अपने वालिद से नक्ल किया है कि मैं इब्तेदाए सुलूक में एक सांस में 'ला इलाहा इल्लल्लाह' दो सौ मर्तबा कहा करता था.

शेख अबू यज़ीद कुरतबी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं, मैंने यह सुना कि जो शख्स सत्तर हज़ार मर्तबा कलमए-तय्यबा पढे, उसको दोज़ख की आग से नजात मिले, मैंने यह खबर सुन कर एक निसाब (सत्तर हज़ार) अपनी बीवी के लिए और कई निसाब अपने लिए पढ कर आखिरत का ज़खीरा

बनाया, हमारे पास एक नौजवान रहता था जिस के बारे में यह मशहूर था कि साहिबे कश्फ है, दोज़ख और जन्नत का भी उस को कश्फ होता है, मुझे उसके सेहत (सच होने) में तरद्दुद (शक) था, एक मर्तबा वह नौजवान हमारे साथ खाने में शरीक था कि अचानक उसने एक चीख मारी और सांस फूलने लगा और कहा कि मेरी मां दोज़ख में जल रही है, कुरतबी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि मैं उसकी घबराहट देख रहा था, मुझे खयाल आया कि एक निसाब उसकी मां को बख्श दूँ जिस से मुझे उसकी सच्चाई का भी तजुर्बा हो जाएगा, चुनांचे मैंने सत्तर हज़ार (मर्तबा) कलमए-तय्यबा का एक निसाब उसकी मां को बख्श दिया, मेरे इस पढने की खबर अल्लाह के सिवा किसी को ना थी, मगर वह नौजवान फौरन कहने लगा कि चचा मेरी मां दोज़ख के अज़ाब से हटा दी गई. कुरतबी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं कि इस वाकेआ से मुझे दो फायदे हुए : एक तो कलमए-तय्यबा के सत्तर हज़ार की मिकदार (तादाद) पर जो बरकत सुनी थी उसका तजुर्बा हुआ, दूसरे उस नौजवान की सच्चाई का यकीन हो गया.

इस वाकेए से आगे बढते हुए, सूफिया की इस्तेलाह में एक चीज़ 'पास अनफास' है, यानी इस बात की मश्क़ कि कोई सांस अल्लाह के ज़िक्र के बगैर अंदर जाए ना बाहर आए. उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाखों करोडों अफराद ऐसे हैं जिन को यह मश्क़ हासिल है. इसी लिए हज़रत ईसा अलैहिस् सलाम ने कलमए-तय्यबा के ज़िक्र को इस उम्मत की खुसूसिय्यत करार दिया. वह मशाइख जो अपने मुरीदीन को नफी इस्बात यानी सिर्फ 'ला इलाहा इल्लल्लाह' या ज़िक्रे इस्बात 'इल्लल्लाह इल्लल्लाह', या ज़िक्रे इस्मे ज़ात अल्लाह बतलाते हैं वह यह हदीस गौर से पढें. 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कलमा है ना 'इल्लल्लाह' कलमा है और ना 'अल्लाह अल्लाह' कलमा है, कलमा तो बस ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' ही कलमा है. कलमा बतला कर कोई और ज़िक्र या विर्द अता करना तरीकत में दियानतदारी नहीं. वह मुरीद यकीनन खुश नसीब हैं जिन को अपने पीर से मुकम्मल कलमए-तय्यबा का ज़िक्र बिलक़ल्ब नसीब हुआ. जो कलमए-तय्यबा से हट गए वह अपनी मंज़िल ही से बिछड गए.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अलआस रदियल्लाहु अन्हुम से मनकूल है, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि हज़रत नूह अलैहिस् सलाम का जब इंतेकाल होने लगा तो अपने दोनों साहबज़ादों को बुलाया और इर्शाद फरमाया कि तुम्हें आखरी वसिय्यत करता हूँ, जिसमें दो चीज़ों से रोकता हूँ और दो चीज़ों का हुक्म करता हूँ, जिनसे रोकता हूँ एक शिर्क है, दुसरा तकब्बुर और जिन चीज़ों का हुक्म करता हूँ एक 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है कि तमाम आस्मान व ज़मीन और जो कुछ उनमें है अगर सब को एक पलडे में रख दिया जाए और दूसरे में 'ला इलाहा इल्लल्लाह' रख दिया जाए तो वही पलडा झुक जाएगा और अगर तमाम आस्मान व ज़मीन और जो कुछ उनमें है एक हलका बनाकर इस कलमए-तय्यबा को उन पर रख दिया जाए तो (वह हलका उसके) वज़न से टूट जाए, और दूसरी चीज़ जिसका हुक्म करता हूँ वह 'सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही' है कि यह दो लफ्ज़ हर मखलूक की नमाज़ हैं और इन्ही की बरकत से हर चीज़ को रिज़्क़ अता फरमाता है. (हाकिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा का मामूल था कि मरने वाले के रिश्तेदारों को साथ लेकर कलमए-तय्यबा पढते और उसका सवाब मरने वाले की रूह को ईसाल फरमाते.

हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस् सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ लाए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निहायत गमगीन थे, हज़रत जिब्राईल ने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने आप को सलाम फरमाया है और इर्शाद फरमाया है कि आप को रंजीदा और गमगीन देख रहा हूँ, यह क्या बात है? हुज़ूर ने इर्शाद फरमाया कि मुझे अपनी उम्मत की फिक्र बहुत बढ रही है कि कयामत में उनका क्या हाल होगा. हज़रत जिब्राईल ने पूछा कि कुफ्फार के बारे में या मुसलमानों के बारे में? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि मुसलमानों के बारे में फिक्र है. हज़रत जिब्राईल अलैहिस् सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साथ लिया और एक मकबरे पर तशरीफ ले गए जहाँ बनू सलमा क़बीले के लोग दफ्न थे. हज़रत जिब्राईल

अलैहिस् सलाम ने एक क़ब्र पर अपना एक पर मारा और कहा 'क़ुम बिइज़निल्लाह' (अल्लाह के हुक्म से खडे हो जा) उस क़ब्र से एक शख्स निहायत हसीन व जमील, खूबसूरत चेहरे वाला उठा, वह कह रहा था : ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह - अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन''. हज़रत जिब्राईल ने कहा कि अपनी जगह लौट जा, वह चला गया. हज़रत जिब्राईल ने फिर दूसरी जगह दूसरी क़ब्र पर अपना दूसरा पर मारा और कहा कि अल्लाह के हुक्म से खडा हो जा. उसमें एक शख्स निहायत बदसूरत काला मुँह, केसरी आंखों वाला खडा हुआ, वह कह रहा था हाए अफसोस, हाए शरमिंदगी, हाए मुसीबत. फिर हज़रत जिब्राईल अलैहिस् सलाम ने कहा अपनी जगह लौट जा. इसके बाद हज़रत जिब्राईल अलैहिस् सलाम ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि :

''जिस हालत पर यह लोग मरते हैं उसी हालत पर उठेंगे.''

इस हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में कलमा वालों से बज़ाहिर वह लोग मुराद हैं जिन को इस पाक कलमे के साथ खुसूसी लगाव, खुसूसी मुनासेबत, खुसूसी अशग़ाल हो, कलमए-तय्यबा का ज़ाकिर के रग व पै में (पूरे जिस्म में) सरायत कर जाने पर खात्मा बखैर होना अल्लाह तआला के फज़्ल से यकीनी है.

हज़रत मआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हू से मनकूल है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख्स भी इस हाल में मरे कि यकीने क़ल्ब से ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की शहादत (गवाही) देता हो तो वह ज़रूर जन्नत में जाएगा. दूसरी हदीस में है, अल्लाह तआला ज़रूर उस शख्स की मग़फिरत फरमाएगा.

(इमाम अहमद, नसाई, तबरानी, हाकिम, तिर्मीज़ी)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के राज़दार हज़रत हुज़ैफा रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि एक ज़माना ऐसा आने वाला है कि इस्लाम ऐसा धुंधला रह जाएगा जैसे कपडे के नक्श व निगार पुराने होने से धुंधले हो जाते हैं, कोई रोज़ा को जानेगा ना हज को ना ज़कात को. आखिर एक रात ऐसी होगी कि

कुरआन करीम भी उठा लिया जाएगा, कोई आयत उसकी बाकी ना रहेगी. (उस वक्त के) बूढे मर्द और बूढी औरतें यह कहेंगी कि हम ने अपने बुज़ुर्गों को कलमा 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पढते सुना था हम भी इसी को पढेंगे. हज़रत हुज़ैफा रदियल्लाहु अन्हू के एक शागिर्द सिलह रदियल्लाहु अन्हू ने अर्ज़ किया, जब ज़कात, हज, रोज़ा वगैरा कोई रुक्न ना होगा तो यह कलमा क्या काम देगा? हज़रत हुज़ैफा रदियल्लाहु अन्हू ने सुकूत फरमाया (खामोश रहे). सिलह रदियल्लाहु अन्हू ने फिर पूछा, आप ने सुकूत फरमाया. सिलह रदियल्लाहु अन्हू ने फिर इसरार किया (कि जब इस्लाम का कोई रुक्न ना होगा तो सिर्फ कलमा पढ लेने से क्या होगा? तीसरी मर्तबा हज़रत हुज़ैफा रदियल्लाहु अन्हू ने फरमाया जहन्नम से निकालेगा, जहन्नम से निकालेगा, जहन्नम से निकालेगा. यानी अरकाने इस्लाम अदा ना करने के बावजूद किसी ना किसी वक्त इस कलमए-नजात की बरकत से नजात मिलेगी.

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मैं जन्नत में दाखिल हुआ तो मैंने उसकी दोनों जानिब तीन सतरें (लाइनें) सोने के पानी से लिखी हुई देखीं.

पहली सतर में ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' लिखा था.

दूसरी सतर में "مَا قَدَّمْنَا وَجَدْنَا وَ مَا اَكَلْنَا رَبَحْنَا وَ مَا خَلَفْنَا خَسَرْنَا" लिखा था. (तर्जुमा : जो हम ने आगे भेज दिया वह पा लिया और जो खाया वह नफा में रहा और जो कुछ छोडा वह नुकसान रहा.)

तीसरी सतर में "اُمَّةٌ مُـــذْنِبَةٌ وَ رَبٌّ غَـــفُـــوْرٌ" लिखा था. (यानी उम्मत गुनहगार और परवरदिगार बखशिश वाला है.)

अपनी बखशिश और मग़फिरत की फिक्र करने वालो ! देखो यह कलमए-तय्यबा ही सब के लिए नजात का परवाना है. आओ और कलमए-तय्यबा को अपना हमदम व दमसाज़ बना लो. दुनिया और आखिरत दोनों में इसी कलमए-तय्यबा की हुकूमत होगी. या अल्लाह ! हम सब को अपने कलमए-तौहीद के इकरार, तसदीक और अमल से सरफराज़ फरमा. आमीन सुम्मा आमीन

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हू से मनकूल है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हू, हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि मैं तुम्हें रंजीदा देख रहा हूँ, क्या बात है? हज़रत सिद्दीके अकबर रदियल्लाह अन्हु ने अर्ज़ किया, पिछली रात मेरे चचाज़ाद भाई का इंतेक़ाल हो गया, मैं नज़अ की हालत में उनके पास बैठा था. (नज़अ की जो कैफिय्यत देखी उसका तबीअत पर असर है.) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम ने उसको 'ला इलाहा इल्लल्लाह' की तलकीन भी की थी? अर्ज़ किया की थी. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि उसने यह कलमा पढ लिया था? अर्ज़ किया कि पढ लिया था. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जन्नत उसके लिए वाजिब हो गई. हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिंदा लोग इस कलमे को पढें तो क्या हो? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि यह कलमा उनके गुनाहों को बिलकुल ही मिटा देने वाला है, यह कलमा उनके गुनाहों को बिलकुल ही मिटा देने वाला है.

मकाबिर (क़ब्रस्तान) और मय्यत के करीब कलमए-तय्यबा पढने के बारे में कसरत से अहादीस में ताकीद आई है. एक हदीस में है कि जनाज़े के साथ कसरत से 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पढा करो.

एक हदीस में है कि मेरे उम्मती जब पुल सिरात पर से गुज़रेंगे तो उनका निशान 'ला इलाहा इल्ला अन्ता' होगा.

एक हदीस में है, जब वो अपनी क़ब्रों से उठेंगे तो उनका निशान 'ला इलाहा इल्लल्लाहु व अलल्लाहि फलयतवक्कलुल मुमिनीन' होगा.

एक हदीस में है कि कयामत के अंधेरों में उनका निशान 'ला इलाहा इल्ला अन्ता' होगा. यह बरकात और फायदे उन्ही को हासिल होंगे जो कलमए-तय्यबा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' ज़बान से इकरार और दिल से तसदीक करेंगे और चलते फिरते, उठते बैठते, सुबह व शाम हर घडी हर लम्हा इसी मुक़द्दस और पाक कलमए-इखलास को दिल और रूह की गहराइयों से अदा करते रहेंगे. किसी ने हारून रशीद रहमतुल्लाहि

अलैह की चहेती मलेका (रानी) ज़ुबैदह को ख्वाब में देखा, उसने पूछा क्या गुज़री? मलेका ज़ुबैदह ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने इन चार कलमात की बदौलत मेरी मग़फिरत फरमा दी :

(१) لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ اُفْنِی بِهَا عُمْرِیْ

(२) لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ اَدْخُلُ بِهَا قَبْرِیْ

(३) لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ اَخْلُوْ بِهَا وَحْدِیْ

(४) لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ اَلْقٰی بِهَا رَبِّیْ

तर्जुमा : (१) 'ला इलाहा इल्लल्लाह' के साथ ही अपनी उम्र खत्म करूँगी. (२) 'ला इलाहा इल्लल्लाह' को ही क़ब्र मे ले कर जाऊँगी. (३) 'ला इलाहा इल्लल्लाह' के साथ ही अपनी तन्हाई का वक्त गुज़ारूँगी. (४) 'ला इलाहा इल्लल्लाह' को ही लेकर अपने रब से मिलूँगी.

सुबहानल्लाह ! क्या ईमान है कि तमाम ज़िंदगी, दमे वापसीं (मौत), क़ब्र और हश्र में गर्ज़ कि हर जगह और हर लम्हा यही कलमए-तय्यबा दिल में, रूह में और तमाम वुजूद में बसा हुआ है.

हज़रत उम्मे हानी से रिवायत है कि फरमाया हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह' से ना तो कोई अमल बढ सकता है और ना यह कलमा किसी गुनाह को छोड सकता है. (इब्ने माजह)

बयाँ में नुकतए-तौहीद आ तो सकता है
तेरे दिमाग़ में बुतखाना हो तो क्या कहिए
(इकबाल)

अज़ीज़े गिरामी ! मैंने आप के सामने तमाम मज़ाहिबे हक और आस्मानी किताबों की बुनियाद कलमए-तौहीद व रिसालत ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' को मुखतसर ही सही जितनी तौफीके इलाही शामिले हाल रही बयान कर दया. तौहीद व रिसालत का इकरार, तसदीक और अमल समझने के लिए तसव्वुफ से आगाही ज़रूरी है वरना जिस्म के साथ क़ल्ब (दिल) और रूह की तशनगी (प्यास) दूर ना होगी.

आम तौर पर यह कहा जाता है कि तसव्वुफ का इस्लाम से क्या

तअल्लुक है? तसव्वुफ को कुरआन व हदीस में एहसान, इल्मे क़ल्ब, इल्मे बातिन, इल्मे लदुन्नी, वगैरा वगैरा मुखतलिफ नामों से बयान किया गया है जो आज तसव्वुफ के नाम से खास व आम में जाना पहचाना जाता है, लेहाज़ा नामों के इख्तेलाफ से धोका ना खाइए.

हज़रत उमर फारूक रदियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि एक दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हज़रत जिब्रईल अलैहिस् सलाम एक एराबी (देहाती) की सूरत में तशरीफ लाए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने दो ज़ानू बाअदब बैठ कर चंद सवालात किए :

"يَا مُحَمَّدُ اَخْبِرْنِىْ عَنِ الْإِسْلَامِ" यानी इस्लाम क्या है? बतलाइए.

قَالَ اَلْاِسْلَامُ اَنْ تَشْهَدَ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَ يُقِيْمَ الصَّلٰوةَ وَ تُؤْتِى الزَّكٰوةَ وَ تَصُوْمَ رَمَضَانَ وَ تَحُجَّ الْبَيْتَ اِنِ اسْتَطَعْتَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا.

तर्जुमा : आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया इस्लाम यह है कि इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं. नमाज़ कायम करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और बैतुल्लाह का हज करो, अगर सफर के खर्च की ताकत हो. हज़रत जिब्रईल ने कहा, आप ने सच कहा.

"قَالَ : فَاَخْبِرْنِىْ عَنِ الْاِيْمَانِ"

हज़रत जिब्रईल ने अर्ज़ किया मुझे ईमान की खबर दिजीए.

"اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَ مَلَائِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ الْيَوْمِ الْآخِرِ وَ تُؤْمِنَ بِالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَ شَرِّهٖ ، قَالَ : صَدَقْتَ"

आप ने फरमाया कि ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर और उसके रसूलों पर और कयामत के दिन पर और ईमान लाओ तकदीर पर खैर हो या शर. हज़रत जिब्रईल अलैहिस् सलाम ने फरमाया, आप ने सच कहा.

"قَالَ : فَاَخْبِرْنِىْ عَنِ الْاِحْسَانِ"

फिर अर्ज़ किया मुझे एहसान के बारे में बताइए.

"قَالَ : اَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ فَاِنْ لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهٗ يَرَاكَ"

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : एहसान यह है कि तू अल्लाह की इबादत यूँ कर कि गोया तू उसको देख रहा है और जो यह मुमकिन ना हो तो यूँ समझ कि वह तुझे देख रहा है. यह सुन कर हज़रत जिब्रईल अलैहिस् सलाम ने कहा, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सच फरमाया. (मफहूम) (सहीह बुखारी व मुस्लिम)

इस हदीस को एहसान भी कहते हैं. इस में तीन सवाल हैं यानी इस्लाम की हकीकत क्या है? ईमान किस को कहते हैं? और एहसान क्या चीज़ है?

मुहक्क़िक़ उलमा फरमाते हैं कि दीन की बुनियाद फिक़ह, कलाम और तसव्वुफ के इन्ही तीन अरकान पर रखी गई है. चुनांचे हदीस में इन तीनों अरकान का बयान है, पहला सवाल इस्लाम की हकीकत से है, जिस का तअल्लुक फिक़ह से है जिसमें आमाल व अफआल व अहकाम और शरई आदाब का मुफस्सल बयान है. अगर इंसान फक़ीह ना होगा तो इस्लाम की हकीकत से बेखबर रहेगा. तौहीद व रिसालत की शहादत (गवाही) और नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात के क़ायदे व शराइत, अहकाम व आदाब मालूम ना होंगे.

दूसरा सवाल ईमान की निसबत से है. और यह इशारा है अकाइद की तरफ कि वह मसाइल उसूले कलाम हैं. यानी अल्लाह पर ईमान लाना और पूरे यकीन के साथ अकीदा रखना कि उसकी ज़ात व सिफात बरहक है. और ईमान लाना उसके फरिश्तों पर कि वह नूरानी बंदे और अल्लाह के फरमांबरदार हैं. और उसकी तमाम किताबों पर ईमान लाना कि उसका कलाम कदीम है जो अपने रसूलों पर नाज़िल फरमाया. उनमें कुरआन शरीफ सब से अफज़ल है और तमाम आस्मानी सहीफे (किताबें) एक सौ चार हैं. और तमाम नबीयों पर ईमाना लाना कि उनको अल्लाह ने अपनी मखलूक की हिदायत के लिए भेजा और यह कि सब नबी पाक और मासूम हैं. और ईमान लाना कि कयामत, जन्नत, दोज़ख और अज़ाब व सवाब सब बरहक हैं.

तीसरा सवाल एहसान के बारे में है और यह इशारा है तसव्वुफ के

उसूल की तरफ कि वह सच्चे दिल से अल्लाह की तरफ मुतवज्जह होना है. और यह बात तसव्वुफ के बगैर हासिल नहीं हो सकती. जानना चाहिए कि "اَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ فَاِنْ لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهٗ يَرَاكَ" यह मर्तबा शहूद का और मकाम मुशाहदे का है. और यह मुराकबे का मकाम है और पहले मर्तबे से कमतर है. अल्लाह की इताअत के तीन दर्जे हैं : एक यह कि अब्राए ज़िम्मा (ज़िम्मेदारी से सुबुकदोशी) हो. वाजिबात से ऐसी इबादत बेसूद है सिवाए इसके कि शरई सज़ा टल गई. आखिरत में ऐसी इबादत का कुछ हिस्सा नहीं. इबादत का दूसरा दर्जा यह है कि तमाम अरकान व एहकाम को शराइत व आदाब के साथ बजा लाए ताकि रज़ाए खुदावंदी और बहुत सवाब हासिल हो और इबादत के ज़ौक व शौक से बातिन आइने की तरह साफ व शफ्फाफ हो जाए. इबादत का तीसरा दर्जा मुशाहेदा है, इस से अफज़ल व आला मकाम कोई नहीं.

इस हदीस से साबित है कि फिक़ह, उसूले कलाम और तसव्वुफ एक दूसरे के लाज़िम व मलज़ूम हैं. सहीह अकीदे के बगैर शरई एहकाम का जानना बेसूद है और फिक़ह के बगैर तसव्वुफ की कोई बुनियाद नहीं. फिक़ह और तसव्वुफ दोनों ईमान के बगैर सहीह और दुरुस्त नहीं. यही वजह है कि कलमए-तय्यबा के इकरार, कलमए-तय्यबा की तसदीक और कलमए-तय्यबा पर अमल के मजमूए को ईमान करार दिया गया है. फिक़ह, उसूले कलाम और तसव्वुफ एक दूसरे की तकमील के लिए बेहद ज़रूरी हैं वरना एक दूसरे के बगैर नातमाम व नामुकम्मल है. चुनांचे इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं :

"مَنْ تَصَوَّفَ وَ لَمْ يَتَفَقَّهُ فَقَدْ تَزَنْدَقَ وَ مَنْ تَفَقَّهَ وَ لَمْ يَتَصَّوَفْ فَقَدْ تَفَسُّقَ وَ مَنْ جَمَعَ بَيْنَهُمَا فَقَدْ تَحَقَّقَ"

तर्जुमा : जो तसव्वुफ हासिल किया और फिक़ह ना सीखा वह ज़िंदीक़ (बडा बेदीन) है और फक़ीह बना और तसव्वुफ ना जाना वह बडा फासिक़ है और जिसने फिक़ह और तसव्वुफ दोनों को हासिल किया वह मुहक्क़िक़ है.

हर आलम के लिए ज़रूरी है कि वह इल्मे दीन के बाद तसव्वुफ

हासिल करे वरना ''चारपाए बर-ऊ किताबे चंद'' (एक जानवर जिस पर चंद किताबें लाद दी गई) का मिसदाक (जैसा) होगा. जिसको तसव्वुफ का शौक हो उस पर सब से पहले इल्मे दीन का हासिल करना फर्ज़ है वरना ज़िंदक़ा (कुफ्र) और गुमराही में गिरफतार होगा, हमेशा उलमाए मुहक्किकीन की सोहबत इख्तेयार करे ताकि दोनों बातें हासिल हों.

सूफिया-ए-किराम का इर्शाद है कि तालिबाने हक को अपना ज़ाहिर शरीअत से और बातिन तरीकत से आरास्ता व मुज़य्यन रखना चाहिए. क्यूँकि शरीअत सिफत है, तरीक़त ज़ात, शरीअत जिस्म है, तरीकत जान, शरीअत ज़ाहिर है तरीकत बातिन है. मौला की राह के तालिब को यह यकीन कर लेना चाहिए कि शरीअत तरीकत की बुनियाद है, रहनुमा-ए-हकीकत है और पर्दा कुशा-ए-मारिफत है. इत्तेबा-ए-शरीअत के बगैर कमाले मारिफत हासिल करना लाहासिल कोशिश है और तसव्वुफ के लिए दिल की निगरानी पहली शर्त है. जब तक कि दिल अल्लाह तआला के सिवा तमाम बातों से पाक व साफ ना हो जाए नफ्स का तज़किया, दिल की सफाई, रूह का नूर मुमकिन नहीं. इसी लिए कहा गया है कि

''اَلتَّصَوُّفُ تَصْفِيَةُ الْخَيَالَاتِ عَنْ مَا سِوَى اللّٰهِ''

यानी अपने खयालात को गैरुल्लाह से पाक व साफ रखना तसव्वुफ है. तसव्वुफ की तारीख इंसानी तारीख के हर दौर से वाबस्ता है, मुखतलिफ मज़हबों की किताबों से पता चलता है कि इसका बीज इश्राक़ीन हकीमों ने बोया और मश्शाइय्यीन उलमा ने सींचा, फारस में उस का नश्शोनुमा (आबयारी) हुआ और मिस्र व यूनान की आबयारी ने शाख व गुल पैदा किए, हिंदुस्तान की नसीमे सहर ने खिले फूल बना कर बू बास पैदा की, शरीअते इस्लाम ने खुशबू सूंघी, मुतकल्लिमीन ने बहार देखी, सूफियों ने फल खाए. सच तो यह है कि तसव्वुफ हकीम बन कर आया, फकीर होकर रहा और शहंशाही अदा सिखला गया. खुदी में खुदाई और फकीरी में बादशाही के मज़े जो सूफियों ने लूटे दूसरों को वह ख्वाब में भी नसीब नहीं हुए और मज़हब की पाबंदी के बावजूद जो निकात सूफियों ने बयान फरमाए वह किसी हकीम या फलसफी के वहम व खयाल में भी नहीं गुज़रे.

अकसर लोग जो कुरआन व हदीस से नावाक़िफ और मारीफ़त के इल्म से नाआश्ना हैं वह तअज्जुब करते हैं कि ऐसा कौनसा इल्म है जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पोशीदा रखा और बयान नहीं फरमाया बल्कि खास लोगों को तालीम फरमाया?

इस दावे के सुबूत के लिए यह हदीस काफी है : (बुखारी, मुस्लिम)

قَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ سَلَّمَ "وَ الَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ لَوْ تَعْلَمُوْنَ مَا اَعْلَمُ لَضَحِکْتُمْ قَلِیْلًا وَ لَبَکَیْتُمْ کَثِیْرًا"

कसम है मुझको उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, जो मैं जानता हूँ वह अगर तुम जानते तो बहुत कम हंसते और बहुत ज़्यादा रोते.

यह गौर तलब बात है कि जो कुछ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जानते थे उसको बरमला और एलानिया तौर पर बयान क्यूँ नहीं फरमाया. जवाब बिलकुल वाज़ेह है कि वह बात आम तौर पर बयान करने की ना थी वरना आप उसे पोशीदा ना फरमाते, इस से साबित हुआ कि हर सुखन और हर नुकता मकामे दारद (यानी हर बात और हर नुक्ते का एक मकाम और महल होता है).

हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे सवार था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से पूछा : ऐ मआज़ ! क्या तू जानता है कि अल्लाह का हक बंदों पर क्या है और बंदों का हक अल्लाह पर क्या है? मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल को बेहतर इल्म है. आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि बेशक अल्लाह का हक बंदों पर यह है कि उसकी इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक ना करें. और बंदों का हक अल्लाह पर यह है कि जो अल्लाह के साथ किसी को भी शरीक नहीं करता अल्लाह तआला उस पर कोई अज़ाब ना फरमाए. मैंने कहा या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) क्या मैं लोगों को इस फरमान की खबर दे दूँ कि वह खुश हो जाऐं. फरमाया कि नहीं, यह सुन कर वह इसी पर भरोसा कर बैठेंगे.

(बुखारी, मुस्लिम)

अब फरमाइए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मआज़ रदियल्लाह अन्हु को क्यूँ मना फरमाया हालांकि तमाम अंबिया-ए-किराम शिर्क की बेखकनी (जड से उखाड फेंकने) के वास्ते मबऊस हुए (भेजे गए) हैं. इस से बेहतर और क्या बात थी कि लोग शिर्क फिल इबादत से छूट जाते और खालिस अल्लाह की इबादत में मशगूल होते मगर मालूम हुआ कि इसमें कोई राज़ पोशीदा था जो हज़रत मआज़ रदियल्लाहु अन्हू को तो तालीम फरमा दिया और अवाम को इस काबिल ना समझा. चूंकि यह तालीम खास थी आम ना थी इस लिए मना फरमा दिया.

आँ राज़ कि दर सीना निहाँ अस्त ना वाज़ अस्त
बर दार तवाँ गुफ्त व बा मिंबर ना तवाँ गुफ्त

वह राज़ जो सीने में छुपा हुआ है वह कोई वाज़ (तकरीर) नहीं जो मिंबर पर कह दिया जाए बल्कि यह वह राज़ है जो सिर्फ दार (सूली) पर कहा जा सकता है मिंबर पर नहीं. चूंकि इबादत बिला शिर्क पर भरोसा करना भी शीर्क है और तौहीद में नुक्स इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फरमा दिया.

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (आले इम्रान)

﴿قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ﴾

तर्जुमा : आप फरमा दिजीए कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हैं तो मेरी पैरवी करो कि अल्लाह तुम से मुहब्बत रखेगा.

इस आयते करीमा के हुक्म से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत अहले ईमान पर ज़ाहिर और बातिन दोनों में फर्ज़ हुई, ज़ाहिरी मुताबिअत (पैरवी) बमर्तबए-नुबुव्वत है और बातिनी मुताबिअत बमर्तबए-विलायत है. सूफिया की इस्तेलाह में मर्तबए-नुबुव्वत वह है कि हुज़ूर सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम, जिब्रईल अलैहिस् सलाम के ज़रीए से अल्लाह तआला से तौहीद के असरार ज़ाहिर में हासिल फरमाते थे और मर्तबए-विलायत वह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, जिब्रईल अलैहिस् सलाम के ज़रीए से बगैर हक तआला से बातिन के असरार लेते हैं. चुनांचे हदीस ''ली मअल्लाहि वक्तुन'' गवाह है कि यह मर्तबए-विलायत है. पस

अकसर लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाहिरी पैरवी में मशगूल रहे और बहुत कम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातिनी पैरवी में फैज़ाने विलायत से सरफराज़ हुए. खुद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी इस बात पर मामूर (पाबंद) हुए थे कि सच्ची तलब के बगैर किसी को विलायत के मर्तबे के राज़ ना बताऐं. चुनांचे सूफियों में यह सुन्नत अब तक जारी है कि सच्ची तलब के बगैर तरीकत के असरार (राज़ों) की तालीम नहीं दी जाती.

किताब 'जवाहिरे गैबी' में लिखा है कि एक रोज़ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस फिक्र में रंजीदा बैठे थे कि शरीअत के अहकाम तो हर शख्स पूछता है मगर बातिन के असरार के बारे में कोई सवाल नहीं करता. उस वक्त सय्यदना अली कर्रमल्लाहु वजहहु के दिल में उसी वक्त यह खयाल पैदा हुआ कि फरमाने इलाही के मुताबिक शरीअत के ज़ाहिरी एहकाम में तो हम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुताबिअत (पैरवी) की लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बातिनी असरार से कुछ ना बतलाया. अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह भी तालीम फरमाते तो शाइकीन (शौक रखने वाले) बातिनी असरार की मुताबिअत (पैरवी) से भी सरफराज़ होते. यह सोच कर आप निहायत सच्चाई और इखलास के साथ बारगाहे नबवी में पहुंचे और अपना सवाल अर्ज़ किया. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ अली! मुझे भी यही हुक्म था कि सच्ची तलब के बगैर यह राज़े मखफी (पोशीदा) किसी पर ज़ाहिर ना करूँ. फिर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहु को बातिनी असरार की तालीम दी. सरकार अली रदियल्लाहु अन्हू के वसीले से यह असरारे रब्बानी सूफिया-ए-किराम में पहुंचे और इंशाअल्लाह कयामत तक उनसे यह फैज़ जारी रहेगा. "اَلْعُلَمَاءُ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ" (उलमा-ए- रब्बानी अंबिया के वारिस है) से यही लोग मुराद हैं जो अंबिया के ज़ाहिरी व बातिनी उलूम के हामिल (रखने वाले) हैं.

यह बात मुसल्लमा (तसलीम की हुई) है कि अल्लाह तआला ने तमाम अंबिया अलैहिमुस् सलाम को तौहीद की तालीम और शिर्क की नफी

के लिए अलग अलग वक्तों में मबऊस फरमाया (भेजा). शिर्क और तौहीद हर एक की चार चार किस्में हैं :

अव्वल : शिर्के शरीअत; शिर्के मुतलक़

दुव्वम : शिर्के तरीकत; शिर्के जली

सुव्वम : शिर्के हकीकत; शिर्के खफी

चहारुम : शिर्के मारीफत; शिर्के अखफा

इसके बरअक्स (उलट)

अव्वल : तौहीदे शरीअत　　दुव्वम : तौहीदे तरीकत

सुव्वम : तौहीदे हकीकत　　चहारुम : तौहीदे मारिफत है.

इन चार किस्मों के शिर्क की बाज़पुर्स (पूछ) इन चार मर्तबे वालों से होगी. इसी लिए हर एक नबी ने शिर्क को मिटाने और तौहीदे तनज़ीही की तालीम व तलकीन में खूब कोशिश फरमाई. जब सरवरे कायनात, फख्रे मौजूदात, हबीबे रब्बे ज़मीन व आसमान, पैगंबरे शश जिहात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेराज से मुशर्रफ हुए तो आप को तीन किस्म के असरार (अता) हुए. एक लायके तालीमे आम (अहकामे शरीअत), दुव्वम काबिले तलकीने खास (तरीकत के राज़), सुव्वम मुनासिबे अखफा (फक्र व तसव्वुफ के असरार).

चूंकि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तमाम सिफतों वाला और कामिल इंसान लिबासे वहदत में मबऊस फरमाया (भेजा) था, आप ने बमूजिबे अक्ले खुदादाद देखा कि बनी नौए आदम अलैहिस् सलाम (इंसान) अक्ल व कयास, फहम व इद्राक में अलग अलग हैं, लेहाज़ा हर एक के हौसले और क़ाबलिय्यत के मुताबिक हर एक की तालीम फरमाई. आम मखलूक को हुक्मे अव्वल यानी पाक शरीअत की तालीम फरमाई और जो एहकामाते खुदावंदी नाज़िल हुए हर एक को सुना दिया. इसी का नाम रिसालत की तबलीग था. फिर ख्वास को शरीअत की दावत के बाद तरीकत के सरचश्मे के फैज़ान से सैराब करके खासुल खास को दरया-ए-फक्र व फना में गोता दिया (डुबोया).

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है : (अबू दाऊद)

‘نَحْنُ مُعَاشِرُ الْاَنْبِيَاءِ اُمِرْنَا اَنْ نُنَزِّلَ النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ وَ نُكَلِّمَهُمْ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ’

हम अंबिया के गिरोह को हुक्म है कि लोगों को उनके मर्तबे में रखें और उनसे उनकी अक्लों के मुताबिक काम लें.

यही वजह है कि कामिलीन हर एक को अक्ल के मर्तबों के मुवाफिक तालीम व तलकीन फरमाते हैं और हर सच्चा तालिब अपनी अक्ल व काबलिय्यत के मुताबिक फल पाता है. इसी लिए रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी अक्ल और इद्राक के मर्तबों के मुवाफिक हर एक को तालीम फरमाई वरना कम फहम (कम अक्ल) लोग खराब व हलाक हो जाते.

हदीस है : (अबू नुऐम)

“مَا حَدَّثَ قَوْمًا بِحَدِيْثٍ لَّا يَفْقَهُوْنَهُ اِلَّا كَانَ فِتْنَةً عَلَيْهِم”

तर्जुमा : तुम में से जो कोई किसी कौम से ऐसी बात कह दे जो उनकी समझ में ना आए तो वह बात उनके लिए एक फितना होगी.

दूसरी जगह इर्शाद फरमाया : (अबू नुऐम)

“مَا اَحَدٌ يُحَدِّثُ قَوْمًا بِحَدِيْثٍ لَا تَبْلُغُهُ عُقُوْلُهُمْ اِلَّا كَانَ فِتْنَةً عَلٰى بَعْضِهِمْ”

तर्जुमा : जब कोई शख्स किसी कौम के सामने ऐसी बात कहता है जिस तक उनकी अक्ल नहीं पहुंचती तो उनमें से कुछ आदमीयों पर वह बात फितना हो जाती है.

इसी वास्ते हुक्म है कि ‘‘सुनने वालों की अक्ल के मुवाफिक कलाम करो ताकि वह समझ जाऐं.’’ ऐसी बात ना कहो कि जिस से तशवीश में पड कर खराब हो जाऐं. लेहाज़ा आलम के राज़ों को जानने वाले सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मारिफत के असरार (राज़) और फक्र के रुमूज़ (राज़) को जिस से ‘‘अलफक्रु फखरी वल फक़्रू मिन्नी’’ मुराद है. आम तौर पर यह तालीम नहीं फरमाया क्यूँकि यह निहायत अज़ीमुश् शान हकाइक अफरीन (हकीकतें बताने वाले) असरार हैं. हर एक की समझ और इद्राक उनके कंगरए-तक़्द्दीस (पाक मकाम) तक नहीं पहुंच सकता. इसी लिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने असरारे मारिफत खास खास सहाबा

किराम रदियल्लाहु अन्हुम मसलन सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़, सय्यदना उमर फारूक़, सय्यदना उस्माने ग़नी, सय्यदना अली, हज़रत सलमान फारसी, हज़रत अबू ज़र ग़िफारी, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत हुज़ैफह, हज़रत ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुम वगैरा को इद्राक और अक्ल के मर्तबों के मुवाफिक तालीम फरमाया.

हदीसे नबवी है :

"مَا صَبَّ اللّٰهُ فِیْ صَدْرِیْ اِلَّا وَ قَدْ صَبَبْتُ فِیْ صَدْرِ اَبِیْ بَکْرٍ"

अल्लाह तआला ने मेरे सीने में ऐसा कोई इल्म नहीं डाला जो मैंने अबू बकर रदियल्लाह अन्हु के सीने में ना डाला हो. (बुखारी, मुस्लिम)

दूसरी जगह इर्शादे नबवी है : (बैहक़ी)

"مَا فَضَّلَ (عَلَیْکُمْ) اَبُوْ بَکْرٍ بِکَثْرَةِ صِیَامٍ وَ لَا صَلٰوةٍ وَ لٰکِنْ بِسِرٍّ وُقِیَ فِیْ صَدْرِهٖ"

अबू बकर रदियल्लाह अन्हु नमाज़ और रोज़ों की कसरत की वजह से तुम पर अफज़ल नहीं बल्कि उसके सीने में एक राज़ डाला गया है जिस की बदौलत वह तुम पर फज़ीलत पा गया.

वह राज़ इल्मे फक्र है और इल्मे फक्र पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फख्र है.

असरारे मुहब्बत रा हर दिल ना बुवद काबिल
दुर्र नीस्त बहर दरया ज़र नीस्त बहर काने

(यानी मुहब्बत के राज़ों का हर दिल काबिल नहीं होता.
जिस तरह हर दरया में मोती और हर कान में सोना नहीं होता.)

अगर यह मान लिया जाए कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ाहिरी शरीअत के अलावा कोई असरारे इलाही बयान नहीं फरमाए तो वह कौनसी बात थी जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु को तालीम फरमाई और राज़ को छुपाने की ताकीद फरमाई. आप ने बहुत ज़ब्त किया. आखिर मदीना मुनव्वरा के बाहर जंगल में एक कुँवे के किनारे बैठ कर इस राज़ को ज़ाहिर किया. इस कुँवे का

पानी सुर्ख हो गया. आज तक मदीना मुनव्वरा में 'बीरे अली' मशहूर है. आखिर वह कौनसा इल्म था जिस की वजह से हज़रत ज़ैद व हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हुमा को जोश आया था. सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उवैस क़रनी रदियल्लाह अन्हु को अपना जुब्बा इनायत किया था और हज़रत सय्यदना उमर फारूक़ रदियल्लाह अन्हु हज़रत उवैस क़रनी रहमतुल्लाह अलैह के सामने अपनी खिलाफत एक दीनार के बदले फरोख्त करने को तयार हो गए थे.

किताब 'इहयाउल उलूम' में इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि कुछ आरिफों ने इर्शाद फरमाया है कि रुबूबिय्यत एक राज़ है. अगर वह ज़ाहिर हो जाए तो नुबुव्वत बेकार हो जाए और नुबुव्वत का एक भेद है, अगर वह खुल जाए तो इलम निकम्मा हो जाए और आरिफों का एक सिर्र है, अगर वह इफशा (ज़ाहिर) हो जाए तो अहकामे शरीअत बेकार हो जाऐं.

हज़रत सुहैल तस्तरी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि आरिफ को तीन किस्म के इल्म अता किए जाते हैं; एक इल्मे ज़ाहिरी यानी शरीअत है, कि तमाम जिन्न व इंस (जिन्नात व इंसानों) को तालीम करता है, दूसरा इल्मे बातिन यानी तरीकत है कि उसके अहल के अलावा किसी आम को तालीम नहीं करता. तीसरा इल्मे मारिफत यानी फक्र व फना है कि तसव्वुफ में इस से अफज़ल व आला मर्तबा नहीं. और यह राज़े इलाही व अज़ीम नेमत है कि हुक्मे खास के बगैर किसी को नहीं देता. जैसे हज़रत मूसा अलैहिस् सलाम और हज़रत खिज़र अलैहिस् सलाम का वाकिआ गुज़रा है कि अल्लाह के हुक्म से हज़रत खिज़र अलैहिस् सलाम ने हज़रत मूसा अलैहिस् सलाम को असरारे इलाही तालीम फरमाए. अगर यह इल्म आम तौर पर तालीम किया जाता तो अहकामे शरीअत दरहम बरहम (बर्बाद) हो जाते और अवामुन् नास हलाक व तबाह. इस वास्ते फक्र की तालीम सीना बा सीना होती है और यह तालीम और यह अमानत उसी के सुपुर्द होती है जिस को अल्लाह तआला उस के हुसूल के काबिल बनाता है.

ईन सआदत बज़ोरे बाज़ू नीस्त
ता ना बखशद खुदाए बखशिंदह

(यह नेमत पहलू की ताकत से हासिल नहीं की जा सकती, जब तक कि बख्शने वाला खुदा ना बख्शे.)

वह नादान जिन्हें शरीअत की ज़ाहिरी बातों का सरसरी इल्म नहीं वह मशाइख से फक्र व फना के सवालात करते हैं. क्या ऐसे नाअहल और नाआकिबत अंदेश लोग असरारे इलाही के काबिल हो सकते हैं?

प्यारे अज़ीज़ ! ऐसे हज़रात को हकीकी सूरते हाल बतला कर साफ साफ कह देना चाहिए कि पहले इल्मे दीन हासिल करो फिर किसी पीरे तरीकत की सोहबत में तरीकत के रुमूज़ (राज़) सीखो. अगर तरीकत के इम्तेहान में पूरे उतरे तो अल्लाह का फज़्ल व करम मांगो वरना बेसर-व-पा सवालात और लायानी बकवास से कुछ मिलने वाला नहीं. और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है

अब अस्ल बात पर आता हूँ. तसव्वुफ कोई नई चीज़ नहीं बल्कि अल्लाह से तअल्लुक, इखलास व अमल, नफ्स की सफाई, अखलाक की बेहतरी और दिल की सफाई का दूसरा नाम है जो किताब व सुन्नत से साबित और लिया हुआ है. चुनांचे हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि : ''अहले तसव्वुफ का तरीका किताब व सुन्नत से साबित है.'' सरकारे गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह का मुबारक इर्शाद है कि किताब व सुन्नत के दो बाज़ूओं से अल्लाह तआला की तरफ परवाज़ करो.

कुरआन में जहाँ तज़किया (सफाई) और हिकमत का ज़िक्र है सूफिया इसी को तसव्वुफ कहते हैं. इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैह का इर्शाद है कि बुरे अखलाक और खबीस सिफात से पाक व साफ होना तसव्वुफ का हासिल है. शेखुल इस्लाम ज़करिया अंसारी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि तसव्वुफ सिखलाता है कि किस तरह रूह का तज़किया (तहारत), अखलाक का तसफिया (सफाई) और ज़ाहिरी व बातिनी ज़िंदगी की तामीर की जाए ताकि अबदी सआदत व मसर्रत हासिल हो.

सूफी की सब से ज़्यादा भरपूर तारीफ हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाहि

अलैह ने इस तरह की है कि सूफियों और आरिफों का वह गिरोह जिन का दिल कदूरते बशरी (इंसानी गंदगी) से पाक हो. ख्वाहिशों और दुनिया की मुहब्बत से आज़ाद हो और तमाम मखलूकात से जुदा हो. इस तरह कि दुनिया के तमाम रिश्ते उसकी नज़र में हेच (बेमायनी) हों (इब्ने अरबी). और सिर्फ खालिक को इख्तियार करे और हकीकी दोस्त के सिवा हर एक से भागता रहे. (दलीलुल आरिफीन)

सूफिया वह लोग हैं जो तमाम चीज़ों पर अल्लाह को तरजीह दें. लेहाज़ा उनका मकसूद अल्लाह, मतलूब अल्लाह और मेहबूब अल्लाह हो. उनका जीना मरना, उनकी सूझ बूझ और उनकी इबादत सिर्फ अल्लाह ही के लिए हो. सुलूक की राह के तालिब के लिए कामिल शेख की तलाश ज़रूरी है.

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (पारा:६)

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ ابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَ جَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ﴾

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और उसकी तरफ वसीला तलाश करो और उसकी राह में सख्त मेहनत व कोशिश करो, ताकि तुम कामयाबी पाओ.

आयते करीमा में कलम-ए-'आमनू' का तअल्लुक कुरआन व हदीस है और 'इत्तक़ुल्लाह' में तमाम अवामिर व नवाही (अहकाम और पाबंदीयां) शामिल हैं और "वबतग़ू इलैहिल वसीलह" से पीरे कामिल की बैअत मुराद है. और "जाहिदू" से रियाज़त और नफ्स का मुजाहेदा और "सबीलिही" से राहे मारिफते इलाही मुराद है. यानी पीरे कामिल से बैअत करके मुर्शिद की रहनुमाई में मारिफत के हुसूल के लिए रियाज़त व मुजाहदे में मशगूल रहे ताकि दीदारे इलाही से जो अबदी कामयाबी है उस से मुशर्रफ हो (पा सके). लेहाज़ा जो शख्स मुर्शिद से बैअत का मुन्किर है वह सुन्नत व कुरआनी आयत का मुन्किर है. हम अल्लाह से अपने नफ्स के शर्र से पनाह मांगते हैं.

ऊपर दर्ज आयत से यह साबित हो गया कि राहे मौला में वसीला बेहद ज़रूरी है. वरना यह खतरों भरी राह कामिल रेहबर के बगैर तै नहीं होती

क्यूँकि ''अर्रफीकु सुम्मत् तरीक'' (यानी पहले हमसफर हो फिर सफर हो).

इर्शादे नबवी है :

''مَنْ مَاتَ وَ لَيْسَ فِیْ عُنُقِهٖ بَيْعَةٌ مَاتَ مِيْتَةَ الْجَاهِلِيَّةِ وَ مَنْ خَلَعَ يَدًا مِنْ طَاعَةٍ لَقَى اللّٰهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَ لَا حُجَّةَ لَهٗ''

तर्जुमा : जो शख्स मर गया और उस की गर्दन में बैअत नहीं है तो वो जाहिलिय्यत की मौत मरा, और जिसने अल्लाह की इताअत से हाथ उठा लिया वो अल्लाह से हश्र के दिन मिलेगा तो उसके पास कोई हुज्जत (दलील) ना होगी. (मुस्लिम)

लेहाज़ा इस राह में कामिल पीर की दस्तगीरी (मदद) लाज़मी है वरना महरूमी का सामना होगा. जब कामिल पीर मिल जाए तो मुरीद पर फर्ज़ है कि अपना सब कुछ अपने पीर पर निछावर कर दे और सरे मू (बाल बराबर भी) अपने पीर की हुक्म अदूली (नाफरमानी) ना करे. यही तरीकत की पहली और आखरी शर्त है.

अल्लाह पाक आप को और हम को अपने पीराने तरीकत की बदौलत सिराते मुस्तकीम पर चलाए और अपने चाहने वालों के साथ हमारा हश्र फरमाए. आमीन सुम्मा आमीन !

ज़िक्रे कामिल - ज़िक्रे नजात

''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''

मुरत्तिबुहू

हज़रत ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी

('साहिब' क़दीरी)

तकमीले अब्दिय्यत का तकाज़ा यही तो है
ज़िक्रे हबीबे पाक हो ज़िक्रे खुदा के साथ
हमदम रहे तो साथ सफर पुर सुकून है
मंज़िल की है तलाश तो चल राहनुमा के साथ

आपके सामने 'गुलज़ारे क़दीर' के (यह) अवराक़ (सफहे) कलमए-तय्यबा की वज़ाहतों के लिए वक्फ हैं. अल्लाह की मदद से कोशिश बेकार ना जाएगी. अल्लाह पाक अपने नबी की मुहब्बत अता फरमाए. सलासिल के वसीले से अपने आका व मौला की रहबरी में शरीअत व तरीकत के तकाज़ों के साथ ज़िंदगी पूरी हो जाए. कामिल रहबर हक की दावत को (नबी-ए-करीम के) उस्वए-हसना (नबी-ए-करीम के बेहतरीन अखलाक) की रौशनी में पेश करते हैं. नवाफिल से बंदा अपने माबूद से ज़्यादा करीब होता है, सुन्नतों की तकमील अल्लाह तआला की खुशनूदी (रज़ामंदी) की ज़मानत है जिसमें सुकूने ज़िंदगी पोशीदा है. कलमए-तय्यबा के इकरार व तसदीक के बगैर हक तआला को पहचानना मुमकिन नहीं. यह वो कलमए-अव्वल है जिसको अल्लाह तआला ने मखसूस फरमाया और इसी ज़िक्रे कामिल को ज़िक्रे नजात बनाकर अपने फज़्ल व करम से कबूलिय्यत का दरवाज़ा खोला.

"مَنْ قَالَ لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ دَخَلَ الْجَنَّةَ"

(यानी जिसने ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' कहा वो जन्नत में दाखिल होगा.)

हज़रत सुलतान बाहू रहमतुल्लाहि अलैह किताब 'ऐनुल फक्र' (स.:

२२) में इर्शाद फरमाते हैं :

''जब अल्लाह तआला ने इस्मे अल्लाह को ज़ात से जुदा किया, नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस से ज़हूर हुआ और अपनी कुदरते तौहीद के आइने में उसको देखा और उसके देखने से नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुश्ताक और उस पर आशिक व शैदा हुआ, और खुद नाज़िर व मंज़ूर (देखने वाला और दीखने वाला) होकर रब्बुल अरबाब और हबीबुल्लाह (खुदाओं का खुदा और अल्लाह का हबीब) का खिताब पाया और नूरे मुहम्मदी से हझदा हज़ार आलम के तमाम मखलूकात पैदा किया. जैसा कि हदीसे कुदसी में वारिद है :

''لَوْلَاکَ لَمَا اَظْهَرْتُ الرُّبُوْبِيَّةَ''

यानी ऐ हमारे हबीब ! अगर तुम ना होते तो मैं रुबूबिय्यत को हरगिज़ ज़ाहिर ना करता.

सब से पहले कलमए-तय्यबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह तआला ने पढा, इसके बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हु की रूहे मुबारक ने पढा, इसके बाद हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु ने मां के पेट में पढाः 'ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'. बाकी सहाबा रदियल्लाह अन्हुम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोजिज़ों पर ईमान लाते गए और यह सिलसिलए-कबूलिय्यत आखरी दिन तक कामिलीन व वासिलीन में जारी व सारी रहेगा. ज़िक्र बंदगी का सरमाया (दौलत) है और यह हर दम के साथ है.''

हज़रत बाहू रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि ''वाज़ेह हो कि हर जानदार ख्वाह वह जिन्न व इंस से हो या मुर्ग व मोर (परिंद व कीडों मकोडों) से, हर एक सांस 'इस्मे हूव' से निकलती है, किसी की मालूम किसी की मादूम (नामालूम), जिन की मालूम है वह ज़ाकिर है, जिन की मादूम है वह मुर्दा हैं.''

कामिल मुर्शिद सच्चे तालिब को मालूम और मादूम के फर्क से वाकिफ करवाकर अबदी हयात से नवाज़ता है.

किताब 'ऐनुल फक्र' (स.: १२) में लिखा है :

‘‘फिक़ह का एक मसला सीखना एक साल की इबादत के बराबर है. एक दम खुदा तआला का नाम लेना और उसकी याद में रहना हज़ार साल के सवाब से अफज़ल है. क्यूँकि फिक़ह का पढना और कुरआन की तिलावत करना ज़ाहिरी इबादत है जिस की क़ज़ा मुमकिन है और गुज़रे हुए वक्त की क़ज़ा नामुमकिन है.

”اَلْاَنْفَاسُ مَعْدُوْدَاتٌ وَ كُلُّ نَفْسٍ يَخْرُجُ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللّٰهِ فَهُوَ مَيِّتٌ“

यानी इंसान की सांसें गिनती की होती हैं और जो सांस अल्लाह के ज़िक्र के बगैर निकले वह मुर्दा है. इस लिए हर सांस ज़िक्र में मशगूल होनी चाहिए.

नफस की आमद व शुद की जो करता है निगहबानी
उसी पर मुनकशिफ होते हैं असरारे खुदादानी

ज़िक्र के साथ फिक्र लाज़िम व मलज़ूम है. इल्म दरयाए- बेकिनार है. इल्म फिक्र से मिल जाए तो लम्हा लम्हा कीमती है.

किताब ‘कश्फुल मेहजूब’ (स.:७८) में हज़रत दाता गंज बख्श रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा है कि ‘‘इल्म के साथ फिक्र भी ज़रूरी चीज़ है. चूंकि फिक्र व तदब्बुर (गौर व खौज़) के बगैर ना तो आदमी के अंदर सहीह फहम (समझ) पैदा होता है और ना उसके बगैर इल्म आदमी की ज़िंदगी पर कोई गहरा और देरपा (देर तक रहने वाला) असर डाल सकता है. चुनांचे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

”تَفَكُّرُ سَاعَةٍ خَيْرٌ مِّنْ عِبَادَةِ سِتِّيْنَ سَنَةٍ“

(यानी एक घडी फिक्र व तदब्बुर करना साठ बरस की (नफिल) इबादत से बेहतर है.) अंदाज़ा किजीए कि तफक्कुर का क्या मकाम है.

इंसान के इल्म व अमल का एक ज़ाहिर है और उनका एक बातिन है. मिसाल : कलमए-शहादत का ज़ाहिर यह है कि उसे ज़बान से अदा किया जाए और उसकी सदाकत का इकरार किया जाए, और उसका बातिन यह है कि उसके पसे पुश्त (पीछे की) हकीकत की मारिफत आदमी को हासिल हो और उसका दिल इसकी तसदीक करे. इसी तरह ज़िंदगी के मुआमलात की

ज़ाहिरी शक्ल व सूरत उनका ज़ाहिर है और उनके पीछे कारफरमा नियत और उनका अस्ल मुहर्रिक उनका बातिन है. बातिनी हकीकत की मौजूदगी के बगैर सिर्फ ज़ाहिर का एहतेमाम (खयाल रखना) निफाक़ है, और ज़ाहिरी शक्ल व सूरत के बगैर सिर्फ बातिन का दावा खुली बेदीनी और कुफ्र है. अहले तरीकत बातिन के बगैर ज़ाहिर को 'नुक्स' और ज़ाहिर के बगैर सिर्फ बातिन को 'हवस' करार देते हैं. इस लिए तालिबे हक के लिए ज़ाहिर व बातिन दोनों की दुरुस्तगी यकसाँ ज़रूरी है. (कश्फुल मेहजूब, सफह ७)

कर अमल दोनों मिला कर हो वली
तफ्रक़ा है नाकिसी और जाहिली
राह लेवे जो खिलाफे मुस्तफा
उसको हरगिज़ ना मिले राहे सफा

(मीर हयात रह.)

''सफा की राह दिल की तसदीक से हासिल होती है जिस को कामिल रेहबर अता करते हैं जिसे इस्तेकामत हासिल है वही इस्तेकामत का दर्स देगा.''

'मिफ्ताहुल आरिफीन' (स.:१८) में लिखा है कि ''इस्तेकामत करामत से बेहतर है, रियाज़त का तअल्लुक रुजूआते खल्क से है और राज़ का तअल्लुक मुशाहदे से है. कामिल मुर्शिद वह है जो बगैर रियाज़त पहले ही दिन में राज़ बख्श दे. अगर रियाज़त कराए तो सालहा साल, अगर इनायत करे तो एक लम्हे में विसाल करा दे. ऐसे कामिल और साहिबे तसर्रुफ मुर्शिद की निगाहों में इब्तेदा और इन्तेहा एक ही है.

सोहबते मर्दे खुदा एक साअते
बेहतर अज़ सद हज़ाराँ ताअते

(यानी अल्लाह वाले की सोहबत में गुज़ारा हुआ एक लम्हा लाखो नेकीयों से बेहतर है.)

करामत का कमाल अनफास की हिफाज़त है. चूँकि करामत की भी दो किस्में हैं. किताब 'अत्तकश्शुफ' में किताब लिखने वाले लिखते हैं ''करामत एक हिस्सी है, एक माअनवी. आम लोग अकसर हिस्सी को जानते हैं और

इसी को कमाल शुमार करते हैं जैसे दिल की बात को जानना, पानी पर चलना, हवा में उडना वगैरा. और ख्वास के नज़दीक बडा कमाल माअनवी करामत है यानी शरीअत पर कायम रहना, बेहतरीन अखलाक का आदी होना, नेक कामों का पाबंदी और बेतकल्लुफी से सादिर होना, हसद और कीना व दूसरी बुरी सिफत से दिल का साफ हो जाना, कोई सांस गफलत में ना गुज़ारना, यह वह करामत है जिस में इस्तेद्राज का एहतेमाल (काफिरों से रूनुमा होने वाले करिश्मों की गुंजाइश) नहीं. अल्लामा इकबाल ने क्या बेहतरीन बात कही है :

महवे तसबीह तो सब हैं मगर इद्राक कहाँ
जिंदगी खुद ही इबादत है मगर होश नहीं
अल्लाह अगर तौफीक ना दे इंसान के बस का काम नहीं
फैज़ाने मुहब्बत आम सही इरफाने मुहब्बत आम नहीं

अल्लाह पाक हम तमाम को ईमान के साथ इस्लाम पर कायम व दायम रखे. अमीन

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम
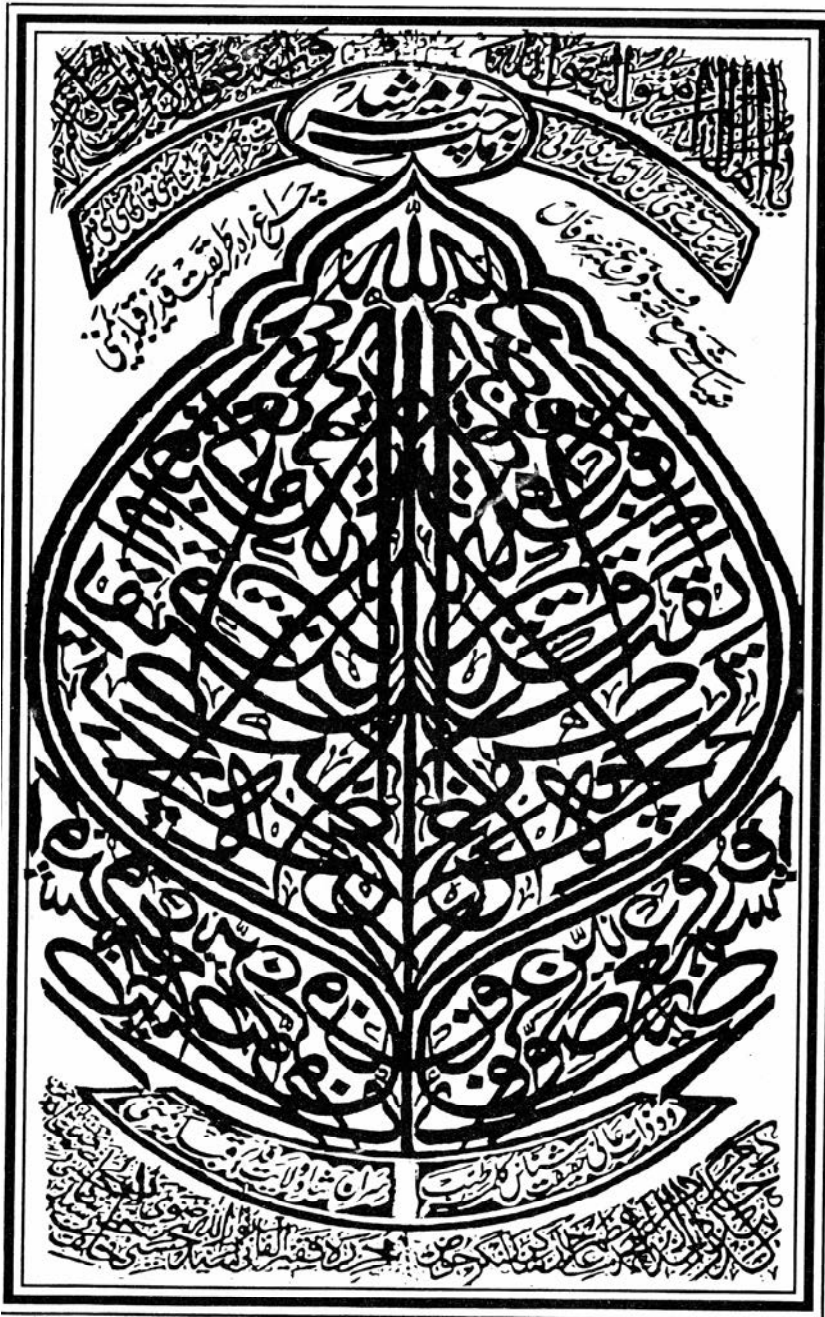
तरीकत, मारिफत और हकीकत

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ، اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ، مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ، اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ، اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ، صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ، غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّالِّيْنَ﴾

सवाल : तरीकत की क्या तारीफ है?

जवाब : लुग़त (डिक्शनरी) में तरीकत उस रास्ते को कहते हैं जो आदमीयों के चलने से उनके निशाने कदम से बनता है और उर्फ व इस्तलाह में तरीकत उस रास्ते को कहते हैं जो सूफी और सालिक को अपनी मंज़िल व मकसूद कुर्ब व विसाल को पहुंचने के लिए शाहराहे तरीकत पर चलने से उस के नक्शे कदम (अमल) से बनता है यानी शरीअत एक आम शाहराह (रास्ता) के मुशाबेह (जैसा) है और तरीकत वह रास्ता है जो सूफी व सालिक के शाहराह पर चलने से उसके कदम के निशान (अमल) से बनता है.

सवाल : मारिफत व हकीकत की तारीफ क्या है?

जवाब : खुदाए तआला की ज़ात व सिफात को शरीअत की रहनुमाई के मुताबिक जैसा उसका हक है शनाख्त करने (पहचानने) का नाम मारिफत है और इस मारिफत से आरिफ को खुद अपनी सारी कायनात आलम की हकीकत ज़ाहिर हो जाती है जिसे अपना कर इंसान कामिल और अल्लाह का खलीफा बनता है और यही अस्ल ग़र्ज़ इंसान को पैदा करने की है और यही मंज़िले मकसूद के लिए यह तमाम दौड धूप है.

सवाल : सूफिया-ए-किराम की इस्तेलाह में सुलूक से क्या मुराद है?

जवाब : शरीअत एक आम शाहराह (रास्ता) है और तरीकत उस शाहराहे शरीअत पर सालिक के चलने से जो उस के कदम के निशानात (अमल) से जो राह बनती है उसका नाम तरीकत है जो मंज़िले

मकसूद और मारिफत व हकीकत तक पहुंचाती है. और मंजिले मकसूद तक पहुंचने के लिए चलने का नाम सैर व सुलूक और सुलूक हकीकत में शरीअत पर पूरी तरह अमल करने का नाम है मगर यह अमल करना एक खास किस्म का अमल करना होता है जो सालिक की ज़ात और अल्लाह तआला के बीच एक खास निसबत व लगाव के साथ होता है.

चुनांचे इर्शादे कुरआनी है : ﴿كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَأْنٍ﴾

यानी हर दिन हर आन वह एक नई शान में जलवागर होता है.

लेहाज़ा हर एक के साथ खुदाए तआला की हर आन एक नित नई तजल्ली और शान होती है जो उसकी रहनुमा और मुरब्बी होती है. और यह भी इर्शाद है :

﴿كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا﴾

यानी हर एक शख्स अपने अपने खास तरीके पर अमल पैरा होता है और तुम्हारा परवरदिगार खूब वाकिफ है कि कौन ज़्यादा राहे हिदायत पर है.

और यह भी फरमाता है : ﴿وَ لِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا﴾ यानी हर एक का एक खास रुख व तरीका है जिस की तरफ वह रुख करता है. ﴿فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ﴾ पस सबक़त करो (झपटो) नेक राहों की तरफ, ﴿اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا﴾ यानी सब की मंज़िले मक़सूद एक ही है. इन राहों के अलग अलग होने से कुछ मुज़ाइक़ा (हर्ज) नहीं.

सवाल : चार तरीके कौन से हैं और वह किन की तरफ मनसूब हैं?

जवाब : इस्तेलाह और उर्फ के लेहाज़ से चार तरीके जो मशहूर हैं वह यह हैं: (१) क़ादरीया, (२) चिश्तिया, (३) नक्शबंदीया, (४) सोहरवर्दीया.

पहला हज़रत मेहबूबे सुबहानी गौसे समदानी कुत्बे रब्बानी हज़रत

शेख अबू मुहम्मद मुहियुद्दीन सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है और इसी को तरीका-ए-जीलानी भी कहते हैं. खुसूसन अरब में इसी नाम से मशहूर है.

दूसरा हज़रत कुत्बुल हिंद ख्वाजा-ए-ख्वाजगान ख्वाजा-ए-बुजुर्ग हज़रत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन संजरी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

तीसरा हज़रत ख्वाजा बहाउद्दीन सय्यद मुहम्मद नक्शबंदी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है जिन का मज़ार बुखारा में है.

चौथा हज़रत ख्वाजा शहाबुद्दीन अबू हफ्स उमर अल-सुहरवर्दी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है जिनका मज़ार इराक़ अरब में है.

नोट : इसके अलावा एक क़दीम (पुरानी) इस्तेलाह भी है जिस में चार तरीके और चार पीर से मुराद नीचे दिए हुए के मुताबिक हुआ करती है :

यानी हज़रत शाहे विलायत मौलल मोमिनीन वल मोमिनात सय्यदना अली बिन अबी तालिब कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम के चार खुलफा चार पीर कहलाते हैं, पहले खलीफा हज़रत इमाम हसन मुजतबा रदियल्लाहु अन्हु, दूसरे हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु, तीसरे हज़रत ख्वाजा हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैह, चौथे हज़रत ख्वाजा कुमैल बिन ज़ियाद रहमतुल्लाहि अलैह.

सवाल : खानवादे कितने हैं और वह किन की तरफ मनसूब हैं?

जवाब : चौदह (१४) हैं और वह हज़रत ख्वाजा हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैह के दो खलीफों हज़रत ख्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैह और हज़रत ख्वाजा हबीब अजमी रहमतुल्लाहि अलैह तक पहुंचता है, पांच हज़रत ख्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद

तक और नौ (९) हज़रत ख्वाजा हबीब अजमी तक. हज़रत ख्वाजा अब्दुल वाहिद के पांच खानवादे यह हैं :

१)ज़ैदीय्या : खास हज़रत अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

२)अयाज़ीय्या : हज़रत फुजै़ल बिन अयाज़ ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

३)अदहमीय्या : हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमतुल्लाहि अलैह से मनसूब है.

४)हुबैरीय्या : हज़रत ख्वाजा अबू हुबैरह बसरी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

५)चिश्तीय्या : हज़रत ख्वाजा अबू अहमद अबदाल चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

और हज़रत हबीब अजमी की तरफ मनसूब ९ खानवादे यह हैं :

१)हबीबीय्या : खास हज़रत हबीब अजमी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

२)तैफूरीय्या : हज़रत ख्वाजा बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

३)करखीय्या : हज़रत ख्वाजा मारूफ करखी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

४)सुक्तीय्या : हज़रत ख्वाजा सिर्री सुक़्ती बिन मुग़लिस अल-सुक़्ती रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

५)जुनैदीय्या : हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

६)गाज़रूनीय्या : हज़रत ख्वाजा गाज़रूनी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

७)तूसीय्या : हज़रत ख्वाजा तूसी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

८) फिर्दौसिय्या : हज़रत ख्वाजा फिरदौसी रहमतुल्लाहि अलैह की

तरफ मनसूब है.

९)सुहरवरदिया :हज़रत ख्वाजा शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रहमतुल्लाहि अलैह की तरफ मनसूब है.

सवाल : ऊपर ज़िक्र किए गए तमाम तरीके किन किन सहाबा से जारी हुए हैं?

जवाब : यह सब तरीके हज़रत शाहे विलायत सय्यदना अबुल हसन अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु से जारी हुए हैं. सिवाए एक तरीका-ए-नक्शबंदिया के क्यूँकि यह हज़रत खलीफा-ए-अव्वल सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रदियल्लाह अन्हु से जारी है.

सवाल : इमामत की क्या तारीफ है और उसकी किस्में और शर्तें क्या हैं?

जवाब : इमामत की दो किस्में हैं; एक इमामते कुब्रा, दूसरी इमामते सुग़रा. इमामते कुब्रा वह शरई मनसब है जिस से मुसलमानों के दीनी और दुनयवी उमूर का इंतेज़ाम वाबस्ता हो जिस से मकसूद रियासत (हुकूमत) या फस्ले खुसूमात (झगडों के फैसले करना) और इज्राई-ए-हुदूद व किसास (सजाऐं देना और किसास का हुक्म देना) वगैरा बातें हैं.

इमामते नमाज़ इस इमामते कुब्रा की एक शाख है. इमामते कुब्रा का तकर्रुर इंकिराज़े अहदे नबवी (नबवी ज़माने के आगाज़) के बाद से मुसलमानों पर वाजिब है. इस के बगैर मुसलमानों में हुदूद और क़िसास का इजरा और जिहाद के लिए लशकर की तरतीब वगैरा दीनी और दुनयवी उमूर का इंतेज़ाम नामुमकिन है. इमाम के लिए नीचे दी हुई शराइत का पाया जाना ज़रूरी है.

आक़िल (समझदार) हो, आज़ाद हो, मर्द हो, आदिल (इंसाफ करने वाला) हो, बहादुर हो, इज्तहाद की कुव्वत रखता हो, सहीह राए रखता हो, कुरैशी हो लेकिन कुछ ने इमाम के लिए कुरैशी होने की शर्त को ज़रूरी नहीं समझा है.

इमामत की दूसरी किस्म यानी इमामते सुग़रा से मुराद उलमा और सूफिया हैं रहमतुल्लाहि अलैहिम जो "اَلْعُلَمَاءُ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ" के

हुक्म के मुताबिक और 'فَضْلُ الْعَالِمِ عَلٰى غَيْرِهٖ كَفَضْلِ النَّبِيِّ عَلٰى اُمَّتِهٖ' (यानी आलिम की फज़ीलत गैर आलिम पर ऐसी है जैसे नबी की फज़ीलत उसकी उम्मत पर) के मुताबिक इल्मे नबवी के वारिसीन और कौम के सरदार होते हैं. इन से सालिकीने राहे खुदा की ज़ाहिरी व बातिनी तालीम वाबस्ता होती है. इस किताब के मकासिद के लेहाज़ से जिस इमामत का बयान मकसूद है वह इसी इमामते सुग़रा की तारीफ है. हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे दहलवी रहमतुल्लाहि अलैह ने 'फतावा-ए-अज़ीज़ीयह' में इस बैअत की तारीफ इन अलफाज़ में फरमाई है कि बैअत का मतलब इस्तेलाहे तसव्वुफ में अकीदत का हाथ मुर्शिद के हाथ में देना है. इस इमामत यानी मशीखत के लिए शर्त यह है कि शेख ज़ाहिरी और बातिनी उलूम का माहिर हो. चुनांचे हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि जिसने तसव्वुफ को इख्तियार किया और फिक़ह को छोडा ज़िंदीक़ हुआ, और जिसने फिक़ह को इख्तियार किया और तसव्वुफ को छोडा वह फासिक़ हुआ, और जिस ने इन दोनों को जमा किया मुहक़्क़िक हुआ.

और हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब रहमतुल्लाहि अलैह अपनी किताब 'अलक़ौलुल जमील' में फरमाते हैं कि शेख के लिए ज़रूरी है कि कुरआन व हदीस व फिक़ह के उलूम में इतनी महारत रखता हो कि मुरीदों को जायज़ कामों का पाबंद और नाजायज़ बातों से परहेज़ कराए, और उन से बुरे अखलाक के छुडाने और अच्छे अखलाक से आरास्ता कराने की काबलिय्यत रखता हो, आदिल और मुत्तक़ी हो, इताआत और मसनून अज़कार पर मुवाज़ेबत (पाबंदी) रखता हो, उलूमे सूफिया की तहसील के साथ दिल का तअल्लुक अल्लाह तआला के साथ कायम किया हुआ हो.

इमाम शाअरानी रहमतुल्लाहि अलैह अपनी किताब 'अत्-तबक़ातुल कुब्रा' में फरमाते हैं कि सूफिया की कौम का इस पर इज्तेमा (इत्तेफाक) है कि जिस शख्स को शरई उलूम में तबह्हुर (कमाल)

ना हो उसमें खुदाए तआला के रास्ते की तालीम की सलाहिय्यत नहीं.

हज़रत शेख अबू नजीब अब्दुल क़ाहिर सोहरवर्दी रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी किताब 'इर्शादुत् तालिबीन' में फरमाया है कि (मशीखत) के खर्के का अहल वह शख्स है जिस ने अपने नफ्स को सूफिया के आदाब से बाअदब बनाया हो. रियाज़तें और मुजाहिदे किए हों, मशक्कतें उठाई हों, मुरादात (ख्वाहिशों) से खाली हो, मकामात तै किया हुआ हो, सादिक़ीन (सच्चों) की सोहबत में रहा हो, अहकामे दीन और उसके हुदूद, मज़हब के उसूल व फरोग का आरिफ (जानकार) हो. अगर इन सिफात से मुत्तसिफ (सिफतों वाला) ना हो तो उसको शेख बनना और मुरीद बनाना हराम है.

शेख जुनैद रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं कि जिसने कुरआन व हदीस की तालीम ना पाई हो उसकी इक्तेदा इस इल्मे तसव्वुफ में ना की जाए क्यूँकि हमारा इल्म किताब व सुन्नत के उलूम के साथ कैद है.

सवाल : क्या बैअत इमाम के हाथ पर ज़रूरी है? अगर है तो क्यूँ है?

जवाब : इमामत की दो किस्मों यानी इमामते कुब्रा और सुग़रा के लेहाज़ से बैअत की भी दो किस्में हैं :

एक इताअत की बैअत जो इमाम यानी बादशाहे इस्लाम के हाथ पर की जाए, चूँकि इस बैअत के बगैर मुसलमानों के दीनी और दुनयवी उमूर की तकमील नामुमकिन है लेहाज़ा मुसलमानों पर जिस तरह इमाम का तक़र्रुर वाजिब है और इसी तरह इमाम के हाथ पर बैअत और इताअत भी वाजिब है. इस बैअत के वुजूब पर अहादीसे शरीफा में इस क़द्र ताकीद फरमाई गई है कि जिस ने इमाम के हाथ पर बैअत किए बगैर मर गया हो उसकी मौत जाहिलिय्यत की मौत करार दिया गया है.

दूसरी बैअते तक़वा व तौबा. जो इमामते सुग़रा की हैसीय्यत से मशाइखीन सूफिया के हाथ पर उलूमे तरीकत की तलब के लिए

की जाती है. इस बैअत का फर्ज़ या वाजिब या सुन्नत होना उस मकसूद के फर्ज़ या वाजिब या सुन्नत होने पर मौकूफ (मुनहसिर) है कि जिस के लिए बैअत की जाती है. इस लेहाज़ से चंद सूफिया फरमाते हैं कि ''तलबुल इल्मि फरीज़तुन अला कुल्लि मुस्लिमिन'' के तहत जिस इल्म का हासिल करना फर्ज़ है. वह इल्म तसव्वुफ है जिस से सालिक को उसके हाल और कुर्बे इलाही के मकामात और अल्लाह तआला की मारिफत का इल्म हासिल होता है. उलमा का बयान है कि हदीसे नबवी में जिस इल्म की तलब के फर्ज़ होने पर इशारा है वह इल्मे तफसीर व हदीस व फिक़ह व अक़ाइद है कि उनके बगैर दीन की तकमील नहीं होती.

शेख अबू तालिब मक्की रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी किताब 'कुव्वतुल क़ुलूब' में इन इख्तेलाफात का फैसला इस तरह फरमाया है कि इस्लाम की बुनियाद कलमा, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात इन पांच चीज़ों पर है. तो इन्ही पांच फराइज़ का इल्म तलब करना वाजिब होगा.

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी किताब 'इहयाउल उलूम' में लिखा है कि इल्म की दो किस्में हैं; एक मुआमला और दूसरा इल्मे मुकाशिफा. और हदीसे नबवी में हर मुसलमान पर जिस इल्म का सीखना फर्ज़ किया गया है वह इल्मे मुआमला है और वह इल्मे मुआमला के फर्ज़ होने का सिलसिला इस तरह कायम फरमाते हैं कि बफौरे इस्लाम या बुलूग़ ((ईमान लाते ही या बालिग़ होते ही) सब से पहले कलमए-तौहीद का सीखना फर्ज़ होगा. इसके बाद वक्तिया नमाज़ों के लिए वज़ू और गुस्ल के अहकाम, फिर वक्तिया नमाज़ों का सीखना, उसके बाद रोज़ों के मसाइल, अगर मालदार हो तो ज़कात और हज के मसाइल, ताजिर हो तो खरीद व फरोख्त के अहकाम का इल्म और निकाह करना चाहे तो निकाह के मसाइल और ज़ौजैन (मियाँ बीवी) के हुकूक का इल्म, ग़र्ज़ कि जिस वक्त जिस मुआमलात के शोबे से साबका हो उसी

वक्त इल्म का सीखना फर्ज़ हो जाता है, और इल्मे मुकाशेफा को हज़रत इमाम साहब ने उन उलूम में शुमार फरमाया है जो फर्ज़े किफाया हैं जिसकी तारीफ यह है कि कौम में एक शख्स ही इस इल्म का हासिल करने वाला हो जाए तो कौम पर से उसकी फर्ज़िय्यत साकित हो जाती है मगर कौम के दीगर अफराद के हक में उसकी तलब मना भी नहीं बल्कि फज़ीलत का सबब है.

हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिसे दहलवी रहमतुल्लाहि अलैह अपनी किताब 'अलक़ौलुल जमील' में फरमाते हैं कि मशाइखीन में तक़वा और तौबा की बैअत जो राइज है यह बैअते सुन्नत है, वाजिब नहीं है. इसी वास्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा ने हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बैअत के ज़रीए अल्लाह की कुरबत को हासिल किया मगर कोई शरई दलील बैअत को छोडने वाले के गुनहगार होने पर दलालत नहीं करती है और दीन के उलमा ने बैअत के छोडने वाले पर इंकार भी नहीं किया है तो यह अदमे इंकार (इंकार नहीं करना) इजमाअ (इत्तफाक) हो गया इस पर कि वह वाजिब नहीं है.

इन बुज़ुर्ग सूफिया की तहकीक व तदकीक का नतीजा यह हुआ की सूफिया के हाथ पर तक़वा और तौबा की बैअत और इल्मे तरीकत हासिल करना सुन्नत है. बावजूद इसके कि तरीकत की तलब और उसके हुसूल के लिए शेख के हाथ पर बैअत करना सुन्नत है और आमाल में दाखिल होना सुन्नत है मगर जो शख्स इस इल्म को हासिल करना चाहे तो उस पर लाज़िम है कि कामिल शेख की रहनुमाई के बगैर सुलूक के मदारिज को तै करने में कदम ना बढाए क्यूँकि सुलूक के दौरान में शैतानी व नफ्सानी फरेबों को जानना और मलकी व रेहमानी तजल्लियात व शैतानी वसवसों वगैरा का फर्क कामिल शेख की रहनुमाई के बगैर ना हो सकेगा तो यह उमूर कुफ्र व ज़लालत व गुमराही में मुब्तेला करने वाले होंगे. इस लिए कहा गया है कि "مَنْ لا شَيْخَ لَهُ فَشَيْخُهُ الشَّيْطَانُ" (यानी

जिस का कोई शेख नहीं होता तो शैतान उसका शेख हो जाता है.)
ग़र्ज़ कि इल्मे ज़ाहिर का सीखना सूफी पर लाज़िम है जिस के बगैर सूफी शैतानी खतरात से बच नहीं सकता अलबत्ता इस कुल्लिये (कायदे) से मजाज़ीब (मजज़ूब हज़रात) अलाहिदा हैं क्यूँकि वह खास जज़बाते इलाही की वजह से सैर व सुलूक की मेहनत उठाए बगैर एकदम मंज़िले मकसूद को पहुंच जाते हैं मगर उनकी इस खास हालत पर दूसरों को गुमान करना गलत और नाजायज़ है.

सवाल : क्या सूफिया शैतानी धोकों से मेहफूज़ हो जाते हैं? अगर नहीं तो फिर बचने का क्या तरीका है?

जवाब : यह एक मुसल्लम अकीदा अहले हक का है कि कोई शख्स सिवाए अंबिया अलैहिमुस् सलाम के मासूम नहीं यानी शैतानी की धोकेबाज़ी से बिलकुल मेहफूज़ नहीं हो सकता.

नफ्स अज़दहा अस्त ईन कि मुर्दा अस्त
अज़ गम बे अलती अफसुर्दा अस्त

यानी इंसान का नफ्स एक अज़दहे (सांप) की मिसाल है जिस की उम्र बडी होती है और वह जल्द मरता नहीं. बल्कि कभी वह मुर्दे की तरह जो बेहिस दिखाई देता है तो कोई हीला व ज़रीया ना मिलने के सबब दिखाई देता है और जब उसे मौका मिलता हो तो वह धोका देने से नहीं चूकता. उसकी निसबत सैंकडों हदीसें और आयतें हैं जिनका ज़िक्र यहाँ तवालत का बाइस होगा. मगर एक हदीस काफी है. इमाम मुस्लिम ने इस हदीस को अपनी सहीह में दर्ज किया है :

"مَا مِنْكُمْ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا وَ قَدْ وُكِّلَ بِهٖ قَرِيْنَةٌ مِنَ الْجِنِّ وَ قَرِيْنَةٌ مِنَ الْمَلَائِكَةِ ، قَالُوْا وَ اِيَّاكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ وَ اِيَّاىَ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ اَعَانَنِىْ عَلَيْهِ فَاَسْلَمَ فَلَا يَأْمُرُنِىْ اِلَّا بِخَيْرٍ . (مشكوة، كتاب الوسوسة)

यानी तुम्हारे में हर एक के साथ एक शैतान और एक फरिश्ता मुकर्रर किया गया है. सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप के

साथ भी? फरमाया हाँ, मेरे साथ भी. मगर खुदा ने मुझे उसपर गालिब कर दिया है, सो मैं बच जाता हूँ और वह मुसलमान हो गया है या मेरा मुतीअ (फरमांबरदार) हो गया है लेहाज़ा मुझे वह सिर्फ भलाई का ही हुक्म करता है. (मिश्कात, किताबुल वसवसा)

तंबीह : लफ्ज़ 'असलमा' की दो तरह से रिवायत है, एक मीम पर पेश के साथ यानी मैं बच जाता हूँ, दूसरी रिवायत मीम पर ज़बर के साथ यानी वह मुतीअ (फरमांबरदार) हो गया है या मुसलमान हो गया है.

ग़र्ज़ कि हर इंसान के साथ शैतान और नफ्स दोनों लगे हुए हैं. ऐसी हालत में कोई शख्स शैतान के शर्र से नहीं बच सकता. अगर उस से कोई बचने की सूरत है तो शरीअत और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी की सूरत है. और यह अहले इल्म ही का काम है वरना सूफी जाहिल मसखरा शैतान मशहूर है. और हदीस "فَقِيْهٌ وَاحِدٌ عَلَى الشَّيْطَانِ اَفْضَلُ مِنْ اَلْفِ عَابِدٍ" (यानी एक फक़ीह शैतान पर हज़ार आबिदों से भारी है.) का भी यही मतलब है.

तंबीह : फक़ीह कहते हैं शरीअत के इल्म व अहकाम में समझ बूझ रखने वाले को ना कि सिर्फ राइज फिक़्ह पढने वाले को.

सवाल : समाअ की हकीकत क्या है? क्या वह सूफी के लिए ज़रूरी है?

जवाब : खुश आवाज़ी के साथ कोई मौज़ून कलाम सुनने का नाम समाअ है. खुश आवाज़ी और कलाम की मौज़ूनिय्यत की पसंदीदगी का माद्दा इंसान में मौजूद है. इस वजह से इंसान को समाअ से रगबत होती है. खुश आवाज़ रूह को उभारती है और निशात में लाती है जिस से अच्छे या बुरे खयालात जो दिल में जड पकडते हैं वह इस समाअ से भडकते हैं और यही समाअ की हकीकत है. रहा समाअ का जायज़ या नाजायज़ होना तो इसमें इख्तेलाफ है. जहाँ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आम लोगों के लिए इस का मना वारिद (मौजूद) है वहाँ खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम से उसका सुनना साबित है तो इस से यह नतीजा निकलता है कि चूँकि आम फितरतें नेक जज़बात से भरे नहीं होते हैं इस वजह से आम तौर पर समाअ का सुनना जायज़ करार नहीं दिया गया. अलबत्ता ऐसे लोगों के हक में समाअ का जायज़ होना पता चलता है जिन के दिल साफ और नेक जज़बात से लब्रेज़ होते हैं. और ऐसे लोगों के हक में समाअ उनके नेक जज़बात के उभरने का सबब होता है.

चुनांचे चिश्तिया बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाहि अलैहिम ने जिन के साफ दिल अकसर अल्लाह के इश्क व मुहब्बत के जज़बात से पुर थे ना सिर्फ इसको जायज़ रखा बल्कि अकसर इस का मशगला रखते रहे मगर आम तौर पर सरे बाझार नहीं बल्कि अपने मुरीदीन की खास मजलिसों में.

ग़र्ज़ कि समाअ उन्ही साफ दिलों को फायदा देता है जो बुरे जज़बात से पाक व साफ हों, आम लोगों के हक में उसकी बुराईयाँ और नुकसानात फायदों और मनाफों से ज़्यादा हैं. इसी लिए हम मुहक्क़िकीन ने यह बात मान ली है कि समाअ समाअ मदारिज में ज़्यादती का सबब और अल्लाह तक पहुंचने का ज़रीया नहीं है, बल्कि वह सिर्फ खुदा की मुहब्बत व इश्क के जज़बात को उभारने का काम दे सकता है और जिन्होंने इसको इख्तियार किया सिर्फ नेक जज़बे को हरकत देने के मकसद से इख्तियार किया ना कि उसे इबादत और मदारिज में ज़्यादती (तरक्क़ी) का सबब समझा हो जैसा कि आज कल समझा जा रहा है.

ग़र्ज़ कि समाअ सूफी सालिक के लिए ना तो अल्लाह के कुर्ब के लिए ज़रूरी वसीला व ज़रीया है कि इबादत की तरह रस्मी तौर पर उसकी आदत डाली जाए और मजालिस के इन्एकाद की ख्वाह मख्वाह तकलीफ गवारा की जाए, और ना इसे सूफिए साफी के हक में नाजायज़ या हराम है जिसके दिल में खुदा और रसूल की मुहब्बत भरी हुई और उसके लिए अल्लह की तरफ तवज्जह का

सबब हो.

सवाल : नफ्स की कितनी किस्में हैं?

जवाब : नफ्स की तीन किस्में हैं जिन का ज़िक्र कुरआन पाक में है :

नफ्से अम्मारह यानी वह नफ्स जो नफ्सानी ख्वाहिशात का हुक्म करे. यह नफ्स अवाम का है.

नफ्से लव्वामह यानी वह नफ्स जो आरास्ता होकर बुरी बातों पर जो सरज़द हो जाए मलामत करे. यह नफ्से मुत्तक़ीन है.

नफ्से मुतमइन्नह यानी वह नफ्स जिस को अपने रब के साथ इत्मेनान व सुकून होता है और कोई शक व शुबह उसे बाकी नहीं रहता, और यही नफ्स रादियह और मरदिय्यह (अल्लाह से राज़ी और अल्लाह उस से राज़ी) है और इसी को नफ्से मुलहिमह भी कहते हैं जिसे हक तआला से इल्हाम हुआ करता है.

सवाल : इंसान को इस नशअते दुनिया में पैदा करने से खुदा का क्या मकसूद है?

जवाब : खुदा (वह) खुदावंदे आलम को इंसान के पैदा करने से सिर्फ अपनी मारिफत या खिलाफत का हुसूल मकसूद था, अगरचे इन दोनों का हासिल एक ही है मगर हैसिय्यत और एतेबार के लेहाज़ से यह दोनों चीज़ें जुदा जुदा हैं यानी मारिफत से खुदावंदे आलम का मकसूद यह था कि अपनी ज़ात को जो तमाम सिफाते कमाल वाली और पोशीदा खज़ाने के तौर पर थी उसको ज़ाहिर करे. या यूँ समझिए कि यह सिफाते कमाल जो अल्लाह के नामों से मुराद हैं उनका मंशा यह हुआ कि वह ज़ाहिर हों और शाने जामईय्यत ज़ाहिर हो.

चुनांचे इसी ग़र्ज़ के लिए इंसान को पैदा किया गया जिस का कमाल यही शाने जामईय्यत है. इसकी मिसाल ऐसी ही है कि जब आप अपनी खूबीयों व महासिने जमाल (जमाल की अच्छाईयों) को देखना चाहते हैं तो आप को आईने की ज़रूरत होती है जिस में महासिन और खूबीयों का पूरा पूरा अक्स उतर आता है और आप

अपनी सूरत को देखकर अपने आप का तफसीली अंदाज़ा कर लेते हैं. यही मिसाल इंसान की है कि वह अल्लाह के तमाम असमा (नामों) का कामिल मज़हर है क्यूँकि तमाम आलम की कायनात अल्लाह तआला के इन मुखतलिफ नामों के मुखतलिफ मज़ाहिर हैं और यह तमाम आलम का खुलासा और मुखतसर ढांचा है. लेहाज़ा तमाम आलम की मुखतलिफ तफसीलात इस मुखतसर ढांचे में इख्तेसार के साथ मिल जाती हैं और इस तरह इंसान का अपने आप का पहचानना गोया खुदा को पहचानना है और यही ग़र्ज़ है जिस के लिए इंसान को पैदा किया गया है और दूसरी हैसिय्यत खिलाफत है, यानी अल्लाह तआला की कायम मकामी और उसकी नियाबत.

चूँकि इस आलमे दुनिया यानी आलमे मुल्क व शहादत की नशअत (पैदाइश) का मुक़तज़ा (मकसूद) सतर व इखफा (पोशीदा रखना) है यानी खुदाकी खुदाई का ज़हूर इन्हीं मुमकिनाते आलम के पसे पर्दा यहाँ हो रहा है यानी इस आलम की हर एक शै इस खुदाई की मुखतलिफ जिहतों में कुछ कुछ जिहतों के मज़हर हैं, लेहाज़ा मुक़तज़ाए मशिय्यत (अल्लाह की मंशा) हो कि एक ऐसा नमूना बना दिया जाए जो इन तमाम अलाहिदा अलाहिदा मुखतलिफ जिहात को अपने अंदर जमा करे जैसे कि इस आलम में ज़ाते खुदावंदी मुखतलिफ असमा (नामों) की जामेअ (मालिक) है "وَ هُوَ الَّذِىْ فِى السَّمَاءِ اِلٰـهٌ وَ فِى الْاَرْضِ اِلٰـهٌ" यानी वही ज़ाते पाक है जो इस आलमे बाला (आस्मानी दुनिया) में भी शाने इलाहिय्यत रखती है और इस आलमे असफल (दुनिया) में भी शाने इलाहिय्यत रखती है जैसा कि दोनों आलम मे वह इलाह (खुदा) है ऐसा ही ज़रूर था कि कोई इस शाने इलाही की नियाबत (खिलाफत) करे. चुनांचे इस मकसद को पूरा करने के लिए इंसान को पैदा किया गया. और सब पर उसको हुकूमत दी गई और सारी आला व अदना कुव्वतें उसके क़ब्ज़े में दिए गए. चुनांचे यह

तसखीर (हुकूमत) मुखतलिफ हैसिय्यतों (तरीकों) से अपना जलवा करती रही और कर रही है यानी माअनवी व रूहानी लेहाज़ से देखो तो जो इंसान कामिल होते हैं उनका हर एक फेअल (काम) अपने अंदर शाने रब्बी रखता है. चुनांचे हदीस "حَتّٰی اَكُوْنَ سَمْعُهٗ وَ بَصَرُهٗ ... الخ" इस की खुली और साफ दलील है.

देखिए ! हज़रत दाऊद अलैहिस् सलाम के लिए पहाड वगैरा का मुसख्खर (मेहकूम) होना और हज़रत सुलैमान अलैहिस् सलाम के लिए हवा वगैरा सारी चीज़ों का मुसख्खर होना और तमाम नबीयों के मोजिज़ात और हमारे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए चांद के दो टुकडे होनेका मोजेज़ा वगैरा और फिर औलिया अल्लाह के करामात यह सब के सब इसी तसखीर (हुकूमत) व खुदाई खिलाफत को ज़ाहिर कर रहे हैं. फिर अगर आप ज़ाहिरी लेहाज़ से देखिए तो भी आप को इस खिलाफत का असर एलानिया तौर पर मालूम होगा कि किस तरह इंसान की समझने की कुव्वत और अमल करने की कुव्वत में खुदाए तआला ने वुशअत (कुशादगी) अता की है और किस क़द्र उसकी इन दोनों कुव्वतों को उरूज और तरक्क़ी अता फरमाई और तमाम आलम की कुव्वतों को उसकी इन दोनों कुव्वतों के तहत मुसख्खर कर दिया. अल्लाह तआला का कौल : ﴿وَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ﴾ में इसी तरफ इशारा है यानी मुसख्खर किया तुम्हारे लिए इन कुव्वतों को जो आलमे बाला में हैं और जो आलमे असफल में है. या माद्दी तरक्क़ी (दुनयवी तरक्क़ी) का हाल है जिस का रूहानी तरक्क़ी और ईमानी कुव्वत से कोई मुकाबला नहीं और जिस का तअल्लुक सिर्फ इंसानिय्यत के इम्तियाज़ और इंसानिय्यत के उरूज के इब्तेदाई ज़ीने से है. इस सब के बावजूद इस में भी बल्कि हर शै (चीज़) में आरिफीन के लिए इशारे और दलीलें मौजूद हैं कि जो ज़रा भी गौर व फीक्र करे उस पर कोई चीज़ पोशीदा नहीं.

सवाल : दीने इस्लाम का अस्ल मुद्दआ क्या है और वह इंसान को क्या

बनाना चाहता है?

जवाब : कुरआन और अहादीस के अहकाम पर गौर करने से मालूम होगा कि दीने इस्लाम का अस्ली मंशा ज़ाहिरी और बातिनी तहज़ीब को नौए इंसान में फैलाना और वह इंसान को ज़ाहिरी और जिस्मानी लेहाज़ से एक आला दर्जे का मुतमद्दिन (बेहतरीन अखलाक वाला) और मुहज़्ज़ब (तहज़ीब वाला) और बातिनी और रूहानी लेहाज़ से आरिफे कामिल और मुतखल्लिक बिअखलाकिल्लाह (अल्लाह की सिफतों से आरास्ता) या खलीफए रहमानी बना देती है और उनके हुसूल के लिए उसने दोनों किस्म की तालीमात और हिदायात जारी की हैं और ना सिर्फ इस दीने पाक में तालीमात व हिदायात ही पाई जाती हैं बल्कि इस्लामीयों के लिए वह अहकामे शरीअत का कामिल तरीन मजमूआ है और खुदावंदे आलम ने बनी नौए इंसान (इंसानों) की हिदायत और उनको गुमराही से बचाने के लिए ऐसे नबी को मबऊस फरमाया जिन्होंने खुद अपनी ज़ात से दुनिया के सामने बेहतरीन अमली नमूने इन दोनों बातों के हुसूल के लिए पेश फरमाए और दुनिया को दिखा दिया कि बशरिय्यत के एतेदाल और रूहानिय्यत व इरफान की तरक्की से इंसान क्यूँकर (किस तरह) आला दर्जे का इंसान बन सकता है और माद्दी (दुनयवी) तहज़ीब और रूहानी कमाल दोनों किस तरह एक जगह बेहतरीन तरीके पर जमा हो सकते हैं और इस जमा होने का फख्र अगर किसी को हासिल है तो दीने इस्लाम ही को हासिल है.

सवाल : क्या दीने इस्लाम के बानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं या वह कदीम दीन नौए इंसान का है? दूसरी सूरत में आप की बेएसत (भेजे जाने) से फिर क्या मकसूद है?

जवाब : दीने इस्लाम इस मायने में कि वो तौहीद और अच्छे अखलाक सिखाता है और फितरते इंसानी की मुनासिब रहनुमाई करता है, एक कदीम दीन है और तमाम अंबिया व मुरसलीन का वाहिद दीन

है जिनका वाहिद मकसद अल्लाह के कलमे को बलंद करना और तौहीद है. चुनांचे खुदावंदे आलम ने इर्शाद फरमाया है :

﴿فَبِهُدٰهُمُ اقْتَدِهْ﴾

यानी ऐ नबी! बस आप इन्ही पैगंबरों की हिदायात की ही पैरवी किजीए.

मगर सुन्नते इलाही और फितरते इलाही चूंकि इरतेका (तरक्की) की मुक़तज़ी (चाहती) है इस लेहाज़ से हर चीज़ एक इब्तेदाई दर्जे से तरक्की करते करते मेराजे कमाल को पहुंचती है. यही हाल इस दीन का भी है कि तमाम अंबिया के दीन दर हकीकत इसी दीने इस्लाम के इब्तेदाई मदारिज (दर्जे) थे, जो रफ्ता रफ्ता (आहिस्ता आहिस्ता) हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रीए अपने इंतेहाई कमाल को पहुंच गए. जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ ....﴾

(यानी आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल फरमा लिया और तुम पर अपनी नेमते तमाम करदी.)

अलग़र्ज़! दीने इस्लाम एक कदीम दीन है और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेएसत (भेजा जाना) इसी दीने इस्लाम की तकमील के लिए हुई.

चुनांचे पहले के अंबिया अलैहिमुस् सलाम भी इसी की पेशीनगोई करते रहे हैं. खुसूसन हज़रते ईसा बिन मरयम अलैहिमस् सलाम जो सब से पेश पेश हैं और उनकी बेएसत का अस्ली मकसूद इसी दीन व बेएसते मुहम्मदी की खुशखबरी सुनाना था और बस.

सवाल : वुसूल इलल्लाह (अल्लाह तक पहुंचने) का क्या तरीका है?

जवाब : अगरचे तफसीली लेहाज़ से "اَلطُّرُقُ اِلَى اللّٰهِ بِعَدَدِ الْاَنْفُسِ وُصُوْلُ اِلَى اللّٰهِ" के मुताबिक वुसूल इल्लल्लाह के इतने ही तरीके हैं जितने सालिकीन के नुफूस हैं क्यूँकि हर सालिक का सैरे सुलूक एक खास

तरीके पर होता है जो उसके और उसके रब के दरम्यान खास राब्ता व तअल्लुक के मुक़तज़ा (मुवाफिक) के लेहाज़ से होता है. और इसी ज़रीए से मंजिले मकसूद तक पहुँचता है मगर इजमाली और कुल्ली तौर पर वुसूल इल्लल्लाह का सिर्फ एक ही तरीका है, और वह यह है कि ज़ाहिर व बातिन और जिस्मानी व रूहानी तौर पर हर तरह से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी पूरी इक्तेदा की जाए जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿وَ مَنۡ یَّبۡتَغِ غَیۡرَ الۡاِسۡلَامِ دِیۡنًا فَلَنۡ یُّقۡبَلَ مِنۡهُ وَ هُوَ فِی الۡاٰخِرَةِ مِنَ الۡخٰسِرِیۡنَ﴾

यानी जो शख्स सिवाए इस्लाम के कोई और दीन और ज़रीया वुसूल इल्लल्लाह का ढूँढे तो यकीनन उससे वह कबूल व मंज़ूर ना किया जाएगा, और वह आखिरत में नुकसान उठाने वालों से होगा.

जबकि इस्लाम सिर्फ इसी तरीके और तर्ज़े अमल का नाम है जिस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के खुलफा अमल करते रहें और कायम थे. और दीने इस्लाम सिर्फ तकर्रुब इल्लल्लाह का ही ज़रीया है तो ऊपर की आयत का मफहूम यही हुआ कि जो शख्स हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तर्ज़े अमल की पैरवी को छोड कर कोई दूसरा ज़रीया तकर्रुब इल्लल्लाह का ढूँढे तो वह यकीनन नुकसान उठाने वाला और गुनहगार है. और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस भी इसी की ताईद करती है :

"لَنۡ یُؤۡمِنَ اَحَدُکُمۡ حَتّٰی یَکُوۡنَ هَوَاهُ تَبَعًا لِمَا جِئۡتُ بِهٖ"

यानी कोई शख्स ईमान वाला ना होगा जब तक कि उसकी ख्वाहिश मेरे लाए हुए दीन की ताबेअ (पैरवकार) ना हो.

और नीचे के शेर से भी इसी की ताईद होती है :

खिलाफे पयंबर कसे रह गज़ीद
कि हरगिज़ बमंज़िल नख्वाहद रसीद

(यानी जो कोई नबी के खिलाफ रास्ते पर चले, वह हरगिज़ मंज़िल

तक नहीं पहुंच सकता.)

सवाल : अस्माए इलाही जो 'अइम्मए सबआ' कहलाते हैं, कौन से हैं?

जवाब : सात हैं : (१) अलहय्यु (२) अलआलिमु (३) अलमुरीदु (४) अलक़ादिरु (५) अलजव्वादु (६) अलमुक़सितु (७) अलमुअती.

सवाल : कुरआन पाक में जो इर्शाद है وَ نَحۡنُ اَقۡرَبُ اِلَيۡهِ مِنۡ حَبۡلِ الۡوَرِيۡدِ وَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىۡءٍ مُّحِيۡطٌ यह कुर्ब व मआईय्यत (साथ होना) व इहाता (घेरना) हर चीज़ के साथ ज़ाती है या इल्मी?

जवाब : उलमा-ए-ज़ाहिर के पास यह कुर्ब व मआईय्यत (साथ होना) इल्मी है यानी खुदा का इल्म हर चीज़ से करीब और हर चीज़ को मुहीत (घेरी हुई) है. और सूफिया-ए-किराम के पास ज़ाती है यानी खुदा अपनी ज़ात से हर चीज़ के करीब और हर चीज़ को मुहीत (घेरे हुए) है.

जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि तमाम कायनात के मौजूद होने का यही मतलब है कि उनकी आअयाने साबेतह (اعيانِ ثابته) के आसार इस्तेअदादाते वजूद (استعداداتِ وجود) की चादर में जो सारे आलम में फैली हुई है ज़ाहिर हो रही हैं और वह वुजूद बारी तआला का है और जब इस वुजूद के अंदर सारे अशया (तमाम चीज़ों) का ज़हूर हो रहा है तो वह वुजूद किसी चीज़ से अलाहेदा नहीं बल्कि हर चीज़ पर मुहीत है.

दरूद शरीफ के फज़ाइल

(١) مَنْ صَلَّى عَلَيَّ وَاحِدَةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا

जो कोई एक मर्तबा मुझ पर दरूद भेजता है हक तआला दस मर्तबा उसपर अपनी रहमत उतारता है.

(٢) وَ قَالَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ "مَنْ صَلَّى عَلَيَّ فِيْ كِتَابٍ لَمْ تَزَلِ الْمَلَائِكَةُ تُصَلِّى عَلَيْهِ مَا دَامَ اِسْمِيْ فِيْ ذٰلِكَ الْكِتَابِ"

फरमाया नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जिसने दरूद भेजा हम पर किसी किताब में लिख कर (लिखी हुई सूरत मे) तो हमेशा फरिश्ते दरूद भेजा करते हैं उस पर जब तक लिखा रहता है मेरा नाम उस किताब में.

(٣) يَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّ وَ جَلَّ لَهُ : "صَلِّ عَلٰى عَبْدِىْ كَمَا صَلَّى عَلٰى نَبِيِّ فَهُوَ يُصَلِّىْ عَلَيْهِ اِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ"

अल्लाह तआला फरमाता है उस फरिश्ते को कि तू दरूद भेजता रह मेरे बंदे पर जिस तरह उसने दरूद भेजा है मेरे नबी पर, पस वह फरिश्ता बराबर दरूद भेजता है उस दरूद पढने वाले पर कयामत के दिन तक.

(٤) ﴿اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰـئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰـاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا﴾

बेशक अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दरूद व सलाम भेजो.

दरूदे ताज

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

درودِ تاج

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَاحِبِ التَّاجِ وَ الْمِعْرَاجِ وَ الْبُرَاقِ وَ الْعَلَمِ ، دَافِعِ الْبَلَاءِ وَ الْوَبَاءِ وَ الْقَحْطِ وَ الْمَرَضِ وَ الْاَلَمِ ، اِسْمُهُ مَكْتُوْبٌ مَّرْفُوْعٌ مَّشْفُوْعٌ مَّنْقُوْشٌ فِي اللَّوْحِ وَ الْقَلَمِ ، سَيِّدِ الْعَرَبِ وَ الْعَجَمِ جِسْمُهُ مُقَدَّسٌ مُّعَطَّرٌ مُّطَهَّرٌ مُّنَوَّرٌ فِى الْبَيْتِ وَ الْحَرَمِ ، شَمْسِ الضُّحٰى بَدْرِ الدُّجٰى صَدْرِ الْعُلٰى نُوْرِ الْهُدٰى كَهْفِ الْوَرٰى مِصْبَاحِ الظُّلَمِ ، جَمِيْلِ الشِّيَمِ شَفِيْعِ الْاُمَمِ صَاحِبِ الْجُوْدِ وَ الْكَرَمِ ، وَ اللّٰهُ عَاصِمُهُ ، وَ جِبْرِيْلُ خَادِمُهُ ، وَ الْبُرَاقُ مَرْكَبُهُ ، وَ الْمِعْرَاجُ سَفَرُهُ وَ سِدْرَةُ الْمُنْتَهٰى مَقَامُهُ ، وَ قَابَ قَوْسَيْنِ مَطْلُوْبُهُ ، وَ الْمَطْلُوْبُ مَقْصُوْدُهُ وَ الْمَقْصُوْدُ مَوْجُوْدُهُ ، سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ، خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ ، شَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ ، اَنِيْسِ الْغَرِيْبِيْنَ، رَحْمَةٍ لِّلْعَالَمِيْنَ ، رَاحَةِ الْعَاشِقِيْنَ، مُرَادِ الْمُشْتَاقِيْنَ ، شَمْسِ الْعَارِفِيْنَ ، سِرَاجِ السَّالِكِيْنَ ، مِصْبَاحِ الْمُقَرَّبِيْنَ ، مُحِبِّ الْفُقَرَاءِ وَ الْغُرَبَاءِ وَ الْمَسَاكِيْنِ ، سَيِّدِ الثَّقَلَيْنِ ، نَبِيِّ الْحَرَمَيْنِ ، اِمَامِ الْقِبْلَتَيْنِ ، وَسِيْلَتِنَا فِى الدَّارَيْنِ، صَاحِبِ قَابَ قَوْسَيْنِ ، مَحْبُوْبِ رَبِّ الْمَشْرِقَيْنِ وَ الْمَغْرِبَيْنِ ، جَدِّ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ ، مَوْلَانَا وَ مَوْلَى الثَّقَلَيْنِ ، اَبِى الْقَاسِمِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ نُوْرٍ مِّنْ نُوْرِ اللّٰهِ ، يٰاَيُّهَا الْمُشْتَاقُوْنَ بِنُوْرِ جَمَالِهٖ صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

दरूदे ताज

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन साहिबित् ताजि वल मिअराज वल बुराक़ि वल अलमी. दाफ़िइल बलाइ वल वबाई वल क़ेहति वल मरज़ि वल अलम. इस्मुहु मकतूबुन मरफ़ूउन मशफ़ूउन मनक़ूशुन फ़िल् लौहि वल क़लमि. सय्यिदिल अरबि वल अजम, जिस्मुहु मुक़द्दसुम मुअत्तरुम मुतह्हरुम मुनव्वरुन फ़िल बैति वल हरमि. शम्सिद् दुहा बदरिद् दुजा सद्रिल उला नूरिल हुदा कहफ़िल वरा मिसबाहिज़् ज़ुलम. जमीलिश् शियमि शफ़ीइल उमम, साहिबिल जूदि वल करमि. वल्लाहु आसिमुहू व जिब्रीलु खादिमुहू, वल बुराकु मरकबुहू, वल मेअराजु सफरुहू व सिदरतुल मुन्तहा मक़ामुहू, व क़ाबा कौसैनि मतलूबुहू, वल मतलूबु मक़सूदुहू, वल मक़सूदु मौजूदुहू. सय्यिदिल मुरसलीन, खातमिन् नबिय्यीन, शफ़ीइल मुज़निबीन, अनीसिल ग़रीबीन, रहमतल् लिलआलमीन, राहतिल आशिक़ीन, मुरादिल मुश्ताक़ीन, शम्सिल आरिफ़ीन, सिराजिस् सालिकीन, मिस्बाहिल मुक़र्रबीन. मुहिब्बिल फ़ुक़राइ वल ग़ुरबाइ वल मसाकीन, सय्यिदिस् सक़लैनि, नबिय्यिल हरमैनि, इमामिल क़िब्लतैन, वसीलतिना फ़िद् दारैन, साहिबि क़ाबा क़ौसैन, महबूबि रब्बिल मश्रिक़ैनि वल मग़रिबैनि, जद्दिल हसनि वल हुसैनि मौलाना व मौलास् सक़लैनि, अबिल क़ासिम मुहम्मदि निब्नि अब्दिल्लाहि नूरुम् मिन् नूरिल्लाहि, याअय्युहल् मुश्ताक़ूना बिनूरि जमालिही, सल्लू अलैहि व आलिही व असहाबिही व सल्लिमू तसलीमा.

सलामे इश्क़ी रहमतुल्लाहि अलैह

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدْ   صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمْ

يَا شَفِيْعَ الْوَرٰى سَلَامٌ عَلَيْکَ   يَا نَبِیَّ الْهُدٰى سَلَامٌ عَلَيْکَ

خَاتَمَ الْاَنْبِيَاءِ سَلَامٌ عَلَيْکَ   سَيِّدَ الْاَصْفِيَاءِ سَلَامٌ عَلَيْکَ

اَحْمَدٌ لَّيْسَ مِثْلُکَ اَحَدٌ   مَرْحَبًا مَرْحَبًا سَلَامٌ عَلَيْکَ

وَاجِبٌ حُبُّکَ عَلَى الْمَخْلُوْقِ   يَا حَبِيْبَ الْعُلٰى سَلَامٌ عَلَيْکَ

اَعْظَمُ الْخَلْقِ اَشْرَفُ الشُّرَفَاءِ   اَفْضَلُ الْاَنْبِيَاءِ سَلَامٌ عَلَيْکَ

كُشِفَتْ مِنْکَ ظُلْمَةُ الظُّلَمَاءِ   اَنْتَ بَدْرُ الدُّجٰى سَلَامٌ عَلَيْکَ

طَلَعَتْ مِنْکَ كَوْكَبُ الْعِرْفَانِ   اَنْتَ شَمْسُ الضُّحٰى سَلَامٌ عَلَيْکَ

مَهْبَطَ الْوَحْيِ مَنْزِلَ الْقُرْآنِ   صَاحِبَ الْاِهْتِدَاءِ سَلَامٌ عَلَيْکَ

اِنَّکَ مَقْصَدِیْ وَ مَلْجَائِیْ   اِنَّکَ مُدَّعَا سَلَامٌ عَلَيْکَ

مَطْلَبِیْ يَا حَبِيْبِیْ لَيْسَ سِوَاکَ   اَنْتَ مَطْلُوْبُنَا سَلَامٌ عَلَيْکَ

سَيِّدِیْ يَا حَبِيْبِیْ يَا مَوْلَائِیْ   لَکَ رُوْحِیْ فِدَاءٌ سَلَامٌ عَلَيْکَ

صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَى الْمُصْطَفٰى   اَفْضَلُ الْاَنْبِيَاءِ سَلَامٌ عَلَيْکَ

هٰذَا قَوْلُ غُلَامِکَ الْعِشْقِیّ

مِنْهُ يَا مُصْطَفٰى سَلَامٌ عَلَيْکَ

सलामे इश्क़ी रहमतुल्लाहि अलैह

सल्लल्लाहु अला मुहम्मद
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

या शफीअल वरा सलामुन अलैक
या नबिय्यल हुदा सलामुन अलैक

खातमल अंबिया सलामुन अलैक
सय्यदुल असफिया सलामुन अलैक

अहमदुल् लैसा मिसलुका अहदुन
मरहबा मरहबा सलामुन अलैक

वाजिबुन हुब्बुका अलल मखलूक़
या हबीबल उला सलामुन अलैक

आज़मुल खलक़ि अशरफुश् शुरफा
अफज़लुल अंबिया सलामुन अलैक

कुशिफत मिनक ज़ुलमतुज़् ज़ुलमा
अन्ता बद्रुद् दुजा सलामुन अलैक

तलअत मिनका कौकबुल इरफान
अन्ता शम्सुद् दुहा सलामुन अलैक

महबतुल वहयी मंज़िलल् कुरआन
साहिबुल इहतिदा सलामुन अलैक

इन्नका मक़सदी व मलजाई
इन्नका मुद्दआ सलामुन अलैक

मतलबी या हबीबी लैसा सिवाक
अन्ता मुतलूबुना सलामुन अलैक

सय्यिदी या हबीबी मौलाई
लका रूही फिदा सलामुन अलैक

सलवातुल्लाहि अलल मुस्तफा
अफज़लुल् अंबिया सलामुन अलैक

हाज़ा क़ौलु ग़ुलामिकल् इश्क़ी
मिन्हु या मुस्तफा सलामुन अलैक

सलाम बारह

झुका दे सर को अदब से हर दम करो मुहिब्बो सलाम बारह
कि जैसे कलमे के जुज़ हैं बारह सो वैसे बरहक इमाम बारह

है निस्फ अव्वल जो पहले कलमे का निस्फ आखिर भी उसका बारह
यह बारह बारह हैं हर्फ लफज़ी सो मायना खुश कलाम बारह

अली, हसन और हुसैन, आबिद, बाकिर व जाफर व काज़िम
रज़ा, तक़ी और नक़ी व अस्कर, इमाम महदी तमाम बारह

हैं दौर आलम के साल बारह सो हैं बरस के महीने बारह
हर एक दिन के हैं बारह साअत तो बुर्ज बारह मकाम बारह

मुहब्बत उनकी है सब पे वाजिब अदद भी वाजिब के गिन लो बारह
यह तर्के वाजिब ना किजियो हर दम लिया करो तुम यह नाम बारह

हदीस इसना अशरी से ज़ाहिर कि हैं कवाकिब पे नूरे ईमाँ
बहुक्मे खालिक़ नबी के घर में यही मदारुल महाम बारह

गिनो मुहम्मद के और अली के हिसाब करको जो फातिमा के
यो तीनों नामों के बस हैं साहब हुरूफ बाइंतेज़ाम बारह

नबी, अली के करो मुज़ाअफ तो नक्शा बारह का होवे पूरा
कहे है हक उनको बहरे उम्मत शफी रोज़े कियाम बारह

खुदा है उनमें खुदा में यह हैं करो जो वाहिद में ज़र्ब बारह
जो इस ज़र्ब से अदद हो हासिल सो वो ज़विल एहतेराम बारह

इमाम बारह इमाम में का हुसैन सज्दह में सर कटाया
यह पढते हैं रकअतें ज़ोहर की शूमार कर खास आम बारह

तुझे तो बारह बरस के सन से हुसैन रहती है मद्ह गोई
वो बारह बारह करेंगे तेरे हर एक मकसद के काम बारह

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

क़सीदए गौसे पाक

हज़रत शेखुल मुतक़द्दिमीन वल मुतअख्खिरीन गौसुस् सक़लैन कुत्बुल कौनैन आले हसनैन रदियल्लाहु अन्हुमा नजीबुत् तरफैन सय्यदुल औलिया मेहबूबे सुबहानी अबू मुहम्मद मीराँ मुहियुद्दीन शेख **अब्दुल क़ादिर जीलानी** रदियल्लाहु तआला अन्हु

हज़ार बार बशोयम दहन ज़े मुश्को गुलाब
हिनोज़ नामे तू गुफतन कमाले बेअदबीस्त

मारिफत में क़सीदए गौसिया को एक खास अहमिय्यत हासिल है. हज़रत मौलाना शाह अब्दुल बाकी साहब फिरंगी महल्ली ने 'तज़किरतुल किराम' में लिखा है कि क़सीदए गौसिया आलमे वज्द व कैफ की एक सदा है जिस से दिल राहत मेहसूस करते हैं. इस क़सीदे में सरकार गौसुल आज़म रदियल्लाहु अन्हू ने अपने अरफा व आला रूहानी मकामात का ज़िक्र फरमाया है और यह ज़िक्र बतौर तेहदीस नेमत के (नेमत के इकरार के तौर पर) है. 'फुतूहुल ग़ैब' के हाशिया पर लिखा है कि जब हज़रत गौसुस् सक़लैन रदियल्लाहु अन्हू इस क़सीदे के चंद अशआर पढते तो आखिर में इर्शाद फरमाते : ''वला फख्रा व हाज़ा मिन फज़्लि रब्बी''. (यह फख्र के सबब बयान नहीं कर रहा हूँ, और यह तो मेरे रब का फज़्ल है.)

मौलाना सय्यद बहाउद्दीन साहब जीलानी मदनी ने (किताब) 'गुनयतुत् तालिबीन' के हाशिये पर लिखा है कि जो तरीकत के सालिकीन मामूल के तौर पर इस क़सीदे को सोच समझ कर पढते हैं उनके रूहानी मरातिब में हैरतनाक तरक्क़ी होती है, खोफ व हिरास (डर) के मौकों पर इस कसीदे को पढने से सुकूने दिल की नेमत हासिल होती है और खोफ व हिरास के बादल बहुत दूर हो जाते हैं.

तज़किरतुल जमील मज़हरे फुयूज़े रहमानी कुत्बे रब्बानी गौसे समदानी हज़रत गौसुल आज़म सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रदियल्लाहु अन्हू.

ज़मीन तपती है तो बारिश होती है. रात की स्याही गहरी होती है तो सुबह का नूर उगता है. खुदा के नेक बंदे खुदा की राह से गुमराह हो जाते हैं और गुमराही और सरकशी हद से बढ जाती है तो खुदाए ग़फ़ूर व रहीम की रहमत को जोश आता है और किसी अज़ीम रहबर का ज़हूर होता है. अंबिया अलैहिमुस् सलाम इसी लिए वक्तन फवक्तन पर भेजे जाते रहे और खुदा का फज़्ल व करम बंदों को गुमराह होने से बचाता रहा. हुज़ूर नबी-ए-अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिलसिलए अंबिया की आखरी कडी हैं, खातिमुन् नबिय्यीन हैं, इसी लिए अब दुनिया की हिदायत और रहनुमाई का सर व सामान भी इसी अफज़ल व अशरफ अंबिया की उम्मत के सुपुर्द हुआ जो दुनिया की सब से आखरी और मुक़द्दस व मुंतखब उम्मत है. हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"عُلَمَاءُ اُمَّتِیْ کَاَنْبِیَاءِ بَنِیْ اِسْرَائِیْلَ"

(यानी मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राईल के अंबिया की तरह हैं.) अब तक तबलीग व हिदायत का जो फरिज़ा अंबिया अलैहिमुस् सलाम अंजाम देते थे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद दुनिया की रहनुमाई और रहबरी का फरीज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के मुंतखब और बुज़ुर्ग अफराद उलमा के सुपुर्द है. और इसी के सुबूत में आज हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक बरगज़ीदह (बुज़ुर्ग) आलिमे मुक़द्दस कुत्बे रब्बानी मेहबूबे सुबहानी गौसुल आज़म मौलाना सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रदियल्लाह अन्हु का क़सीदए-गौसिया पेश करते हैं.

क़सीदए गौसिया

(۱) سَقَانِی الْحُبُّ کَاسَاتِ الْوِصَالِ　　فَقُلْتُ لِخَمْرَتِی نَحْوِی تَعَالِ

मुझे खुदा की मुहब्बत ने विसाल के सागर पिलाए हैं और सैराब किया है लेकिन मैं अपने पिलाने वाले खुदा से यही कहता रहा कि मुझ पर और नज़रे करम और मुझे और पिला और सैराब कर.

(۲) سَعَتْ وَ مَشَتْ لِنَحْوِی فِی کُؤُوسٍ　　فَهِمْتُ بِسُکْرَتِی بَیْنَ الْمَوَالِ

तो उसकी वसीअ रेहमत ने मुझे खूब सागरे मारिफत पिलाए और मेरे सामने सागर पर सागर आते रहे जिस का नतीजा यह हुआ कि इश्के इलाही के सुक्र व सुरूर में दुनिया भर के लोगों से मैं बलंद व मोहतरम हो गया.

(۳) وَ قُلْتُ لِسَائِرِ الْاَقْطَابِ لُمُّوْا　　بِحَالِی وَ ادْخُلُوْا اَنْتُمْ رِجَالِی

और दुनिया के तमाम अक़ताब व अबदाल व औलिया से मैंने कहा मेरी अज़मत के आगे सर झुकाओ, मेरे सिलसिले में दाखिल हो ताकि तुम मेरे शागिर्द मुरीद हो.

(۴) وَ هُمُّوْا وَ اشْرَبُوْا اَنْتُمْ جُنُوْدِی　　فَسَاقِی الْقَوْمِ بِالْوَافِی مَلَالِی

और इरादा करो और बलंद मोहतरम बनो और खूब पियो कि तुम मेरे लशकर हो इस लिए कि कौम का साकी खूब भर भर पिलाने वाला है और मस्त व बेखुद बनाने वाला है.

(۵) شَرِبْتُمْ فُضْلَتِی مِنْ بَعْدِ سُکْرِی　　وَ لَا نِلْتُمْ عُلُوِّی وَ اتِّصَالِی

जब मैं मस्त हो गया तो तुम ने मेरा झूठा पिया लेकिन तुम मेरे बलंद मकाम और कुर्बे इलाही की आला मंज़िल को नहीं पा सके.

(۶) مَقَامُکُمُ الْعُلٰی جَمْعًا وَ لٰکِنْ　　مَقَامِی فَوْقَکُمْ مَا زَالَ عَالِی

अगरचे तुम सब का मकाम भी बलंद है लेकिन कुर्बे इलाही का मेरा मकाम तुम से बहुत बलंद है और हमेशा सब पर बलंद रहेगा.

(۷) اَنَا فِی حَضْرَةِ التَّقْرِیْبِ وَحْدِی　　یُصَرِّفُنِی وَ حَسْبِی ذُو الْجَلَالِ

सिर्फ मुझे ही खास कुर्बे हुज़ूरी हासिल हुआ जिस में कोई दूसरा मेरा

शरीक नहीं है, वह मेरा मालिक है और मुझ पर पूरी कुदरत रखता है और वह खुदाए ज़ुलजलाल मेरे लिए काफी है.

(٨) اَنَــا الْبَــازِیُّ اَشْهَــبُ کُلِّ شَیْخٍ وَمَنْ ذَا فِی الرِّجَالِ اُعْطِیَ مِثَالِیْ

मैं आस्माने मारिफत का बाज़ हूँ और हर शेख पर मुझे कुदरत हासिल है और ना दुनिया में किसी वली को मेरी जैसी बुज़ुर्गी व बलंदी अता हुई है.

(٩) کَسَــانِــیْ خَلْعَةً بِطِـرَازِ عَـزْمٍ وَ تَـوَّجَـنِـیْ بِتِیْـجَـانِ الْکَمَـالِ

खुदाए तआला ने मुझे उलुल् अज़्मी और बलंद हिम्मती का खलअत (लिबास) इनायत किया है और कमालात के बहुत से ताज मुझे पहनाए हैं.

(١٠) وَ اَطْـلَـعَـنِــیْ عَـلٰی سِـرٍّ قَدِیْمٍ وَ قَـلَّـدَنِـیْ وَ اَعْـطَــانِیْ سُؤَالِیْ

खुदाए वाहिद ने मुझे अपने कदीम राज़ का वाकिफ व महरम बनाया है और मेरे गले में इज़्ज़त का हार पहनाया और जो कुछ मैंने उस से तलब किया वह उसने अपने फज़्ल व करम से मुझे अता किया.

(١١) وَ وَلَّانِـیْ عَـلَی الْاَقْطَابِ جَمْعًا فَـحُـکْـمِـیْ نَـافِذٌ فِیْ کُلِّ حَالٍ

और दुनिया के तमाम अक्ताब व औलिया का मुझे हाकिम और वाली बनाया है, पस मेरा हुक्म हर हाल में हर शख्स पर अमल के लिए वाजिब है और इताअत करना वाजिब है.

(١٢) فَلَـوْ اَلْـقَیْـتُ سِـرِّیْ فِیْ بِحَـارٍ لَـصَـارَ الْـکُلُّ غَوْرًا فِی الزَّوَالِ

और अगर में अपने इश्क का कोई राज़ समंद्रों में डाल दूँ तो तमाम समंद्र भी उसे बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे, उनका पानी ज़मीन में धंस जाएगा और सारे समंद्र खुश्क हो जाऐंगे.

(١٣) وَ لَـوْ اَلْـقَیْـتُ سِـرِّیْ فِیْ جِبَـالٍ لَـدُکَّـتْ وَ اخْتَفَتْ بَیْنَ الرِّمَالِ

और अगर मैं अपना कोई हाल पहाडों पर ज़ाहिर कर दूँ तो वह रेज़ा रेज़ा हो जाऐं और रेत बन कर उड जाऐं.

(١٤) وَ لَـوْ اَلْـقَیْــتُ سِـرِّیْ فَوْقَ نَـارٍ لَـخَمِدَتْ وَ انْطَفَتْ فِیْ سِرِّ حَالِیْ

और अगर में अपना राज़ आग पर ज़ाहिर कर दूँ तो वह मेरे हाल की अज़्मत से बुझ जाए और अपनी रौशनी और गरमी से महरूम हो जाए.

(١٥) وَ لَـوْ اَلْـقَيْـتُ سِرِّیْ فَوْقَ مَيِّتٍ   لَـقَـامَ بِـقُـدْرَةِ الْمَوْلٰی تَعَالِ

और अगर में अपनी मुहब्बते इलाही की तवज्जह किसी मुर्दे पर डाल दूँ तो खुदाए तआला की कुदरत से वह फौरन ज़िंदा हो जाए.

(١٦) وَ مَــا مِـنْهَــا شُهُـوْرٌ اَوْ دُهُـوْرٌ   تَـمُــرُّ وَ تَـنْـقَضِـیْ اِلَّا اَتٰـی لِـیْ

जो ज़माने दुनिया में गुज़रते हैं और जो हालात दुनिया वालों पर आते जाते रहते हैं उनमें से कोई ज़माना और कोई हालत ऐसी नहीं है कि जो मेरे पास ना हाज़िर होती हो यानी माहौल और ज़माने का खुदा ने मुझे हाकिम बनाया है.

(١٧) وَ تُـخْبِـرُنِـیْ بِمَا يَأْتِیْ وَ يَجْرِیْ   وَ تُـعْلِـمُنِیْ فَأَقْصِرُ عَنْ جِدَالِیْ

और वह माहौल और वह ज़माना मेरे यहाँ हाज़िर होकर मुझे दुनिया में उस वक्त होने वाले और आइंदा जो कुछ होगा उसकी खबर देते हैं पस जो शख्स मुझे नहीं जानता वह क्यूँ मुझ से बहस करता है.

(١٨) مُـرِيْدِیْ هِمْ وَطِبْ وَ اشْطَحْ وَ غَنِّیْ   وَ افْـعَـلْ مَـا تَشَـأْ فَالْاِسْمُ عَالِیْ

मेरे मुरीदो ! हिम्मत व इरादे से काम लो और खुश रहो, गनी हो जाओ, किसी से मत डरो, जो चाहो करो, इस लिए इसी लिए तुम्हारी बैअत की निसबत मेरे नाम से है जो अज़ीम व बुज़ुर्ग है.

(١٩) مُــرِيْـدِیْ لَا تَـخَفْ اَللّٰـهُ رَبِّـیْ   عَـطَـانِـیْ رِفْعَةً نِـلْـتُ الْمَنَـالِ

मेरे मुरीदो ! किसी से कोई खौफ मत करो कि अल्लाह मेरा परवरदिगार है और उसने अपनी महरबानी व इनायत से मुझे ऐसा बलंद मकाम अता फरमाया है कि मैं इस से हर आरज़ू और दौलत को हासिल कर लेता हूँ कायनाते दो जहाँ की हर नेमत मेरे कब्ज़े में है.

(٢٠) طُبُوْلِیْ فِی السَّمَاءِ وَ الْاَرْضِ دُقَّتْ   وَشَاؤُسُ السَّـعَـادَةِ قَـدْ بَدَا لِیْ

ज़मीन व आस्मान में मेरी शान व अज़मत के नक्कारे बजते हैं और सआदत व इज़्ज़त के नकीब मेरे आगे आगे चलते हैं.

(٢١) بِلَادُ اللّٰهِ مُلْكِیْ تَحْتَ حُكْمِیْ   وَ وَقْتِـیْ قَبْـلَ قَبْـلِیْ قَدْ صَفَا لِیْ

खुदा के तमाम शहर और ज़मीन मेरा मुल्क है, मेरे ज़ेरे फरमान है और

दुनिया पर मेरी यह हुकूमत मेरे क़ल्ब के आइना होने से पहले है, यानी वहबी वली हूँ, पैदाइशी हाकिमे वक्त हूँ.

(۲۲) نَظَرْتُ اِلٰی بِلَادِ اللّٰهِ جَمْعًا كَخَرْدَلَةٍ عَلٰی حُكْمِ اتِّصَالٖ

इस वक्त ही मैं तमाम रूए ज़मीन पर नज़र डाली तो मुझे यह राई के दाने के बराबर हकीर व सगीर (छोटी) नज़र आई.

(۲۳) دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا وَنِلْتُ السَّعْدَ مِنْ مَوْلَی الْمَوَالِیْ

फिर मैंने ज़ाहिरी व बातिनी उलूम व कमालात हासिल किए यहाँ तक कि मैं कुत्ब हो गया और मुझे यह सआदत व अज़मत खुदाए हाकिमों के हाकिम के दरबार से हासिल हुई है.

(۲۴) رِجَالِیْ فِیْ هَوَاجِرِهِمْ صِیَامٌ وَ فِیْ ظُلَمِ اللَّیَالِیْ كَاللَّآلِیْ

मेरे मुरीद और शागिर्द सख्त गर्मीयों में भी रोज़े रखते हैं और रातों की तारीकीयों में मोतीयों की तरह चमकते हैं, यानी दिन को रोज़ा रखते हैं और रातों को नमाज़ें पढते हैं.

(۲۵) وَ كُلُّ وَلِيٍّ لَهٗ قَدَمٌ وَ اِنِّیْ عَلٰی قَدَمِ النَّبِیِّ بَدْرِ الْكَمَالٖ

हर वली का एक तरीका होता है लेकिन मेरा तरीका सिर्फ नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी है जो कमालात के माहताब हैं.

(۲۶) فَمَنْ فِیْ اَوْلِیَاءِ اللّٰهِ مِثْلِیْ وَ مَنْ فِی الْعِلْمِ وَ التَّصْرِیْفِ حَالِیْ

फिर औलिया अल्लाह में मेरा मिस्ल कौन है और कौन हो सकता है जो मेरे इल्म और तसर्रुफ का मुकाबला कर सके.

(۲۷) نَبِیٌّ هَاشِمِیٌّ مَكِّیٌّ حِجَازِیٌّ هُوَ جَدِّیْ بِهٖ نِلْتُ الْمَنَالٖ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ीम शान वाले नबी हैं हाशमी हैं आला नसब मक्की हैं, मोहतरम शहर के रहने वाले हैं, हिजाज़ी हैं, मदीने की शादाब सरज़मीन के मालिक हैं, मेरे जद्दे आला व अमजद हैं और आप ही के इत्तबा व इक्तेदा और पैरवी में मैंने इज़्ज़त व हुकूमत यह दौलतें व नेमतें हासिल की हैं.

(۲۸) مُـرِيْـدِیْ لَا تَخَفْ وَاشٍ فَاِنِّـی عَـزُوْمٌ قَـاتِـلٌ عِـنْدَ الْقِتَـالِ

मेरे मुरीद ! किसी भी खतरनाक दुश्मन का खौफ ना कर कि मैं बहुत साहिबे हिम्मत हूँ, बेहद बहादुर हूँ और दुश्मन से तेरे मुकाबले के वक्त मैं उसको कत्ल कर दूँगा.

(۲۹) اَنَـا الْـجِيْلِیُّ مُحْيِ الدِّيْنِ اِسْمِیْ وَ اَعْلَامِـیْ عَـلٰـی رَأْسِ الْجِبَالِ

जीलान मेरा वतन है और लकब 'मुहियुद्दीन' है. और दीन की इसी खिदमत की वजह मेरा लकब मुहियुद्दीन हुआ है, इसी लिए मेरी अज़मत और हुकूमत के झंडे पहाडों की इंतेहाई बलंद चोटीयों पर लहरा रहे हैं.

(۳۰) اَنَـا الْحَسَنِیُّ وَ الْمَخْدَعُ مَقَامِیْ وَ اَقْـدَامِـیْ عَـلٰـی عُنُقِ الرِّجَالِ

मैं सय्यद हूँ, इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हू का बेटा हूँ, मेरी जगह मखदअ है और इसी अज़मत व बलंदी की वजह से मेरे पाऊँ तमाम औलिया और बुज़ुर्गाने दीन की गर्दन पर हैं.

(۳۱) وَ عَبْـدُ الْقَادِرِ الْمَشْهُوْرُ اِسْمِیْ وَ جَدِّیْ صَاحِبُ الْعَيْنِ الْكَمَالِ

और अब्दुल क़ादिर (रदियल्लाहु अन्हु) मेरा मशहूर नाम है और मेरे जद्दे मोहतरम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कमालात के चश्मों के मालिक हैं.

मनक़बते खास

मावा व मलजा हुज़ूर किब्ला व काबा ख्वाजा-ए-ख्वाजगान हज़रत सय्यद मुहम्मद गेसू दराज़ बंदानवाज़ सदरुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैह, मुक़द्दस शहर गुलबर्गा शरीफ, दकन

शेरे दुर्रे बेबहा

नीस्त काबा दर दकन जुज़ दरगहे गेसू दराज़
बादशाहे दीन व दुनिया ता अबद बंदा नवाज़

हक तआला ने कहा कुरआन में है 'वअलमू'
पूछ अहले ज़िक्र से नहीं जानता कर ज़िक्र तू
मैं तुमारे हूँ दमों में हक कहा कर जुस्तजू
हम को अपने पीर से यह राज़ पहुंचा हूबहू

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

यह जो सूरत है सो है ला इलाह के तमाम
मर्द की सूरत जो है सो हेगा इल्लल्लाह मकाम
शुग्ल से कलमे के ज़न को हमल का है इंतेकाम
इस में से सूरत रसूलुल्लाह आते हैं कियाम

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

बाज़ कहते कत्ल करना नफस को ऐ दोस्तो
नफस किस रू से हुआ दुश्मन है तुम अपना कहो
बे समझ जो हैं तुम उनकी बात हरगिज़ ना सुनो
नफ्स समझो 'मन अरफा' और 'नफ्सुहू' को अब पढो

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

है गुलिस्ताँ में लिखा शेख सादी का सुखन
नफ्स को समझो तो साहब नफ्स से कायम है तन
नफ्स की हर आमद व शुद में सदा रहता है मन
आशिको को नफ्स में दो ईद होते जाने मन

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

नफ्स कहते दम कि तईं नफ्स के मायना है ज़ात
नफ्स के ताबेअ हुए हैं देख यह सबअ सिफात
हज़रत मौला अली फरमा दिए हैं यह निकात
हज़रत ख्वाजा हसन बसरी से पहुंची यह सिबात

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

नफ्स से बुनियादे आदम नफ्स से जारी नस्ल
इश्क के जोश से होता नफ्स में नफ्स वस्ल
नव्वद व नौ फरअ हैं इनका फरअ का यह नफ्स अस्ल
नफ्स आदम नफ्से हव्वा नफ्स हव्वा से हाबील नक्ल

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

नफ्स जिस को नई लगा सो कौनसा इंसान है
नफ्स जिस को नई लगा सो कौनसा हैवान है
है समझ मे फरक उसके जो हुआ नादान है
नफ्स कहते सो मुहिब्बो तन में अपने जान है

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

नफ्स है एक एक अपना जान है इक एक नबी
गैर ज़िक्रे हक के होवे कत्ल है इक एक सही
नई क्या अनफास का कुछ पास तो ऐ 'तबतग़ी'
यानी सत्तर मर्तबा काबे को तोडा ऐ अखी

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

नफ्स का जो लफ्ज़ है गिन लिजिए उस के हर्फ तीन
एक नबी एक फातिमा एक सिर्रे सरमद बिलयकीन
नफ्स के है तर खोटी में ज़ात का मोती मअन
नफ्स को पचान कर चलते और फिरते अहले दीन

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

'मन अरफा' दावात है और नफ्स होवेगा कलम
'क़द अरफा' के लौह ऊपर 'रब्बहु' रहेगा रकम
नफ्स से जारी हुए औलादे आदम है बहम
नफ्स जिसको बोलते सो हज़रते आदम का दम

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

ऐ दिले 'बेदाद' तेरा शेर का है ढब अजब
जिस के हर मिसरे में हासिल मारिफत है मुंतखब
इस तरह से कह गए हैं मा सल्फ के लोग सब
नफ्स को बद मत कहो नफ्स में मौजूद रब

'मन अरफा' की राह से पहचानते हैं 'रब्बहू'
आते जाते नफ्स पर रखते हैं हम अल्लाह को

दीगर मनक़बत

हुज़ूर खलीफए अकबर हज़रत कबूलुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैह की शान में हज़रत बंदा नवाज़ गेसू दराज़ हुसैनी रहमतुल्लाहि अलैह ने तहरीर फरमाया है, तालिबाने हक हक शनास हों (हक के तलबगार हक को पहचानें)

रब आप बातें करता है समझो जो सुनते हो
समझे नहीं तो काहे को तुम पढते गुनते हो
पाए नहीं हो मग़्ज़ को चुप नुक्ते चुनते हो
ख्वाजा की सुन यह बैत क्यूँ ना सर को धुनते हो

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

इर्शाद पेशवा से यह बंदे ऊपर हुआ
अनफास का तू पास किया कर बदल सदा
मशहूर है नक्ल यह बुज़ुर्गों से मैं सुना
टूटा अगरचे तार तो जब राग से सरा

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

बेकार ना रहो अल्लाह कहा सो काम
पर्दे में ऐ दोस्तो हरगिज़ करो ना शाम
अवकात अपने सर्फ करो याद में मदाम
बंदा नवाज़ ख्वाजा ने बोला है यह कलाम

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

इस तार के पुश्त में सब इंस व जान्न हैं
इस तार के पुश्त में सब कौन व मकान हैं
इस तार के पुश्त में दोनों जहान हैं
इस तार को जो समझे सो करते बयान हैं

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

काहे को तुम बजाते हो जो नई सो तार को
बूझे नहीं हो अब तुम्हें इस दम के तार को
इस तार को जो समझे सो पाता है यार को
अता नहीं करार दिले बेकरार को

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

इस तार में जो बल खावे वही हक का यार है
इस तार को जो तोडा हुआ तार तार है
चौबीस हज़ार रोज़ कि इस का शुमार है
इस तार में रहना सदा आशिक का कार है

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

अंदर है दम का तार तो ऊपर है रूई का तार
इस तार से है शाह व गदा को सदा करार
वह तार टूट गया तो रखें कब्र में संवार
ऐ दोस्तो इस तार पे होते रहो निसार

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

मीसाक़ से अबद में दम का बंधा है तार
इस तार की पुश्त में आदम की है कतार
वह तार गंजे मखफी है टुटने से पाया यार
इस वास्ते कहते हैं रहो तार पर करार

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

है तार दम का हाथ में हज़रत रसूल के
हसनैन के अली के और हुज़ूर हज़रत बतूल के
लागा नहीं वह हाथ कभी बू जहल के
सुफ्यान ना मुआविया ना यज़ीदे मलूल के

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

है तारे दम जो काता तो आदम उसे कहें
जब तार टूट गया तो बे दम उसे कहें
आलिम के दम में आया तो आलिम उसे कहें
जो तार दम को जाना है आज़म उसे कहें

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

आदम के देखो बाग में दम का बहार है
तहतस् सरा से अर्श तईं एक तार है
इस तार के जो साथ रहा उसका यार है
दरगाहे किब्रिया से बडा उस पे प्यार है

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

जो तार दम ना तोडा सो ज़िंदा उसे कहें
जो तार दम को तोडा सो मुर्दा उसे कहें
महरम हुआ जो तार से बंदा उसे कहें
ना जान कर जो बोला सो ज़िंदा उसे कहें

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

जो पंजतन के दोस्त हैं उनको मिला वह तार
वो तार दोस्ती का ले डाली गले का हार
लट पट जो है वह तार से बेडा है उसका पार
ऐ दोस्तो वह तार को तोडो ना ज़िन्हार

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

गंजे खफी बिनोला है रूई उसकी नूर नार
हर आन खिचे उसकी हिफाज़त में होशयार
तहकीक जिस ने करता है तहकीक उस का तार
मसरूफे हक जो रहता रब का है उन पे प्यार

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

है ला इलाहा ताना इल्लल्लाह बाना है
हर तार से मिलाना रसूलुल्लाह दाना है
इस तार से जो आगे हुआ सो यगाना है
कहना उसे सियाना या कहना दीवाना है

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

जो तन्ना बुन्ना सीखा है इस तार को लिया
बुनता हुआ हमेशा इसी तार में रहा
मुँह से शकर कहें तो ज़बान को मज़ा नहीं
जिस ने चखा ज़बान पर लज़्ज़त वही लिया

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

तहकीक करना कलमा सो वह रहेगा इस्मे ज़ात
'बेदार' तुम यूँ रहना सो है दाइमुस् सलवात
परहेज़ गैर रोज़ा है और हज और ज़कात
तुम याद रखो कहना कबूलुल्लाह सच है बात

यह रूई इस बिनोले की है जो तुम ने धुनते हो
इस तार को ना तोडो जिसे तनते बुनते हो

मनक़बत झूला नामा

पीरे रौशन ज़मीर हज़रत ख्वाजा शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह

झूलो मुहम्मद झूलो

अऊज़ु बिल्लाह से वेहदत में आई — शैतान मलऊन से कसरत में आई
बिस्मिल्लाह पढ कर लोरी में गाई — पढ कर अर्रहमानिर् रहीम झूला झूलाई
झूलो मुहम्मद झूलो

ला इलाहा इल्लल्लाह ज़ाहिर में आई — मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह कलमा पढाई
नासूत बेगम बाहर से आई — बाद अज़ मलकूत बेगम अंदर से आई
झूलो मुहम्मद झूलो

जबरूत बेगम पर्दे में आई — लाहूत बेगम पर्दा उठाई
हाहूत बेगम नूरी खिलाई — देखो सयाहूत बेगम सदर में आई
झूलो मुहम्मद झूलो

सातों सहेलीयाँ महलों में आई — बसीरा खातून नज़रों में आई
समा खातून सुनने को आई — मूसा कलीम खातून कलमा पढाई
झूलो मुहम्मद झूलो

अलीम खातून इल्म सिखाई — मुरीद खातून इरादा कराई
क़दीर खातून कुदरत दिखाई — आगे हय्युन खातून हयाती में आई
झूलो मुहम्मद झूलो

'दीवाना' करीमुल्लाह नाम रखाई — मुर्शिद के कदमों पे सर को झुकाई
ताने को सब ने मुबारक सुनाई — ताने के मां बाप को भी मुबारक दिलाई
झूलो मुहम्मद झूलो

आरिफों को ही हुआ करता है इरफाने क़दीर

याद इकरारे अज़ल है अहद व पैमाने क़दीर
आती जाती सांस में जारी है फैज़ाने क़दीर

दिल के ज़ख्मों को बनाकर हम गुलिस्ताने क़दीर
किस मज़े से जी रहे हैं ज़ेरे दामाने क़दीर

अरफअ् व आला है कितनी ज़ाते ज़ीशाने क़दीर
जिस की जितनी फीक्र है उतना है इरफाने क़दीर

जब भी सजती है कहीं बज़्मे मुहिब्बाने क़दीर
खुद बखुद आते हैं खिंच कर जाँनिसाराने क़दीर

ज़िंदगी की उलझनों में लाख गफलत हो तो क्या
रूह से रहता है कायम रब्त पिन्हाने क़दीर

होने वाला कुछ नहीं है गरदिशे हालात से
सर पे है साया फिगन जब तक के दामाने क़दीर

है क़दीरी आस्ताना मरकज़े खल्के खुदा
फैज़ बख्शे हर ज़माना मज़हरे शाने क़दीर

सिर्फ अहले सिलसिला पर ही नहीं मुनहसिर
हर अकीदत मंद है ममनूने एहसाने क़दीर

मारिफत का रास्ता हर एक के बस का नहीं
आरिफों को ही हुआ करता है इरफाने क़दीर

कलमे की तफसीर तो हर दौर में होती रही
कलमे की तहकीक है कारे नुमायाने क़दीर

एक ही जलवे के दोनों आईना खाने हैं 'शौक'
चाहे उसको दिल समझ लो चाहे ऐवाने क़दीर

(तरही मुशायरा, हलकट्टा, वाडी)

दूरी में भी नसीब है कुर्बत क़दीर की

किस तरह कोई समझेगा अज़मत क़दीर की
जैसा खयाल वैसी माओीय्यत क़दीर की

दिल में है किस मज़े से सुकूनत क़दीर की
है ज़िंदगी के साथ मुहब्बत क़दीर की

लाई है किस मकाम पे निसबत क़दीर की
दूरी में भी नसीब है कुर्बत क़दीर की

दिल पर रखा है हाथ खयाले क़दीर ने
जब भी पडी है हम को ज़रूरत क़दीर की

सांसों को ला इलाहा का तराना बनाइए
हर हाल में यही थी हिदायत क़दीर की

हम सायगी-ए-दर्द से निकला ना दिल कभी
छूटी ना एक पल को रिफाक़त क़दीर की

झुकते हैं सर के साथ ज़माने के क़ल्ब भी
है कितनी ला ज़वाल हुकूमत क़दीर की

जिस दिन से हम को आया है कुछ होशे ज़िंदगी
समझे हैं ज़िंदगी को अमानत क़दीर की

कदमों में है फकीर के दुनया तो क्या अजब
इरफाने हक का नाम है दौलत क़दीर की

मकहा हुआ है दिल में अकीदत का गुलिस्ताँ
फूलों में तुल रही है मुहब्बत क़दीर की

राहे खुदा में 'शौक' खयाल अपना कुछ ना था
थी ऐसी सादा ज़िंदगी हज़रत क़दीर की

(तरही मुशायरा, हलकट्टा, वाडी)

नूरे ऐने क़दीर सय्यदा हाफिज़ा यमनी

(रहमतुल्लाहि अलैहा) (हलकट्टा शरीफ)

आज भी अहले नज़र का आईना है हाफिज़ा
एक मुद्दत से तवक्कुल की सदा है हाफिज़ा

आप की पोशीदगी से राज़ ज़ाहिर हो गए
बादशाहे क़ादरी का मुद्दआ है हाफिज़ा

ज़ाकिर ईमान की हर दम मुहाफिज़ क़ब्र है
गौर से देखो सलामत सर ता पा है हाफिज़ा

कलमए-बिलक़ल्ब की नज़रों से उनको देखिए
बावफा है बावफा है बावफा है हाफिज़ा

सिलसिला दर सिलसिला एक इंकेलाब आने लगा
दौरे हाज़िर का यकीनन फैसला है हाफिज़ा

बज़्मे रिंदाँ में कोई 'साहिब' भी है तिश्ना दहाँ
सागरे इरफान अता हो इल्तेजा है हाफिज़ा

('साहिब' क़दीरी रह.)

कलामे करीम रहमतुल्लाह अलैह

मेरा हिसाब मैं हूँ , मेरी किताब मैं हूँ
मुझ से खराब मैं हूं, दरया हबाब मैं हूँ

आया हूँ मैं ना जाऊँ जैसे का वैसा मैं हूँ
उम्दा शराब मैं हूं, खासा कबाब मैं हूँ

साकी मुझे बुलाया, बाकी शराब पिलाया
दीवाना आप मैं हूं, आली जनाब मैं हूँ

मेरा नहीं मकाँ है, मेरा नहीं ठीकाँ है
मेरा जवाब मैं हूं, मेरा सवाब मैं हूँ

कौन व मकान मैं हूं और ला मकान मैं हूँ
खुद बे हिजाब मैं हूं, गुलशन गुलाब मैं हूँ

सय्यद सदरुद्दीन क़ादरी मुझ पर अता तुम्हारी
दर का किलाब मैं हूं और बासवाब मैं हूं

'दीवाना' करीमुल्लाह मुर्शिद को जान अल्लाह
उन का रुआब मैं हूं, आफ्ताब की ताब मैं हूँ

सलामे क़दीर

भोले भाले अल्लाह वाले तुम पे लाखों सलाम
अर्श पे जाकर फर्श पे आए
राज़ ना कोई हम से छिपाए
सीना बा सीना इल्म सिखाए
आलमे नासूत वाले तुम पे लाखों सलाम
भोले भाले अल्लाह वाले तुम पे लाखों सलाम
'मन अरफा' की हम को घाट चढाए
नफ्स को नफी कर रब कि दिखाए
रहमते आलम रहम फरमाए
आलमे मलकूत वाले तुम पे लाखों सलाम
भोले भाले अल्लाह वाले तुम पे लाखों सलाम
इस्मे गिरामी हम को बताए
बे रूप होकर रूप में आए
मन में मुहम्मद सूरत दिखाए
आलमे जबरूत वाले तुम पर लाखों सलाम
भोले भाले अल्लाह वाले तुम पे लाखों सलाम
आप में आप ही आप को पाए
मांगे सो हम आप से पाए
सातों समावाँ के ताले खुलाए
आलमे लाहूत वाले तुम पे लाखों सलाम
भोले भाले अल्लाह वाले तुम पे लाखों सलाम
वक्ते अखीर में तशरीफ लाए
भेद हकीकी हम को दिखाए
कलमए तय्यब पढवाने आए
आलमे हाहूत वाले तुम पे लाखों सलाम
भोले भाले अल्लाह वाले तुम पे लाखों सलाम
शेख के दर पे सर को झुकाए
नारे 'क़दीर' हा हू हे के लगाए
आशिके हकीकी इश्क को पाए
आलमे सयाहूत वाले तुम पे लाखों सलाम

कलामे क़दीर

मन का नाम है मुहम्मद मन से तन में है उजयाला
पांच अनासिर का पचरंगी पुतला ज़ाती सिफाती मज़हर वाला
हामी मददगार है हक तआला नासूती आलम वाला निराला
मन का नाम है मुहम्मद मन से तन में है उजयाला

'मन अरफा नफ्सहू' जिस ने पहचाना   अल्लाह रसूल का ठीकाना वह ठाना
दोनों जहाँ में है वह सियाना   मलकूती आलम वाला वह निराला
मन का नाम है मुहम्मद मन से तन में है उजयाला

आप ही बसीरुन आप ही समीउन   आप ही कलीमुन आप ही अलीमुन
क़दीरुन मुरीदुन आप ही हय्युन   जबरूती आलम वाला निराला
मन का नाम है मुहम्मद मन से तन में है उजयाला

नूरी बदन पर नूर का बुर्का   तन में चलाते बैठा है चर्खा
देखना देखो छोड के फिरक़ा   लाहूती आलम वाला निराला
मन का नाम है मुहम्मद मन से तन में है उजयाला

तन तनहा तन से काम पडेगा   आ, सरे मैदान इमाम खडेगा
फिक्र नहीं इसकी इस्लाम बढेगा   हाहूती आलम वाला निराला
मन का नाम है मुहम्मद मन से तन में है उजयाला

रखो हमेशा शाहा सब पे नज़रया   जब से अता है तेरी काली कमलीया
क़दीर क़द्रदाँ हैं औलिया अंबिया   सयाहूती आलम वाला निराला
मन का नाम है मुहम्मद मन से तन में है उजयाला

कलामे क़दीर

आ दम जा दम यही ज़िक्र होना , अल्लाह भी होना, मुहम्मद भी होना
आप को पाकर नफ्स को खोना, अल्लाह भी होना, मुहम्मद भी होना
कलमे की तहकीक कलमे में होना, कलमे को पाकर कलमा ही होना
होना ना होना तहकीक होना, अल्लाह भी होना, मुहम्मद भी होना

हमनाम होकर गुमनाम होना, गुमनाम होकर हमनाम होना
हकीकत में हक की तहकीक होना, अल्लाह भी होना, मुहम्मद भी होना
आदम होना हव्वा होना, हव्वा होकर आदम होना
गंदुम खाना बदनाम होना, अल्लाह भी होना, मुहम्मद भी होना

ज़ात होना, सिफात होना, साकी-ए-कौसर का हाथ होना
हाथ में ले हाथ, हम-ज़ात होना, अल्लाह भी होना, मुहम्मद भी होना
हिंदू भी होना, मुसलमाँ भी होना, इंसान की पहचान आसान होना
आसान होना ना हैरान होना, अल्लाह भी होना, मुहम्मद भी होना

करीमुल्लाह होना करम लिल्लाह होना क़दीरुल्लाह है अल्लाह भी होना
मुरीद हो तो ऐसा मुर्शिद भी होना, अल्लाह भी होना, मुहम्मद भी होना

कलामे क़दीर

मैं भी अदना साकिया तेरे तलबगारों में हूँ
चौधवीं का चांद तू है, मैं तेरे तारों में हूँ

क्या बयाँ जिंदा नवाज़ी का करे इक इक मुरीद
मुर्दा दिल ज़िंदा किया तू तेरे दिलदारों में हूँ

मस्ती-ए सीना बा सीना मस्त हम साकी अलस्त
दमबदम हमदम रवाँ चौबीस हज़ार तारों में हूँ

है बलंद दस्ते दुआ, ला इन्तेहा है मुद्दआ
मैं ना मानूँगा कभी, बर ला, मैं हकदारों में हूँ

मेरे हिस्से की मुझे दे साकिया बाकी जो है
मैं तेरे मैख्वारों के पापोश बर्दारों में हूँ

दमबदम बाकार हूँ बेकार से मुँह फेर लूँ
हो अता इतनी अता मैं तेरे आह ज़ारों में हूँ

शेख की तस्वीर हम ने आते जाते दमबदम
खींच ली दिल से 'क़दीर' खुदबीं परिस्तारों में हूँ

कलामे क़दीर

दुनया के चमन में पीर मेरा दीवाना बनाकर छोड दिया
हर गुल में शजर में कुदरत का मुझे रंग दिखाकर छोड दिया

इक जाम पिला कर मस्त किया मेरे होश नहीं हैं मुझ में बजा
इस बंदए हकीर नाचीज़ को इक चीज़ बनाकर छोड दिया

अलताफे करम मेरे मुर्शिद का मैं भूला नहीं मुझे याद है सब
इरफान के दरया में मुझ को इक गोता लगाकर छोड दिया

मेरे चाहने वालो कह दो ज़रा देखो कैसा फज़्ल मुर्शिद का हुआ
रूया में दिखाकर सूरत को मस्ताना बनाकर छोड दिया

आया तू नज़र मुझे मिस्ले क़मर परवाना हूँ तेरा ऐ दिलबर
हक हक की बातें मुझ को सुना दुर दाना बनाकर छोड दिया

नैरंगीए-तमाशा मुझ को दिखा, देखा मैं हर शै में है खुदा
''नहनु अक़रब'' की आयत मुझ को पढा मेरे दिल को लुभा कर छोड दिया

सादात की चादर रंग दिया, नहीं रंग में कोई फर्क ज़रा
रंगरेज़ करीमुल्लाह पीर मेरा रंग देना सिखा कर छोड दिया

ऐ सय्यद मुहम्मद जान क़दीर तेरी सूरत में है भेद छुपा
दीवाना करीमुल्लाह क़ादरी ने दीवाना बनाकर छोड दिया

कलामे क़दीर

भोले भाले अल्लाह वाले तुम पे लाखों सलाम

चला आहिस्ता आहिस्ता तेरे कलमे से दम मेरा
नज़अ में कैसे भूलूँ है वज़ीफा दमबदम मेरा

यही इर्शादे मुर्शिद है यही तो राज़े मुर्शिद है
मुराद पाया मेरा नफ्स अदुव्वे बे शर्म मेरा

हुआ ज़िंदा जभी दमबदम हो याद में मोहकम
नहीं खौफे खतर हमदम में दौराँ है सनम मेरा

है हस्ती में अजब हस्ती वीराने में जग बस्ती
मुक़द्दर से मिला खोया हुआ दर्द व अलम मेरा

तमन्नाऐं वह बर लाऐं पढें कलमा वह पढवाऐं
अलम नशरह लक सदरक से पुर दिल का हरम मेरा

ज़माना आखरी आया खुदी खोया खुदा पाया
जमाया पीरे कामिल ने यही कह कर कदम मेरा

जहाँ में जितनी अरवाहें हैं आई और जो आऐं
बसद ताज़ीम 'क़दीर' सर को झुकाए लो सलाम मेरा

❁❁❁❁❁
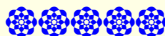
सब्ज़ जाली के मकीं कलमे की कल खुलवाऐंगे
हक तआला से हमारा हाले दिल दिलवाऐंगे

तुम सिवा अपने तरद्दुद का नहीं किस को खयाल
तुम सरापा नूर हो नूरी महल बनवाऐंगे

पंजतन की लाज रख हम तुम जतन तुम हम जतन
पंज बिना इस्लाम के आलम पे हल फरमाऐंगे

शोर है आखिरे ज़माँ है आखिरे ज़माँ है हाल है
तुम सिवा मखलूक कब एक दीद व दिल हो जाऐंगे

हामिल बारे अमानत इल्म व अमल या सय्यदी
तू निगहबान कारकुन हम लिखे अज़ल को पाऐंगे

पेशे राह सालारे मखदूम दरगाह 'क़दीर' पीरे मुग़ाँ
पीर मुईन आबाद मुईन यमनी दंगल फरमाऐंगे
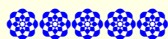
कलामे क़दीर

अयाँ दर नैन पिनहाँ है मुहम्मद
कुल शै में देखो दरमियाँ हैं मुहम्मद

यहाँ हैं वहाँ हैं कहाँ हैं मुहम्मद
बतहकीक पीरे मुग़ाँ हैं मुहम्मद

हकीकत में साहिबे ज़माँ हैं मुहम्मद
बतसदीक आखिर ज़माँ हैं मुहम्मद

सब मोहताज कुल अंबिया हैं मुहम्मद
आप सरताजे पैगंबराँ हैं मुहम्मद

तुम्हीं रूहे कुल कुदसियाँ हैं मुहम्मद
हमीं कुल नफ्स आप जाँ हैं मुहम्मद

हकीकत में हक राज़दाँ हैं मुहम्मद
जवाने अरब बन अयाँ हैं मुहम्मद

हर इक दिल में कलमा रवाँ हैं मुहम्मद
वह दिल नहीं बागे जिनाँ हैं मुहम्मद

'क़दीर' क़द्रदाँ क़द्रदाँ हैं मुहम्मद
अजब शान शाने सुबहाँ हैं मुहम्मद

कलामे क़दीर

आले अहमद से होगा सितारा तुलूअ
दीने अहमद जगाऐंगे वह चार सू
सब से लेंगे यकीं इम्तेहाँ रूबरू
वह हैं नाइबे रसूले खुदा हूबहू

हूबहू, हूबहू, हूबहू, हूबहू
अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू

तेरे मिलने की किस को नहीं आरज़ू
तू हयाते नबी और तू ही ज़ाते हू
एक हू की सिफत में जहाँ है महव
तेरा शैदा हकीकत में है वहदहू

वहदहू, वहदहू, वहदहू, वहदहू
अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू

खोल तफसीर देखा ''फसम्मा वजहुहू''
जब से देखा हूँ मैं मैं नहीं तू ही तू
सब जहाँ तेरा शैदा दिखा अपना रू
है जहाँ देखो वाँ तज़किरा मैं व तू

मैं व तू, मैं व तू, मैं व तू, मैं व तू
अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू

तेरी वह शान है ला शरीका लहू
तुझ से है अरज़ मेरी बचा आबरू
है अजब खल्क में आज कल जुस्तजू
ना हमें किस से दरकार है तेरी लौ

तेरी लौ, तेरी लौ, तेरी लौ, तेरी लौ
अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू, अल्लाह हू

शह कामिल मुहियुद्दीन खूब रू
अपने तालिब के हक में किए जुस्तजू
बस 'क़दीर' उनका होकर मुरीद सुर्ख रू
दीने अहमद जगाते चला चार सू

❁❁❁❁❁
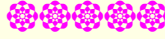
दम साज़ दमबदम क्या आवाज़ आ रही है
पढ पढ के ज़ाते आली कलमा पढा रही है

मतलूब दीन व ईमाँ हिंदू हो या मुसलमाँ
एक ज़ात दरमियाँ हो फितना मचा रही है

मेहबूबे किब्रीया की उलफत अता खुदा की
यह महविय्यत हमारी क्या क्या दिखा रही है

साकी अज़ल में प्याला पिलवा के फिर पिलाया
हर शान साकिया की हर आँ बका रही है

दिल में दोई को रख कर हक देखे कोई क्यूँकर
हक बात की सदाऐं कानों में आ रही है

दिल कर चुका ज़ियारत बाफैज़ बाकरामत
मुहब्बत हबीबे हक की हक से मिला रही है

शाफी है अपना वाली 'क़दीर' जद्दे आली
उम्मत के बख्शवाने की आवाज़ आ रही है

❁❁❁❁❁
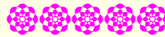
जोगी या बैरागी जंगम सब्र तक़वा चाहिए
धार पर मछली चढे चढने को तक़वा चाहिए

बंदगी करना है रब की वरना है पसमंदगी
रूबरू हमदम रहे हमदम सा मुखवा चाहिए

जाए दिल में दो नहीं दीने खत्मुल मुरसलीन
अपनी सूरत दिखने अपना सागर वा चाहिए

दिल में है दौरे ज़माँ ले दमबदम तू इम्तेहाँ
हाजतें बर आऐंगी बस दिल निडरवा चाहिए

जिस को देखो मुब्तेला मस्त ''अलस्त क़ालू बला''
मस्त है पहले से वो दूनाना मरवा चाहिए

सूरतें अकसर बदल कलमे की कल है बाअमल
जब तलक तहकीक ना हो बटवाने हलवा चाहिए

क्या करीमी तेरी है अल्लाह करीमुल्लाह में
तू ही तू बाकी 'क़दीर' सब से बेपरवा चाहिए

❁❁❁❁❁
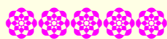
मुबारक बाद हो दीदार दिखलाना मुहम्मद का
यकीं हर घर में आमद रफ्त रोज़ाना मुहम्मद का

वही घर शाद है आबाद है आबाद
अज़ल से ता अबद बाकी है काशाना मुहम्मद का

ना जा, नासूती आलम इसी आलम में है कायम
खुदा खुद बन मुहम्मद मुख दिखलाना मुहम्मद का

तअज्जुब कुछ नहीं ज़ाहिद हकीकत में खुदा वाहिद
बख्शवाने हमें था अर्श पर जाना मुहम्मद का

खुदा का नाम ले ले कर जो मरते हैं मुहम्मद पर
उन्हें आसान है जन्नत में ले जाना मुहम्मद का

है जिसको उलफते सादिक खडे हैं मुन्तज़िर आशिक़
बढाने दीन दीनदारों में दीवाना मुहम्मद का

है आला आप की बुनियाद 'क़दीर' हैं साहिबे सज्जाद
पढो कलमा हसन खुश हो के नूराना मुहम्मद का
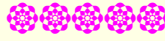
काम ऐसा दकन में कर जाना
दाग कलमे का दिल पे धर जाना

हक का प्यारा उसी को कहते हैं
कलमा तहकीक करके मर जाना

मरने वाला रहे ना क्यूँ ज़िंदा
सच बताओ भला किधर जाना

बेखबर के कहाँ नज़र में असर
बाखबर आ के बेखबर जाना

जान जाए तो जाए जानाँ में
जानाँ के दर पे सर को धर जाना

बादशाही से क्या फकीर को ग़र्ज़
फक्र फाके पे फख्र कर जाना

हक की जिसको तलब है आठों पहर
हक को पा सब के तईं बसर जाना

दर पे मुर्शिद के बस झुका कर सर
क़द्र दाँ के क़दीर घर जाना
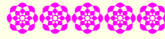
कलामे क़दीर

यकीनन भाईजान घर घर उजाला होने वाला है
हमारा दो जहाँ में बोल बाला होने वाला है

सितारे अब बलंद होंगे बजेंगे जाबजा डंके
ज़बरदस्त अनकरीब में एक हल्ला होने वाला है

ना हम पर ताने दो ऐ कुफ्र वालो देख लो ठहरो
यकीनन हिंद वालों में उजाला होने वाला है

यह मंशा खास है रब का बजेगा चौ तरफ डंका
शयातीनों का रंग लाल पीला होने वाला है

यह नादाँ हैं नहीं समझे जो समझे वही पाए
समझ दारों का हक से खास प्याला होने वाला है

तुम्हारे हुस्न की तारीफ हम से क्या बयाँ होगी
गले का आप के हज़रत यह माला होने वाला है

सुना हज़रत करीमुल्लाह, रसूलुल्लाह से बोले
रसूलुल्लाह का इर्शादे आला होने वाला है

मुसलमानो ! ज़रा ठहरो बढा दें दीने अहमद को
'क़दीर' अपना लक़ब अल्लाह वाला होने वाला है

कलामे क़दीर

मुक़द्दर का हमारे फैसला मालूम होता है
तुम्हारा सिलसिला नूरुन अला मालूम होता है
हुआ हज़रत हमें मालूम मचेंगी कोई दम में धूम
यह मंशा आप का सल्ले अला मालूम होता है
खुदा दिखलाएगा वह दिन रहेंगे चौ तरफ मोमिन
यह मतलब भाईजान मखफी खुला मालूम होता है
हुए मसरूफ हज़रत कार बनाऐंगे यक़ीं गुलज़ार
चमन हज़रत का क्या फूला फला मालूम होता है
उठाने वाले हैं बुर्का मिटाऐंगे यकीं फिरका
इसी बस्ती में बैठा काफिला मालूम होता है
हमारे दिल को समझाने बने फिरते हो दीवाने
किसी के इश्क में वह मुब्तेला मालूम होता है
कहूँ क्या दिल को हज़रत में निकलती हैं सहीह बातें
मेरे दिल में यकीन रब्बुल उला मालूम होता है
करो सब मिल जिहादे अकबर हैं हामी शाफिए मेहशर
हिमायत पर शहंशाहे कर्बला मालूम होता है
नहीं अब ज़ब्त की ताकत संभालिए हमें हज़रत
मेरा इश्क रोज़ अफज़ूँ चुलबुला मालूम होता है
दुआ किजीए करीमुल्लाह हमारे हाल पर वल्लाह
कबूल करने मुंतज़ीर इलाह मालूम होता है
करो तसदीक जमउल्लाह शहादत देंगे रूहुल्लाह
सुनो इस बात पर इक मरहला मालूम होता है
गिरह तकदीर की खुल जाए जो मांगे सो खुदा से पाए
'क़दीर' तो मुस्तफा का लाडला मालूम होता है

कलामे क़दीर

मुहिब्बो ! कलमए- तय्यब में सबीह व शान है बाक़ी
मशाइख जो हैं उनके सीने में इरफान है बाक़ी

किया तय्यार छे दिन में ज़मीन व आस्माँ को हक
वजूदे हज़रते आदम में छे मेहमान है बाक़ी

जो पाया छे हकीकत को वह पाया कलमए- तय्यब को
मिटा देखो खुदी अपनी सही सुबहान है बाक़ी

अजब क्या उनकी नज़रों में बढा दे दीने अहमद को
बहादुर ऐसे ऐसे साहिबे ईमान है बाक़ी

कुफ्र मिट जाएगा सारा ज़माना है सहीह ऐसा
अभी मेहदी हज़रते आखिरुज़् ज़माँ है बाक़ी

मुझे अफसोस होता है डुलमुल आजकल ईमाँ
ज़माने में अभी तक रहबरे उज़्मान है बाक़ी

करो अज़मत बुज़ुर्गी आल की कुरआन की सब मिल
रसूलुल्लाह के सदहा सहीह फरमान है बाक़ी

जो निकली सांस कलमे से वो ज़िदा हो गई बेशक
नहीं समझा जो कलमे को कहाँ इंसान है बाक़ी

पडा मैं तू का झगडा जिस में उस में हक कहाँ बाकी
ज़मीं पर कैसे कैसे बेवफा शैतान है बाक़ी

वही बंदा सहीह गाफिल ना हो रब से कोई लम्हा
उन्ही के वास्ते हूर व परी ग़िलमान है बाक़ी

'क़दीर' इश्क़े मुहम्मद मुस्तफा दीवाना कर डाला
'अना' कह कर चढूँ सूली यही अरमान है बाक़ी

कलामे क़दीर

करीमह जाली सब्ज़ रंगवाई

देढ फुट अटरिया तीन फिट जाली दरवाज़े बाज़ू लगाई

करीमह जाली सब्ज़ रंगवाई

जानिबे मग़रिब लोटन शाह लेटे मशरिक़ करीमह सजाई

करीमह जाली सब्ज़ रंगवाई

तेरी कमाई मौला जलवा नुमाई मौला क्या शान है किब्रीयाई

करीमह जाली सब्ज़ रंगवाई

लाज रखो मोरे कलमे की साजन लुट तन मन धन लुटाई

करीमह जाली सब्ज़ रंगवाई

हिंद नूराना तुरबत सुहाना हिंदू मुसलमान फिदाई

करीमह जाली सब्ज़ रंगवाई

दासी 'क़दीर' सीना बा सीना मुर्शिद नबी जी की जाई

करीमह जाली सब्ज़ रंगवाई

बाझारे रहमत

गर्म है बाझारे रहमत जो भी चाहो मांग लो
है मुहम्मद की हुकूमत जो भी चाहो मांग लो

देने वाला दे रहा है लेते हैं शाह व गदा
सब पे है यकसाँ इनायत जो भी चाहो मांग लो

उनके एहसाँ व करम की बात है जो हो गई
गुंबदे खज़रा से निसबत जो भी चाहो मांग लो

क्या नहीं मिलता मेरे सरकार के दरबार से
मिलती है इस दर से इज़्ज़त जो भी चाहो मांग लो

हासिले तक़दीर है आमद मदीने की 'तुराब'
है यकीं वालों की जन्नत जो भी चाहो मांग लो

'तुराब' क़दीरी

❁❁❁❁❁
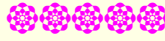
ला हू काला, इलाह सफेद, इल्लल्लाह हरा
लाल मुहम्मद, पीले रसूलुल्लाह खरा
रंग हैं अकसाम के कलमे में क्या
काला उजाला सब्ज़ लाल पीला खरा
पांच रंग पच्चीस गुन कलमें में चुन
है फर्ज़ इस्लाम का पहला बडा
तन हो दिल हो जान हो सर हो नूरे ज़ात
ज़ात सब की एक सर माला पडा
फितरत रंगरेज़ है क्या रंग रंग
पहन साकी जामा वजहुल्लाह खडा
या इलाही दे 'अलिफ-लाम-मीम' की जग को दीद
जग जगत मंतर हो दिल दुल्हा मेरा
खातिर इल्मुल यकीं मुर्शिदे यकीन
मरहबा ऐन 'क़दीर' अल्लाह भरा

❁❁❁❁❁
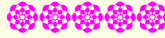
नज़र में रहनुमा है मैं नहीं हूँ
मेरे दिल में खुदा है मैं नहीं हूँ
इकामत में रुकूअ सज्दे व जलसे
लिबासे ज़ाहिरा है मैं नहीं हूँ
मिटा कर आप को देखा तो पाया
वही बे चूँ व चरा है मैं नहीं हूँ
है नूरे अहमदी ही दोनों जग में
अरब पे जग फिदा है मैं नहीं हूँ
'अनल हक्क' की सदा दिल ने सुनाया
अजब कुछ इंतेहा है मैं नहीं हूँ
ब्रहमन दैर में जा देखते हैं
मैं देखा जाबजा है मैं नहीं हूँ
'क़दीर' हैं दस्तगीर सर पे हमेशा
वही तो पेशवा है मैं नहीं हूँ
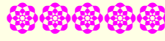
कामिल कमाले पीर से कल्मे की कल चले
राहे सफा को छोड कर रस्ता बदल चले

बरहक है पीर पीर से इतनी ना की सहीह
कामिल वही अमल है जो कि बाअमल चले

इतनी ना दूरी खालिके अकबर से चाहिए
इतना हो बस हुज़ूर में ज़िक्र व शुग्ल चले

मोज़ी नफ्स से बचते बचाते खुदा को पा
सब को संभालते हुए संभला संभल चले

दीनदार होना दीने मुहम्मद मुही मुही
उन के फिराक में कोई निकला निकल चले

जाना यही विसाल है उस की ना सुबह व शाम
इतनी हो महविय्यत कि सभी एक दिल चले

बख्शा करीम अज़ महर व करम अपने सब गुनाह
अल्लाह मियाँ 'क़दीर' पे करते अद्ल चले

कलामे क़दीर

फिक्र नहीं है हमारी हम को हमारा निगराँ हमारा साहिब
ना किस का डर है दोनों जहाँ में बडा महरबाँ हमारा साहिब
बे फायदा कर रहे हो झगडा नहीं यह समझे है किस ने पकडा
ज़रा तो ठहरो वह आ रहा है ले ले के सामाँ हमारा साहिब
नहीं था जब तक यकीने कामिल हुए थे हम भी उन्हीं में शामिल
फिक्र नहीं कुछ है अपने घर में हमारे मेहमाँ हमारा साहिब
वह सुन रहा है वह देख रहा है वह आप चाहे सो कर रहा है
सब्र है लाज़िम शुक्र है लाज़िम है हम से शादाँ हमारा साहिब
ज़रा तो सोचो है गौर की जा, करो ना तुम हक पे ज़ुल्मे बेजा
ना इसका शिकवा करो तुम हरगिज़ है हम में पिन्हाँ हमारा साहिब
जो मांगते हैं वह दे रहा है ना मांगे फिर भी वह दे रहा है
है क्या क्या एहसान हम पे रब का वही है रेहमाँ हमारा साहिब
ना हम हैं ज़ाकिर ना हम हैं शाकिर ना हम हैं साबिर ना हम हैं वाफिर
ना दूर जब तक करेंगे गफलत करेगा हैराँ हमारा साहिब
है देखो हज़दह हज़ार आलम जो मांगे देता है उनको हर दम
हम मांगने पर ना दे वह हम को नहीं है नादाँ हमारा साहिब
करे कोई गर हम पे हुकूमत दिखाए गर कोई अपनी शान व शौकत
तो हम यह कह देंगे साफ उनसे दिया है यह शाँ हमारा साहिब
खुदा को जो लोग ढूंढते हैं ज़मीं के अंदर या आस्माँ पर
नहीं यह बंदे हैं दिल के अंधे वह देगा नैनाँ हमारा साहिब
वह पीर बन कर मुरीद कर कर मुरीद मांगे सो दे दिलाकर
लिखा पढा कर सिखा समझा कर दिया है इरफाँ हमारा साहिब
वो अपना दीदार हमें दिखाया और ''नहनु अक़रबु' दलील सुनाया
बशर में सर ता पा खुद समाया पढाया फुरकाँ हमारा साहिब
हैं पीर व मुर्शिद करीमुल्लाह शाह ना उनका सानी कोई शहंशाह
वह सब का हामी वह सब का वाली वह सब का सुलताँ हमारा साहिब
शुक्र खुदा का किया है पैदा वह पैदा कर कर हुआ है शैदा
सहीह बताओ है किस से पैदा 'क़दीर' क़द्रदाँ हमारा साहिब

कलामे क़दीर

कागज़ी तहरीर पर कलमे की कल आई नहीं
इस लिए सीना बा सीना राज़ लिखवाई नहीं

कलमे की कल खोल देखा देखना पहला फर्ज़
''रऐतु रब्बी बिरब्बी'' बे रब नज़र आई नहीं

खत किताबत यहाँ कहाँ सीना बा सीना इल्म हाँ
दिल में पिन्हाँ जाने जाँ जाने जहाँ पाई नहीं

ला वजूदी का वजूद मौजूद ही मौजूद है
क्या मजाल अपनी नहीं कहना वह बीनाई नहीं

सिर्रे वेहदत का खुलासा खोल कर सिर्र देखना
ला खबर पीरे मुग़ाँ लाई सो फिर लाई नहीं

वहदत व कसरत के जुमले हल ना हों मुर्शिद बगैर
दार पर मनसूर सा सर कोई चढवाई नहीं

राज़ की दो बात हैं अल्लाह नबी जो साथ हैं
दमबदम हमदम 'क़दीर' बे याद खिंचवाई नहीं

शक्ले इंसान में रहमान, मिल कर देखो
सूरते शेख में सुबहान है, मिल कर देखो

इश्क हो जाए तो देखेंगे मुअम्मे मखफी
खुद की पहचान है पहचान है, मिल कर देखो

क्या अजब है कि हो जाएगा दीदारे खुदा
जान पहचान के अंजान है, मिल कर देखो

जो फना होता है एक रोज़ बका पाएगा
दिल में अरमान है अरमान है, मिल कर देखो

मैं सुना शेख को पाकर तो कहा दिल मेरा
में वह सुलतान हूँ सुलतान है, मिल कर देखो

''रऐतु रब्बी बिरब्बी'' है हदीसे अहमद
जो ना जाने उसे हैवान है, मिल कर देखो

ऐ 'क़दीर' देख ले दीदारे खुदा है खुद में
पीरे कामिल का वह एहसान एहसान है, मिल कर देखो

❀❀❀❀❀
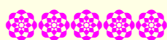
राज़े मखफी देख ली इज़्हार के क़ाबिल नहीं
'कुन्तु कन्ज़न मखफिय्यन' असरार के क़ाबिल नहीं

'नहनु अक़रबु' खुद कहा और खुद ही समझाया हमें
जान ली मैं ऐसी रग इज़्हार के क़ाबिल नहीं

'सुम्मा वजहुल्लाह' कहा कुरआन में है जा बजा
है निहाँ असरार क्या दीदार के क़ाबिल नहीं

ऐन में और ग़ैन में क्या फर्क नुक्ता एक है
जो ना जाने आप को वह सरकार के क़ाबिल नहीं

अहद और अहमद में देखो फर्क है सिर्फ मीम का
जो ना समझा मीम वह सरदार के क़ाबिल नहीं

लाम अलिफ और मीम में है भेद कुरआँ देख लो
फंस गए दुनया में हम दिलदार के क़ाबिल नहीं

रहनुमा की याद में आठों पहर शादाँ 'क़दीर'
राज़े मखफी देख ली मुख्तार के क़ाबिल नहीं

कलामे क़दीर

हर रोज़ शब मुझे है मुहब्बत नमाज़ की
मस्जिद ले जा रही है यह उलफत नमाज़ की

मोमिन को चाहिए कि सदा यादे हक करे
लाखों इबादतों में इबादत नमाज़ की

वह कुव्वत हकीकी है और याद उनकी है
हासिल हो या खुदा मुझे लज़्ज़त नमाज़ की

नारे जहन्नुमी से बचे जो पढे नमाज़
कुरआन में है देखो फज़ीलत नमाज़ की

जन्नत की गर उम्मीद अगर है तो इस में है
मैं जानता हूँ रोज़ हकीकत नमाज़ की

बंदा नहीं खुदा का जो पढता नहीं नमाज़
जो रखते हैं दिलों में बगावत नमाज़ की

मेहबूबे खुदा करते थे है वह नमाज़ यह
मेराजे मोमिनीन है राहत नमाज़ की

कुर्बे खुदा यकीन है देखो नमाज़ में
इस्लाम की सुतून है दौलत नमाज़ की

या रब खुशूअ खुज़ूअ से अदा गर हुई नमाज़
समझूँ 'क़दीर' खुदा से है कुर्बत नमाज़ की
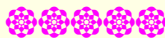
इमाम पंजतने पाक पाक नाम है दिल
ज़हूरे 'अन्नी अना' ला कलाम कलाम है दिल
बदन में दिल है यह दिल ही नहीं वह दिल है और
बताएगा तुम्हें शेख जहाँ का नाम है दिल
जहाँ से जाऐंगे पूछेगा दिल कहाँ छोडा
जवाब दिल का तो लो वरना खास व आम है दिल
अबस तलाश में गरदाँ है बेबसर हर सू
सुबह तो हो चुकी है देखो शाम शाम है दिल
हसीं जमील वह ऐसा, है दूसरा ही नहीं
साया बदन को है बेसाया का मकाम है दिल
सलाम दिल को करूँ दिल में जो है रब को करूँ
'रऐतु रब्बी बिरब्बी' करूँ सलाम है दिल
'क़दीर' ज़ात के सदके सिफात के कुरबाँ
मैं पा रहा हूँ जहाँ ही का तू इमाम है दिल

❁❁❁❁❁
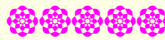
बहारे लुत्फे यज़दानी शहे माशूके रब्बानी
शह फुक़रा फकीरानी शहे माशूके रब्बानी
दकन में दीन के बानी दिखा दो जलवए नूरानी
उर्स जागीर सुलतानी शहे माशूके रब्बानी
है दिल में आजकल खदशा बिगडने को है कुल नक्शा
खुदा बाकी खुदी फानी शहे माशूके रब्बानी
जमाले पाक का सदका ज़मीने पाक के कुरबाँ
वह पाक आस्ताँ के बानी शहे माशूके रब्बानी
हुज़ूरे दिल से है मेरी अरज़ हुज़ूर आप पर है सब फर्ज़
करो दिल घर की निगरानी शहे माशूके रब्बानी
तुम्हीं हो औलिया सानी, तुम्हीं अंबिया सानी
तुम्हीं हो इल्मे हक्क़ानी शहे माशूके रब्बानी
'क़दीर' कुदरत खुदा की देख दो आलम एक ही है एक
वह यकता शाने रब्बानी शहे माशूके रब्बानी

मेरी हाजत रवाई जिस ने वा की
यह फज़्ले किब्रीयाई है खुदा की

जहाँ तक इब्तेदा थी इंतेहा की
मसीहाई है कलमए तय्यबा की

दिया खामोश है क्यूँ चुप सुलग जा
है शामे मुस्तफा सुबह खुदा की

इलाही ! ता अबद गुलशन हमारा
हयाती ता अबद है रहनुमा की

शर्फ बख्शी है अशरफ दो जहाँ की
जहाँ में है जहाँ तक किब्रीया की

हुज़ूरे दिल वही हाज़िर जो कुछ है
वह लज़्ज़त पूछ दिल से दिलरुबा की

'क़दीर' बीनी करीमा कारसाज़ी
करामत है मेरे घर पेशवा की

❁❁❁❁❁
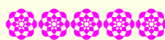
'मन अरफा नफसहु' पहचान गुंबद
अयाँ है खलीफतुर् रहमान गुंबद

मकां जैसा मालिक मकीं बान गुंबद
खज़ाना हैं नासूती सुलतान गुंबद

बजानिबे मगरिब दरवाज़ा गुंबद
बजानिबे मशरिक हैं ज़ीशान गुंबद

अजब शश जेहत से है ईजाद नक्शा
है नक्काशे अज़ली मुसलमान गुंबद

मुबारक यकीं ता हश्र इल्म सीना
है सीना बा सीना शायान गुंबद

हैं मेहबूब साहिब महबूबीयाँ हैं
हैं मेहबूबे सुबहानी सुबहान गुंबद

हैं मज़हरे बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम
यकीं नफ्स दिल रूहे इंसान गुंबद

तू रख लाज आले नबी आल तेरी
हैं दस्त बस्ता हाज़िरे दरबान गुंबद

निगह दार हाफिज़ा खदीजा करीमा
'क़दीर' सब के सब हम हैं मेहमान गुंबद

तआरुफ

अलहम्दु लिल्लाह! आज हज़रत ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी चिश्ती यमनी बंदानवाज़ी 'साहिब' क़दीरी का इरफानी कलाम आप के सामने है.

हज़रते ममदूह का तआरुफ मजमूई तौर पर मुमकिन नहीं, बस यूँ समझ लिजीए कि सिलसिलए-क़दीर के रम्ज़ शनास सुखनवर 'ज़ाकिर' मरहूम की बलंद खयाली, 'हारिस' मरहूम की सादगी व पुरकारी, नासिर सिद्दीकी की मायना (मतलब) आफरीनी और 'शाहीन' की फलक पैमाई को यकजा कर दिया जाए तो एक नाम बनता है 'साहिब' क़दीरी.

मौसूफ को अपने वालिदे मोहतरम रहमतुल्लाहि अलैह से २२ रबीउस् सानी १३७५ हि. बरोज़ पंजशंबह बमकाम चिटगुप्पा खिलाफते क़ादरीया से सरफारज़ी हुई और हज़रत जानशीने बंदा नवाज़ हज़रत सय्यद शाह हुसैन मुहम्मद अकबर मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी 'खैर' बंदानवाज़ी रहमतुल्लाहि अलैह से चिश्ती खिलाफत २५ ज़िलहज १३७५ हि. बरोज़ जुमा बमकाम हैद्राबाद दकन हासिल हुई. मौसूफ हज़रत क़िब्ला रहमतुल्लाहि अलैह के इकलौते साहबज़ादे और जानशीन हैं, यह हज़रत क़िब्ला ही की सोहबत और तरबियत का फैज़ाने आम है कि आप सब की निगाहों का मरकज़ बन गए. मेरी दुआ है कि आस्माने शेर व सुखन का यह आफताब हमेशा जगमगाता रहे. आमीन!

साबिर तवक्कली 'शाहीन', करीमनगर

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''

शमए-क़दीर

तआरुफ बस मेरा यह है कि खाके पाऐ जानाँ हूँ

यह फ़ज़्ले पीर है 'साहिब' पुकारा जा रहा हूँ

खाकपाऐ क़दीर व गुलामे सिलसिला

साहबज़ादए-ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी चिश्ती यमनी

बंदानवाज़ी 'साहिब' क़दीरी

उफिया अन्हु (रहमतुल्लाहि अलैह)

सलाम

बहुज़ूरे आली मकाम सय्यदुल मुरसलीन खातमिन् नबिय्यीन
शफीउल मुज़निबीन रहमतुल् लिलआलमीन इमामुल अव्वलीन वल आखरीन
अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अमीने वारिसे फज़्ल व अता सलामुन अलैक
दिले गरीब के हाजत रवा सलामुन अलैक
मकामे कुर्ब के हक आशना सलामुन अलैक
हबीब जिसको कहा खुद खुदा सलामुन अलैक

है जिन के नाम से अर्शे बरीं भी ताबिंदा
उन्ही के नूर से सब कुछ बना सलामुन अलैक

कलम भी शक़ हुआ लिख कर मुहम्मदे अरबी
वह मर्तबा है वराउल वरा सलामुन अलैक

कि जिस पे रोज़ मलाइक दरूद पढते हैं
मुहम्मद आप पे दो जग फिदा सलामुन अलैक

अली का वास्ता हसनैन के लडकपन का
अता हो सदकए गौसुल वरा सलामुन अलैक

दयारे पाक में 'साहिब' की इल्तेजा हो कबूल
हमें अता हो करम आप का सलामुन अलैक

नात शरीफ

यह अहले वफा की मेहफिल है हम नाते नबी सुनवाते हैं
ताज़ीम करो ताज़ीम करो सरकारे मदीना आते हैं

याँ तिश्ना लबी का ज़िक्र ही क्या, हैं साकीए-दौराँ फिक्र ही क्या
वह रेहमते आलम शाहे उमम रहमत की घटा बरसाते हैं

फरयाद गरीबों की सुन लो बुलवाओ हमें भी ए शाहा
हम दीदए पुर नम ठहरे हैं तैबा को सफीने जाते हैं

वह फख्रे दो आलम अर्श नशीं कौनैन है जिन के क़ब्ज़े में
शाहाने ज़माना के सर भी वल्लाह यहाँ झुक जाते हैं

तूफाने हवादिस लाख सही इस दर पे जो आया पार हुआ
हालात संवारे जाते हैं तकदीर के बल खुल जाते हैं

दीवानए-उलफत को 'साहिब' रोका है ना कोई रोकेगा
जब शमा जलाई जाती है परवाने वहीं जल जाते हैं

सल्ले अला

आप से पाई है ईमाँ की ज़िया सल्ले अला
खानए-दिल बन गया है आईना सल्ले अला

दामने रेहमत की वुसअत अल्लाह अल्लाह देखीए
रहमतुल् लिलआलमीं हक ने कहा सल्ले अला

है मकामे कुर्ब की मेराज जिस की ज़ात में
मरहबा क्या मर्तबा है मर्तबा सल्ले अला

जिस पे कुरआने मुबीं नाज़िल हुआ वह आप हैं
और हक ने कह दिया हादी-ए-हुदा सल्ले अला

आप की शाने बशारत आप का एजाज़ है
क़ब्र से महशर तलक आगाह किया सल्ले अला

हैं गवाह सब अंबिया बोले सरे मीसाक़ यह
ढाँप रखा है हमें नूर आप का सल्ले अला

क्या यह कम है कि गुलामे मुस्तफा कहलाऐंगे
मूजिबे बख्शिश है रेहमत की घटा सल्ले अला

जब क़दीरुल्लाह से निसबत मिली सरकार की
तोहफा बिलक़ल्ब पाया बरमला सल्ले अला

ता दमे आखिर रहे सीने में कलमे की सदा
लब पे हो 'साहिब' के नामे मुस्तफा सल्ले अला

खैरुल वरा (ﷺ)

अदब किजिए कि शाहे अंबिया का ज़िक्र होता है
मुहम्मद मुस्तफा सल्ले अला का ज़िक्र होता है

हयाते जावदाँ मिलती है हर लम्हा मेरे दिल को
मेरी हर सांस में खैरुल वरा का ज़िक्र होता है

ना लौटा है ना लौटेगा कोई मायूस इस दर से
खताऐं माफ होती हैं अता का ज़िक्र होता है

शहीदे नाज़ तेग़े आज़माइश पर भी शाकिर हैं
यह करबल है यहाँ सब्र व रज़ा का ज़िक्र होता है

जबीने शौक सज्दागाहे इरफाँ ढूँढती है
रवा होता है सज्दा नक्शे पा का ज़िक्र होता है

ऐ तालिब देख ता हद्दे नज़र जलवा ही जलवा है
मकामे कुर्ब में कब मा सिवा का ज़िक्र होता है

ज़हे तकदीर साकी ने हमें अपना लिया 'साहिब'
क़दीरी बज़्म में अहले वफा का ज़िक्र होता है

या सय्यदी

मरहबा सल्ले अला या सय्यदी या सय्यदी
आप का है आसरा या सय्यदी या सय्यदी

इक शिकस्ता नाव है तूफान की आगोश में
हो करम बहरे खुदा या सय्यदी या सय्यदी

आप हैं बदरुद्दुजा नूरुल हुदा कहफुल वरा
आदमिय्यत की बक़ा या सय्यदी या सय्यदी

कलमए बिलक़ल्ब क्या है वस्फे हज़रत ही तो है
हर नफस है बोलता या सय्यदी या सय्यदी

अर्श व कुर्सी साकिनाने बहर व बर्र लौह व कलम
ज़र्रह ज़र्रह आप का या सय्यदी या सय्यदी

रोज़े मेहशर काली कमली में पनाह दे दिजीए
गम के मारों ने कहा या सय्यदी या सय्यदी

ऐ शहे अरब व अजम 'साहिब' पे हो नज़रे करम
आप का है आप का या सय्यदी या सय्यदी

खैरुल बशर (ﷺ)

खुदाई का मंशा दो आलम का मकसद इमामत का नूरे नज़र सामने है
उलट कर वह अपना नकाब आ गए हैं ज़रा देखो खैरुल बशर सामने है

जिसे देखना हो खुदाई के जलवे निगाहों में उन की नगाहें मिलाए
तजल्ली का मखज़न वह नूरे मुजल्ला यहाँ आओ शम्स व कमर सामने है

मिटाने से पहले ज़रा सोच लेना गुलामे मुहम्मद हूँ यह याद रखना
बिगाडेंगे क्या मेरा बहरे हवादिस मेरे साथ उन की नज़र सामने है

हयातुन् नबी हैं यह हम ने भी माना ठिकाना कहाँ है हमें यह बताना
ज़रा जान कर जान की बात पाना वगरना अदम का सफर सामने है

बदलते हुए इंकलाबात आए कि वह राहबर को भी रहज़न बनाए
घडी है मदद की मदद कर खुदाया कि हंगामे बर्क़ व शरर सामने है

यह फर्शे ज़मीं अर्श से कम नहीं है कि खुद ज़ाते वाला जो पर्दा नशीं है
ज़रा सोचिए इस में क्या क्या नहीं कि मेराज की रहगुज़र सामने है

यह शमए क़दीरी के परवाने देखो खुदी को मिटा कर खुदा पा रहे हैं
ज़रा तुम भी साहिबे नज़र हो तो जानो मुकम्मल समर का शजर सामने है

यह फैज़ यदुल्लाह का है तक़ाज़ा वहाँ दीद होगी यहाँ जिस ने देखा
ना घबराओ साहिब अंधेरों से हरगिज़, मुकद्दर की अपने सहर सामने है

शरहे कुरआँ

मकसूदे शश जिहात, अज़ल का बयाँ हैं आप
यानी रसूले पाक शहे दो जहाँ हैं आप

तखलीके कायनात की रूहे रवाँ हैं आप
बेशक अमीरे क़ाफलए-इंस व जाँ हैं आप

परवाज़ जिब्रईल की मुमकिन नहीं जहाँ
मेराजे हक नुमाई के वह राज़दाँ हैं आप

अल्लाह की ज़बान ज़बाने हबीब है
कुरआन कह रहा है कि शरहे कुरआँ हैं आप

हर ज़र्रह वजूद में है आप ही का नूर
दरयाए मारिफत का वह सीले रवाँ हैं आप

आलम पनाह जिस को दो आलम ने कह दिया
आलम में वह सहीफए-अम्न व अमाँ हैं आप

यह हर कदम पे साहिबे निसबत को है यकीं
कौन व मकान में साहिबे कौन व मकान हैं आप

उनवाने मशिय्यत

वाकिफ सिर्रे निहाँ इंसान कामिल आप हैं
दर हकीकत देखिए इंसान का दिल आप हैं

हर नज़र में आप की जलवा गरी पोशीदा है
नूर बन कर आंख की पुतली में शामिल आप हैं

आप ही की ज़ात उनवाने मशिय्यत हो गई
शोरे मीना कैफे सागर रंगे मेहफिल आप हैं

दौरे हाज़िर की मसीहाई तुम्हारे हाथ है
इंकलाबे दहर के मद्दे मुकाबिल आप हैं

ज़ख्म खा कर भी दुआएं देते हैं शाहे उमम
किस निराली शान से बख्शिश पे माइल आप हैं

आज भी इंसानिय्यत है आप की एहसान मंद
हर ज़माने के लिए मकसूदे मंज़िल आप हैं

आप की तसदीक ही तौहीद की तकमील है
ज़िंदगी या बंदगी दोनों का हासिल आप हैं

कलमा बन कर जो मेरी यक यक सांस में हैं जलवागर
कौन यह कह सकता है 'साहिब' से गाफिल आप हैं

मिदहते गौसुल वरा अलैहिर् रहमह

(गौसुस् सक़लैन कुत्बुल कौनैन आले हसनैन नजीबुत् तरफैन सय्यदुल औलिया मेहबूबे सुबहानी मीराँ मुहियुद्दीन सय्यदना शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैह की शान में)

जो भी आया आप के दर पर शहा गौसुल वरा

हो गया वह एक दम में बाखुदा गौसुल वरा

चश्मे रहमत जिस पे की कुत्बे ज़माँ कहला गए

राहज़न कितने हुए हैं रहनुमा गौसुल वरा

आप हैं हसनी हुसैनी शान के रौशन चिराग

सब से ऊँचा औलिया में मर्तबा गौसुल वरा

कलमए-तय्यब की दौलत उसके सीने में मिले

क़ादरी जिस का रहेगा सिलसिला गौसुल वरा

सरज़मीं बग़दाद की जन्नत निशाँ है देखिए

बादशाहत भी है इस दर पर कुजा गौसुल वरा

बादशाहे क़ादरी की एक चश्मे फैज़ ने

आप के दामन तलक पहुंचा दिया गौसुल वरा

मुस्तहिक़ चश्मे करम का 'साहिब' नाशाद है

आप के दर का है अदना सा गदा गौसुल वरा

ज़िक्रे 'खैर'

(हज़रत आली वकार जानशीने बलंद परवाज़ नूर दीदए हसनैन मुर्शिदी व मौलाई हज़रत शाह हुसैन मुहम्मद अकबर मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी 'खैर' बंदानवाज़ी रहमतुल्लाहि अलैह)

इक बहारे बे खज़ाँ दरबार हैं शाहे हुसैन
गम के मारों के लिए गम ख्वार हैं शाहे हुसैन

आप की बंदा नवाज़ी का भला क्या वस्फ हो
वाक़ई सरकार हैं सरकार हैं शाहे हुसैन

हक पे जो कायम रहा उसको बराबर हक मिला
और बातिल के लिए तलवार हैं शाहे हुसैन

फूल भी अपने मुक़द्दर पे है नाज़ाँ देखिए
आस्ताँ पर आप के गुलज़ार हैं शाहे हुसैन

यह किसी ज़िंदा को पा जाने की है ज़िंदा मिसाल
क़ब्र में भी देखिए होशियार हैं शाहे हुसैन

आज परवाने क़दीरी शमा के हैं जाँ निसार
यह वफाओं के अलमबरदार हैं शाहे हुसैन

बारिशे रहमत बरस्ती है वहाँ 'साहिब' चलो
क्यूँकि मेरे पीर के दिलदार हैं शाहे हुसैन

अक़ीदत का नज़राना

(आकाए वली नेमत हज़रत क़िब्ला दादा पीर शेखुल मशाइख शेख करीमुल्लाह शाह क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह, चिटगुप्पा शरीफ़)

बयाँ क्या मुझ से हो तेरा फसाना या करीमुल्लाह
हज़ारों बे ठिकानों का ठिकाना या करीमुल्लाह

गुज़ारी जिस ने सारी ज़िंदगी शाने फक़ीरी में
अयाँ है यह सुबूते आशीक़ाना या करीमुल्लाह

ज़मीं क्यूँ सुर्ख है दरबार की सोचो ज़रा तुम भी
यह खूने दिल का है रंगे यगाना या करीमुल्लाह

यह पर्दा किस लिए था क्यूँ किया, क्या वजह थी इसकी
क़दीरी रूप लेने को बहाना या करीमुल्लाह

बशक्ले बादशाहे क़ादरी रंगे वफा होकर
सिखाया है दिलों में घर बनाना या करीमुल्लाह

ज़हे क़िस्मत गुलामों में हमें भी कर लिया शामिल
वगरना था कहाँ अपना ठिकाना या करीमुल्लाह

यह 'साहिब' भी करम का मुस्तहिक है अब करम किजीए
दीवानों में है तेरे यह दीवाना या करीमुल्लाह

''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''

हदीसे कुदसी : "كُنْتُ كَنْزًا مَخْفِيًّا فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفَ فَخَلَقْتُ الْخَلْقَ."

(मफहूम) डूबा हुआ था खज़ाना पोशिदगी में जब चाहा अल्लाह अपने को ज़ाहिर करना तो पैदा किया खल्क को.

समझना है ज़रूरी अपनी ही तामीर का मकसद
सिफात व ज़ात में अल्लाह की तहरीर का मकसद

यही तो सिर्रे कुरआँ है यही तो हुस्ने जानाँ है
नहीं बे वजह बिस्मिल्लाह की तफसीर का मकसद

इसी नुक्ते ही में माबूद को मौजूद पाओगे
हुवैदा ''कुन्तु कन्ज़न'' से हुआ तसवीर का मकसद

खिर्द की बारगाह में कब तलक सर को झुकाओगे
मकामे वस्ल में है इश्क की तासीर का मकसद

हुआ आदम पे सज्दा या कि फिर खल्लाके आदम पर
किसी के ख्वाब में ख्वाब की ताबीर का मकसद

मुहम्मद नूरे मुतलक़ सिर्रे वेहदत जाने आलम हैं
किताबे हक से ज़ाहिर हो गया तकरीर का मकसद

बगैर रहनुमाई कोई मंज़िल पा नहीं सकता
समझते हैं हिदायत याफ्ता ही पीर का मकसद

कलामे मुस्तफा ही से कलामुल्लाह ज़ाहिर है
निहाँ पर्दा ब-पर्दा होता है दिलगीर का मकसद

जहाने दीद में 'साहिब' क़दीरी शान पाते हैं
मिला है सिलसिला दर सिलसिला ज़ंजीर का मकसद
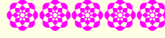
जमाल व अज़मते परवरदिगार है कलमा
दरूने क़ल्ब रवाँ ज़िक्रे यार है कलमा

लिबासे आदमे खाकी में कौन आया है
खुद अपने आप का आईना दार है कलमा

तजल्लियात से मामूरह ज़र्रह ज़र्रह है
वह रंग व नूर का बाग व बहार है कलमा

उसी ने बख्शी है तारीकियों को शमए हयात
ख़िज़ाँ की ज़िद है मुकम्मल बहार है कलमा

वह मैकदा है जहाँ पी के होश आता है
यह इस्तेक़ामते सब्र व करार है कलमा

नमाज़, रोज़ा व हज व ज़कात का है मदार
है फर्ज़े ऐन बहुत पायदार है कलमा

यह सायबाने शफाअत है दौडते आओ
पनाहे आखरी रोज़े शुमार है कलमा

उडान वह कि हर एक सांस जिस की हो मेराज
मकामे वस्ल का वह शहसवार है कलमा

अताए हादिए बरहक का फैज़ है 'साहिब'
नफ्स नफ्स में मेरे नग़मा बार है कलमा

कलमए-तय्यबा

कलमए तय्यब को सांसों में बसाना चाहिए
दिल अगर सीने में हो तो दर्द पाना चाहिए

लोग कहते हैं मुक़द्दर आज़माना चाहिए
मैं यह कहता हूँ उन्हें अपना बनाना चाहिए

नग़मए-हुस्ने अज़ल का राज़ पाना चाहिए
ज़िक्रे हा हू हे से हर दम को सजाना चाहिए

दिल से पढ कलमा कहेंगे क़ब्र में मुनकर नकीर
मसअला पेचीदा है उसका हल कराना चाहिए

दावते हक सारे आलम को सुनाने के लिए
खुद वह सोचा कि मुहम्मद बन के आना चाहिए

कट गई सब कुछ जो बाकी हैं गनीमत जान ले
ऐ खुदी ना आश्ना अब होश आना चाहिए

पीरे कामिल एक दम में हक तुम्हें दिखलाएगा
वरना फिर अल्लाह को पाने ज़माना चाहिए

बंदगी भी अपनी किस्मत पर हो नाज़ाँ देखिए
आस्ताने यार पर यूँ सर झुकाना चाहिए

इश्क कहता है कि 'साहिब' राहे उलफत में सदा
या क़दीर अल्लाह का नारा लगाना चाहिए

मंज़िले इश्क

मंज़िले इश्क आसाँ नहीं हमनशीं, दिल कुशादह नज़र मोतबर चाहिए
सामने करबला का है मनज़र अयाँ सर कटाने को भी घर का घर चाहिए

तेरे जलवोओं पे पर्दा नहीं है मगर बात तो अपने अपने मुक़द्दर की है
तालिबाने यकीं ही को मंज़िल मिली देखने को भी अहले नज़र चाहिए

खुद को पहचान कर ही खुदा पाओगे आप अपनी नज़र में नज़र आओगे
कह रहा है कोई आज भी महरबाँ दिल की राहों पे अज़्मे सफर चाहिए

एक लम्हा इबादत का मुमताज़ है अहले दिल की हर इक सांस मेराज है
निसबते पीर से पा ले इस राज़ को बेअसर ज़िंदगी है असर चाहिए

इक तरफ मौत है इक तरफ ज़ींदगी, इस कशाकश में सांसों की रफ्तार है
वक्त नाजुक है इमदाद फरमाइए इक नज़र ऐ शहे बहर व बर्र चाहिए

कुफ्र बढने लगा ज़ुलमतें छा गईं और मौसम भी देखो खिज़ाँ बार है
हादीए दीन ज़रूरत है अब आप की फिर ज़माने को खैरुल बशर चाहिए

उसकी सुनता है रब्बुल उला बिलयकीं हाले दिल पुर असर हो मुअद्दब रहे
बंदगी का तक़ाज़ा है ऐ हमनवा इल्तेजा लब पे हो चश्मे तर चाहिए

क़ादरी बज़्म की नेमते खुसरवी दस्ते मुर्शिद से पाई नजाते उखरवी
फैज़ कलमे का निसबते क़दीरी मिली अब ना ज़र ना तो लाल व गोहर चाहिए

हिज्र की रात बेचैनीयाँ क्या कहूँ आज 'साहिब' भी खस्ता जिगर हो चले
जाँ ब-लब है मरीज़े वफा आ भी जा यार की ही खबर नामाबर चाहिए

देरीना ख्वाब

तामीरे कायनात का देरीना ख्वाब हूँ
औराक़े ज़िंदगी की मुकम्मल किताब हूँ

उलझे हुए हैं आज भी अहले खिर्द यहाँ
जलवा हों यह कि पर्दा नशीं का नकाब हूँ

मेरे वजूद ही से चमन पुर वकार है
कांटों के बीच देखिए मिस्ले गुलाब हूँ

गौस व कुतुब, सिकंदर व फरहाद व बायज़ीद
आईनए वजूद में इक इंकेलाब हूँ

मूसा कलीम हूँ कहीं जलवा हूँ तूर का
सामेअ कहीं पे ओर कहीं पे खिताब हूँ

यह सच है पी लिया हूँ मगर चश्मे नाज़ से
और लोग कह रहे हैं कि ग़र्के शराब हूँ

'साहिब' निगाहे यार ने थामा है हर नफ्स
अल्लाह का करम है बहुत कामयाब हूँ

कलामे 'हारिस' हैद्राबादी

बुलबुलो खुश हो कि अब फस्ले बहार आने को है
शादमाँ हो जाओ मौसम खुशगवार आने को है
मुद्दतें गुज़री हैं दिल को इज़्तेराबे शौक में
बेकरारी रास्ता दे अब करार आने को है
साज़गारे मारिफत खुद ले के मिज़राबे यकीं
राज़े हस्ती का बजाने को सितार आने को है
सर खमीदह बाअदब होशियार शर्मिंदा नज़र
ताजदारे औलियाए ज़ी वक़ार आने को है
फैसला आमद का जिस की रोज़े अव्वल में हुआ
आ गया वह दिन वह मर्दे नामदार आने को है
कोना कोना कर तू 'हारिस' दिल के हुजरे का सफा
नूरे ज़ाते किब्रीया बन कर वह यार आने को है
'हारिस' दमे आखिर वह बंदा है खुश नसीब
जिसकी ज़बाँ से कलमए तय्यब निकल गया
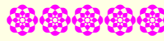
पोशीदा जिस के सीने में कलमे का राज़ है
ऐ बंदए खुदा वही बंदा नवाज़ है

जब यादे यार आई तो सर को झुका लिया
ताअत यही और यही मेरी नमाज़ है

है बेनियाज़ अपनी इताअत से उसको क्या
बंदा नियाज़मंद खुदा बेनियाज़ है

ज़ाहिद को अपनी ज़ोहद व इबादत पे है घमंड

लेकिन गुनहगार को रेहमत पे नाज़ है

दम है वही जो दम की खबर लाए दमबदम
आवाज़ जो ना दे वही बेकार साज़ है

वह कान में तो कुछ ना कहे और कह उठे
'हारिस' किसी के आगे ना कहना यह राज़ है
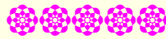
कलामे 'हारिस'

हूँ जान व दिल से ना क्यूँ अपने पीर के सदके
गरीब क्यूँ ना हो कामिल फकीर के सदके

वह बेखबर नहीं हालत से मेरी वाकिफ हैं
मैं ऐसे मुर्शिदे रौशन ज़मीर के सदके

लगाया ताक के तूने निशाना जो दिल पर
यह तेरी ताक के कुरबाँ व तीर के सदके

कहाँ से देखिए दस्ते करम दराज़ हुआ
गुलामे गौस हूँ में दस्तगीर के सदके

यह जान व माल है क्या चीज़ उनके कदमों पर
जो बस चले तो करूँ दिल को पीर के सदके

जब ऐसे कारे नुमायाँ करे रियासत में
ना क्यूँ हो शाह भी अपने वज़ीर के सदके

निगाहे क़द्र हमेशा रही है 'हारिस' पर
मैं अपने पीर यह पाशाह क़दीर के सदके
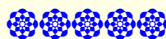
आइए देखिए तफसील ज़रा गुंबद की
नक्श दीवार में तफसीर है क्या गुंबद की
शश जिहत से जो ना वाकिफ हो उसे समझाओ
नाम गुंबद है मगर शान है क्या गुंबद की
होगी ज़ाहिर तो निकल आएगा बातिन का पता
अभी गुंबद में है सब शर्ब व हया गुंबद की
गूंजती रहती है आलम में जो आवाज़े अज़ाँ
शक नहीं है बखुदा है यह सदा गुंबद की
इल्मे बातिन ही से ईजाद हुआ है यह मकाँ
बे सबब के नहीं डाली है बिना गुंबद की
वह हरम छोड दे और दैर से यह मुँह मोडे
गर लगे शेख व ब्रहमन को हवा गुंबद की
हो जो इस राज़ से वाकिफ, है वही महदीए दीं
जो ना वाकिफ हो तो क्या इस में खता गुंबद की
शर्क़ ता ग़र्ब , जुनूब शुमाल, तहत फौक
कौनसी जा नहीं फैली है ज़िया गुंबद की
आप के इल्म से बाबा खलीफतुर् रहमान
बन गई सिर्रे इलाही यह सरा गुंबद की
नहीं जाना बखुदा कोई हकीकते अस्ली
हादिए दीने मुहम्मद कि सिवा गुंबद की
सुनने वाला है तो वह कान लगा कर सुन ले
आ रही है दिले 'हारिस' से सदा गुंबद की
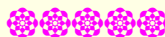
है वक्ते करम बख्शी ऐ शेख करीमुल्लाह
झेला हूँ बहुत सख्ती ऐ शेख करीमुल्लाह

तुम ने जो पिलाई थी हाथों से मए इरफाँ
अब तक है वही मस्ती ऐ शेख करीमुल्लाह

जैसी हो गुज़ारूँगा गैरों से ना माँगूंगा
गर लाख हो तंग दस्ती ऐ शेख करीमुल्लाह

अल्लाह के बंदों को अल्लाह की हाजत है
बसने को है वह बस्ती ऐ शेख करीमुल्लाह

कलमा हो बलंदी पर अब चांद के सीने पर
हो औज पर अब पस्ती ऐ शेख करीमुल्लाह

खुम खानए वेहदत जो तुम ने मुझे बख्शी है
देता हूँ बहुत सस्ती ऐ शेख करीमुल्लाह

सीने में भरा इरफाँ है आप का यह एहसाँ
'हारिस' की है क्या हस्ती ऐ शेख करीमुल्लाह

बीबी हाफ़िज़ा की तारीफ में

'हारिस' का कलाम

ऐ मेरी नूरे नज़र रूहे मुअत्तर हाफिज़ा
भूल जाऊँ मैं तुम्हारी याद क्यूँकर हाफिज़ा

बाप की लख्ते जिगर हो जाने मादर हाफिज़ा
फातिमा बिन्ते नबी की आले अतहर हाफिज़ा

गुम हुआ जाता हूँ तेरी याद में दो दो पहर
हाफेज़ा कमज़ोर करदी याद आकर हाफिज़ा

इल्म सीना से था रौशन दिल तुम्हारा इस लिए
नूर से पुरनूर है क़ब्रे मुनव्वर हाफिज़ा

मिल ही जाऐंगे दरे जन्नत पे किजीए इंतेज़ार
आ रहे हैं कल को कलमे की पकड कर हाफिज़ा

नाम है सय्यद मुहम्मद बादशाहे क़ादरी
मैं क़दीरे बेनवा हूँ वह है कादिर हाफिज़ा

डाल दो ख्वाने करम से उस को भी टुकडा ज़रा
यह भी 'हारिस' आप का है इक सगे दर हाफिज़ा

कलामे 'हारिस'

नज़र आने को है आलम को फिर जलवा मुहम्मद का
वही सूरत वही चेहरा वही नक्शा मुहम्मद का

है साया की जगह खुद नूरे हक साया मुहम्मद का
खुदा साए के बदले में है हमसाया मुहम्मद का

जो मनज़ूरे खुदा है बस वह मकसूदे मुहम्मद है
इरादा है खुदा का जो भी है मंशा मुहम्मद का

मकाम कलमए तय्यब है जिसके सीने व दिल में
तो दामन भी उसी के हाथ में आया मुहम्मद का

हटो ऐ हश्र वालो! रास्ता दो छोड दो मुझ को
वहाँ ठहरूँगा जाकर है जहाँ झंडा मुहम्मद का

खुदी जब तक रही बाकी नहीं आया खयाल उनका
हुई इक बेखुदी सी जब खयाल आया मुहम्मद का

जमाले कलमए तय्यब से जिस का दिल ना हो रौशन
नहीं मुमकिन वह देखे चेहरए ज़ेबा मुहम्मद का

कलीदे मग़फिरत हासिल अगर करनी हो ऐ 'हारिस'
ज़बाने दम से हर दम नाम लेता जा मुहम्मद का

सल्लल्लाहु तआला अला खैरि खल्किही व सय्यिदिना मुहम्मदिंव् व आलिही व सल्लम.

कलामे 'ज़ाकिर'

(हज़रत मुहम्मद ज़करिया क़ादरी 'ज़ाकिर' सिकंदराबादी)

नफ्स की आमद व शुद की जो करता है निगेहबानी
उसी पर मुनकशिफ होते हैं असरारे खुदा दानी

चला तो है हकीकत खोलने तखलीके आलम की
मगर अपनी हकीकत आज तक जानी ना पहचानी

ना ज़ौक़े 'मन अरफा' है और शौके खुद शनासी है
मुसलमाँ गोर में हैं और किताबों में मुसलमानी

बहुत कम हैं उठा लेते हैं जो बारे अमानत को
नहीं है शेख आसाँ कलमए तय्यब की निगेहबानी

जो हैं साबित कदम राहे सुलूक फक्र व फाक़ा में
हकीकत में वह करते हैं दो आलम की जहाँबानी

वह आरिफ हूँ कि हर दम झूलता हूँ दम के झूले में
इसी झूले से हासिल है मुझे मेराजे इरफानी
ज़हे किस्मत कि अपने पीर से हम ने भी पाया है
वह झूला जिस में झुलते हैं जनाबे गौसे समदानी

यह फैज़े मुर्शिदे कामिल क़दीरे बासफा का है
मुझे 'ज़ाकिर' बना कर सौंप दी दम की निगेहबानी

❁❁❁❁❁
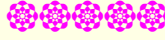
रख ता ब-नफ्स पर ध्यान, कामिल है यही ईमान

सांसें हैं जो यह हर दम जारी
कलमे के हैं यह असरारे खफी
ईमान के हैं यह दो मोती
इस राज़ को पाए हक के वली
क्यूँ जान के है अंजान कामिल है यही ईमान

कलमा ही सारी ज़ीनत है
कलमा ही में कुल की हकीकत है
कलमा ही जाने इबादत है
कलमा ही कलीदे जन्नत है
पुख्ता है यही इरफान कामिल है यही ईमान

गिर जाएगा यह नासूती महल
ओ अक्ल के दुश्मन अब तो संभल
इस्लाम का फर्ज़ है यह अव्वल
तहकीक से ले कलमे की कल
कुछ सोच समझ नादान कामिल है यही ईमान

कुरआन वजूद के सी (३०) पारे
पढ उन को कभी ऐ बेचारे
मुर्शिद ही पढाता है सारे
फिरता है कहाँ मारे मारे
कर अपनी ज़रा पहचान कामिल है यही ईमान

नासूत से चल मलकूत में आ
मलकूत से चल जबरूत में आ
जबरूत से चल लाहूत में आ
लाहूत से चल हाहूत में आ
सयाहूत ह आला शान कामिल है यही ईमान

याँ नक्द ही सौदे हैं बिकते
इस हाथ से ले उस हाथ से दे
याँ मोल ले जिस का जी चाहे
और दाम भी हैं सब से सस्ते
जारी है यहाँ फैज़ान कामिल है यही ईमान

इस इल्म को जिस ने है जाना
इस कल को है जिस ने पहचाना
कायम जो रखे ताना बाना
मोमिन है वही मर्दे दाना
इस भेद को पहले जान कामिल है यही ईमान

जो सांचे गुरू के हैं चेले
काटे ना कटे मारे ना मरे
दज्जाल का बस भी चल ना सके
होते हैं बडे धुन के पक्के
उनको ना समझ नादान कामिल है यही ईमान

है साफ मेरे मुर्शिद का चलन   और पाक अछूता है दामन
क्या रूप है क्या प्यारी है फबन   इस रूप पे वारूँ तन मन धन
यह जान भी है कुरबान कामिल है यही ईमान
अब औज पे मेरी किस्मत है   मेराज की हासिल दौलत है
सद शुक्र 'क़दीर' से निसबत है   'ज़ाकिर' पे खुदा की रहमत है
यह पीर का है एहसान कामिल है यही ईमान
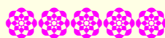
शेख कामिल से खुला है कुफ्ले बाबे ज़िंदगी
आ नहीं सकता गहन में आफताबे ज़िंदगी

कलमए तय्यब के जुज़ हैं यह जो सांसें हैं तेरी
क़द्र कर उनकी कि दुनया है हिसाबे ज़िंदगी

पढ लिया मैंने जो पढना मुझ पे फर्ज़े ऐन था
कर लिया है मैंने तकमीले निसाबे ज़िंदगी

चुन लिया गंजे खफी से गौहरे नायाब को
ज़िंदगी में पा लिया मैंने सवाबे ज़िंदगी

होश में अब तू ही लाए साकी रोज़े अज़ल
मस्तीयों में चूर है मस्ते शराबे ज़िंदगी

मुझ सा नाकारा अदम ही में जो रहता खूब था
क्यूँ दिया या रब मुझे नाहक अज़ाबे ज़िंदगी

उम्र भर करता रहा 'ज़ाकिर' परस्तिश हुस्न की
मदरसे में इश्क के पढ कर किताबे ज़िंदगी

मुहम्मद उस्मान शाह क़ादरी (मुसव्विर) 'यकीन'

सिकंदराबादी का कलाम

मेरा माल और जान तेरे हवाले
मेरा दीन व ईमान तेरे हवाले
मेरी जान व ईमान तेरे हवाले
मैं आशीक हूँ तेरा तू अपना बना ले
ऐ सय्यद मुहम्मद मेरे भोले भाले

तू सादात है तेरे घर की है दौलत
लुटाता है जग में बिला कैद व कीमत
ना देखा सखी दाता ऐसा बाहिम्मत
सियाहकार पर कर तू चश्मे इनायत
तू ही लाज रख मेरी ओ कमली वाले

मैं भूका हूँ तेरे ही लुत्फ व करम का
मैं जामे मुहब्बत का हूँ तेरी प्यासा
नहीं कोई वल्लाह तू ही दे सहारा
मैं मोहताज चश्म व करम का हूँ तेरा
सहारा है तेरा अब तू ही संभाले

तेरे आगे है हेच सारा ज़माना
है जैसा कि सूरज को शमा बनाना
तू पाया है कलमे की कल का खज़ाना
सज़ावार है तुझ को कलमा पढाना
धनी है तू कलमे का शिवराज वाले

तेरे आगे बन कर करे क्या खलीफा
कहाँ इश्क का लाऐं यह मशगला
ज़रा चाहिए इस को भी हौसला
यह खिदमत नहीं होती हम से अदा
फिर इस पर भी देता है तू ही निभाले

सिवा तेरे सजती नहीं है यह इज़्ज़त
भिकारी हूँ दर का बस इतनी है निसबत
तेरे बादह ख्वारों की तलछट गनीमत
अदा हो नहीं सकती हम से यह खिदमत
बिला नोश हूँ सिर्फ बू ही सुंघा ले

यह हिलता है कट्टा ना गिरता कभी है
ना सडता ना गलता ना जलता कभी है
खेडे गांव देहात के हैं मुअम्मे
तू हल करता मसलों के कट्टे ना कट्टे
फक़त कलमए तय्यब से हलकट्टे वाले

तमन्ना है तेरे ही कदमों पे सर हो
अजल भी खडी हो शफाअत तेरी हो
मेरा ज़ादे राह कलमए-तय्यब बंधा हो
ज़बाँ से भी हर दम अदा हो रहा हो
गुनाहगार जाता है इज़्ज़त बचा ले

तलब रोज़े मेहशर करे कारनामा
ना सूझे वाँ कोई हीला बहाना
सियाह है 'यक़ीं' तेरा आमाल नामा
अभी से तू कर ले अपना ठिकाना
'क़दीर' अपनी कंबल में हम को छुपा ले
ऐ सय्यद मुहम्मद मेरे भोले भाले

रफअत हुसैनी शाह क़ादरी 'रफअत' भोपाली का कलाम

इस अंधेरे के लिए मशअले यज़दाँ लाए
आप तौहीद का वह महरे दरख्शाँ लाए

है ज़िया कलमए-अहमद की तेरे चेहरे पर
ताबे नज़्ज़ारा कहाँ से कोई इंसाँ लाए

तालिबाने मऐ इरफाँ के मुक़द्दर जागे
बादशाहे यमनी सागरे इरफाँ लाए

हश्र का खौफ मिटे दिल से जो पढ ले यकबार
कलमा अब ऐसा मेरे मुर्शिदे ज़ीशाँ लाए

फूल के हार कोई ज़र कोई दस्तार व अबा
हम तेरी नज़र में जान व दिल व ईमाँ लाए

'रफअते' सोख्ता उठ देख तेरे पीर व वली
क़ादरी शाह दवाए गमे दौराँ लाए
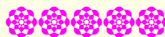
जहाँ भी जलवा नुमा उनको पा लिया मैंने
सरे नियाज़ वहीं बस झुका लिया मैंने

अगर जो आप को अपना बना लिया मैंने
कसम खुदा की दो आलम को पा लिया मैंने

नहीं उठेगा तेरे दर से देख सर मेरा
झुका लिया जो उसे बस झुका लिया मैंने

वह राज़े हक जो निहाँ था किसी के सीने में
हज़ार शुक्र उसे आज पा लिया मैंने

किसी की नज़रे करम आज मुझ पे हो जाए
तलब का हाथ में कासा उठा लिया मैंने

में बन के दहर में निकलूँगा तेरा दीवाना
इसी खयाल में दिल को जमा लिया मैंने

ज़ियाए नूर से दिल जगमगा उठा है आज
कि राज़ कलमए तय्यब का पा लिया मैंने

नज़र नज़र में तेरी शक्ल ही हुवैदा है
नफस नफस में तेरा ज़िक्र पा लिया मैंने

कि जिस तरह से बसे गुल के जिस्म में खुश्बू
इसी तरह तुझे दिल में बसा लिया मैंने

वह हुस्न जो कि फरिश्तों को भी नसीब नहीं
तेरे खुलूस में वह हुस्न पा लिया मैंने

पियो पियो कि तुम्हें इज़्ने आम देता हूँ
कि अपने हाथ में सागर उठा लिया मैंने

कि आज बादशाह क़ादरी को ऐ 'रफअत'
यकीने क़ल्ब से मुर्शिद बना लिया मैंने

सय्यद शाह फज़्लुर् रहमान साहिब क़ादरी 'सईद'

जलाली (हैद्राबाद) का कलाम

जज़्बए शौक अगर खूगरे तदबीर भी हो
तुम मेरा ख्वाब हो और ख्वाब की ताबीर भी हो

दीदए नम ये तेरी खाम खयाली होगी
हुस्न रुसवा ना हो और इश्क की तशहीर भी हो

क्या सितम है तेरा ऐ हलकए ज़ुल्फे पेचाँ
दिल गिरफ्तार ना हो और तेरा नखचीर भी हो

क़ल्ब व कुरआँ के सिवा है कोई दुनया में किताब
जिस में इजमाल भी हो इजमाल की तफसीर भी हो

कैफे आशुफ्ता सरी लाए तो ऐसा लाए
कि खता भी ना हो आईनए तक़सीर भी हो

साकिया लुत्फ हो मुझ को वह मऐ आगाही
नश्शा जिस में ना हो और नश्शा की ताबीर भी हो

चोट खाया हुआ होता है वही दिल जिस में
ज़ुलमते गम भी हो और हुस्न की तनवीर भी हो

मेरे माबूद हो जब नज़अ के आलम में 'सईद'
नाम भी लब पे हो दिल में तेरी तस्वीर भी हो

रुबाई

गुलामे 'क़दीर' शेख मुहम्मद क़ादरी कुरैशी खलीफा नंबर ३९, साकिन भोपाल

कामिलान रा राहनुमा व गुमरहान रा खिज़्रे राह
ज़ाते पाक क़िब्लए मन सय्यद मुहम्मद बादशाह
यक निगाहे लुत्फ बहरे करीमुल्लाह बर हाले मन
सदकए हसनैन महरे ख्वाजए आलम पनाह
('गुलाम')

क़तअए तारीख इशाअते गुलज़ारे क़दीर

(तीसरी बार)

अनवारे बसीर है यही गुलज़ारे क़दीर
आवाज़ ज़मीर है यही गुलज़ारे क़दीर
१०५३, ३१४, १५,२५, २५८, ३१४
'गौहर' ने कही खूब यह 'साहिब' तारीख
पैगामे क़दीर है यही गुलज़ारे क़दीर
१९७९

खाकपाऐ क़दीर रहमतुल्लाहि अलैह गुलाम ख्वाजा मोईनुद्दीन बी.ए. 'गौहर' करीमनगरी

‘हारिस’ का कलाम

(मोहतरम अब्दुल हादी क़ादरी, ‘हारिस’ हैद्राबादी)

जो जान ले कोई अज़्मत व शान कलमे की
बना ले दिल को सरापा ज़बान कलमे की

नहीं है कलमए तय्यब से कोई शै खाली
है ज़र्रे ज़र्रे में पोशीदा जान कलमे की

दर अस्ल कलमए तय्यबा ही बानीए कुल है
यह कायनात है सब मेहमान कलमे की

पढो तो ऐसा पढो दिल से कलमए तय्यब
लिसाने क़ल्ब बने मेहरबान कलमे की

सिवाए मुर्शिदे कामिल नहीं कोई वाकिफ
खुदा ने बख्शी है उनको ज़बान कलमे की

मैं कांप जाता हूँ तहरीरे ‘ला’ से ऐ ‘हारिस’
बयाँ क्या करूँ अज़्मत व शान कलमे की

अनवारे 'क़दीर'

मोहतरम सय्यद मुहियुद्दीन शाह क़ादरी अलक़दीरी साबिर तवक्कली 'शाहीन' करीमनगरी का मुंतखब कलाम

कलीदे मारिफत

सरापा आईना दीदे यार है कलमा
नज़र की रौशनी दिल का करार है कलमा

अरूसे लाला व गुल का सुहाग है कलमा
बहार कहती है जाने बहार है कलमा

तजल्लियात का मरकज़ सदाए कुन फयकूँ
सदाए कुन फयकूँ का मदार है कलमा

नफ्स नफ्स जो उरूज व नुज़ूल पाता रहा
निगाहे इश्क में वह ज़िक्र यार है कलमा

यही है बाअसे तखलीके आलमे हस्ती
हर एक ज़र्रे में सरगर्मे कार है कलमा

सहीह तलब हो तो कलमे से क्या नहीं मिलता
खुदा गवाह के हाजत बरार है कलमा

कभी मज़ाहिबे आलम जिसे भुला ना सके
तजल्लियात का वह शाहकार है कलमा

बिला तअय्युन अवक़ात हर ज़माने में
अज़ल से ता ब-अबद यादगार है कलमा

दरे 'क़दीर' से 'शाहीन' हम ने यह समझा
जमीअ उलूम का आईना दार है कलमा

सुलतानुल अज़कार

कौनैन में सरचश्मए फैज़ान है कलमा
तौहीद व रिसालत का निगेहबान है कलमा
अल्लाह का मखलूक पे एहसान है कलमा
मखलूक की तसदीक का सामान है कलमा
ऐ दीद के मोहताज ज़रा देख इधर भी
सर ता बक़दम जलवए रहमान है कलमा
ईमान की ख्वाहिश हे तो सौ बार कहूँगा
ईमान है ईमान है ईमान है कलमा
ऐ क़ारिए कुरआँ तुझे अल्लाह नज़र दे
तो बोल उठे बोलता कुरआन है कलमा
हर रंग में मौजूद है कलमे की तजल्ली
हर नूर के शैदाई का अरमान है कलमा
इस दिल में कोई गैर जगह पा नहीं सकता
जिस दिल का शब व रोज़ निगहबान है कलमा
यह तल्ख हकीकत कोई माने कि ना माने
अफसानए तखलीक का उनवान है कलमा
ऐ तालिबे हक ममलिकते ज़िक्र व शुग्ल में
सब आजिज़ व महकूम हैं सुलतान है कलमा
दुनया के लिए अम्न व मुसावात की दावत
इंसाँ के लिए खैर का एलान है कलमा
एक सांस सहीह हो तो उतर जाता है दिल में
ऐ दोस्त ना घबरा बहुत आसान है कलमा
बे पर्दा जहाँ ज़ात नज़र आती है 'साबिर'
वल्लाह वह आईनए इरफान है कलमा

तोहफए मेराज

जबीने अर्श पर हक ने लिखा कलमा मुहम्मद का
सिफात व ज़ात का पर्दा बना कलमा मुहम्मद का
अज़ल में हक तआला ने पढा कलमा मुहम्मद का
मुहम्मद ने मुहम्मद से सुना कलमा मुहम्मद का
सरे मीसाक़ नबीयों ने दिल व जाँ से गवाही दी
ज़बाने 'मन अरफा' से जब सुना कलमा मुहम्मद का
सफे अरवाह में तसदीक की सिद्दीके अकबर ने
अली ने बत्ने मादर में पढा कलमा मुहम्मद का
जहाँ क़ल्ब व नज़र ने मोजेज़ाते मुस्तफा देखे
तहे दिल से सहाबा ने कहा कलमा मुहम्मद का
बुला कर अर्श पर खुद हक ने जब तसदीक फरमादी
शबे मेराज पूरा हो गया कलमा मुहम्मद का
क़सम अल्लाह की उस ने दो आलम के मज़े लूटे
खुलूसे दिल से जिस ने पढ लिया कलमा मुहम्मद का
ज़मीं से आस्माँ तक ज़र्रा ज़र्रा विर्द करता है
खुदाई पढती है सुबह व मसा कलमा मुहम्मद का
जिसे अल्लाह ने अपने लिए मखसूस फरमाया
उसे बिलक़ल्ब हासिल हो गया कलमा मुहम्मद का
कहाँ की आतिशे दोज़ख यह दोज़ख को बुझा देगा
ज़बाँ तक जब भी दिल से आएगा कलमा मुहम्मद का
मेरा ईमान है वाइज़ यह दुनया हो या वह दुनया
यकीनन हर जगह काम आऐगा कलमा मुहम्मद का
दमे आखिर या क़ब्र व हश्र में कब भूल सकता है?
किताबे दिल पे जिस ने लिख लिया कलमा मुहम्मद का
मकामे आब व खाक व बाद व आतिश जानना हो तो
किसी ज़िंदा नफस यमनी से पा कलमा मुहम्मद का
कहाँ की लाश ऐ 'साबिर' कफन तक गल नहीं सकता
क़दीर अल्लाह से जिस को मिला कलमा मुहम्मद का

तमन्नाए आखिर

दीदए बीना अता कर रूह की पहचान दे
देने वाले मुझ को अपने आप का इरफान दे
कौन हूँ कैसे बना हूँ किस लिए आया हूँ मैं
कम से कम इतना तो मुझ को इल्म दे ईकान दे
मुब्तेलाए नूर व ज़ुलमत तिश्नए तहकीक हूँ
अब्द व रब को जान लूँ वह जौहरे ईमान दे
कौन है सज्दे के काबिल किस को मैं सज्दा करूँ
वह नज़र वह रौशनी वह जान वह पहचान दे
अपनी ही हस्ती में हर शै का तमाशा देख लूँ
देखने वाले को ऐसी देखने की शान दे
खुद के आगे खुद को रख कर 'मन अरफा' का दर्स लूँ
यूँ मेरे माबूद अपनी दीद का अरमान दे
एक ही पल में तिलसमे कुफ्र व ईमाँ तोड दूँ
नुक्तए वेहदत का वह उमडा हुआ तूफान दे
अपने मोहताजे करम पर भी खुदारा इक नज़र
बे सर व सामाँ खडा हूँ साज़ दे सामान दे
वक्ते आखिर नूर की खलअत अता फरमा मुझे
अपनी खुशनूदी का मेरे हाथ में फरमान दे
ज़र्रे ज़र्रे में जमाले यार का परतव मिले
वह निहगाहे शौक को आईनए इरफान दे
बस यही 'शाहीन' इक इल्तेजा है या 'क़दीर'
मेरी इक इक सांस में मुँह बोलता कुरआन दे

दावते आम

किसी पीरे कामिल से ईमान ले लो

खुदा दे तो बख्शिश का सामान ले लो

वह मोमिन नहीं जिस ने कलमा ना समझा

कहीं मिल सके तो यह इरफान ले लो

मताए दिल व जाँ दिल व जाँ का कलमा

यही है सुकूने दिल व जान ले लो

जो एक सांस में शश जिहत खोल डाले

किसी अहले दिल से वह कुरआन ले लो

उठो कलमए हक की तसदीक पा लो

बढो दौलते ज़िक्रे रहमान ले लो

जो गाफिल मरोगे तो बख्शिश ना होगी

जो हो कार आमद वह सामान ले लो

कोई सांस बे-कलमा आए ना जाए

दिले ज़िंदा से अहद व पैमान ले लो

अगर तुम को अल्लाह तौफीक़ दे तो

मेरे पीर से रूहे ईमान ले लो

गुलामों की 'शाहीन' निसबत यही है

जो निसबत से मिल जाए ईमान ले लो

हक आश्ना

पैकरे हुस्न व वफा हैं बादशाहे क़ादरी
दीदए हक आश्ना हैं बादशाहे क़ादरी

आरिफे दम वाकिफे असरारे मेराजे खुदी
'मन अरफा' के पेशवा हैं बादशाहे क़ादरी

जिसने इक इक सांस में कुरआन की तसदीक की
वह फकीरे बाखुदा हैं बादशाहे क़ादरी

पर्दा दारे कुफ्र व ईमाँ जलवए रंगे वफा
शश जिहत के रहनुमा हैं बादशाहे क़ादरी

नगमए तारे नफ्स मिज़राबे हक आवाज़े कुन
कौन जाने और क्या हैं बादशाहे क़ादरी

रूहे इरफाँ शरहे कुरआँ सोज़ व साज़े ज़िंदगी
सर ता पा हक आश्ना हैं बादशाहे क़ादरी

मंज़िले दैर व हरम हो या मकामे कुफ्र व दीं
हर तरफ जलवा नुमा हैं बादशाहे क़ादरी

बिल्लिसाँ अहले खिरद क्या खाक समझेंगे उन्हें
अहले दिल के दिलरुबा हैं बादशाहे क़ादरी

आओ ऐ मसनद नशीनो ! नक्दे ईमाँ मांग लो
नाइबे खैरुल वरा हैं बादशाहे क़ादरी

क्यूँ मैं ऐ 'शाहीन' तूफाने हवादिस से डरूँ
जबकि मेरे नाखुदा हैं बादशाहे क़ादरी

रहबरे कामिल

रहबरे कामिल बता ऐ चश्मे हैराँ कौन है
नाइबे हक मज़हरे कुल नूरे यज़दाँ कौन है

वजहे तखलीके दो आलम नब्ज़े दौराँ कौन है
वक्त का दस्तूर शरहे कुफ्र व ईमाँ कौन है

जलवए कौन व मकाँ तस्वीरे जानाँ कौन है
अपनी हस्ती में नुमायाँ और पिन्हाँ कौन है

वाकिफे अम्र व नही तफसीरे कुरआँ कौन है
'मन अरफा' में दमबदम दम का निगहबाँ कौन है

कलमए तय्यब की जब तसदीक भी हासिल नहीं
शेख जी फिर आप ही कहिए मुसलमाँ कौन है

लोग जो चाहें कहें मैं तो कहूँगा बरमला
मेरे मुर्शिद के सिवा हर सू नुमायाँ कौन है

किस के जलवे हर तरफ दिखला रहे हैं आईना
मैं नहीं जब मैं नहीं तो मुझ में पिन्हाँ कौन है

कौन बढ कर मिल रहा है वालेहाना मौत से
आज भी ऐ दिल हरीफे मौजे तूफाँ कौन है

तुम से ऐ ज़ाहिर परस्तो अब में यह कैसे कहूँ
किस का मैं अफसाना हूँ या मेरा उनवाँ कौन है

किस से ऐ जज़्बे दरूँ पूछूँ मैं असरारे अज़ल
शश जिहत जो खोल दे वह ज़िंदा कुरआँ कौन है

'मन अरफा' के राज़दाँ हैं बादशाहे क़ादरी
फिर ना कहना ऐ जहाँ वालो वह इंसाँ कौन है

क्यूँ मैं ऐ 'साबिर' मुसीबत में किसी का नाम लूँ
मेरा मेरे पीर से बढ कर निगहबाँ कौन है

जाने ग़ज़ल

मेरे पीर व मुर्शिद मेरे शेख व रहबर, मेरा दीन व ईमाँ तुम ही हो तुम ही हो
अंधेरों में जिस ने मेरा हाथ थामा वह शमए फरोज़ाँ तुम ही हो तुम ही हो

मेरा शेर व नगमा मेरा दर्द व दिरमाँ मेरा साज़ व सामाँ तुम ही हो तुम ही हो
मैं अपनी दुआ में किसे हक से माँगूं मेरा दिल मेरी जान तुम ही हो तुम ही हो

तुम्हें जब से मेरी निगाह ने देखा शरीअत को जाना तरीकत को समझा
गलत या सहीह जो भी समझे यह दुनया दो आलम का उनवाँ तुम ही हो तुम ही हो

तुम्हें जब यह दैर व हरम मान लेंगे खुद अपनी हकीकत को पहचान लेंगे
जो पल में अंधेरों का मुँह फेर देगी वह सुबहे दरख्शाँ तुम ही हो तुम ही हो

बजुज़ आप के किस को अपनाऐं आखिर, यह दर छोड कर हम किधर जाऐं आखिर
जहाँ सब मशाइख सफ बस्ता हाज़िर वह सुलताने दौराँ तुम ही हो तुम ही हो

मेरे कुफ्र व ईमाँ के इन फैसलों को खुदा के लिए दूसरों पर ना छोडो
मेरे पीर मेरे लिए मेरे हक में हदीस और कुरआँ तुम ही हो तुम ही हो

तुम्हे अपनी निसबत की सौगंध मौला मेरी बंदगी पर कभी शक ना करना
जिसे रात दिन मैंने सज्दे किए हैं वह तस्वीरे जानाँ तुम ही हो तुम ही हो

यह दुनया नहीं आप का अपना दिल भी तडप कर यह आवाज़ देता रहेगा
उठो आज 'साबिर' दोनों जहाँ में हकीकी निगेहबाँ तुम ही हो तुम ही हो

सिलसिलए हिदायत

सद शुक्रे किर्दगार कि वह रहनुमा मिला
हर बेखबर को मंज़िले हक का पता मिला

एक एक सांस कलमए तय्यब से जी उठी
शाहे यमन के सदके वह ज़िक्रे खुदा मिला

वल्लाह उसने शाहों को नीचा दिखा दिया
सुलताने शश जिहत का जिसे आसरा मिला

पहलू में क़ल्ब जिंदए जावेद हो गया
घर बैठे ऐसी शान का हक आशना मिला

अब सारी कायनात खफा हो तो गम नहीं
मैं मुतमइन हूँ मुझ को मेरा मुद्दआ मिला

हर सांस आते जाते यह तसदीक करती है
कलमे से 'मन अरफा' का हकीकी पता मिला

मेरी नज़र में गौस से वल्लाह कम नहीं
जिन से कि यह वसीलए गौसुल वरा मिला

शाहों में वह फकीर बडा खुस नसीब है
जिस को मेरे क़दीर का यह सिलसिला मिला

अब तो निगाहे शौक में जचता नहीं कोई
वह ला जवाब तोहफए महर व वफा मिला

दैर व हरम में शेख व ब्रहमन ना पा सके
हम को दिल व निगाह में वह रास्ता मिला

'शाहीन' जब से बादशाहे क़ादरी मिले
खुद अपने ही वजूद में अपना खुदा मिला

नज़रे क़दीर रहमतुल्लाहि अलैह

हज़रत क़िब्ला व काबा सय्यदी व सनदी मुर्शिदी व मौलाई ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी रहमतुल्लाहि अलैह के विसाले मुबारक पर जो आंसू शेर में ढल गए वह पेशे खिदमत हैं

कौन यह जाने तमन्ना जाने जाँ खामोश है
शिद्दते गम से ज़मीं चुप आस्माँ खामोश है

किस क़द्र कदमों से लिपट कर रो दिया सारा चमन
यह वह मंज़िल है जहाँ खुद दास्ताँ खामोश है

जिस ने वाज़ेह कर दिए थे कुफ्र व दीन के फैसले
अब वही फरमाँरवाए इंस व जाँ खामोश है

जिस के रम्ज़े 'मन अरफा' पर झूमता अर्शे बरीं
आज खुद ज़ेरे ज़मीं वह आस्माँ खामोश है

कौन था वह जाने मंज़िल जिसके रुखसत होते ही
रास्तों ने साथ छोडा कारवाँ खामोश है

किस की मय्यत पर तडप कर कह रही है शश जिहत
आज मेरी आब्रू का पासबाँ खामोश है

किस ने यह चुपके से जाँ जाँ-आफरीं को सौंप दी
किस के मातम में हयाते जावदाँ खामोश है

अन-गिनत जिस ने सजा रखे थे गुलज़ारे क़दीर
आज रंग व नूर का वह तर्जुमाँ खामोश है

जिस की खामोशी भी एक हुस्ने बयाँ से कम ना थी
अब वही इंसानिय्यत का राज़दाँ खामोश है

सब यही कहते हैं कि 'शाहीन' कुछ तू भी सुना
क्या सुनाऊँ जब कि मेरा क़द्रदाँ खामोश है

रहबरे अनाम की बारगाह में सलाम

हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी रहमतुल्लाहि अलैह

ऐ शाहे औलिया सलामुन अलैक ऐ चिरागे वफा सलामुन अलैक

इब्ने मुश्किल कुशा सलामुन अलैक जाने गौसुल वरा सलामुन अलैक

मंज़िले हक नुमा सलामुन अलैक फख्रे शाह व गदा सलामुन अलैक

नफ्से हक आशना सलामुन अलैक क़ल्बे महर व वफा सलामुन अलैक

रूहे सब्र व रज़ा सलामुन अलैक सरे कर्ब व बला सलामुन अलैक

एक ही नुक्तए हक में समझा दिया इब्तेदा व इंतेहा सलामुन अलैक

अहले दिल ने सुना 'मन अरफा' आप से आप से हक मिला सलामुन अलैक

तुम ने अकताए आलम में हर फर्द को दीन पहुंचा दिया सलामुन अलैक

किजीए हक तआला से इतनी दुआ ऐ मुजीबुद् दुआ सलामुन अलैक

हर्फ आऐ ना अपनी वफा पर कभी ख्वाजए दो सरा सलामुन अलैक

दमबदम अपनी मंज़िल की जानिब बढे क़ादरी काफिला सलामुन अलैक

ता अबद आप के हक में कहता रहे
'साबिरे' बे-नवा सलामुन अलैक

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम
''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह''
﴿اَلَآ اِنَّ اَوۡلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَ لَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ﴾
जहाँ में अहले ईमाँ सूरते खुरशीद जीते हैं
इधर डूबे उधर निकले उधर डूबे इधर निकले
(अल्लामा इकबाल)

हज़रते 'क़दीर' के विसाल का तज़किरा

हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी रहमतुल्लाहि अलैह

मताऐ लौह व कलम छिन गई तो क्या गम है
कि खूने दिल में डुबो ली हैं उंगलियां मैंने

१३ मुहर्रमुल हराम १३९९ हि. मुताबिक १४ दिसंबर १९७८ बरोज़ जुमेरात बवक्ते फजर आप ने दाईए अजल को लब्बैक कहा और उसी मकाम पर आखरी सांस ली जहाँ से आप ने तमाम आलम को कलमए तय्यबा के अनवार व तजल्लियात की दावत दी. आप अकसर फरमाया करते कि अगर कलमए तय्यबा की दावत व तबलीग करते करते मुरीदीन ही के घर मौत आ जाए तो वो ज़िंदगी बडी कामयाब ज़िंदगी है. अलहम्दु लिल्लाह जो कहा वैसा ही कर दिखाया. अकसर यह भी कहते कि नहीं मालूम कौन नेक बख्त मेरा कफन लाएगा. शाने फकीरी देखिए कि अपना कफन भी अपने हाथों मोहय्या नहीं फरमाया बल्कि अल्लाह और उसके नेक बंदों पर छोड दिया. आखिरकार अहले सिलसिला की जानिब से खादिम बिरादरे मोहतरम सय्यद नूर मुहम्मद क़ादरी उर्फ चांद भाई, मोहतरम अब्दुल अज़ीज़ क़ादरी, मोहतरम शहाबुद्दीन खान क़ादरी ने तकफीन के लिए आखरी लिबास फराहम किया. अल्लाह उन्हें जज़ाए खैर दे.

आलमे ईजाद (दुनिया की पैदाइश) की खुसूसिय्यत का वह दिन जो अपने आग़ाज़ व अंजाम की जामइय्यत (मुकम्मल होने) में हर्फ़े अव्वल व आखिर है जिसे हम 'यौमे आशूरह' कहते हैं इसी दिन आप की वालिदा माजिदा ने विसाल फरमाया था. मामूल के मुताबिक आप की फातेहा सालाना और ईसाले सवाब के लिए आप हैद्राबाद से हलकट्टा तशरीफ लाते हैं. यादे हुसैन रदियल्लाहु अन्हू में आशूरे का दिन तमाम हुआ. सुबहे सादिक आप की वालिदा माजिदा की सालाना फातेहा व दुआए मग़फिरत में शरीक रहे. हैद्राबाद, वाडी और हलकट्टा के बहुत से असहाबे खैर हाफिज़ा बाउली हलकट्टा पर मौजूद थे. चुंकि दो हफ्ते पहले ही से आप की तबीअत ठीक नहीं थी, उम्र का तकाज़ा सब की तवज्जोह का मरकज़ बना हुआ था. जांनिसाराने क़दीर पल पल खिदमत में हाज़िर अपने फराइज़ अंजाम दे रहे थे. हुज़ूर की सेहत इंतेहाई कमज़ोर हो चुकी थी. लेकिन आप की बे पनाह कुव्वते इरादी और इर्शादाते पीर की तकमील का हौसला हर सांस में जवान था. बार बार आप ज़िक्र की तलकीन फरमाते और यह कहते कि इस अज़ीम नेमत ''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की बिलक़ल्ब हिफाज़त ही ज़िंदगी है. और यह भी इर्शाद फरमाया कि ज़िंदगी का दार व मदार सांसों पर है. हम क्या रहेंगे जब ना रसूले खुदा रहे. फिर अहले सिलसिला की खिदमात से मुतअस्सिर होकर आप ने इन्तेहाई पुरसोज़ लहजे में फरमाया, जो जो मुझ पर एहसान किए हैं वह मुझे याद है, वह सूरतें मेरे सामने हैं, मैं दुआ करता हूँ : जानने वाला जान रहा था लेकिन हम अंजान क्या जानते? हैद्राबाद वापसी की तय्यारी होने लगी. अपनी बहू को याद फरमाया. वह खिदमत में हाज़िर हुई और हुज़ूर की कमज़ोरी और ज़ोफ व नक़ाहत (कमज़ोरी) मुतअस्सिर कर रहे थे, मेरी अहलिया की आंखों से आंसू बह निकले और वह कहने लगीं, बावा हुज़ूर! आप के सिवा हमारा कौन है? आप जहाँ तक हो सके अपनी सेहत का खयाल रखिए. बावा हुज़ूर ने फरमाया, ''दुल्हन! रंजीदा ना हो, तुम्हारा बाप जैसा भी गुज़रा है वह आलम पर ज़ाहिर है, तुम अच्छे रहोगे. मेरी करनी का खालिक सिला देंगे. बुज़ुर्गाने दीन के रास्ते को अपनाओ. जो ज़िक्र तुम को दिया गया है उसकी हिफाज़त करो.

इसके बाद पुरानी आदत के मुताबिक छे रूपये देते हुए फरमाया कि यह बच्चों में तकसीम कर देना, मैं दो दिन में आ रहा हूँ. अब आऊंगा तो नहीं जाऊंगा. (अल्लाह अल्लाह! क्या फैसला कुन इर्शाद फरमाया.) आखिरकार हैद्राबाद के लिए मोटर से रवानगी अमल में आई. खादिम और वाडी के अहले सिलसिला हुज़ूर को रुखसत करने रेलवे गेट वाडी तक हमराह आए थे. आप ने खादिम को तलब फरमाया, जब खादिम आप के करीब पहुंचा तो कहने लगे, हैद्राबाद कब आ रहे हो? खादिम ने कहा; जैसे बावा जान का इर्शाद. फरमाया घर के इंतेज़ामात तै (मुकम्मल) करके जल्द आना. फिर तालीमात की हिफाज़त और कलमए तय्यबा की तलकीन की हिदायत फरमाई. और मेरी बडी हमशीरा (बहन) साहिबा जो कि बेवा हैं, उन के बारे में हुक्म फरमाया कि उन का हर हाल में खयाल रखा करो, अपनी ज़िंदगी होशमंदी के साथ गुज़ारो और निहायत इत्मीनान से गुफ्तगू फरमाते रहे. इसके बाद रुखसती अमल में आई. यही गुलाम की गुलामी और हम-कलामी के शर्फ के आखरी लम्हात थे.

१२ मुहर्रम की रात और दिन गुज़रा. १३ मुहर्रम की रात में हैद्राबाद एक्सप्रेस से खादिम रवाना हुआ. नित नए खयाल आते रहे, वक्त के साथ साथ ज़हन भी करवटें बदल रहा था. ट्रेन पांच बजे सुबह नामपल्ली पहुंची. फतह दरवाज़ा पहुंच कर घर में कदम रखा ही था कि हमशीरह (बहन) की चीख कानों में गूंजने लगी कि 'साहिब' बावाजान चल बसे. 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'

यह सुनते ही जैसे पैरों तले ज़मीन निकल गई. अजीब कशमकश, यकीन व बेयकीनी का आलम था. दिमाग इस वाकेए को कबूल करने के लिए तय्यार ना था. हमारी ज़िंदगी का मालिक यूँ हमें मौत दे जाएगा कभी सोचा भी ना था. खादिम से आप के दो रिश्ते थे; एक जिस्मानी दूसरा रूहानी. बिलआखिर मशिय्यत (मंज़ूरे खुदा) के फैसले फैसले हुआ करते हैं, शायद गुलाम की दुआ को मेरे मौला निभा गए. खादिम ने कहा था :

यह माना चरागे सहर हो चला हूँ ना तकलीफ दूँगा शबे हिज्र तुम को
सरे बालीं आकर लगा देना कांधा अगर जान जाए सवेरे सवेरे

('साहिब')

जाने वाले वह अनवार व तजल्लियात की रौशनी छोड गए, जो भी इसे गहरे दिल से अपना लेगा वो यकीने मुहकम पा लेगा. मकामात बदलते हैं लेकिन इताअत (पैरवी) व फरमांबरदारी के मरकज़ कायम ही रहते हैं.

'गुलज़ारे क़दीर' के बागबान ऐसी आबयारी कर गए हैं कि अहले वफा इन फूलों से हमेशा बूए वफा हासिल करते ही रहेंगे. खिदमात रायगाँ नहीं जातीं, आज लाखों सोगवार अपने ''बावा'' के लिए अश्कबार (आंसू बहा रहे) हैं. लफ्ज़ 'बावा' लाखों शैदाइयों का एक मरकज़ी कलाम था और है जिस में ना जाने कितना प्यार, कितना बडा सहारा और कितना यकीन पोशीदा है. शरीअत के लेहाज़ से काम की तकमील का खयाल आया.

खादिम ने आपाजान से पूछा कि अज़ीज़ भाई कहाँ हैं तो पता चला कि बावाजान ने उन्हें रात ही में अपने पास रोक लिया था, मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ क़ादरी बावा हुज़ूर के साथ बडी देर तक जागते रहे, रात में आप की सेहत पहले की ब-निसबत बहुत ज़्यादा अच्छी थी, एक बजे रात को आप ने दवा तलब की और चाए नोश फरमाई. आधी चाए बचाकर अज़ीज़ भाई को दी, खुश नसीब हैं वह अहले निसबत को आखरी नेमत से मुशर्रफ हुए. बावा हुज़ूर ने ज़िंदगी के आखरी लम्हात में अज़ीज़ भाई से यही कहा कि मैंने कलमए-तय्यबा की तालीमात को बडी मेहनत और मशक्कत के साथ अपने पीरे कामिल से हासिल किया है, जहाँ तक हो सके इसकी हिफाज़त करो. यही जुम्ला बार बार दोहराते रहे. फजर के वक्त ही अज़ीज़ भाई ने देखा कि आप आराम फरमा हैं और तनफ्फुस में ठहराव आ गया है. ज़िक्र जारी था कि सांसों का झूला झूलते झूलते थम गया. रहमते खास का नुज़ूल था, वासिल ब-हक हुए (खुदा से जा मिले). हुज़ूर की मायना खेज़ खामोशी बज़बाने हाल कह रही थी :

अन-गिनत जिस ने सजा रखे थे गुल्ज़ारे क़दीर
आज रंग व नूर का वह तरजुमाँ खामोश है

जिस की खामोशी भी इक हुस्ने बयाँ से कम ना थी
अब वही इंसानिय्यत का राज़दाँ खामोश है
(‘शाहीन’)

मालूम हुआ कि अज़ीज़ भाई सिलसिलए क़दीर के कदीम व बुज़ुर्ग खलीफा मोहतरम डॉक्टर मुहम्मद नज़र मेहबूब शाह क़ादरी को इत्तेला देने गए हैं. (हज़रत क़िब्ला दो हफ्ते से आप ही के ज़ेरे इलाज थे. मौसूफ की दाइमी खिदमात और तबीअत शनासी के हज़रत क़िब्ला भी मोअतरिफ थे.) डॉक्टर साहब मौसूफ के अलावा सय्यद नूर मुहम्मद साहब क़ादरी, अब्दुल अज़ीज़ साहब क़ादरी, मुहम्मद शहाबुद्दीन खान साहब क़ादरी, मुहम्मद हाशिम खान साहब क़ादरी, दातर नवाज़ क़ादरी, मुहम्मद फाइक़ क़ादरी, व हमनवा, शेख मुहम्मद हसन क़ादरी, ख्वाजा मोईनुद्दीन क़ादरी और सय्यद ज़फर क़ादरी, मुहम्मद खैरुद्दीन क़ादरी, मुहम्मद अब्दुल अज़ीम क़ादरी, मुहम्मद मशाइख क़ादरी, शेख मुहम्मद इमाम क़ादरी, मुहम्मद बशीरुद्दीन क़ादरी, मुहम्मद कासिम क़ादरी व बिरादराने लालागोडा, अहले सिलसिला नाराइन गोडा, और मोहतरम सरापा इखलास ख्वाजा मुहम्मद अहमद शाह क़ादरी चिश्ती बिज्नापल्ली और उनकी पाकबाज़ मुरीदह कुलसुम आपा साहेबा और मोहतरमा बडी हमशीरह साहेबा, हाजी आपा साहेबा ने बडी मेहनत व जाँफशानी (मशक्क़त) से हज़रत क़िब्ला की तीमारदारी की. विसाल की इत्तेला पाते ही चांद भाई क़ादरी और अब्दुल मजीद क़ादरी फौरन इंतेज़ामात में मसरूफ हो गए. जानिसारे क़दीर बिरादरम मुहम्मद अब्दुल अज़ीम क़ादरी ने नज़रे ताज़ीमी पेश की. वसाइल (सामान) अल्लाह तआला के फज़्ल से जमा होते गए, असबाब बनते गए. तार, अखबार, रेडीयो के ज़रीए सब को खबर दी गई. सूरज निकलने के साथ चाहने वालों का एक जम्मे ग़फीर (बहुत बडी भीड) शेख बुड्ढन साहब क़ादरी उर्फ सेठ साहब के मकान बमकाम फतह दरवाज़ा की जानिब बढने लगा. यही वह जगह और मकान है जहाँ से हज़रत क़िब्ला ने दुनिया के कोने कोने को पंचरंगी तुग़रे के ज़रीए कलमए-तय्यबा के रुमूज़ व निकात (राज़ों और इशारों) से रोशनास (वाकिफ) फरमाया और इसी जगह आप ने कलमतुल हक की बलंदी का फरीज़ा अदा करते हुए

अपनी प्यारी जान हक तआला के सुपुर्द करदी. हज़रत क़िब्ला के विसाल की इत्तेला पाते ही हज़रात सरखील सिलसिलए इफ्तेखारीया मोहतरम सज्जादा नशीन आस्तानए-वतन, सय्यद शाह मोईनुद्दीन चिश्ती अलमदनी इफ्तेखारी दीदार के लिए तशरीफ लाए, दुआए मग़फिरत फरमाई. (और रोज़नामा 'मुनसिफ' व 'मिलाप' के ज़रीए ताज़ियती पैयाम में हज़रत क़िब्ला से निसबते चिश्तीय्या की वज़ाहत फरमाई.) नमाज़े इशा के बाद जनाज़ा मस्जिदे चौक में अदा की गई. आप का जिस्मे मुबारक हज़ारों चाहने वालों के जुलूस में नौ बजे रात हैद्राबाद से सर्विस के ज़रीए हलकट्टा ले जाया गया, जहाँ अलग अलग मकामात से आए हुए अनगिनत अहले सिलसिला, अकीदत मंद और मुखलिस अहबाब मौजूद थे. चिटगुप्पा वालों ने हज़रत करीमुल्लाह शाह क़ादरी रहमतुल्लाहि अलैह के अज़ीज़ तरीन जानशीन के जिस्मे मुबारक को चिटगुप्पा ले जाने का मुतालेबा किया, खादिम की बाअदब गुज़ारिश और तमाम अहले सिलसिला की मुत्तफिका राए पर हलकट्टा ही दफ्न की जगह करार पाया. और यही मंशाए खुदावंदी था जो पूरा हो कर रहा.

हज़रत हाफिज़ा बीबी यमनी रहमतुल्लाहि अलैहा के मज़ार शरीफ से मशरिकी सिम्त में अबदी आरामगाह की तामीर मोहतरम सय्यद बहाउद्दीन हुसैनी उर्फ चांद पाशा साहब मुकद्दम माली हलकट्टा की निगरानी में शुरू की गई. फजर की नमाज़ के बाद वाबस्तगाने क़दीर की मौजूदगी में खलीफए मोहतरम ख्वाजा सय्यद अली शाह क़ादरी चिश्ती पेशइमाम रंगशाई पेट वरंगल जो पुराने अहले निसबत हैं, तमाम हाज़िरीन से मुखातब होकर कहा कि हुज़ूर पीर व मुर्शिद क़िब्ला रहमतुल्लाहि अलैह की रूह देख रही है. हम हक्के निसबत अदा करते हुए गुज़ारिश करते हैं कि साहबज़ादा मोहतरम बावा हुज़ूर क़िब्ला रहमतुल्लाहि अलैह के कायम मकाम होने के नाते हम सब की सरपरस्ती फरमाऐं. इंशा अल्लाह तआला हम तमाम अहले सिलसिला अपनी आखरी सांस तक आदाबे फकीरी और हिदायाते पीर पर कायम रहेंगे. तमाम हाज़िरीने मजलिस और अहले सिलसिला ने बलंद आवाज़ में मौसूफ खलीफा की ताईद की.

खादिम उठा और नम आंखों से हज़ारों फर्ज़ंदाने क़दीर से मुखातब हो

कर कहा:

''सब से पहला फर्ज़ जो तमाम वाबस्तगाने क़दीर पर आइद होता है वह है इर्शादे पीर की तकमील. वह है ज़िक्र का हर लम्हा हर वक्त कायम व दायम रखना, बेशक आज भी 'क़दीर' (रह.) तालीमाते क़दीर में ज़िंदा हैं. सिलसिलए क़दीर का हर बुज़ुर्ग खादिम का बुज़ुर्ग है, अदब फकीरी की पहली मंज़िल है. रहा सरपरस्ती का सवाल तो खादिम का यह फैसला है कि खादिम ने अब तक अपने आप को खाकपाए क़दीर लिखा मगर अज से खुद को गुलामे सिलसिला लिख रहा हूँ. आप सब दुआ फरमाऐं कि हक्के खिदमत अदा कर सकूँ.''

इसके बाद सिलसिलए क़दीर के जहाँदीदा साहिबे फहम व इद्राक खलीफा मोहतरम हज़रत साबिर तवक्कुली 'शाहीन' साहब ने वाबस्तगाने क़दीर से मुखातब होकर मसलके फुक़राई, बअैत और इरादत के कवानीन और आदाबे शेख पर तफसीली रौशनी डाली और दुआ फरमाई कि मौला तआला पीराने तरीकत के सदके में अहले सिलसिला को अपनी तालीमात से वालेहाना वाबस्तगी और इस्तेकामत अता फरमाए, और पीर व मुर्शिद क़िब्ला की कडी मेहनत से लहलहाता हुआ चमन हमेशा तर व ताज़ा रहे. आमीन

१४ मोहर्रम जुमा की सुबह रौशन थी, वक्त के साथ साथ फिदाइयाने क़दीर हलकट्टा पहुंचने लगे. ११ बजे दिन सिलसिलए क़दीर के जवाँ साल खलीफा हाफिज़ व क़ारी अशफाक मुहम्मद शाह क़ादरी मशहदी नदवी एडीटर 'अयाज़' भोपाल (फर्ज़ंद शेख मुहम्मद शाह क़ादरी कुरैशी) और सय्यद अहमद अली साहब क़ादरी दहली से हैद्राबाद और हैद्राबाद से हलकट्टा शरीफ आ पहुंचे. जन्नत मकानी हकीकत अफशाए तजल्लियात का दीदार किया. हाफिज़ साहब ने जुमा का खुत्बा दिया और नमाज़ अदा करवाई. जुमा बाद नमाज़े जनाज़ा का एलान हुआ. खादिम ने नमाज़े जनाज़ा की इमामत की. अजीब रिक्क़त आमेज़ (रुलाने वाला) और दर्द अंगेज़ मंज़र था. वक्त की धडकनें लम्हा लम्हा पूछ रही थी :

किस ने वक्ते सहर आखरी सांस ली
रुक गई नब्ज़े कौन व मकाँ दोस्तो
कौन यह बज़्मे हस्ती से रुखसत हुआ
वक्त लेने लगा हिचकियाँ दोस्तो
हम ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढी, हम ने उसको सुपुर्दे लहद कर दिया
ज़िंदगी भर जो देता रहा दमबदम मेंबरे दिल से अपनी अज़ाँ दोस्तो
('शाहीन')

अलग अलग मकामात से आए हुए शमए क़दीर के परवानों ने कलमए तय्यबा को अपने सीने से लगाए तसदीक बिलक़ल्ब की दौलत से सरफराज़ करने वाले दाता के हयूलाए नासूती को नम आंखों से अबदी आरामगाह के सुपुर्द कर दिया :

'फाज़िल' जफा कशाने मुहब्बत की मौत क्या
जब थक गए तो सो गए आराम के लिए

मकामे कुर्ब के तलबगार बंदानवाज़ रहमतुल्लाह अलैह के दामन से वाबस्ता शाइरे नात व मंकबत मोहतरम 'साबिर' शाहाबादी ने मज़ारे मुबारक पर सलामे अक़ीदत की नज़र पेश की और उस वक्त के वाकेआत को कलम की ज़बान देते हुए यूँ कहा :

(१)
है कल की बात पाशा क़ादरी को माँ की बर्सी पर
मुरीदों ने यहीं देखा था तख्ते सरपरस्ती पर
क़दीर अल्लाह के साए की ज़रूरत थी ज़रूरत है
तरस आना था मौला तुझ को लाखों की यतीमी पर

(२)
दमे अव्वल वह जिस कलमे से बाहम कर दिया सब को
दमे आखिर इसी मरकज़ पे कायम कर दिया सब को
मोहर्रम के महीने में अचानक पर्दा फरमाकर
बडी तरकीब से मसरूफे मातम कर दिया सब को

(३)

क़दीर अल्लाह जब गौसुल वरा से मिल रहे होंगे
करीम अल्लाह तो बढ कर गले लगवा लिए होंगे
अचानक अपने अब्बा के पहुंचने की खबर पाकर
खूशी से हाफिज़ा बीबी के आंसू आ गए होंगे

(४)

अक़ीदत देखिए सय्यद की अपने जद्दे अकरम से
गले मिलने लगे हैं किस तरह शोहदाए आज़म से
क़दीर अल्लाह ने साबित कर दिया पर्दा फरमाकर
अली ज़ादों को जो रूहानी निसबत है मोहर्रम से

(५)

बिहम्दिल्लाह उनका यौमे पैदाइश भी जुमा है
और इस पर फज़्ल देखो हज्जे अकबर का भी मौका है
ग़र्ज़ अल्लाह ही जाने अदा अल्लाह वालों की
उसी दिन तर्के दुनया भी किया, क्या शाने उक़बा है

(६)

गुज़र जाते तो हैं वह भी जो रहमत का ज़रीआ हैं
नज़र आते भी हैं लेकिन उन्हें जो बावसीला हैं
खुदा के कुर्ब को हम मंज़िले मोमिन जो समझें तो
क़दीर अल्लाह पहले से ज़्यादा आज ज़िंदा हैं

(७)

क़दीरल्लाह शायद दस मोहर्रम को गुज़र जाते
शहे आशूरह की दावत से क्या इंकार फरमाते
ना होती मादरे अक़दस की बर्सी की जो मजबूरी
यह बेताबे शहादत तीन दिन पहले निकल जाते

(८)

कभी मेयार से नीचे उतर जाना नहीं चाहा
कभी हद्दे मशिय्यत से गुज़र जाना नहीं चाहा

चरागे गौस ने खामोश हो कर सुबह से पहले
क़ज़ा मंज़ूर की सूरज से टकराना नहीं चाहा

(९)

जो कुरबाने खुदा होते हैं मर जाया नहीं करते
नज़र वालों से हरगिज़ पर्दा फरमाया नहीं करते
जो समझो तो यह दर्जाते वफा की बात है 'साबिर'
जो सब से पार हों यूँ ही नज़र आया नहीं करते

(१०)

अभी तारी ही थी दिल पर फज़ा दसवी मोहर्रम की
अभी बाकी थी दामन पर रवानी चश्मे पुरनम की

खमोशी थी कि बढती ही चली थी अर्शे आज़म की
नई फहरिस्त थी पेशे खुदा शोहदाए अकरम की

कहा तेरह मोहर्रम ने कि है कोई फकीरुल्लाह ?
सदाए अव्वलीं आई कि हाज़िर है क़दीर अल्लाह

खुदा वालों का यह अंदाज़े तसलीम व रज़ा देखो
बवक्ते खौफ यह मर्दाने हक का हौसला देखो

मोहर्रम का महीना जुमे के दिन ताज़ीया देखो
जो मरकर ज़िंदा हो जाते हैं उनकी भी क़ज़ा देखो

मकामे इश्क का जो भी अलमबरदार होता है
वही मर्दे मुजाहिद क़ाफिला सालार होता है

सभों ने कलमए तय्यब को फर्ज़े अव्वलीं समझा
इसे मेयारे वहदत ज़ीनते अर्शे बरीं समझा

बजा समझा उसे जिस ने रगे जाँ के क़रीं समझा
बिनाए दीं कहा बाज़ों ने बुनयादे यकीं समझा

क़दीर अल्लाह मे लेकिन यह वस्फे खास पाया है
कि कलमा गो को इस दर्वेश ने कलमा बनाया है

जहाँ वह जाएगा ईमान अपने साथ पाएगा
जहाँ तक जाएगा इरफान ही इरफान पाएगा

हो खाली हाथ तो कुरआन उसके हाथ आएगा
कसम अल्लाह की कलमा जहन्नम में ना जाएगा

क़दीर अल्लाह ने कलमे का जो इरफान पाया है
रसूलुल्लाह का सदका करीम अल्लाह का साया है

कहाँ तक क़ल्ब को मसरूफे इरफाँ कर दिया आखिर
कि हर हर सांस पे कलमे को चस्पाँ कर दिया आखिर

ग़र्ज़ आरामे जाँ को नज़रे ईमाँ कर दिया आखिर
कि 'साबिर' अपना कौल व फेल यकसाँ कर दिया आखिर

फक़त तलक़ीने 'ला' करते थे लो तामील भी कर दी
क़दीर अल्लाह ने आखिरकार अपनी भी नफी कर दी

(जज़ाकल्लाह, आमीन)

सलाम

बबारगाह हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी चिश्ती यमनी क़दीर रहमतुल्लाह अलैह (हलकट्टा शरीफ)

(अज़ 'साबिर' शाहाबादी)

ऐ क़दीर आशना, अस्सलाम अलैक
मोमिने बासफा अस्सलाम अलैक

जाने मुश्किल कुशा अस्सलाम अलैक
दीदए फातिमा अस्सलाम अलैक

गौस के नक्शे पा अस्सलाम अलैक
शाहे बगदादीया अस्सलाम अलैक

वालिदे हाफिज़ा अस्सलाम अलैक
सायए जारीया अस्सलाम अलैक

तूने हस्बे वफा निसबते शेख का
कर दिया हक अदा अस्सलाम अलैक

राज़े बैअत की तशरीह व तबलीग का
कर दिया हक अदा अस्सलाम अलैक

ताअते खालिक व खिदमते खल्क का
कर दिया हक अदा अस्सलाम अलैक

कुल्लु नफ्सिन के हलके में होते हुए
ज़िंदए जावेदा अस्सलाम अलैक

मैं तेरी खाके पा हूँ ऐ लाले यमन
तू मेरा वास्ता अस्सलाम अलैक

तेरा किरदारे आली बफ़ज़्ले खुदा
मौत से मा वरा अस्सलाम अलैक

नज़रे तबलीग कर दी बहुक्मे खुदा
सारी उम्रे वफा अस्सलाम अलैक

तू कि आया यमन से बराहे वफा
ऐ सफीरे खुदा अस्सलाम अलैक

'साबिरे' जाँ ब-लब पे भी चश्मे करम
हो बराए खुदा अस्सलाम अलैक
(आमीन)

हज़रत क़िब्ला के पाक अखलाक दिन की तरह रौशन थे. जिसने जिस अंदाज़ में भी पाया हक व सदाकत के मेयार पर पूरा पाया. किरदार व अखलाक की यह बलंदी हज़रत सय्यद शाह नबी मोहियुद्दीन क़ादरी राइचूरी रहमतुल्लाहि अलैह की तरबिय्यत, आस्तानए बंदानवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह की नवाज़िशात और हज़रत सय्यद शाह हुसैन मुहम्मद अकबर मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी 'खैर' रहमतुल्लाहि अलैह बंदानवाज़ी की दुआओं का फल था कि पीरे कामिल शेख करीमुल्लाह क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह जैसी साहिबे दीद हस्ती ने ब-नज़रे इंतेखाब आप को कलमए तय्यबा की तसदीक का एक मरकज़ बना दिया, एक शमा क्या जली, शश जिहत को रौशन कर गई.

तेरी फितरत ने ऐ साकी अजीब दरया दिली पाई
वहीं अब्रे करम बरसा जहाँ जैसी कमी पाई
('शाहीन')

हज़ारों चाहने वालों में कुछ ऐसे भी दीवाने थे जो मशिय्यत के आगे दम ना मार सके, मगर हिज्र व फिराक के सदमे ने तडपाया तो बे इख्तियार कह उठे:

जब याद तुम्हारी आती है
रह रह के मुझे तडपाती है
हर सांस तुम्हारी यादों की
पैगामे वफा का लाती है
हर शै में तुम्ही को पाता हूँ
हर चीज़ तुम्हें दिखलाती है
जो 'मीर' उन्हें अपनाते हैं
मंज़िल भी उन्हें अपनाती है

(सय्यद मीर क़ादरी 'मीर' कडपवी)

खतीबे अहलेसुन्नत हज़रत अब्दुल खालिक़ 'हैरत' निज़ामी साहब (रह.) खतीबे जामा मस्जिद वाडी ने विसाले क़दीर पर कहा :

इश्क व इरफाँ का समंदर अब भी हलकट्टा में है

इश्क व इरफाँ का समंदर अब भी हलकट्टा में है
क्या हयात अफरोज़ मंज़र अब भी हलकट्टा में है

क़ादरी यमनी सनूबर अब भी हलकट्टा में है
बागे चिश्ती का गुले तर अब भी हलकट्टा में है

होश बर दम का मुफस्सिर अब भी हलकट्टा में है
कलमए तय्यब का नाशिर अब भी हलकट्टा में है

ख्वाजए अजमेर के फैज़ान का जाम व सबू
शाहे जीलानी का सागर अब भी हलकट्टा में है

हज़रते सय्यद मुहम्मद बादशाहे क़ादरी
जलवए नूरे पयंबर अब भी हलकट्टा में है

अहले दिल का हुक्मराँ रूहानिय्यत का ताजदार
इक मुक़द्दर का सिकंदर अब भी हलकट्टा में है

मर्दे हक आगाह व हक बीन मेहरमे असरारे 'हूव'
चश्म रौशन दिल मुनव्वर अब भी हलकट्टा में है

जिस की अज़मत की गवाह है देख 'गुलज़ारे क़दीर'
वह सुखन दाँ वह सुखन वर अब भी हलकट्टा में है

हज़रते ख्वाजा करीमुल्लाह का ख्वाने करम
बांटने वाला सखी घर अब भी हलकट्टा में है

चिटगुप्पा में डूब कर निकला ह कौसर के करीब
बहरे वेहदत का शनावर अब भी हलकट्टा में है

कर दिया आफाक में मशहूर हलकट्टे का नाम
वह भी खुद और उस का घर अब भी हलकट्टा में है

अहले दिल का कारवाँ चलता रहे बढता रहे
कारवाँ का आला अफसर अब भी हलकट्टा में है

अब बडे साहिब नहीं तो छोटे साहिब ही से मिल
वह तो ब-अलफाज़े दीगर अब भी हलकट्टा में है

बारहा 'हैरत' का खुत्बा सुन के जिस ने दी दुआ
क़द्रदाने अहले मेंबर अब भी हलकट्टा में है

और यादे क़दीर इस तरह दिल व नज़र की तसकीन बन कर कह रही है :

छुप कर भी हम ने आप से पर्दा नहीं किया
सांसों में ज़िक्र बन कर सदा बोलते हैं हम
('साहिब')

इस के बाद तरीके के मुताबिक चहलुम के इंतेज़ामात हुए. इस मौके पर सज्जादा नशीन आली वक़ार, नूरे दीदए बंदानवाज़ हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी साहब क़िब्ला मद्दज़िल्लहुल आली रहमतुल्लाह अलैह रोज़ए बुज़ुर्ग गुलबर्गा शरीफ, मोहतरमुल मकाम हज़रत सय्यद शाह कबूलुल्लाह शाह मुहम्मद मुहम्मद अलहुसैनी साहब क़िब्ला मद्दज़िल्लहुल आली रहमतुल्लाह अलैह रोज़ए मुनव्वरा खुर्द गुलबर्गा शरीफ ने महरबानी करते हुए हलकट्टा शरीफ तशरीफ लाए और दुआए खैर फरमाई. और हज़रत सय्यद शाह ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन मदनी साहब क़िब्ला सज्जादा नशीन बारगाहे हज़रत वतन रहमतुल्लाह अलैह हैद्राबाद तमाम मरासिम में मौजूद थे. इसके अलावा हर इलाके से अहले तरीक, उलमा व मशाइख ने शिरकत की जो यकीनन इस खादिम पर नज़रे शफकत है :

है खुदा का शुक्र कि गम आशना मौजूद है

मंज़िले तसकीन का इक रहनुमा मौजूद है

मन्कबत

(हज़रत क़दीरुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह (हलकट्टा शरीफ) के उर्से मुबारक के मौके पर)

(अज़ हज़रत ख्वाजा 'शौक' हैद्राबादी)

क्या गम जब अपने साथ खुदाए क़दीर है
राज़ी हैं उस पे जो भी रज़ाए क़दीर है
हर सांस ज़िंदगी की बराए क़दीर है
जो कुछ है अपने पास अताए क़दीर है
मफहूमे 'ला इलाह' का है खुद सुपुर्दगी
इकरारे कलमए अहद वफाए क़दीर है
मिलती है हर कदम पे निगाहों को रौशनी
धडकन नहीं है दिल की सदाए क़दीर है
दौलत भी रख के लोग सुकूँ आशना नहीं
कंबल में अपनी मस्त गदाए क़दीर है
दुनया किसी के दर से भी वाबस्तगी रखे
अपना सरे नियाज़ ब-पाए क़दीर है
गफलत का क्या सवाल है यादे क़दीर से
खुद ज़िंदगी का नाम विलाए क़दीर है
असरार 'मन अरफा' के जो इंसान पर खुले
फैज़े निगाहे सीना कुशाए क़दीर है
खाली नहीं है सांस कोई उसके ज़िक्र से
यादे क़दीर दिल में बजाए क़दीर है
हाइल हों 'शौक' राह में कितने ही फासले
मंज़िल नज़र की जलवा सराए क़दीर है

(१४ मुहर्रम १४०४ हि.)

मन्कबत

पीर व मुर्शिद हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी अलचिश्ती यमनी 'क़दीर' की मदह (तारीफ) में

हम कैसे भूल सकते हैं शफकत क़दीर की
कल भी थी आज भी है इनायत क़दीर की

वह हो गया है वाकिफे असरारे 'मन अरफा'
जिस को नसीब हो गई सोहबत क़दीर की

सैराब सब को कर दिया छोटा हो या बडा
यकसाँ रही सब पे इनायत क़दीर की

वीरानीयां भी रश्के सद गुलज़ार बन गई
यह भी है एक अदना करामत क़दीर की

पर्दा भी करके दूर नहीं हैं निगाह से
हर लम्हा सामने रही सूरत क़दीर की

गुलज़ारे शश जिहात की तफसीर के लिए
पढिए किताब गौर से हज़रत क़दीर की

सारे जहाँ को दर्से हकीकत जो दे 'सना'
कैसे बयाँ करे कोई अज़मत क़दीर की

अज़ : अब्दुल हफीज़ 'सना' भंडारी, वाडी जंक्शन, जिला गुलबर्गा शरीफ

सलाम बहुज़ूर खैरुल अनाम (स.)

अज़मते दो जहाँ सलामुन अलैक

फख्रे कौन व मकाँ सलामुन अलैक

जुज़ तुम्हारे हमारा कोई नहीं

हामीए बेकसाँ सलामुन अलैक

सब के रहबर हो सब के निगरान हो

खातेमुल मुरसलाँ सलामुन अलैक

लाज रह जाए बात बन जाए

शाफिए आसीयाँ सलामुन अलैक

वजहे तखलीके कायनात हो तुम

बे निशाँ रा निशाँ सलामुन अलैक

अहले मजलिस की हो कबूल दुआ

मकसदे साइलाँ सलामुन अलैक

एक 'साहिब' है गर्दे राहे सफर

ऐ शहे कारवाँ सलामुन अलैक

‘परवेज़’ धमडी (इंजीनियर आस्तानए क़दीरी) का कलाम

(जनाब मस्तान पटेल क़ादरी ‘परवेज़’ धमडी, शाहाबाद, जिला गुलबर्गा शरीफ)

दहकानी (गांव के) ज़बान में मुनफरिद लब व लहजे के शाइर, कमाले फन है कि अदब के साथ नात कह रहे हैं

जो बेडा पार ना हो तो सब से पार को देखो
खुदा के नाद दिस्तीं सो खुदा के यार को देखो

अलम से वाबस्ता हो तो अलमबरदार को देखो
खुदा को देखना हो तो मेरे सरकार को देखो

मेरे सर को नको देखो बहुत इलज़ाम हैं इस पर
मैं जिस की छाऊं में बैठा हूँ उस दीवार को देखो

अगर तुमना फज़ल को चलते फिरते देखना हो तो
मेरे सरकार को सरकार के घरबार को देखो

अगर मन की मलामत की दवा होनाच है तुमना
नज़र भर को मुहम्मद के किसी बीमार को देखो

मदीना दो कदम पर है अगर पक्की अकीदत हो
मुहम्मद के कह के तुम इस पार से उस पार को देखो

जो आंखियाँ खोलते ऐसे तो दर देखे चे होंगे तुम
जो किसमत को करे बेदार उस बेदार को देखो

मैं अपना सर झुकाऊं किस तरह उन पाक कदमों पर
मेरे सर पो ऐ ‘धमडी’ पाप के अंबार को देखो

कलामे 'मीर'

क़ाज़ी सय्यद मीर शाह क़ादरी चिश्ती 'मीर' कडपवी

तेरी याद बन गई है मेरी ज़िंदगी का हासिल
तू है या क़दीरे आलम मेरी ज़िंदगी का हासिल

मेरे दिल में तू ही तू है मेरी हर नफस में तू है
यह सिला मिला है मुझ को तेरी आगही का हासिल

तू मेरे गमों में शामिल तू मेरी खूशी में शामिल
मेरी कशमकश में तू है मेरी ज़िंदगी का हासिल

मेरे दिल को इस्तेकामत तेरे ज़िक्र की अता कर
मेरी ज़िंदगी हो हर दम तेरी रहबरी का हासिल

मेरा हाल वाक़ई है मेरा ज़र्फ वाक़ई है
तू ही तू हो हर नज़र में मेरी खामोशी का हासिल

तेरी याद हो ब-ईमाँ तेरे दीद का हो सामाँ
यह है ज़िंदगी का हासिल यह है आदमी का हासिल

यह करम है 'मीर' मुझ पर मेरे साकिया का हर दम
जो है महविय्यत का आलम मेरी मैकशी का हासिल

हज़रत क़िब्ला रहमतुल्लाहि अलैह की जुदाई में जनाब 'नसीम' शौलापूरी का बेपनाह गम शेर बन कर दिल व नज़र की राह से बह निकला

अलविदा

दीने नबी के यारे वफादार अलविदा
हम बे कसों के मोनिस व गम ख्वार अलविदा
सर ता पा इश्क़ आप की हस्तीए पुर वक़ार
मैखानए रसूल के सरशार अलविदा
राहे वफा पे चल के चलाया है आप ने
लाखों दिलों के काफला सालार अलविदा
सिखलाए आप ने हमें आदाबे बंदगी
ऐ रेहमते खुदा के तलबगार अलविदा
खुद को भुलाया कलमए तय्यब के राज़ में
रौशन ज़मीर वाकिफे असरार अलविदा
मुद्दत से यह 'नसीम' तलबगारे फैज़ है
ऐ बादशाह ऐ साहिबे गुलज़ार अलविदा

सरज़मीने करीम नगर से एक अहले निसबत तारीख गो शाइर गुलाम ख्वाजा मोईनुद्दीन साहब क़ादरी, बी.ए. 'गौहर' करीमनगरी ने बसद खुलूस आस्तानए क़दीर रहमतुल्लाहि अलैह के लिए तारीखी क़तआ की यादगार नज़र पेश की :

विसाल की तारीख का क़तआ

क़दीर अल्लाह यमनी क़ादरी चिश्ती खलीफा हैं
जवारे हक में ज़ेरे सायए दामाने मौला हैं
बफैज़े हज़रते 'साबिर' कही तारीख 'गौहर' ने
लहद में बादशाहे क़ादरी आराम फरमा हैं
गमे क़दीर में अश्कबार
(९९ हिजरी १३ - ७८ ईसवी १९)
(१९९९ ईसवी - १३७८ हिजरी)

मन्कबत (उर्से क़दीर के मौके पर) (२० अक्तूबर १९८४)

हज़रत ख्वाजा सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी अलचिश्ती यमनी क़दीर रहमतुल्लाहि अलैह की मदह (तारीफ) में

डॉक्टर 'राही' कुरैशी साहब, उर्दू डीपार्टमेंट, गुलबर्गा शरीफ

हर सिम्त इल्तेफाते खुदाए क़दीर है
क्या दिल कुशा जमाले फिज़ाए क़दीर है

जो जुस्तजू है अपनी, बराए क़दीर है
ऐ दिल कदम कदम पर अताए क़दीर है

हर सुर्ख रूई, उनकी नवाज़िश का है समर
हर कामरानी, फैज़े दुआए क़दीर है

दिल को कशाँ कशाँ लिए जाती है उनकी याद
इस रहगुज़र में जैसे सदाए क़दीर है

यह लम्हे यादगार रहेंगे तमाम उम्र
दिल में है याद, लब पे सनाए क़दीर है

इखलास, इल्तेफात, मुहब्बत, वफा, अता
हलकट्टे की फज़ा में अदाए क़दीर है

'राही' यह इफ्तेखार, यह एज़ाज़ कम नहीं
अपना सरे नियाज़ ब-पाए क़दीर है

आस्तानए क़दीरी हलकट्टा शरीफ

की तामीर की तारीख

हद्दे निगाह देखिए फैज़े अज़ीम है
जो कुछ है बिलयकीन अताए करीम है

बिहम्दिल्लाह, २६ रमज़ानुल मुबारक १३९९ हि. मुताबिक १९७९ ई. आस्तानए क़दीरी का संगे बुनयाद रखा गया.

तक़ाज़ाए मुहब्बत वजहे तामीरे वफा ठहरा
हुजूमे आशिक़ाँ ने आस्ताने की बिना डाली

१७ शव्वाल बुनियाद तकमील पाई, तामीर का सिलसिला जारी व सारी है. माहे रमज़ानुल मुबारक १४०० हि. मुताबिक १९८० में छत मुकम्मल हुई. ज़िक्र व फिक्र दोश बदोश चलते रहे. बिलआखिर १४०२ हि. मुताबिक १९८२ में गुंबद शरीफ मरकज़े निगाह हुआ यानी मुकम्मल हुआ.

सिलसिला इश्क का आदाबे वफा होता है
जो भी होता है वह मरज़ीए खुदा होता है

तमाम अहले सिलसिलए क़दीरीय्यह ने हर तरह से तआवुन देकर हिस्सा लिया. अल्लाह पाक जज़ाए खैर से नवाज़े. आमीन.

हर एक अहले दिल ने किया हक अदा यहाँ
मुशकिल जो मरहले थे वह आसान हो गए

खादिम को वह लम्हात याद हैं और इंशा अल्लाह ज़िंदगी भर याद रहेंगे जब वाबस्तगाने क़दीर ने अपने मेहबूब को खिराजे अकीदत पेश करने के लिए 'आस्तानए क़दीरी' से इज़हारे वफा किया.

छुपता कहाँ है देखने वाला क़दीर का

गहरा है रब्त रूह से कितना क़दीर का
जारी नफ्स नफ्स में है कलमा क़दीर का

एहसान ज़िंदगी पे है क्या क्या क़दीर का
सब कुछ छुटा, खयाल ना छूटा क़दीर का

पहले तो सिदके दिल से तो हो जा क़दीर का
फिर इसके बाद देख तमाशा क़दीर का

हर रूप में है इक नया जलवा क़दीर का
दुनया है या है आईना खाना क़दीर का

महदूद कब है हुस्ने दिल अफज़ा क़दीर का
जैसी नज़र है वैसा नज़्ज़ारा क़दीर का

तू राज़े 'मन अरफा' से ज़रा आशना तो हो
हर सू दिखाई देगा उजाला क़दीर का

करता है कोशिशों पे बडा नाज़ आदमी
करता है काम अस्ल में मंशा क़दीर का

अपनी नफी का नाम है इकरारे 'ला इलाह'
यानी जो कुछ भी है वह है तन्हा क़दीर का

तहकीके कलमा, दीन की खिदमत, हक आगही
मसलक यही रहा है हमेशा क़दीर का

रखा ना काम दौलते दुनया से उम्र भर
ऐसा था 'फक्र फख्री' से रिश्ता क़दीर का

अंदाज़ बोलते हैं नज़र बोलती है 'शौक'
छुपता कहाँ है देखने वाला क़दीर का

(तरही मुशायरा, हलकट्टा, वाडी)

कारवाने ज़िंदगी

आप के दम से है कायम कारवाने ज़िंदगी
आप की नज़रे करम ही तो है जाने ज़िंदगी

मेरी हाजत पूरी होती है मेरे सरकार से
मेरे आका मेरे मोहसिन निगेहबाने ज़िंदगी

ज़िंदगी ज़ेरे लहद अपनी हकीकत के है साथ
और ज़ेरे आसमाँ गोया गुमाने ज़िंदगी

एक जुरआ मेरे साकी तेरी नज़रों से मिले
बादह व मीना कहाँ हैं मेहरबाने ज़िंदगी

क्या गिना सकता है 'साहिब' आप के एहसान को
आप के सदके में है दर अस्ल शाने ज़िंदगी

('साहिब' क़दीरी)

मंज़ूम शजरए मुबारका

सिलसिलए क़ादरीया आलीया खुलफाइया

या इलाही पैकरे सब्र व रज़ा का वास्ता
सय्यद इब्राहीम शाहे बावफा का वास्ता
हो अता सय्यद मुहम्मद बादशाह का वास्ता
सालिके शाहे करीमुल्लाह शाह का वास्ता
क़ादरी बज़्मे क़दीरी शाद हो आबाद हो
अब्दे क़ादिर सय्यदे कुल औलिया का वास्ता
हज़रते चंदा हुसैनी का करम शामिल रहे
सद्रे दीन वाकिफे राज़े वफा का वास्ता
शाहे अब्दे क़ादिर ज़ीशान की हिम्मत रहे
हो उम्र मौजूद शाहे हक रसा का वास्ता
लुत्फ हो इरफान अली शाह क़ादरी का दमबदम
हज़रत जाफर अली शाह साकिया का वास्ता
ख्वाजाए सय्यद हसन मौदूदी शाह का हो करम
हज़रत अकबर अली मौदूदी शाह का वास्ता
जो कि हैं सय्यद मुहम्मद मीर बहली शाहे दीं
और अम्रुल्लाह शाहे बावफा का वास्ता
शाह आबादी शाह बहाउद्दीन शाह क़ादरी
शाहे दीन शेख नज्मुल हक नुमा का वास्ता
निसबते अब्दुल अज़ीज़ शाह शकरबार का फैज़
और बहाउद्दीन शाह शुत्तारिया का वास्ता
जो हैं ताजुल आरिफीन रज़्ज़ाक़ दीन शाहे जमाल
गौसुल आज़म शाहे अब्दे क़ादिरा का वास्ता

बू सईद आरिफीन जो साकिने मखज़ूम हैं
बू हसन ख्वाजा अली करशी पिया का वास्ता
यूसुफे तरतूसी की मिदहत में दिन गुज़रें मेरे
अब्दे वाहिद बिन तमीमी साकिया का वास्ता
या इलाही बूबकर शिब्ली सा ज़ौके बंदगी
दे अबुल कासिम जुनैदे हक रसा का वास्ता
आशिकों में बू हसन ख्वाजा सिर्री सुक्ती के रख
हज़रते मारूफे करखी की अदा का वास्ता
सय्यदे सादात इमामे दीने हक रज़ा अली
मूसा काज़िम से इमामे बे रिया का वास्ता
जाफरे सादिक के सदके में इलाही बख्श दे
हाँ इमामे बाकिरे सिद्क व सफा का वास्ता
ज़ीनते दीन शाहे ज़ैनुल आबिदीन इब्ने हुसैन
सय्यदुश् शोहदा शहीदे करबला का वास्ता
नूर चश्मे फातिमा यानी हसन इब्ने अली
हाँ अली अलमुर्तज़ा शेरे खुदा का वास्ता
या इलाही बख्श दे इसयाँ हमारे बख्श दे
हादीए बरहक मुहम्मद मुस्तफा का वास्ता
हो बिराहीमी चमन आबाद गुलज़ारे क़दीर
हज़रत 'साहिब' क़दीरी की दुआ का वास्ता
हाज़िरे दरबार हैं 'अहमद' क़दीरी 'बूतुराब'
हो करम हर दम शहे अहले सफा का वास्ता

☆☆☆

क्या कहें क्या हमें अरबाबे वफा देते हैं
लोग इस राह में क्यूँ आंख बिछा देते हैं
यह तो हर एक को देने के सिवा देते हैं
कोई क्या देगा जो खासाने खुदा देते हैं
दीन व दुनया वह गरीबों को बना देते हैं

उनकी दहलीज़ पे होता है अयाँ सिर्रे निहाँ
उनकी ठोकर से बने सैंकडों इंसाँ इंसाँ
बखुदा उनके हर एजाज़ का काइल है जहाँ
साहिबे कश्फ व करामात हैं पीरे मुग़ाँ
एक चुल्लू में दो आलम को लुटा देते हैं

यह जो पुर्ज़े किए बैठे हैं गिरेबानों को
कोई समझे भी तो इन सोख्ता सामानों को
दिल लगी सूझती है किस लिए फरज़ानों को
छेडना ठीक नहीं इश्क के दीवानों को
नाला करते हैं तो यह अर्श हिला देते हैं

यूँ तो हर एक समझता है कि हूँ मैं कामिल
कोई ठहरा ना किसी वक्त बवक्ते मुशकिल
हो गए लाखों के इस राह में दावे बातिल
दोस्ती का शर्फ उनको फकत है हासिल
जो पसीने की जगह खून बहा देते हैं

दर हकीकत हूँ गुनाहों से पशेमाँ 'ज़ाकिर'
फिर भी उक्बा से नहीं हूँ मैं परेशाँ 'ज़ाकिर'
हक ने रखा है मुझे रासिखुल ईमाँ 'ज़ाकिर'
जान व दिल हैदरे कर्रार पे कुरबाँ 'ज़ाकिर'
मेरी बिगडी को वह दम भर में बना देते हैं

(आशीके हज़रते 'क़दीर' 'ज़ाकिर' सिकंद्राबादी)

Astana-e-Quadeeriya
Halkatta Sharif, Wadi

Astana-e-Quadeeriya
Halkatta Sharif, Wadi

Astana-e-Quadeeriya
Halkatta Sharif, Wadi

गुलज़ारे क़दीर

तसनीफ व तालीफ

हज़रत ख्वाजा

सय्यद मुहम्मद बादशाह क़ादरी

चिश्ती यमनी क़दीर (रह.)

आस्तानए क़दीरी हलकट्टा शरीफ

वाडी जंकशन के करीब, ज़िला गुलबर्गा शरीफ (कर्नाटका)

तबाअत -

जांनशीन-ए-हज़रत-ए-साहेब क़दीरी

ख्वाजा सय्यद अबु तुराब शाह

कादरी चिश्ती यमनी

(तुराब क़दीरी)